ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 234 म अंक 15 सितम्बर 2017 (वर्ष 10 मास 117 अंक 234)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक 7 टा पद्य संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र**- श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नड़ेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु



सुखाएल पोखरिक जाइठ

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-47-6

दाम : ` 200/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SUKHAYAL POKHRIK JAITH
Anthology of Maithili Geet by Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर

केकरो फूल/10
काज पसैर/12
धार बीच/14
फेरो हम/16
रंगिते काजक/18
चोरकट चालि/20
डुमा-डुमी/22
छाती चढ़ि/24
ससुरामे/26
जिनगीक ताक/28
गोर मुँह/30
कतरा आम/32
सुखल पोखरिक/34
श्रोता कहि/36
जड़ि जंजालक/38
उगिते लाज/40
ओन्हा चालि/42
गिरैत घर/44
अना गाहिंस/46
सुखल पोखरिक/48
लत्ती जेना/50
पाटि/52
गोहि बनि/54
जेहेन जे/56
चेत चेता/58
अन्हर जाल/60
डायरीक/62
बरहबट्टू/64
चोटी छुबए/66
खेल-खेलाड़ी/68
ककोड़बा/70
सोर बनि/72
सेज-सिंगार/74
जएह लूरि/76
जोति हर/77
हर हलक/79
हिम-गिरि/80
भुवन भूचलि/82
खुजिते आँखि/84
मुड़जन मनुहर/86
गोधूलि-बेल/88
दौड़ि-दौड़/90
चोट-चाट/92
चाइन चेन/94
दीनक दोख/96
सगर समनदर/98
चप-चप/100
संगे-संग/102
जिनगीक भव/104

केकरो फूल

केकरो फूल मौँछ बनै छै
केकरो फूल फुलहैर जाइ छै।
फुलैक फूल फुलिया-फलिया
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
हस-हँसि दुनू दिस बढ़ै छै।
केकरो...।

फड़ैक सरूप पकैड़-पकैड़
मौँछ फूल सजबैत कहै छै।
सीख-लीख सिरखार गढ़ि-गढ़ि
फल-फलाफल सरूप धड़ै छै।
फल-फलाफल सरूप धड़ै छै।
केकरो...।

तेतबे नइ यौ भाय साहैब!
केकरो फूल अलोपित भऽ भऽ
सत-सत हाथी ताकि थकै छै।
फूल गजनती गज-गज गजुआ

बाट-बटोही हारि थकै छै।
बाट-बटोही हारि थकै छै।
केकरो...।

जेकर दूध छाल छलही बनि
आनि जम जजमान गढ़ै छै।
बाल-बोध मुँह अमृत बनि
अरोग जीत जिनगी पबै छै।
अरोग जीत जिनगी पबै छै।
केकरो...।

❍

शब्द संख्या : 97

काज पसैर

काज पसैर अबिते अँगना
लप-लप लक्ष्मी आबए लगै छै।
लछ-लछ लक्ष्मी कुदैक-कुदैक
शर सिर कमल सजबए लगै छै।
शर सिर कमल सजबए लगै छै।
काज पसैर...।

सजि-सजि सजिते सिर श्रृंगार
बाणी वीणा आबए लगै छै।
बाणी तनि भरैन-पुरैन
काशी कमल खिलबए लगै छै।
काशी कमल खिलबए लगै छै।
काज पसैर...।

कूदि-कूदि काज कर करिआ
वृक्ष सरूप सजबए लगै छै।
अशोभ शोभ अलिसाइत अलि
प्रसून रस रसबए लगै छै।

प्रसून रस रसबए लगै छै।
काज पसैर...।

सरसिज कमल सरि-सेरिआ
सागर कमल गढ़ए लगै छै।
सगर पहाड़ पार पे-पेबि
गर गल जोड़ि मिलए लगै छै।
गर गल जोड़ि मिलए लगै छै।
काज पसैर...।

❍

शब्द संख्या : 101

धार बीच

बलधकेल धकिया-धकिया
धार बीच उगै-डुमै छै।
सुभर जिनगीक कथ कथे की
पतरखेप खेपैत खपै छै।
पतरखेप खपैत खपै छै।
धार बीच...।

करिते उग-डूम धार मध
पगे-पग पएर पिछड़ै छै।
पात-निपात पतड़-पतड़ा
पतरखेब खेबैत रहै छै।
पतरखेब खेबैत रहै छै।
धार बीच...।

पगेपग पन-पन पंतिया
पंतिया पतिया पन चढ़ै छै।
बलपन खेलपन कुदि कुदैक
पतरखेल खेलैत कहै छै।

पतरखेल खेलैत कहै छै।

जएह जिनगी सएह किरदानी
सभ दिन सभ बाजि कहै छै।
धरम-अधरम कुधरम बूध-रम
पतरहाँसि हँस-हँसैत कहै छै।
पतरहँसि हँस-हँसैत कहै छै।
धार बीच...।

❍

शब्द संख्या : 84

फेरो हम

मरि-मरि कऽ मरै छी
फेरो हम फर-फर जीबै छी।
फेरो हम फर-फर जीबै छी।

झूठ-फुस एक्कोटा नै
मुँह फोड़ि-फोड़ि कहै छी
कखनो ठोर बर-बरी बना
दालि सिर चढ़ि-चढ़ि कहै छी
दालि सिर चाढ़ि-चाढ़ि कहै छी।
फेरो हम...।

कखनो रम रमनाक बीच
महाभारत रचि-रचि कहै छै।
दुनूक श्रृगी-श्रृंग चढ़-चढ़ि
दोहरा-दोहरा कहै छी
फेरो हम जीबै छी
मरि-मरि कऽ मरै छी
फेरो हम...।

रस-रसा रसाएल जेना
रब-रब रभैस कहै छी।
रभसी रभैस रम-रमा
मरा राम मरा कहै छै।
फेरो हम जीबै छी
फेरो हम...।

❍

शब्द संख्या : 82

रंगिते काजक

रंगिते काजक रंगसँ
रंग जिनगी बदलए लगै छै।
धड़-धरती छोड़िते जेना
नवरंग जिनगी धड़ए लगै छै।
नवरंग जिनगी धड़ए लगै छै।

रूप अरूप सरूप गढ़ि-गढ़ि
रंग रंगि रभसए लगै छै।
मुँह-कान जेहेन-जेहेन
नाओं अपन सिरजए लगै छै।
रंगिते काजक...।

अपना-अपनी गमक-महक
संग रूप सिरजए लगै छै।
गमक गन्हि महक-महैक
धरती-अकास पसरए लगै छै।
धरती-अकास पसरए लगै छै।
रंगिते काजक...।

पता-पती पसैर-पसैर
जिनगीक राग भरमए लगै छै।
अपन-अपन जिनगीक किरदानी
शूर गलगल गबए लगै छै।
शूर गलगल गबए लगै छै।
रंगिते काजक...।

❍

शब्द संख्या : 81

चोरकट चालि

चोरकट चालि पकैड़-पकैड़
चोरकट चालि चलैत रहै छी
बाल देखि बोली बिलैह
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।
चोरकट समाज गढ़ैत रहै छी।
चोरकट चालि...।

एकी-दूकी गंजक-गंज
चीरक समाज बनबैत रहै छी।
साज सजि सजनी सन्हिया
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी
चढ़ि-चढ़ि सिर सजैत रहै छी
चोरकट चालि...।

अड़ैक-मड़ैक धड़ैक जन-जन
सरैक-हरैक धरैत रहै छी
मुसर मूस मुसिया-मुसिया
कट-कट, कटि-कटि कहैत रहै छी।

कट-कट, कटि-कटि कहैत रहै छी।
चोरकट चालि...।

कटनी काटि कात कतिया
आँटी-अगो बनैत कहै छी
आँटी-बोझक आँट जेना
सीली-आगू हँसि-हँसि कहै छी।
सीली-आगू हँसि-हँसि कहै छी।
चोरकट चालि...।

❍

शब्द संख्या : 90

डुमा-डुमी

डुमा-डुमी खेल खेलि
धड़ा-धाम केना टपबै।
अन्हार घर साँपे-साँप
तखन पार केना करबै?
तखन पार केना करबै?

अन्हार डुमि-डुमि डुबैक
हँथोरि हाथ केना पेबै?
के केमहर दहैल भँसिया
बीच अन्हार केना देखबै?
बीच अन्हार केना देखबै?
डुमा-डुमी...।

सघन-समीर अकास ठेकि
नाद-शंख केना चढ़बै?
अकान कान कानि-कूहि
नाग-फाँस केना कटबै।
नाग-फाँस केना कटबै।
डुमा-डुमी...।

डँसिते छाती सू-सुरसुरा
मौगति हथिया धड़बै।
लूल हाथ लुलुआ-लुलुआ
हर-हर, हारि-हारि सुनेबै।
हर-हर, हारि-हारि सुनेबै।
डुमा-डुमी...।

❍

शब्द संख्या : 69

छाती चढ़ि

छाती चढ़ि मुकिया-मुकिया
कान पकैड़ पुछै छै।
संठी बोझ बना-बना
झील-झिलहोरि खेलै छै।
मीत यौ, झील-झिलहोरि...।

अपने ताले ताल पीटि
चैल-छाँछ भरैत कहै छै।
नीरा-पानि निरा-निरा
छछिया-छाँछ धड़ा कहै छै।
मीत यौ,
छछिया-छाँछ धड़ा कहै छै।
छाती चढ़ि...।

छह-छहा छहैल-छहैल
छाँछ-साँच बजैत कहै छै।
छाँछी छाँछ सुरैक-सुरैक
पक-पकौल माटि कहै छै।
मीत यौ,
पक-पकौल माटि कहै छै।

छाती चढ़ि...।

कुम्हारक किरदानी केहेन
कचिया-पकिया मिला गढ़ै छै।
कचिया घोड़ा रमि रेमंत
आउ, टिक, आउ-टिकटिकबै छै।
मीत यौ,
आउ, टिक, आउ-टिकटिकबै छै।
छाती चढ़ि...।

❍

शब्द संख्या : 82

ससुरामे

ससुरामे जा कऽ धीया
रहिहेँ चीत-चेत कऽ।
सुखि-दुखि बीच विचैड़
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।
चलिहेँ देखि-सूनि कऽ।

सून सुन्न पेब पकैड़
चिन्तन चीत चेत कऽ
सुरता सुरत पेब पकैड़
मरनी-मरम परेख कऽ
मरनी-मरम परेख कऽ
ससुरामे...।

माए-बाप सर-समाजक
लत-लत्ती लतैड़ कऽ
नव घर नव घरनी घेड़
मन-मन बपहर पेब कऽ
मन-मन बपहर पेब कऽ

ससुरामे...।

माए-बाप पीहर जेना
तहिना पीघर पेब कऽ
तहिना ने सरो-समाज
बेटी-पुतोहु बुझि कऽ
बेटी-पुतोहु बुझि कऽ
ससुरामे...।

❍

शब्द संख्या : 74

जिनगीक ताक

जिनगीक ताक ताकैमे
जिनगीए लगा देलिऐ।
तैयो सबेर पाबैमे
गम-गम जान गमा देलिऐ।
गम-गम जान गमा देलिऐ।
जिनगीए...।

रेहे-रेह राह रहियाबे
राहे-राह सहजन देलिऐ।
तैयो बात-घाट घटि-घटि
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।
घटिया घाट घटैत गेलिऐ।
जिनगीए...।

घटि-कुघटि मन सजि साजि
नचार-विचार सुनैत गेलिऐ।
समरथकेँ दुख नाइ गोसाँइ
रतिया राति गबैत गेलिऐ।
रतिया राति गबैत गेलिऐ।
जिनगीए...।

समरथ जिनगीक अवस्था
समरथाइ कहबैत गेलिऐ।
बिनु सामरथे समर्थ बनि
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।
रोग-वियाधि पबैत गेलिऐ।
जिनगीक ताक...।

❍

शब्द संख्या : 74

गोर मुँह

गोर मुँह मणि मन मुसुका
बूध जानि बुधजन कहैत एला
बाट-बटोही बटिया पकैड़
बटगमनी स्वर भरैत एला।
बटगमनी स्वर भरैत एला।

देखि देखि, सून-सूना
खीस खीसिया खखसैत एला
सुखा डाहि सुखौत सुख
दुख दुखिया देखबैत गेला।
दुख दुखिया देखबैत गेला।
गोर मुँह...।

रूप पकैड़ सरूप गढ़ि-गढ़ि
सरूप रूप संगैत गेला
पतिया पात पतिया-पतिया
गोंति-गोंति मुँह गोंतैत गेला।
गोंति-गोंति मुँह गोंतैत गेला।

गोर मुँह...।

झोंका-झोंका झुका-झुका
झुकिया-झुकिया झुलैत गेला
मुँह गोरि मन मणि मुसुका
बूध जानि बुधजन कहैत एला।
बूध जानि बुधजन कहैत एला।
गोर मुँह...।

❍

शब्द संख्या : 85

कतरा आम

कतरा आम की माइन नै?
तँए कि ओ आम नै भेलै।
रूप-रंग गुण सु-सुआद
अंश आम की नै भेलै?
अंश आम की नै भेलै?

पेब गुण जेना आम गुन-गुना
रसिया रस रसाइत गेलै।
तहिना अंशी अंश बनि-बनि
रसिक जन जगजगाइत गेलै।
रसिक जन जगजगाइत गेलै।
कतरा आम...।

अंश एक कटि बिरीछ जन
संग दोसर धड़ैत गेलै।
अंश-अंशी संगोर छोड़ि
जीव-जगत कहबैत गेलै।
जीव-जगत कहबैत गेलै।

कतरा आम... ।

अंशी अंश जग जन जगा
खेल संसार रचैत गेलै।
कियो खेलाड़ी खेल पकैड़
अंशी-अंश मिलैत गेलै।
अंशी-अंश मिलैत गेलै।
कतरा आम...।

❍

शब्द संख्या : 88

सुखल पोखरिक

सुखल पोखरिक जाठि जेना
जन-जिनगी सुखाइत गेलै।
एलै-गेलै ससैर ससैर
माने मन भोथाइत गेलै।
माने मन भोथाइत गेलै।

बरखा, रौदी बहि बाढ़ि
बले-बल बलुआइत गेलै।
जलधर धार धेने कहियो
जान मारि मटियाइत गेलै।
जान मारि मटियाइत गेलै।
सुखल पोखरिक...।

दशानन जहिना कहियो
धारे-धार धड़धड़ाइत गेलै।
धारे-धार जाने जान
संग मीलि जल-जलाइत गेलै।
संग मीलि जल-जलाइत गेलै।

सुखल पोखरिक...।

गमे-गम कमि कैम कमिया
कामे कम कमियाइत गेलै।
पेटे-पेट पटिया-पटिया
बाते-बात बलुआइत गेलै।
मीत यौ,
बाते-बात बलुआइत गेलै।
सुखल पोखरिक...।

❍

शब्द संख्या : 78

श्रोता कहि

श्रोता कहि-कहि सुत-सुता
सुरता सुरत रूप बनौलक।
नैन नीन निनिया-निनिया
वाण चालिक बैन धड़ौलक।
वाण चालिक बैन धड़ौलक।

जेहेन बन चलियो तेहेन
वाणि चालि जिनगी पकड़ौलक।
पकैड़ चालि चल चलिया
आंकर पाथर संग सजौलक।
आंकर पाथर संग सजौलक।
श्रोता कहि...।

आंकर अँकुर पथ पथरा
भूमि निरभूमि भँजियौलक।
रौदिया रौद पानि पनिया
जड़िया जड़ि-जड़ि जाड़ जड़ौलक।
जड़िया जड़ि-जड़ि जाड़ जड़ौलक।
श्रोता कहि...।

काँच माटि कुंभ जहिना
चक चकिया चाक चरहौलक।
तरे-ऊपरे मूठ मुठिया
पत पता पात पतियौलक।
पत पता पात पतियौलक।
श्रोता कहि...।

❍

शब्द संख्या : 82

जड़ि जंजालक

जड़ि जंजालक फेड़मे
टूटि विचार बदलाइत गेल
सुखा-सुखा, अलिसा-अलिसा
माँड़ मारि मरियाइत गेल।
माँड़ मारि मरियाइत गेल।

मारिते माड़ी नैन-बैन
सुरता सरुप झँपाइत गेल।
नीक, की नीक, अध की अधला
फेड़-कनफेड़ फेड़ाइत गेल।
फेड़-कनफेड़ फेड़ाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

फड़िते कनफेड़ मन बदलि
मँुगबा मारि मराइत गेल।
मने-मने मनुआँ पकैड़
लेऊँच होइत लुटाइत गेल।
लेऊँच होइत लुटाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

फेड़-फेड़ कनफेड़ पेब
मरमराइत मन मराइत गेल।
नैन विचार कन-कनक मन
फीड़ा-फीड़ा फीड़ाइत गेल।
फीड़ा-फीड़ा फीड़ाइत गेल।
जड़ि जंजालक...।

❍

शब्द संख्या : 78

उगिते लाज

उगिते लाज-विचार मनमे
कल-कल विवेक कलियाए लगै छै।
रभैस रंग गुण गण गमकि
धरती-अकास छिछियाए लगै छै।
धरती-अकास छिछियाए लगै छै।

सजि पात पंतियाए-पंतियाए
बिरीछ बाट बटियाए लगै छै।
अन्ना-गाहिंस फूल-फड़ सन
संगोरि संगोर बाचि कहै छै।
संगोरि संगोर बाचि कहै छै।
उगिते लाज...।

जगिते बीज बिचैड़-बिचैड़
दूसन-भूसन साजि सजै छै।
सजैत सेज सहटि-सहटि
बन विवेक बुध बीच बचै छै।
बन विवेक बुध बीच बचै छै।
उगिते लाज...।

पुरुष विहिन नारी जेना
बीधब धरम धारणा धड़ै छै।
बिनु विवेक बुधियो तेना
राँड़ संग मसोमात कहै छै।
राँड़ संग मसोमात कहै छै।
उगिते लाज...।

❍

शब्द संख्या : 93

ओन्हा चालि

ओन्हा चालि पकैड़-पकैड़
अन्हुआ बात बजैत एलिऐ।
ओन्ह-ओन्ह बीच बिचैड़
ओन्हु-ओन्हु कहैत एलिऐ।
ओन्हु-ओन्हु कहैत एलिऐ।

घाट-बाट ठेकान कोन
धड़-धड़ घर-घर कहैत एलिऐ।
बीन बोल सुनि नाग जेना
छिछलि-छिछलि नचैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

घाटे-घाट बाटे-बाट
रतिया दिन कहैत एलिऐ।
रीतिया रीत रति रीता
राहगीर राह रहैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

जे भूमि जोगी जनाबए
भूमि मिथिला कहैत एलिऐ।
भोगी भोग लागि लपटा
निसिचर लंका भखैत एलिऐ।
ओन्हा चालि...।

❍

शब्द संख्या : 67

गिरैत घर

गिरैत घर जँ निमून गाए
साहस कऽ सुरक्षित निकालि सकिऐ
कदम-कदम उठि उठा कदम
साहस काज अदम कहा सकिऐ।
साहस काज अदम कहा सकिऐ।

अदम काज करै खातिर
अदम साहस जँ बटोरि सकिऐ।
अदम इजोतक अदम रश्मि
अदमा ज्योति जोतिया सकिऐ।
अदमा ज्योति जोतिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

अदम ज्योति केर अदम हीर
हीर-हीर धीर धड़िया सकिऐ।
हीर-हीर धीर धड़ि पकैड़
हीर-हीर सीर सेरिया सकिऐ।
हीर-हीर सीर सेरिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

हीर-हीर सीर सिर पकैड़
कूदि धार अगम कुदिया सकिऐ।
वेग पकैड़ वेग वाणकैं
अगम धार बीच बचिया सकिऐ।
अगम धार बीच बचिया सकिऐ।
गिरैत घर...।

❍

शब्द संख्या : 95

अना गाहिंस

अना-गाहिंस घर खसै छै।
मीत यौ, अना-गाहिंस घर खसै छै।
केतौ बाढ़ि तँ केतौ झाँट
लगि-लगि आगि केतौ खसै छै।
मीत यौ,
लगि-लगि आगि केतौ खसै छै।

बढ़ि बाढ़ि बढ़िया-बढ़िया
धड़-धड़, घर-घर पेबै छै।
पैस सीर-सीरा आगू
मने-मन मोइन फोड़ै छै।
मने-मन मोइन फोड़ै छै।
अना गाहिंस...।

झटिया झाँट पछड़ि-पछड़ि
सीक आँखि सिकिया खसै छै।
हारल मन मारल बिहारि
खुशिया घर खिसिया खसै छै।
खुशिया घर खिसिया खसै छै।
अना गाहिंस...।

लगि-लगि आगि हब हवा पेब
जने-जन मने मन जरै छै।
आगि पेब अगिया-अगिया
तन-मन धन धाम खसै छै।
तन-मन धन धाम खसै छै।
अना गाहिंस...।

❍

शब्द संख्या : 96

सुखल पोखरिक

सुखल पोखरिक माइट जेना
गुन-गुना धड़-धड़ा कहै छै।
जल-जलाइत पट-पटाइत
अलप राग अलापि कहै छै।
अलप राग अलापि कहै छै।

केतबो रौद-बसात औत
कहियो किछु ने कहि सकै छै।
मुदा, माटि मटिया, मटिया
डाहि रौद रदिया कहै छै।
डाहि रौद रदिया कहै छै।
सुखल पोखरिक...।

मेट गेल सरवर-सुरसैर
हारि मानि हरिआ कहै छै।
कंचन हरिअर पानि कहाँ
घास-फूस फुसिया कहै छै।
घास-फूस फुसिया कहै छै।
सुखल पोखरिक...।

समुद्र जल अन-धन धरती
संग मिलि बतियाइत कहै छै।
भव-भूम समुद्र भव पैस
भवसागर असनान कहै छै।
भवसागर असनान कहै छै।
सुखल पोखरिक...।

❍

शब्द संख्या : 90

लत्ती जेना

लत्ती जेना पानि पकैड़
ठाढ़ गाछ कहबैत कहै छै।
जल कमल ठरकमल कहि-कहि
थलकमल रूप रूपैत रहै छै।
थलकमल रूप रूपैत रहै छै।

नाड़ पकैड़ कमल जहिना
असुअन आँखि धड़ैत एलैए।
असिया आस लागि लगा
बाइन लाज धड़बैत एलैए।
बाइन लाज धड़बैत एलैए।
लत्ती जेना...।

बाजि-बाजि बीज बनि बना
बोनझार छीटि छिटैत एलैए।
लाजबन्त लजबिजी कहि
फूल काँट सिरजैत एलैए।
फूल काँट सिरजैत एलैए।
लत्ती जेना...।

लत्ती आकि गाछ बिरीछ
फड़-फड़ फड़ियाइत एलैए।
कोनो गाछ फल बनि फूल
कोनो घौंदे घौंदियाइत एलैए।
कोनो घौंदे घौंदियाइत एलैए।
लत्ती जेना...।

❍

शब्द संख्या : 88

पानि-माटि

पानि-माटि ताबे नै पुछै
जाबे माटि सुखल रहै छै।
पबिते रस रसिक रसिया
संगी संग सिरजए लगै छै।
संगी संग सिरजए लगै छै।
पानि माटि...।

मील दुनू संकल्प ठानि
पौध पेड़ लगबए लगै छै।
सटि छाती छतिया-छतिया
सिरजन सीस देखए लगै छै।
सिरजन सीस देखए लगै छै।
पानि माटि...।

कोनो सीस अकास चढ़ि
कोनो धरती धड़ए लगै छै।
जोजन आठ हटलो रहने
हीर-हीर सटबए लगै छै।

हीर-हीर सटबए लगै छै।
पानि माटि...।

पेब प्रेम प्रेमी पकैड़
धरती-अकास बरिसए लगै छै।
धारी धरती पकैड़-पकैड़
भूमि मातृ कहबए लगै छै।
भूमि मातृ कहबए लगै छै।
पानि माटि...।
❍
शब्द संख्या : 95

गोहि बनि

गोहि बनि गोरिया गेलौं
मीत यौ, बनि गोहि गोरिया गेलौं

उतैर गेल सभ पानि देहक
पानियेँ-पानि गोरिया गेलौं।
तीनकोनमा मुँह बनि-बना
खोलैये बेर हेरा गेलौं।
खोलैये बेर हरा गेलौं।
गोहि बनि...।

पेबिते खाधि मन मनिया
खधे-खाधि मोनिया गेलौं
पनिया पग पकैड़-पकैड़
पनिया गोहि कहबए लगलौं।
पनिया गोहि कहबए लगलौं।
गोहि...।

माटि गोहि मोहि मोहिया

मोहिये मोहि मोहिया गेलौं
दालिये संग पातो महा
कुट्टी-कुट्टी कटा गेलौं।
कुट्टी-कुट्टी कटा गेलौं।
मोहि बनि...।

तँए शिकारी सिकैड़ छोड़ि
पानि पैसि पखिना पकड़लौं
पानि बीच पनिया-पनिया
अकास हवा बहैत देखलौं।
अकास हवा बहैत देखलौं।
गोहि बनि...।
❍
शब्द संख्या : 91

जेहेन जे

जेहेन जे मौसम अबैत
सएह ने प्रकृत पकड़ै छै।
कोनो हरिअर कचोर करि
तँ कोनो झड़पात बनबै छै।
तँ कोनो झड़पात बनबै छै।
जेहेन जे...।

जेहेन जे प्रकृत अरैज
तेहने ने मनुखतो पबै छै।
समए पाबि जहिना कलशै
तहिना उजैह-उपैट जाइ छै।
तहिना उजैह-उपैट जाइ छै।
जेहेन जे...।

एक प्रकृत दुनियाँ रचबे
दोसर निरमान मनुख करै छै।
जेहेन जे संगी प्रकृति
तेहने जशो-सुजश पबै छै।

तेहने जशो-सुजश पबै छै।
जेहेन जे...।

कननी-मननी आबि-आबि
कननी जड़ि कोरए लगै छै।
जड़ि-जाड़ उतरिते उतैर
बिमल मन बिलमैत कहै छै।
बिमल मन बिलमैत कहै छै।
जेहेन जे...।

❍

शब्द संख्या : 93

चेत चेता

होरी होड़ हूड़-हूड़ा
चेत चेता गाबए लगै छै।
जाड़क जड़ाएल वसन्त
उमैस भाव पाबए लगै छै।
उमैस भाव पाबए लगै छै।
चेत चेता...।

अन्हर-बिहाड़ि पग पकैड़
गछिया गाछ गछाड़ए लगै छै।
सुख सुखा संग सुखाएल
टूक तोड़ि खसबए लगै छै।
टूक तोड़ि खसबए लगै छै।
चेत चेता...।

पबिते भाव चेत वसन्त
बड़ चेता गाबए लगै छै।
चौमासा, छौमासा संग
बारहो मास गाबए लगै छै।
बरहमासा गाबए लगै छै।

चेत चेता...।

फगुआ रंग रंगि-रंगि
आल-गुलाल उड़बए लगै छै।
डम्फा-ढोल बाजा बजा
गीत जोगिरा गाबए लगै छै।
गीत जोगिरा गाबए लगै छै।
चेत चेता...।

❍

शब्द संख्या : 92

अन्हर जाल

अन्हर जाल अन्हरजाली बनि
घाट अन्हार पसरए लगै छै।
अन्हरोखे जल जाल पसैर
अन्हेर अन्है करए लगै छै।
अन्हेर अन्है करए लगै छै।
अन्हर जाल...।

लोभी लोभ लोभ कौखनो
दोहरा-तेहरा चाप चपै छै।
उगिते लुत्ती लपैक-लपैक
बीच धरती रगड़ए लगै छै।
धरती बीच रगड़ए लगै छै।
अन्हर जाल...।

अनहा-कनहा कहि कहा-सूना
राति-दीन सुनबैत रहै छै।
ने पनिया माछ ने भूधर
उला-पका चीबबैत रहै छै।
उला-पका चीबबैत रहै छै।
घाट अन्हार...।

सभ दिन एलहे कहै छै।
सभ दिन गेलहे कहै छै।
सब दीन भेलहे कहै छै।
लेलहा-देलहा कण्ठ मोकि
बेथा-कथा सुनबैत रहै छै।
बेथा-कथा सुनबैत रहै छै।
अन्हर जाल...।

❍

शब्द संख्या : 99

डायरीक

डायरीक जरूरी ओकरा
अनधुन जिनगी जेकर।
बान्हल खुट्टा गाए जेना
कि करत डायरी तेकर।
कि करत डायरी तेकर।
डायरीक...।

डायरीक तँ एक्के उदेस
तिथि-मिति तारीक तेकर
पल-मिनट सेकेण्ड तेकरा
घट-घट घटना जेकर।
घट-घट घटना जेकर।
डायरीक...।

पल पलिया पलि पला
सालक साल औरुदा जेकर।
मानि गेलौं बीस बरिस
समए-साल ससरत तेकर।
समए-साल ससरत तेकर।
डायरीक...।

घर-घर घण्टी बान्हि-बान्हि
घट-घट घण्टी तेकर।
घाँटी-घण्टी घटि घटैन
औरुदा पाबै तेकर।
औरुदा पाबै तेकर।
डायरीक...।

❍

शब्द संख्या : 72

बरहबटू

बरहबटू समाज बनि-बनि
बरहबटू समाज बनल छै।
ने बाट ने ठेकान लोक
बेठेकान समाज बनल छै।
बेठेकान समाज बनल छै।
बरहबटू...।

बिन ठेकानल बाट जेना
थहि-थहि थाहि-थाहि चलै छै।
तहिना ने समाजो समैत
गुरकुनियाँ मारि चलै छै।
गुरकुनियाँ मारि चलै छै।
बरहबटू...।

रेहे-रेह बोली वाणिक
मौला मन मरि-मरि मरै छै।
समए पाबि जहिना पतफूल
हहैर-हहैर हीर छोड़ै छै।
हहैर-हहैर हीर छोड़ै छै।
बरहबटू...।

मने नहि तँ बाइन बोल की
मन-मरदन मरदैत रहै छै।
जहिना बरहबटू समाज समैत
तहिना समाजो समवैत रहै छै।
तहिना समाजो समवैत रहै छै।
बरहबटू...।

❍

शब्द संख्या : 88

चोटी छुबए

चोटी छुबै जखन चट-चटिया
चटिया चाट चटैत रहै छै।
जीनगानिक रंग रभससँ
सुर जिन्दादिली भरैत रहै छै।
सुर जिन्दादिली भरैत रहै छै।
चोटी छुबए...।

बून-बून अकास बनि-बनि
धड़-धरती छुबैत रहै छै।
चूह चुहुटि साटि सटि छाती
दूध-फूल बनबए लगै छै।
दूध-फूल बनबए लगै छै।
चोटी छुबए...।

करम-धरम खेल सिर सिरैज
नचनी नाच नचैत रहै छै।
बाट-बटोही पकैड़-पकैड़
मूंगबा मुँह बिलहैत रहै छै।
मूंगबा मुँह बिलहैत रहै छै।
चोटी छुबए...।

मुँह जखने मूंगबा पड़तै
मधु मन मधुराइत रहै छै।
पाबि-पाँखि माछी पकैड़
रस मधु बिलहए लगै छै।
रस मधु बिलहए लगै छै।
चोटी छुबए...।

❍

शब्द संख्या : 93

खेल-खेलाड़ी

खेल खेलाड़ी खेल ठानि
कबडी दौड़ दौड़ैत एलैए।
सीमा बान्हि भौक भौकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

नमगर-चौड़गर परती पराँत
नमहर डेग डेगैत एलैए।
आम छी, जाम छी, करिया लताम छी
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
साँस छोड़ि रेड़ैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

एक साँस चेत कबड्डी
चीका-दरबर करैत एलैए।
भौक बनि भोकिया-भोकिया
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
छुबि-छुबि छुतबैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

धरती खुनि-खुनि मुदा एहनो
अखड़ाहा बनबैत एलैए।
माटि संग हाथ मिल-मिला
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
वीर भूमि सिरजैत एलैए।
खेल-खेलाड़ी...।

❍

शब्द संख्या : 79

ककोड़बा

ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।
मीत यौ, ककोड़बा बिआन ककोड़बे खाइ छै।

बिनु सिर-पएर सजि-सजि
चुट्टा-चांगुर चुहुटए लगै छै।
अपने सिरजल-जल्ला-झल्ला
खद-खुद डिरिआए लगै छै।
खद-खुद डिरिआए लगै छै।
ककोड़बा...।

खखैर-खखोड़ि खखरी बनि
दन-दनाइत कहैत रहै छै।
माटि-पानि सभ हमरे-हमरे
कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
मीत यौ, कुम्हरा ढेर बनबैत रहै छै।
ककोड़बा...।

जेर निकैल जड़िया-जेड़िया
पाछू पेट छिछियाए लगै छै।

केतए जाएब केतए जाइ छी
ठेकानो कहाँ रहि पाबै छै।
मीत यौ, ठेकानो कहाँ रहि पाबै छै।
ककोड़बा...।

❍

शब्द संख्या : 79

सोर बनि

सोर बनि सन्हिया सान्हि
सिर चालि चलए लगै छै।
सिर-सिरा सिरसिरा चुहटि
बत-बता बतबए लगै छै।
बत-बता बतबए लगै छै।
सोर बनि...।

फुलहैर फूल फड़ फलहैर
बड़गद बिरीछ बनए लगै छै।
कट्ठा कहि नट्ठा बनि बना
सघन-घन बन धड़ए लगै छै।
घन सघन बन धड़ए लगै छै।
सोर बनि...।

पकैड़ मूस मुँह मुसका
शील-सिनेह सिरजए लगै छै।
पकैड़ पूछ पुछड़ी पकैड़
घाट-घट घटियबए लगै छै।
घाट-घट घटियबए लगै छै।
सोर बनि...।

कूट चित्र घट-घट घटा
पौरुष-पुरुष गढ़ै लगै छै।
कूट कुटि कूटि पीस केर
सिर शिखरणी गढ़ए लगै छै।
सिर शिखरणी गढ़ए लगै छै।
सोर बनि...।

❍

शब्द संख्या : 96

सेज-सिंगार

सेज सिंगार सजि साजि-साजि
साध सत् धड़ए लगै छै।
दूर-दूर दुरगम द्दग द्दश्य
सोलह सोर करए लगै छै।
सोरह सोर करए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

बनिते दहाइ एकाइ बदैल
सजि फूल सि◌ंगार धड़ै छै।
बाल-भाल लीख-लीख लखा
धार जिनगी कुदए लगै छै।
जिनगी धार बहए लगै छै।
जिनगी धार बहए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

सोर पकैड़ शोर सोर शोर
सोड़ह सोरहा करए लगै छै।
जिनगीक टपान टपिते टपैत
दोहरी सेज सजए लगै छै।
दोहरी सेज सजए लगै छै।

सेज-सिंगार...।

बदला-बदली करए धन-धेनु
धाम-काम कहबए लगै छै।
मिथि मालिन मन मलि◌-मलि
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
मिथिलांगना कहबए लगै छै।
सेज-सिंगार...।

❍

शब्द संख्या : 98

जएह लूरि

जएह लूरि-बुधि मन पकड़ए
तेहने टा जिनगी भाय यौ।
नगर नजरि निहारि-निहारि
अराधि राखि जिनगी भाय यौ।
अराधि राखि जिनगी भाय यौ।
जएह लूरि...।
लूरि-बुधि गरजोड़ बनि-बनि
गरदनि-खूटा मिलैत रहै छै।
एक रक्षक एक भक्षक बनि
अमृत रस भरैत रहै छै।
अमृत रस भरैत रहै छै।
रंग-रंग फूल माला मालिन
मुसैक मुँह कली कलिआइ छै।
मालिन माला गढ़ि-मढ़ि
छत माली छतिया सजै छै।
छत माली छतिया सजै छै।
जएह लूरि...।

❍

शब्द संख्या : 70

जोति हर

जोति हर हरबाह हकैर
जिनगीक गीत गबै छै।
ले-ऊँच, ऊँच ले बनि वन
चोटी-ढाल बनबै छै।
गे भौजी, चोटी-ढाल बनबै छै।
जोति हर...।

बून पपीह स्वाती पकैड़
रस अमृत भरैत चलै छै।
कृत्तिृ-वृत्त परकृति पकैड़
तरे-ऊपरे सिर सजै छै।
गे भौजी, तरे-ऊपरे सिर सजै छै।
जोति हर...।

लत्ती बनि लतैड़-पसैर
लतमरदन करैत रहै छै।
चोटी जल टघड़ि-टघड़ि
खून पसीना एक करै छै।
गे भौजी, खून पसीना एक करै छै।
जोति हर...।

ओहए पानि टघड़ि-टघड़ि
झील-सरोवर सेहो सजै छै।
बाल-भाल कुशक कलेप
मरू स्थल गढ़ैत रहै छै।
गे भौजी, मरू स्थल गढ़ैत रहै छै।
जोति हर...।

❍

शब्द संख्या : 96

हर हलक

हर हलक हलन्तमे
मीर-दोल तेहल बनै छै।
पुर-पुष्कर पुरस्सर
बाट-घाट घटबी चलै छै।
बाट-घाट घटबी चलै छै।
हल-हलक...।
एक-दू-तीन चारि रहितो
गति इंजीन गाड़ी धड़ै छै।
बेहिसाब-हिसाब बनि बनि
धड़ि धड़ैक धड़ैत रहै छै।
धड़ि धड़ैक धड़ैत रहै छै।
हर हलक...।
लंक-अयोधिया सटि-हटि
संगी-संग चलैत रहै छै।
निरखि परखि बाट-बटोही
फल करनी भोगैत रहै छै।
फल करनी भोगैत रहै छै।
हर हलक...।

❍

शब्द संख्या : 62

हिम-गिरि

हिम-गिरि उत् उतुंग उमड़ि
निरमल अमृत धार बहै छै।
सिख-शिखर सिहैर-सहैर
गंग अकास बहैत रहै छै।
गंग अकास बहैत रहै छै।
हिम-गिरि...।

उतरे-दछिने धड़ैन धार
शिखर-सगर देखबैत रहै छै।
रंग-रंग फूल माल सजि
मन गंग सजबैत रहै छै।
मन गंग सजबैत रहै छै।
हिम-गिरि...।

हटि-सटि, सटि-हटि बैस-वेस
सागर-शिखर धड़ैत रहै छै।
गंग-अकास उतैर-उतैर
शिखर सगर पकड़ैत रहै छै।
शिखर सगर पकड़ैत रहै छै।

हिम-गिरि...।

○

शब्द संख्या : 64

भुवन भूचलि

भुवन भूचलि अकास
रंग-रंग तारा सजै छै।
तीन मिलि डंड तराजू
सभक तौल तोलैत रहै छै।
सभक तौल तोलैत रहै छै।
भुवन भूचलि...।

कखनो दायाँ वायाँ कखनो
कीर-किरदानी करैत रहै छै।
तेकठीक आस बिनु पौने
उदय-अस्त करैत रहै छै।
उदय-अस्त करैत रहै छै।
भुवन भूचलि...।

सातो सगर देखि सतभैंया
कचबच बचकच करैत रहै छै।
भोर होइत भहड़ि-भड़ड़ि
थकथका थकथका सेज सजै छै।
थकथका थकथका सेज सजै छै।

भुवन भूचलि...।

○

शब्द संख्या : 69

खुजिते आँखि

खुजिते आँखि तड़पि तड़पि
पृथिवी पग पएर पड़ै छै।
धरती-अकास बीचो-बीच
खम्भ भेल देखैत रहै छी।
खम्भ भेल देखैत रहै छी।
पृथिवी पग...।

अकास अमरीत बसि बरसि
खोंइछ धरती भरैत रहै छै।
आशा-आशी आस जगोने
बरहमासा गबैत चलै छै।
भाय यौ, बरहमासा गबैत चलै छै।
पृथिवी पग...।

पर-वत बत-पर संग-संग
हेल समुद्र हेलैत रहै छै।
बालु ऊपर ढेर बाइन बना
ढुइस हेल हेलैत रहै छै।
मीत यौ, अहींकेँ कहै छै
ढुइस हेल हेलैत रहै छै।

पृथिवी पग...।

जगरनाथ गेनिहार जानथि
समुद्र ढूसि चलैत रहै छै।
पीठ मँुह पाछू घुमा
ढूसि वेग पबैत रहै छै।
ढूसि वेग पबैत रहै छै।
पृथिवी पग...।

❍

शब्द संख्या : 101

मुड़जन मनुहर

मुड़जन मनुहर पकैड़-पकैड़
तान विरूदावली तनै छै।
दोहन-दौजी कूदि-चमैक
रचि-रचि रास रचै-बसै छै।
संगी, रचि-रचि रास रचै-बसै छै।
मुड़जन मनुहर पकैड़-पकैड़
तान विरूदावली तनै छै।
मुड़जन मनुहर...।

मुसैक मुसकी मसैक-मसैक
कन-आनन अनैत रहै छै।
नेंगरा-लुल्हा, जरल-मरल
बेणु-वन वीणा वाणि धड़ै छै।
संगी, बेणु-वन वाणि धड़ै छै।
मुड़जन मनुहर...।

शूर-सूर, मूड़ मुड़ि-मूड़ि
पग-प्रेम पबैत रहै छै।
लट्टा-चूड़ा, खट्टा दही
भोज ब्रह्म गबैत कहै छै।

संगी, भोज ब्रह्म गबैत कहै छै।
मुड़जन मनुहर...।

❍

शब्द संख्या : 71

गोधूलि-बेल

गोधूलि-बेल डगर डगरि
थन-माइक थुथुन थुथबै छै।
आस सूर्ज असतन पेब
तर-ऊपर चमकए लगै छै।
तर-ऊपर चमकए लगै छै।
गोधूलि-बेल डगर डगरि
थन-माइक थुथुन थुथबै छै।
गोधूलि-बेल...।

करुआ काल अबैत देख
पग-पगहा पाछू घीचै छै।
पाँचम पहर पहल पहीर
रग-रग रंग रगड़ए लगै छै।
दीब साँझक दिव्य पाबि
सगुनियाँ कहबए लगै छै।
सगुनियाँ कहबए लगै छै।
गोधूलि-बेल...।

राति दबा दबदबाइत प्रभा
भाेर-भुरुकबा जगए लगै छै।

दुर-दुरा, दुर-दुरा दूरा
प्रात सूर्ज घीचने अबै छै।
प्रात सूर्ज घीचने अबै छै।
गोधूलि-बेल...।

❍

शब्द संख्या : 79

दौड़ि-दौड़

दौड़ि-दौड़ दउर घोर-घन
तैयो ने बाट भेटै छै।
कारी भार भारी करि-करि
अन्हरोख घाट बनबै छै।
अन्हरोख घाट बनबै छै।
दौड़ि-दौड़ दउर घोर-घन
तैयो ने बाट भेटै छै।
दौड़ि-दौड़...।

अन्हार घर साँपे-साँप
विसबिसाह बनबैत कहै छै।
इजोतो अनरोख भऽ भऽ
घोरि अन्हार सघन करै छै।
घोरि अन्हार सघन करै छै।
दौड़ि-दौड़...।

लीला बड़ लीलाधर बड़-बड़
राशि-राशि रास रचै-बसै छै।
उनमत मन मत मता-मता
चालि मस्ती धड़ैत कहै छै।

चालि मस्ती धड़ैत कहै छै।
दौड़ि-दौड़...।

❍

शब्द संख्या : 74

चोट-चाट

चोट-चाट चोटिया देलकै
मुँह-नाक भसका देलकै।
मुँह-नाक भसका देलकै।
मुँह-नाक...।

कान कनक छीनि-वीनि
बौक बहिर बना देलकै।
नाक-मुँह-कान ताकि
चोट-चाट चोटिया देलकै।
मीत यौ, चोट-चाट चोटिया देलकै।
मुँह-नाक...।

बहिर-बौक मिलि-मिलि
मलि आँखि मसका देलकै।
गन्ह महक महक गन्ह
दिन-राति गनहा देलकै।
मीत यौ, दिन-राति गनहा देलकै।
मुँह-नाक...।

साँझ बेला वेली फूलि

भोर-भुरुकबा कहए लगै छै।
रतुका पार खेप खापि
दीनका चालि धड़बै छै।
यौ मीत, दीनका चालि धड़बै छै।
मुँह-नाक.....।

❍

शब्द संख्या : 70

चाइन चेन

चाइन चेन थर-थीर थितिते
चान-मुँह मुस्की भरए लगै छै।
हास-परिहास अट्टाहास
लोक सूर्ज पहुँचए लगै छै।
सूर्ज लोक पहुँचए लगै छै।
चाइन चेन थर-थीर थितिते
चान-मुँह मुस्की भरए लगै छै।
चाइन चेन...।

तन-तना तक ताकि तरेगन
हिया-हिया देखैत रहै छै।
रंग एक रोशनाइ अनेक
लालटेन राति गढ़ैत रहै छै।
मीत यौ, लालटेन राति गढ़ैत रहै छै।
चाइन चेन...।

असिते-अस्त सुधा ज्योति
साँझ पहिल अनघोल करै छै।
बनि सगुनियाँ तार-तारा
आगूक दम्भ भरैत रहै छै।

मीत यौ, आगूक दम्भ भरैत रहै छै।
चाइन चेन...।

❍

शब्द संख्या : 84

दीनक दोख

दीनक दोख कहै छी हे बहिना
दीनक दोख कहै छी।
बात-बात बतिया कतिया
हटि-हटि हाट हटै छी।
बत-रग्गर रगड़ि-रगड़ि
पीसि पीस पीबै छी।
हे बहिना, पीसि पीस पीबै छी।
दीनक दोख...।

घरे-अँगने बीज कोढ़ीक
छीटि-गाड़ि रोपाइत रहै छी।
फूल कोढ़ीक फलक तेहने
जिनगी पाठ पढ़ैत रहै छी।
हे बहिना, जिनगी पाठ पढ़ैत रहै छी।
दीनक दोख...।

निसाँ पीब नस-नस नसिया
निसाँएल घाट तकैत रहै छी।
रातिक हारल दिनक मारल
जिनगी गीत गबैत रहै छी।

हे बहिना, जिनगी गीत गबैत रहै छी।

दीनक दोख...।

❍

शब्द संख्या : 83

सगर समनदर

सगर समनदर सड़ि सरित
तन-मन आस सिरजै छै।
दुर्गा देवी हे माँ काली
असतन आस धड़बै छै।
मीत यौ, असतन आस धड़बै छै।
सगर समनदर सड़ि सरित
तन-मन आस सिरजै छै।
सगर समनदर...।

थन तन मन पशु धन
परबत सीस सजबै छै।
ढेर धार ढेरिआएल घाट
मन मनु माँ कहबै छै।
मीत यौ, मन मनु माँ कहबै छै।
सगर समनदर...।

पाश बैसि बसिया बुलकि
जिनगी तानि नचै छै।
हे माँ, नगर बीच रीति-रीत
सती-सावित्री पुछै छै।

मीत यौ, सन्त सावित्री पुछै छै।

सगर समनदर...।

❍

शब्द संख्या : 84

चप-चप

चप-चप चपचपा चपा
चपचपाइत चाप चपा गेलिऐ।
धार पेट चप-चपीमे
तकिते ताकि तरिया गेलिऐ।
मीत यौ, तकिते ताकि तरिया गेलिऐ।
चप-चप चपचपा चपा
चपचपाइत चाप चपा गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

चपचपाइत मन धकधकाइत तन
काप कपैत कतिया गेलिऐ।
ओलनि-छोलनि घर जहिना
भीत्ता धार भितिया गेलिऐ।
मीत यौ, भीत्ता धार भितिया गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

उठिते पूरबा पच्छिम चलि
पछिया पूब चलिया गेलिऐ।
चप-चप चपचपा चपा
खस्सिया खर्ग टंगा गेलिऐ।

मीत यौ, खस्सिया खर्ग टंगा गेलिऐ।
चपचपाइत चाप...।

❍

शब्द संख्या : 76

संगे-संग

घरक नाओं संगे गड़ा गेल
मीत यौ, ई गड़बड़ भेल उ गड़बड़ भेल?
नै यौ, हँ यौ, हँ यौ, नै यौ, हँ....।
ई गड़बड़ भेल, उ गड़बड़ भेल।
घरक नाओं...।

अदैल नीक बदैल अधला
अदलि-बदलि बदला गेल।
गारा गर पकैड़ पकड़, मीत
गारा घेघ बनबैत गेल।
मीत यौ, गारा घेघ बनबैत गेल
घरक नाओं...।

बाम दहिन बिनु बुझने-सुझने
छटि बाम बूच छटिया गेल।
डाली कसतारा सजि सजा
ई अधला भेल, मीत यौ ई अधला भेल।
ई अधला भेल, मीत यौ ई अधला भेल।
घरक नाओं...।

नोन खा सेरियत चुकाबै
पटिया पाठ पढ़ैत गेल।
अनोन-मीठनोन बनाबै
मीठ-मीठा मीठिया गेल।
मीठ-मीठा मीठिया गेल।
घरक नाओं...।

❍

शब्द संख्या : 103

जिनगीक भव

जिनगीक भव भँवरमे
अरबो दिन-दुनियाँ बसल छै।
अपन-अपन सीमा सहेजि
गर गड़ि सूर चान सजल छै।
जिनगीक भव...।

अपन-अपन अर्ज अरैज
मंडल अकार सकारि सजल छै।
उरजा उर्ज उरैज उरैज
आभा मंडल नाम धड़बै छै।
आभा मंडल नाम धड़बै छै।
जिनगीक भव...।

आभा परभा सहेजि सहेजि
प्रतिभा प्रभाव विलहै छै।
जहिना धड़-धड़ा धरती
तहिना ने चानो सूर्ज कहबै छै।
तहिना ने चानो सूर्ज कहबै छै।
जिनगीक भव...।

संगे-संग संगनी सने
संग मीलि गड़-जोर चलै छै।
बाँहि पकैड़ आभा प्रतिभा
आभामंडल चिकैड़ कहै छै।
आभामंडल चिकैड़ कहै छै।
जिनगीक भव...।

❍

शब्द संख्या : 89

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-47-6

इन्द्रधनुषी अकास

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

इन्द्रधनुषी अकास

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-44-5

दाम : ₹ 250/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

INDRADHNUSHI AKAS
Anthology of Maithili Poems by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार
एवं
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित...

एकसत्तैर

आमुख/12
मन-मणि/22
चल रे जीवन/23
धोब घाट/26
सासु-पुतोहु वार्ता/29
बौड़ाएल बटोही/32
अपनेपर हँसै छी/35
धोबि घाट/38
साँझ/40
सात्विक भाव/42
दिव्य शक्ति/44
उड़ियाएल चिड़ै/45
रणभूमि/47
सान-धार-धारा/50
पपीहाक गीत/52
विषधरक बीख/54
मिथिला केहेन/55
मौसमक मुस्की/56
आशा/57

आँखि/58
मधुरस/59
बीआ/61
महजाल/63
बाट/65
डभियाएल डगर/67
लज्जैत/69
गीत-1/70
गंग स्नान/71
फनकी/72
सभ किछु छै जालेमे/73
गंगा नहाए/75
गोधन पूजा/77
माटिक फूल/79
झगड़ा/81
नजैर/83
कमलाधार/84
बाल कविता/85
भभूत/86
झूठ-साँच/88
नव दुनियाँ/90
पुरुषार्थ/91
सरस्वती वन्दना/93
भीड़-भार/95
सरस्वती हमर/97
अगहन/98
केना मेटत गरीबी/100
बाढ़िक सनेस/102
अगो-लोढ़ा/103
हथियाक झटकी/105
रहसा चौर/107
बेरोजगारी/109
लीढ़ी पोखैर/111
बकरी भेराड़ी/113
महगी/115
जरनबिछनी/117
नव-फल/119
पू-भर/121
चौरीक धनकटनी/122
किसान/124
टुटैत जिनगी/126
कविता/127
बुड़िबकी/129
भुताहि गाछी/131
वोनक आगि/135
बीतल बर्खक विदाइ/136
संगी/137
बेथा/139
धब्बा/141
पितृपक्षक भोज/143
ठनका/145
झपासा/147
शिवचरन/149
चौठचन्द्रक छाँछी/151
भरदुतिया/152
फूसि/154
चिक्कनि माटि/155
झारू-बाढ़ैन/156
डगरीक डगर/158
चपरासी भाय/159
नोत/161
लटुआ/163
एकैसम सदीक देश/165
मधुमाछी/167
जुआनी/170
तरंग/172
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं/174
नँगरकट घोड़ा/176
गीत-2/178
फुलबतिया/179
करैलाक फूल/180
गिरहकट/181
मोबाइल फोन/182
पैछला गणित/183
कॉमन सेन्स/184

आमुख

हम मानव विज्ञान एवं कलाक शोधमे संलग्न शोधकर्मी छी। शोधकर्मीक भाषा बहुत सामान्य, technical, आ रसहीन होइ छइ। रसहीन विधामे संलग्न शोधकर्मी साहित्य तहूमे कविता आ छन्दपर भला की लिखि सकैत अछि? उपमा, अलंकार, सौन्दर्य, स्वप्न आदि हमरा सनहक शोधकर्मीक हेतु बाहरी परिवेशक वस्तु थिक। फेर हमर की उपयोगिता ऐ रचना केर सन्दर्भमे?

हलाकि साहित्य, मानव विज्ञान आ समाज विज्ञानमे गहन सम्बन्ध छइ। साहित्यक मूल्यांकन मानव विज्ञानक दृष्टिकोणसँ होबाक चाही। पश्चिमी संसारमे ऐ तरहक परम्पराक प्रारंभ बहुत पहिनेसँ भऽ चुकल छै मुदा भारतीय साहित्य संसारमे विशेष रूपसँ मैथिलीक मध्य ऐ तरहक प्रयोग कम छइ। साहित्य अकादमी तकमे ऐ तरहक यथार्थपर धियान नै देल गेल अछि। साहित्य अगर समाजक स्थितिक दर्पण नै भेल तँ केहेन साहित्य? कथा, कविता, उपन्यास अथवा कोनो रचनाकें समाजक कसौटीपर सही उतरबाक चाही। एकर मूल्यांकन के करत? निश्चित रूपे समाजक अध्यनमे संलग्न शोधार्थी। साहित्यक विद्यार्थी नहियौं होइत हम समाजक अध्ययन करैबाला शोधार्थी तँ छीहे। छी हम घोर आशावादी आ पॉजीटीव। साइत अपन अही पॉजिटीव सोच आ दृष्टिकोणक कारणे हम परमादरणीय जगदीश प्रसाद मण्डल केर कविता संग्रह इंद्रधनुषी अकास केर आमुख लिखबाक जिम्मा लऽ लेलौं। मण्डलजी विचारसँ प्रगतिशील आ सभ तरहक लोक-विचारधारा, परिस्थिति आ परिवेशमे सामंजस्य स्थापित करैबला साहित्यकार छैथ। अल्टरनेटिव डेवलपमेन्ट आ इकोलॉजिकल कन्सेप्टकें स्थानीयताक दृष्टिकोणमे बुझबाक आ अपन ज्ञान गंगाकें कथा, उपन्यास, नाटक एवं कविताक रूपमे बहेबाक असाधारण क्षमता छन्हि मण्डलजीमे। हिनकर रचना पढ़ैत जाऊ आ ब्यौंत-पर-ब्यौंत सुनैत जाऊ! हिनकर बात आ ब्यौंत सभ सहज, चमत्कारी मुदा विश्वसनीय लागत।

मण्डलजीमे सामाजिक क्रांति लेबाक असाधारण क्षमता छन्हि। ई चाहैथ तँ समाजक विभिन्न वर्गक बीच भयंकर उन्माद कखनो उत्पन्न कऽ देथि। लोक आपसमे मरए कटए लगत। जाति आ वर्गक राजनीतिमे तल्लीन भऽ जाथि। मुदा हिनक विशेषता ई अछि जे ई कहिओ बदलाक भावनासँ कार्य नै करै छैथ। हिनकर क्रांति मिथिला भूमिमे सभ वर्ग आ सभ लोकक मध्य आपसी विचारक, मेल मिलापक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति खाँटी शब्दक चयन आ ओकर प्रयोग करबाक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति लगातार ४० वर्षक अनुभवकें निश्चिंतसँ व्यक्त करबाक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति एकरंगी नुआ नै अपितु बहुरंगी चुनरी थिक। मण्डलजी शोषण केर चर्चा तँ अवश्य करै छैथ मुदा शोषित आ शोषक अथवा शोषित केर संतान आ शोषक केर संतानक बीच घृणाक वातावरण उतपन्न नै करै छैथ। मण्डलजी इतिहाससँ सबक लइ छैथ इतिहासक घावपर नोन नइ छिड़कै छैथ। ई इतिहासक सन्दर्भ लऽ लोककें वर्त्तमानमे जीबाक प्रेरणा दइ छैथ। सामाजिक दृष्टिकोणसँ ई बड्ड महतपूर्ण बिंदु अछि। ऐ तरहक बात कोनो साहित्यकारकें कालजइ बना दइ छइ। मण्डलजी मिथिलाक एवं मैथिलीक एक मानवीय धरोहर छैथ- लिविंग human Intangible Heritage.

मण्डलजी कोनो अड्डाबाजी अथवा गुटबाजीमे विश्वास नइ करै छैथ। राजनीति छोड़ि देलैन तँ छोड़ि देलैन। आब खाँटी रचनाकार थिकाह। रचनाक अलाबे किछु नइ करै छैथ। केवल हिनकर शब्द आ बिम्बपर बहुत किछु लिखल जा सकैत अछि। ओकर मानवीय मूल्य एवं आदर्शक महत लिखल जा सकैत अछि। हुनक जीवन शैली आ जिनगीक उतार-चढ़ावपर लिखल जा सकैत अछि। हिनकासँ पुरस्कार सम्मानित हएत; पुरस्कारसँ ई की सम्मानित हेता? ई बात हम बिना कोनो पूर्वाग्रहक लिखि रहल छी।

आब बात करी रचनापर। हिनक रचना "इंद्रधनुषी अकास" सरिपहुँ कविताक प्रकार, छोट-पैघक हिसाबे, भावनाक प्रवाहक हिसाबे, अनेक विषयमे होबाक कारणे बहुरंगी चुनरी अछि। अतेक विस्तृत विधा आ विषयकें समेटबाक कारणे ऐ संकलनक नामकरण ऐसँ उत्तम नइ भऽ सकैत अछि : वैविध्यसँ भरल, मनोरंजक, रंगारंग, दीवास्वप्न, सोहनगर-मनोरंजक आ मनोहारी अकास। ऐमे जीवनक यर्थाथ अछि, कविक कल्पनाक संसार अछि, उपमा आ अलंकार अछि, जीवनक दर्शन अछि, माटिसँ सिनेहक उद्गार अछि, गीत अछि, भाव अछि, अर्थ विन्यास अछि, प्रेमक अनुभवजन्य परिभाषा आ प्रवाह अछि, प्रकृतिक अनुराग अछि, ग्राम्य-जीवनक झांकी अछि चीर प्राचीन आ चीर नवीन विचार अछि।

"इंद्रधनुषी अकास" नामसँ अपन लिखल एकटा छोट कविता स्मरण अबैत अछि, आ स्मरण अबैत अछि ओ परिस्थित जइसँ प्रेरित भऽ पाँच वर्ष पहिने इंद्रधनुषपर एक छोट कविताक निर्माण केने रही। परिस्थिति ई छल जे हमर पाँच वर्षीय पुत्र शषांक हमरासँ जिद्द करए लागल जे 'हमरा इंद्रधनुष देखाउ।' मुदा देखाऊ कोना! घोर समस्या। किछु काल सोचमे पड़ि गेलौं। अन्ततः कम्प्यूटर खोलि इन्टरनेट चालू कऽ ओकरा इंद्रधनुषक अनेको फोटो देखा देलिऐक। शषांकक बालशुलभ मोन प्रसन्न भऽ गेलै। रातिमे सुतबासँ पहिने मोनमे आएल जे ऐपर किछु लीखी। पेन आ कागत लऽ लिखैले बैस गेलौं। सोचल कविता लिखल जाए। कविताक शीर्षक सेहो फुरा गेल- 'इंद्रधनुषक विन्यास' कविता स्वतः प्रारम्भ भऽ गेल-

"सुरुजक इजोतसँ भरल आकास दग्ध केतेक अछि
गर्मीक धाहसँ मोन विदग्ध केतेक अछि
कोना करी एहि प्रचण्ड गर्मीमे शीतलताक आभाष
कोना करी टहटहाइत इजोतमे इंद्रधनुषक विन्यास?
मुदा हारि मानब हमर प्रकृतिमे केतए अछि
एकाएक बुझाएल जेना इंद्रधनुष अतए अछि।
मोन हरियाएल ब्यौंत फुराएल इंद्रधनुषक निर्माण हेतु
कल्पनाकेँ सकार कय इंद्रधनुषक रचना हेतु
सोचल कोना नइ हएत इंद्रधनुषक विन्यास?
टहटहाइत सुरुजदेवकेँ ऊपर आँजूरसँ पोखैरक पानि छीटि,
सुखाएल धरतीकेँ हरिअर करबाक हेतु कऽ लेब एकटा
छोट मुदा यथार्थक इंद्रधनुषक विन्यास।
फेर की सभ भऽ जाएत सोहनगर,
की धरती आकि अकास।"

आब बिना एमहर-ओमहर भटकने जगदीश प्रसाद मण्डल जीक कविता संग्रहकेँ देखी।

कविताक ई पोथी मैथिली साहित्य केर एकटा अविस्मरणीय धरोहर अछि। हरेक छोट आ पैघ कवितामे किछु संदेश, किछु संस्कार आ किछु नव विचार प्रस्फुटित होइ छइ।

लोक मिथिलासँ बाहर पलायन करै छैथ तँ मण्डलजीकेँ कचोट होइ छन्हि। मुदा जखन लोक मिथिलासँ साफे रिश्ता समाप्त कऽ आनठाम बैस जाइ छैथ तँ मण्डल जीक हृदए जेना भोकासि पाड़ि-पाड़ि कानए लगै छन्हि। ऐ बातक सहज अनुभूति उड़ियाएल चिड़ैमे परिलक्षित होइत अछि-

"उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जेतए
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसैर जाएत डीहो-डावर।"

देखू! देस परदेस केतौ जाऊ मुदा अपन माटि आ अपन संस्कृतिसँ अपनाकेँ बिमुख नइ करू। साइत यएह बात थिक ऐ कविताक मूल। अगर आँखि मूनि पलायन करैत रहब आ अवसर एवं सफलता मात्र पेबाक कारणे अपन डीह-डावर सदाक लेल तियागि लेब तँ भला अहाँ केहेन मनुक्ख! अहाँक केहेन संस्कार? छोट कविताक माध्यमसँ केतेक पैघ आ मर्मक बात बजैत अछि जगदीश प्रसाद मण्डल केर कवि मोन! समाजशास्त्रक push आ pull factor अतए स्वत: आबि जाइत अछि।

एक आर कविता-

"चल रे जीवन...।"

अहाँकेँ रोकि लेत। कविता पढ़ु, ओकर शब्दक युग्मकेँ देखू आ कविताक संग अपने-आपकेँ गतिमान बना लीअ। ने कविता रूकत आ ने अहाँ। कविता पढ़ैत जाऊ कल्पना संसारक दुनियामे घुमैत जाऊ। अलंकारसँ मतभिन्नता भऽ सकैत अछि मुदा कविताक प्रवाहमे तँ प्रवाहित भाइये टा जाएब। वाह रे वाह! एहेन आसाधारन सम्बन्ध कविता आ पाठकक बीच! जीवन गतिशील थिक। ई बात अनेको कवि अनेको भाषा आ कालमे अपना-अपना ढंगसँ कविताक माध्यमे कहने छैथ। मुदा अही बातकेँ सर्वहाराक शब्दावलीसँ कहब। कहब की चलैत पहियापर एना बैसाएब कि पाठककेँ जोश आबि जाइक। ई कला मण्डल जीमे छन्हि। कविताक किछु अंश देखू-

"किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटतो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।
समए संग चल
ऋतु संग चल
गति संग चल
मति संग चल।
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।"

हँ, कवि केवल गतिमान होमाक प्रेरणा टा नइ दइ छैथ। ओ कहै छैथ जे जोश संगे होशमे रहू : गति संग चल/ मति संग चल/ गति-मति संग चलिते चल।

'सासु-पुतोहु वार्ता' कवितामे जेनरेशन गैप आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटत। जखन कविता पढ़ब तँ लागत मनोरंजक अछि। जखन सोचब तँ लागत एकटा अनुभवजन्य विश्लेषण अछि। एक-एक शब्दक चयन कविताकेँ समाजसँ सीधे जोड़बामे प्रभावकारी अछि। ई कविता ऐ बातक साक्षी अछि जे मण्डलजीमे कथाक पात्रक अंतःकरणमे घुसबाक विलक्षण प्रतिभा छन्हि। स्त्रीगणक जखन बात करै छैथ तँ स्त्री, पुरुषक बात करए काल पुरुष; सासुक काल सासु आ पुतोहुक चारचाक क्षण पुतोहु। ओहने शब्दवाली, ओहने परिवेश, ओहने कविताक प्लाट।

"अपनेपर हँसै छी...।"

शिक्षाक घटैत स्तर, परीक्षामे नकल अथवा चोरि, घूस दऽ नोकरी प्राप्त करबाक तरीका, अवसरवादी नेता लोकैनक पॉपुलिज्म आ शिक्षा मित्र इत्यादि केर माध्यमसँ किछु पाइ मासिक भत्तामे राखब, ओइले मुखियासँ नेता आ अधिकारी धरि घूसक प्रचलन आदि प्रथापर सोझे-सोझ प्रहार अछि। भयमुक्त भेने सहजतासँ जनताक भाषामे जनताक समस्याक विवरण कवितामे करबाक साहस केलैन अछि मण्डलजी। जेकरा फबलै से बिना पढ़ने नकल कऽ परीक्षा पास कऽ डिग्री हासिल कऽ कोहुना लाख-डेढ़ लाख टकाक ब्यौंत कऽ नोकरी हथिया लेलक। भाँरमे जाउ शिक्षा बेवस्था या चौपट्ट होथु विद्यार्थी! शिक्षामित्र लोकैनकेँ ऐसँ की मतलब???

"बाट" कविता कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कविता यदि तोर डाक शुने केऊ न आसे/ तबे एकला चलो रे/ केर स्मरण करबैत अछि। संगहि-संग गीताक मूल मंत्र "कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेषु कदाचन" अर्थात अहाँक अधिकार कर्म तक सीमित अछि। तँए अहाँ कर्म करैत जाऊ, फलक इच्छा नइ करू... केर सेहो पुनर्स्थापित करए चाहै छैथ।

कवि भावुक सेहो छैथ। होबाको चाही। भावुक नइ भेल तँ कविताक कोना रचना करत कवि! कविक भावुक मोन गीतमे बहय लगै छइ।

"गीत-२" मे किछु एहने दशाक वर्णन थिक।

भावनासँ द्रवित मोन बाजत तँ कोना? बोल कन्ना फुटतै?

"मुहसँ बोल कन्ना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छै
टीससँ टिसकै छै छाती
लहि-लहि लटुआएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना...।
आशाक सभ मेटेलै
बाटे सभ घेराएल छइ

केकरो कहने किछु ने भेटत
अपने बेथे बेथाएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना...
चोटसँ चोटाएल छै मन
ढहि-ढहि कऽ ढनमनाइ छइ
तैयो हँसि-हँसि नाचय गाबए
राति-दिन बड़बड़ाइ छइ
मुहसँ बोल कन्ना... ।"

अही तरहेँ जाल आ गालक उपमा लऽ कवि लोककेँ अगाह करै छैथ : जहिना जाल सभ तरहक माँछकेँ पकड़ैत अछि, परन्तु अगर मल्लाह जालकेँ ठीकसँ नइ ओछेलक आ काबूमे नइ केलक तँ जाल फाटि जाइ छै, माँछ भागिओ जाइ छइ। तहिना मनुष्यकेँ अपन बोलीपर संयम करक चाही-

"शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल
देखैमे जहिना विकराल
तहिना ऐछो महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखियेमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइये
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकेँ के कहए
डोका-काँकोर धरि फँसैए।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे... ।"

जाल कविता छायावाद आ याथार्थवादक बीचक कविता अछि। जालक अनेक यंत्र तथा जालसँ माँछ मारबाक प्रक्रियाकेँ मूल मानि एक देसी कविताक विन्यास करबाक अनुपम क्षमता कविमे छन्हि।

विचार तँ विस्तारपूर्वक अनेको कवितापर लिखल जा सकैत अछि।

हिनकर ई कविता संग्रह हाथक आंगुर जकाँ थिक। सभ आंगुर स्वतंत्र अछि, मुदा सभ जुड़ल अछि तरहत्थीसँ। तहिना हिनकर रचना "इंद्रधनुषी अकास" नामक मालामे गांथल पनचानबे गोट कविता स्वतंत्र अछि- विषय, भाव, शब्द–चयन, प्रेम, उपमा आदिक स्वभावसँ परन्तु अन्तत: सभ कविता एक तागसँ गांथल अछि ओ ताग थिक जगदीश प्रसाद मण्डलक व्यक्तित्व आ दृष्टिकोण।

सभ कविता एक-सँ-बढ़ि कऽ एक अछि। "माटिक फूल, गोधन पूजा, झगड़ा, नजैर, भभूत, पुरुषार्थ, अगहन, केना मेटत गरीबी, बाढ़िक सनेस, बेरोजगारी, पू-भर, बेथा, एकैसम शदीक देश, अपनेपर हँसै छी, धोबि घाट, सात्विक भाव, पपीहाक गीत, विषधरक बीख, महजाल, नव दुनियाँ, रहसा चौर, जरनबिछनी, भुताहि गाछी, मधुमाछी" इत्यादि किछु एहेन कविता अछि जेकरा पाठक बेर-बेर पढ़ता।

मैथिली कविता संसारमे ऐ अनुपम धरोहरकेँ स्वागत अछि। पाठक जँ कविताकेँ मिथिलाक परिवेशमे बिना कोनो पूर्वाग्रहसँ अध्ययन करैथ तँ ऐ कविताक सरोवरमे जेतेक डुमकी लगेता तेतेक नवीनता आ स्फूर्ति प्राप्त करता। ऐमे कोनो संदेह नहि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
अड़ेर डीह टोल, मधुबनी

मन-मणि

मढ़ि-मढ़ि मणि मनकेँ
प्रज्वलित करू तनकेँ
धुआ-काया पकैड़ि-पकैड़
दिव्यभूमिक चिन्हू धनकेँ।
जखने मन मणि बनत
छिटकत ज्योति धरतीपर।
अपन बाट अपने देखब
हँसैत चलब पृथ्वीपर।

कानि-कानि दुख मेटबए सभ
नाचि-नाचि नचारी गबैए।
आर्त स्वर गाबि आरती
अपन-अपन बेथा सुनबैए।
छी अमूल्य मानव तन
चिन्ह बिना औषधि भारी।
चेतू-चेतू आबो चेतू
कहै छी अपने भैयारी।
श्रेष्ठ जीव मानव कहबै छइ
मानवता उदेश्य जेकर।
मनुख-मनुखक भेद-विभेद
मेटबैक छी धर्म ओकर।

❍

शब्द : 68

चल रे जीवन

चल रे जीवन चलिते चल।
संगी बनि तूँ संगे चल
जौवन चल जुआनी चल
जिनगानी संग मर्दगानी चल
चिन्तन संग दिलेरी चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

यात्रीकेँ आराम कहाँ छइ
यात्रा पथ विश्राम कहाँ छइ।
ओर-छोर बिनु जहिना जिनगी
तहिना ई दुनियोँ पसरल छइ।
पकैड़ मन तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

ग्रह नक्षत्र सभटा चलै छइ
सूर्ज तरेगन सेहो चलै छइ
दोहरी बाट पकैड़ चान
अन्हार-इजोतक बीच चलै छइ।
देखा-देखी चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

बाटे-बाट छिड़ियाएल सुख छइ

संगे-संग बिटियाएल दुख छइ।
काँट-कुश लहलहा-लहलहा
गंगा-यमुना धार बहै छइ।
परेख-परेख तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटितो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

समए संग चल
ऋृतु संग चल
गति संग चल
मति संग चल।
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

गतिए संग लक्ष्मी चलै छइ
सरस्वती मतिए चलै छइ।
विश्वासक संग अशो चलै छइ
तही बीच जिनगियो चलै छइ।
साहससँ सन्तोष साटि-साटि

धीरज धारण करिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

टूटए ने कहियो सुर-ताल
हुए ने कहियो जिनगी बेहाल।
जहिए समटल जिनगी चलतै
बनतै ने कहियो समए काल।
बुझि देख तूँ चलिते चल
चल रे जीवन चलिते चल।

की लऽ कऽ आएल एतए,
की लऽ कऽ जाइत अछि?
सभ किछु एतए छोड़ि-छाड़ि
जस-अजस लऽ पड़ाइत अछि।
निखैर-निखैर कऽ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

❍

शब्द : 245

धोब घाट

धोब घाट जाबे नइ जाएब
मलि झाड़ि चिक्कन नइ हएब?
देह मनक काह-कूह
छोड़ि ओकरा केना पएब।
थाल-कीच जहिना जनैम
कुआर-कमल कहबैए।
तहिना काह-कूह बीच
मन बुइध सिरजैए।

धोइब घाट ओ घाट छी
पाप धुआ पुन बनैत रहैत।
अज्ञान-ज्ञान राति-दिन
रगड़ि सान चढ़बैत रहैत।
बदैल अन्हार इजोतमे
छोड़ि राति दिने कहबैत।
जेकरे दिन तेकरे छी राति
लोक-वेद स्वर तानि कहैत।
बारह-घन्टाक बँटबारा फूसि
जेठक दिन राति कहैए।

उला-पका रातिकेँ
साले-साल सुर्ज सुड़कैए।
सुख-आरामक पहर छीनि

हँसि-हँसि राति-दिन झाड़ैए।
धरतीसँ सिर उठिते अकास
सोर बनि पकड़ए बात पताल।
ऊपर धरती पसैर अकास
तहिना धरती तर धरती सजाएल।
सात तल जहिना अकास
तहिना धरतियो धेने अछि।
ऊपरसँ जहिना अकास
तहिना धरतियो रखने अछि।
बढ़ैत वृक्ष जहिना अकास
सोर बनि सिरो ससरैए
वृक्ष सिर्फ ऊपर बढ़ैए
सोर ससैर दू बाट धड़ैए।
एक बाट ससैर पताल
दोसर अकास बाट धड़ैए।
जहिना बाँसक ऊपर-निच्चाँ
गिरह-गिरहमे सीर निकलैए।
अद्भुत खेल विधातोक छन्हि
दिन-राति रंगमंच बदलैए।
लगले ससैर सिर
गिरहसँ डारि-डारि पकड़ैए
बड़ू, बरहा बनि-बनि
लटैक डारि धरती पकड़ैए।
फुसिया, पनिया पोलहा-पोलहा
पएर पसाड़ैए रती-रती।
आँखि-मिचौनी खेल पसाइर

नाचि-नाचि सिर पसरैए।
करौटन नाओं धड़ा-धड़ा
फूलक घर आबि बसैए।
तँए कि खेल खतम भेल
कुदि-कुदि दिन राति नचैए।
पातसँ मुड़ी पकैड़
तरे-तर सेहो ससरैए।
जहिना डारि करौटन, लीची
खोधिते खोंइचा पकड़ैए।
नीचाँ-ऊपर ससैर-ससैर
अपन-अपन बाट पबैए।

❍

शब्द : 209

सासु-पुतोहु वार्ता

ओसार पूबरिया बैस सासु
पड़ल पुतोहुकेँ देल धाही।
अकड़ि कऽ मकड़ि बाजलि
देहक पानि लऽ गेलह हाही।

घर पछबरिया पुतोहु पकड़लैन
धाहीक छिटकल ओर।
लुक्खी सदृश ओर पकैड़
कसि कऽ धेलैन छोर।
पनिए तँ पसैर देहमे
पीब गेल सभटा पानि।
की करब, फुरिते कहाँ अछि
कहाँ पड़ल छी जानि।
उठितो-बैसतो असकताइ छी
तैयो, ससैर-ससैर सड़कै छी।
जाबे ई जीबै छथिन
छाहैरमे छिछिआइ छी।

खेल खेल खेला-खेला
खेलाएल खेलड़ी खेल खेलबह।
तहिएसँ खेल जिनगी
खेल-खेलाड़ी संग रहतह।
वामा-दहिना केम्हरो तकबह

ढंस हेतह सभ भेलहो-भेल।
लास जकाँ लसिया-लसिया
विश्राम-बाट चढ़ैत जेबह।
अबिते ओहन दिन देख
केलहा अपन मन पड़तह।
सुमैर-सुमैर सुमारक
पाथर-छाती रखबह।

हिनके धाही पकैड़-पकैड़
धाह-बोखार लगबै छी।
अलिसा-अलिसा ओछाइन
बेमरयाह कहबै छी।

हमरे सोझहा झूठ बजै छह
किए कहतह कियो बेमरयाह
अपन मन जेहेन मानह
सएह बनि-बनि रहिह।
तैयो फेर कहै छिअह
पुतोहुक सुख आब जनलौं।
पूर्बेक उधियाएल पछिमो दिस
पुतोहु-सासु सेहो बुझलौं।

बेस कहै छैथ, बेस कहै छैथ
बेटा-बेटी भेद केतए?
एक बेटी जाएत घरसँ

दोसर तँ लगले अबैत।
एकमे गुरुआइ केलैन
दोसर हुकुम चढौलैन।
रंग-रंगक शब्द बदैल
छातीकेँ धमकौलैन।

करब निचेन गप कहियो
नहि तँ आजुक काज हूसत।
गपे-गप ससैर-ससैर
रोग-वियाधि सेहो पकड़त।

❍

शब्द :186

बौड़ाएल बटोही

जहिना कोबर कनियाँ-नुकाइत
तहिना बाटो नुकाएल छइ।
अछैते घरमे रहितो रहैत
नजैरसँ कतियाएल छइ।
चुटकी बजा जेना कनियाँ
तहिना धकचुकबए बाटो बटोही।
आँखिक सोझ रहितो रहैत
पाबए ने थाह राही-बटोही।
दिन-राति चलितो-चलैत
देखए ने कखनो खुजैत कपाट।
पट्टामे पट्टा सटि-सटि
सदिखन बन्न रहैत दुआरि।
आठो पहर दिन-राति घुमै छइ
देख ने पबैत पड़ाएल पथिक।
कखैन केमहर घुसैक-फुसैक
पाबि ने पाबए पथ पथिक।

बन्न आकि खुजल केवाड़
नुकाएल नजैर नइ ताकि पबैत।
संगे-संग चलितो चलैत
ठेल-ठेल सदिखन कतियबैत।
बिनु देखल अनभुआर कहबैए
देखनिहार कहबै छै भू-आर।
अनुभुआर भुआर बीच

सदएसँ होइत आएल करार।

अपन-अपन सभ लूरिए-बुधिए
जनम लैत धरतीपर।
माए-बापक पुन-परसादे
पबैत पथ पृथ्वीपर।
अद्भुत खेल खेलैए दुनियाँ
दुनियोँक भरमार छइ।
जेहने खेल खेलेनिहार खेलाड़ी
हारि-जीत पड़ाइ छइ।
ऊपर-निच्चाँ सिर ससरै छइ
केतौ निच्चाँ केतौ ऊपर।
होनी-अनहोनी कहि-सुनि
बदैल खसैत धरतीपर।
सात तल जहिना छै ऊपर
तहिना नीच्चोँ निचियाएल छइ।
शिखर पहाड़ चढ़ैले
बाटो-घाट ढेरियाएल छइ।

बाटे बीच बटोही बनि◌ि-बनि
बाटे-बाट वौआइ छइ।
हँसैत-खेलैत चलैत
साँझूपहर ठेहियाइ छइ।
कियो जाए चाहए सुरलोक
स्वर्गक बास कियो चाहए।
कियो चाहए बैकुण्ठ जाइले
तँ कियो चाहै गौलोक।

बाटे बिला बुइध
बाटे बिसैर गेल।
जेम्हरे जे चलल
तेम्हरे पहुँच गेल।
छुटि गेल मनोकामना
छुटि गेल कामनाक भूमि
कामनो कमि-कमि
छिछलि गाबए झूमि-झूमि।

❍

शब्द : 197

अपनेपर हँसै छी

ठक विद्या विद्यालयसँ
नीकहा डिग्री किनलौं।
शिक्षामित्रक उजैहियामे
हमहूँ नोकरी पेलौं।
लाखे रूपैआमे,
दशो कट्ठा जमीन गमेलौं।
गुरुदक्षिना देने बिना
गुरुआइक भार उठेलौं।
दिन-राति गुरुआइ करै छी
मुँह भरल मधुरसँ।
जे निकलत सएह मधुर
सुनैत रहू अस्थिरसँ।
आरो बात सुनबै छी
अपनेपर हँसै छी।

मात्रा घुसका-फुसका
शब्द बनेलौं ठूठ डारि।
अक्षर काटि ईटा बनेलौं
साहूल खसा देलौं डांरि।
तीरछा-तीरछा चेन्ह लगा
कोने कानी लेलौं नाओं।
बाहरे-बाहर सोझ-साझ
उठि-बनि गेलै सौंसे गाओं।

पुरने घरक ईटा जोड़ि-जोड़ि
नवका घर बनबै छी।
अपनेपर हँसै छी।

पुरनाकेँ पुराण कहि-कहि
नवका चालि सिखबैत एलौं।
धर्म सनातन कहि-कहि
अर्थ-जाल फेकैत एलौं।
इचना पोठी छानि◌-छानि
डेली भरैत एलौं।
गुबदी मारि बिहुसै छी
मन कनैत, हँसैत तन
कठहँसी हँसि हँसै छी।
अपनेपर हँसै छी।

धन की? केकरा कहबै
धन यौ भाय?
गाए-माए छी एक्के
पुछि लियौन यशोदा माइ।
बिनु धनक धनिक जहिना
ताम-झाम देखबैए।
देख-देख आँखि करुआए
लाजे आँखि मुनै छी।
अपनेपर हँसै छी।

हेहरा गाछक फल खा-खा
हेहरपन्नी सिखैत छी।
दिन-राति हहैर-हहैर
निच्चाँ ससैर खसै छी।
उनटा मुँह आगू घुमा
कल्याण-कल्याण रटै छी।
क्षणे-क्षण पले-पल
रीत-नीति घटबै छी।
अपनेपर हँसैत छी।
गालक सितार बना-बना
राग-पुराणक स्वर साधै छी।
राग-तान मिला-मिला
वेद-पुराण गबै छी
अपनेपर हँसै छी।

❍

शब्द : 190

धोबि घाट

किनछैर धार धोबिघाट बनल छइ
बामी-दहिनी बीच पड़ल छइ।
ठेहुन पानिसँ भीत्ता महारक
खाढ़ी-खाढ़ी रूप गढ़ल छइ।
अपना सीमा रोकि-रोकि घाट
तिरछा-तिरछा धारा चलै छइ।
जहिना ले-ऊँच घाट मढ़ल
तहिना ले-ऊँच ठाढ़ धोबि छइ।
एक ओरीकेँ पकैड़◌-पकैड़
उनटा-उनटा पाट पटकै छइ।
रेहे-रेहे सटल मैल
खाढ़-खाढ़ी पटैक झरै छइ।

तीन ताल पकैड़ते पकैड़
चिन्ह-पहचिन्ह तीनू करै छइ।
दू पाटन बीच पड़ि-पड़ि
रचल-बसल मैल संग छोड़ै छइ।
जुग-जुगसँ जकड़ि जकड़ल
पटका-पाबि-पाबि संग छोड़ै छइ।
गुड़ैक-गुड़ैक गहे-गहे
पानिक संग-संग सेहो बहै छइ।

सहस्रोसँ रचि-रचि बेवस्था

कोणे-सान्हिये पकैड़ लेने छइ।
उनटा-पुनटा देख-देख धोबि
गरे-गर उनटा पटकै छइ।
दंगल बीच पहलवान जहिना
लपैक बाँहि पकड़ै छइ।
छाती-पीठ सटा फेकै छइ
पाट धोबिया सीखै छइ।

एक धैर्य टुटि-टुटि दोसर
बालिक शक्ति पबै छइ।
सात स्वर बीच जहिना वीणा
आनए पकैड़ महुराएल साँप छइ।
अपन मधुर स्वर-लहरीसँ
नँगटे नाच नचबै छइ।
परेख देख देखते देखनिहार
अपन दिशा देखै छइ।
पबिते अनुकूल दिशा अपन
मधुर-मधुर फल सभ चीखै छइ।

समए साक्ष्य शीशा सिरैज
ऐनाक रूप धड़ै छइ।
पबिते रूप अपन ऐनामे
समए-संग दौगए लगै छइ।

❍

शब्द : 167

साँझ

जिनगीमे साँझ कहाँ छइ
छी दिन-रातिक मिलन बेल।
एक सिरजन दोसर उसरन
बदलब छी मात्र खेल।
अपन गतिए सभ चलै छइ
चाहे सुर्ज हो वा ग्रह-नक्षत्र।
तहिना देवो-दानव चलै छइ
बनि रक्षक चाहे भक्षक।
चाहे गंगा हो वा जमुना
धार पेट धारण करै छइ।
तही मध्य ने सरस्वती
साँझ-प्रभाती सेहो गबै छइ।

आलय-हिमालय ओ कैलाश
विश्राम भूमि बनल छइ।
बाट-घाट ओ तीर्थ-वर्त
अनवरत बनि पड़ल छइ।
सभ दिनसँ आबि रहल
बाल-सियान बदलैत रहल।
उमेरे आकि बाल बोधे
अनिर्णित प्रश्न बनल रहल।
जहिना सोर पाड़ि साँझ कहए
सुतैक इशारा दइये

तहिना ने आँखिसँ
जागैक सुर-पता सेहो भेटए।
घड़ी कहाँ कहियो बुझलक
साँझ-भोरक किरदानी
एके चालिए चलि-चालि
मुस्कियाइत गबए जिनगानी।
बिनु जिनगानीक जिनगी
मनुख ठठुर कहबै छइ।
जहिना कौआ खएल मकै
खेत ठठेर कहबै छइ।

❍

शब्द : 123

सात्विक भाव

सात्विक भाव उगै ओतए छइ
जेतए सात्विक भूमि उर्वर छइ।
हवा-पानि जेतए सात्विक छइ
तेतए भाव लहलहाइत रहै छइ।
जेतए दोसर हवा चलैत हो
मटियाएल पानिक धार बहैत हो
चसगर, चटगर बोल जेतए नित
तेतए केना सात्विक भाव जगैत हो।

रंग-बिरंगक रूप गढ़ि-गढ़ि
रंग-बिरंगक चालि चलैत।
रंग-बिरंगक मंत्रणा दऽ दऽ
शब्द मात्र सात्विक रहैत।
जखने मन कलशैत सात्विक
किछुओ नइ कठिन रहि पबैत।

विध्न–बाधा रोकि नइ पाबए
हँसैत-खेलैत मानव चलैत।
लक्ष्य बना चलए सदैतकाल
संकल्पक संग सात्विक भाव।
दृढ़तासँ सदैत डेग बढ़बए
मूर्त रूप बनए सात्विक भाव।
जे भावे सएह भाव नै

सु-भाव, कु-भाव संगे चलैत।
अपन-अपन गुण पसाइर
अपनासँ परिचए करबैत।

❍

शब्द : 104

दिव्य शक्ति

दिव्य शक्ति पबिते मनुज मन
दिव्य ज्योति बिखड़ैए।
सगतैर एक्के रश्मि बिलैह
दिव्य-भूमि, वसुधा कहबैए।
गंगा सदृश धार जेतए
नीक-अधलाक विचार करैत
सभकेँ पार करैवाली गंगे
अनवरत गतिए वहैत रहैत।
दिव्य भूमि पहुँचते वसुधा
धरा-धम कहबए लगैत।
नहि रहैत भेद तेतए मनुजमे
सुर-धामक कपाट खुजैत।
जेतए विराजए वसुदेव
वसुधा वएह कहबैए।
नन्द-नन्दक मंत्र सुमैर
आनन्द वन भरमैए।
पाँचम कला बनि जे बीआ
मनुज मन विरजैए।
डेगे-डेग डगरि-डगरि
सोलहम कला पबैए।

❍

शब्द : 70

उड़ियाएल चिड़ै

उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जेतए
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसैर जाएत डीहो-डावर।
छोड़ि-छाड़ि सभ किछु अपन
रखैत मन खाली स्मृति पूर्वक।

ओहन स्मृति स्मृते की
जे मने-मन घुरिआइत रहैत।
पसैर नहि पबैत जे कहियो
तरे-तर खिआइत रहैत।

ताड़ सदृश छुबए अकास
कलसि कहाँ डारि बनबैत।
रसगर फलक चरचे की
सोनाएल-सकताएल फड़ैत।

नढ़िओ-कौआ कहाँ पुछै छइ
कहाँ पुछै छै बालो-बोध।

भरिसक सभ बिसैर गेल
छिऐ ओहो कोनो गाछेक फल।
वृक्षक शोभा तखैन बढ़ै छइ
फल-फूलसँ जखैन लदै छइ।
शीतल-सुन्दर हवा सिरैज
बाट-बटोहीक रच्छा करै छइ।

❍

शब्द : 100

रणभूमि

ओर-छोर बिनु भूमि कुरुक्षेत्रक
एक आबए एक जाए धीर।
साधि-साधि तरकस सजा
रंग-बिरंगी सधए तीर।

युद्धभूमि संसार केर
भोगिनिहार योद्धा रण-वीर
रसमे डुमल रसिक शिरोमणि
देखए सदिखन भऽ थीर।
ज्ञान-कर्म बीच बसए धर्म
अँगेज चलए सदैत कर्मवीर
जेतए बसी सएह भूमि ने
मातृभूमिक बनैत हीर।
मातृभूमि तँ मातृभूमि छी
सिरजए सदए भऽ गंग।
शिवसिर चढ़ि दुनू गाबए
की गंग की भंग।

मुँह चमकबए ज्ञान सरूपा
दोसर पक्ष कहबए कृष्ण।

तेसर जाल पसाइर-पसाइर
दुःशासन, अर्जुन बीच कृष्ण ।
तीन तीर बेधने दुनियाँकेँ
दैविक, भौतिक ओ अध्यात्म।
बेरा-बेरा देख तीनू केर
धर्म-अधर्म बीच महात्म।
तन रोग मन सोग
अनिवार्य खेल जिनगी केर
डटए पड़त दुनूसँ
मक्खन-सँ-मिश्री लेल।
दैवी दाह तँ चलिते रहत
की राति की दिन।
तैसंग चारू कात नाचए
खीच बाँहि लेत छीन।

सम दृष्टिक हथियार तेज
जे देखए तइले।
दूधो-लाबा विष सिरजए
सदिखन देखू जिनगी-ले।
बिना प्रेमी प्रेम केतए
प्रेमास्पदक पकरू बाट।
नाचि-नाचि, बिहुसि-बिहुसि

देखैत प्रेम सरोवर घाट।

जेहने मढ़ल शंख घाट केर
तेहने शीतल सरोवर पानि
तन पवित्र मन केर सिंचू
सक्कत विवेक बना ठानि।
करए शुद्ध तन-मन केर
पहिल पहर नइ छोड़ू जानि।
दिन-रातिक रहस्य बुझि
हुसू नइ कखनो जानि।

❍

शब्द : 181

सान-धार-धारा

अबैत जखैन मनुखमे सान
शानसँ चलए लगैत।
एक दोसरमे सान चढ़ा
परिवारक शान बनबए लगैत।

चढ़िते सान परिवारमे
बर्खा-बून बनि धरियाए लगैत
धरिआइत-धरिआइत धरिआ,
धारा बनि धड़धड़ाइत चलैत।

अपन-अपन माटिक रसे
अपन-अपन सभ धार सजबैत,
संग मिलि चालि-चलैत
नीक-अधला रहए बनैत-बिगड़ैत।

जइ बर्खाक जेहेन बून
तेहेन से बनबैत धार
धार मिलि धरा धार
अपना गतिए बदलैत धार।

जे धारा सिरजए गंगा
कमला कोसी ओ महानन्दा

ओ धार कहिया धरि ठमैक
मानैत रहत फंदा?

❍

शब्द : 73

पपीहाक गीत

सुनिते गीत पपीहा केर
धड़-धड़ धड़कन धड़कए
षटरस स्वर लहरीमे
चारू-दिशा सदि छलकए।

धरती अकास बीच सदए
जल-थल सिरजन करैए
कानि◌ि-अकानि बीच सदए
हँसि-गाबि देखबैए।

सानि सिनेह सदए सिरैज
नयन नीर ढुलकैए
रहितो धाराक धार संग
रूप अपन सजबैए।

रंग-रूप सिरैज सदए
शिखर-सौन्दर्य चढ़ैए
देख-देख बिहिया बिहुसि
आनि अपन जगबैए।

प्रेम प्रेमिक रूप देख
जमुना बीच सौभरि जेना
पबिते प्रकाश पूनमक
चढ़ि ऊपर आबए तेना।

आनि जानि धार बीच
हेलैत-डुमैत चलैए
जीवन-मरणक लीला यएह
सभकेँ सभ देखैए।

❍

शब्द : 78

विषधरक बीख

सूति उठि निकलिते आँगन
लप-दे धेलक विषधर।
तड़बाक बीख मगज चढ़िते
लटुआ खसलौं पेरापर।
जखने देखलक पहिने जौहरी
छाती पीट-पीटि फुकलक शंख।
अवाज सुनि कुत्ता अकानि
भूकि-भूकि जोड़लक शंख।

अचेत देख जौहरी बाजल
झब-दे मंगाउ चटधारी।
मरि गेल बाटे विषधर
बगदल यात्रा (सगुन) चटधारी।
नहि उतरल बीख चटियौने
तैयो बँचल छै प्राण।
बपहारिक संग बेथा गाबि
कहिया हेतै प्रेमीक त्राण।

❍

शब्द : 60

मिथिला केहेन

अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
सभ दिन कमला-कोसी डुमलौं
अन्हर-बिहारि, दानो-दुख सहलौं
कानि◌-खीज संगे-संग रहलौं।
किसान-बोनिहारक वंश गढ़ि
धरती-अकासक बीच खेलेलौं।

आबो बुझियो मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
पसैर चौर करमीक लत्ती
बुइधिक वृक्ष सजौलक।
नैतिकताक फल-फूल सजा
हँसि-गाबि जीवन पौलक।
जगत-जननी, जनक-जानकीक
मिथिलाक तस्वीर जेहेन
आबो कहू भाय मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?

❍

शब्द : 58

मौसमक मुस्की

दिन घटत आकि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइ छइ।
साले दिनक समए कत्ते होइए
लीलाक रंग बदलै छइ।
अपन-अपन सनेस बिलैह
सुरभि-सुगन्ध पसरै छइ
खसल-पड़लमे जान फूकि-फूकि
सोग मुक्त बनबै छइ।
समए ने केकरो संग छोड़ैए
ने केकरो संग दइ छइ।

अपन-अपन कूटल-पीसल
दुनू हाथ समटै छइ।
देखल दिन केना बितै छइ
देखते देख ससरै छइ
मृत्यु सय्यापर मन तड़पै छइ
बेरथक बाट पकड़ै छइ।
खेल-खेलए चाहलौं जिनगी केर
बनि खेलौना गुड़ैक गेलौं
अन्तिम साँस बिड़हाएल होइए
नोर छोड़ि किच्छो ने पेलौं।

❍

शब्द : 84

आशा

खुशीक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू
सोग ने सुधरए वचनसँ
रोग नइ उपदेशसँ।
कर्तव्य कर्म तड़कस उठा
आशाक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू।
कण-कणसँ पहाड़ बनै छइ
बुन्न-बुन्न सत् सागर
अणु-अणु सोग उपजाबए
कारी घटा बनि बादर
सभ समेटि अँगेजैत चलू
मगन भऽ चलैत चलू।
दिन-रातिक बीच संसार
ससैर-ससैर ससरैत चलए
खने मेघौन खने उगरास भऽ
पाबि-पाबि चलैत चलए।
तीत-मीठक भेद भूला
पानियो पानि पीबैत चलू
मगन भऽ चलैत चलू।

❍

शब्द : 74

आँखि

छलैक आँखि बदैल तरंगि
कोन रचैता देखलैन मोर।
निवस्त्र कऽ कऽ केलैन सिरजन
कानि अखौंसी पोछए नोर।
नाक नचए पहिर नकौसी
चक्र टकड़ाबए चढ़ि-चढ़ि सिर
केहेन भेल ई बीच मधुरक
सटि गेल तौलाक बीचक हीर।

सदिखन दोहरी खेल रचि
रखलैन सेहन्तगर नाओं
चेहरा-मोहरा काटि-छाटि
ठाढ़ भेल बनि◌-बनि गाओं
सुनि कान सनसना कुकि
पकैड़ सुगन्धित बाट सु-आन
गुण दऽ गुणी बना-बना
कालचक्र संग गाबए गान।

❍

शब्द : 64

मधुरस

जंगल जे बास करए
बनफूल-फल से खाए
इच्छित मन लोढ़ि-बीछ
मधुरस सतति बनाए।

एक बन पसैर विश्व
काटि-छाँटि देश बनबए
अपना-अपनी बाट गढ़ि
सभ चाहए मधुरस पाबए।

कटुरस मधुरस बीच भेद की
मात्र सीमा पार करब
टपिते-टपान दुर्गकेँ
खटरस बनि-बनि रूप धड़ब।

नजैर तानि विश्वरूपा केर
बिष-रस बाट बँटैए
अपना-अपनी हथिआबए चाहए
बाटे-बाट झगड़ैए।

पौरुष पाबि पुरुषार्थ जगए
नहि तँ कुंभकर्णी सुतए

सिरैज वंश सखा रावणक
सखा-सखा सटि वृक्ष बनए।

पाबि पुरुषार्थ पौरुष केर
रोकए नइ केकरो बाट
जिन्ह भाव सदि पाबि-पाबि
सिरजए नित नूतन घाट।

देश अनेक लोक अनेक
भाव अनेक भावना अनेक
बीच रचि चालि मायाक
भाव दुरभावना बनबैत।

सिरजए मधुरस अमृतरस केर
नहि तँ दुरभावना जगए
अन्ध भऽ अन्हरा अन्हारमे
अमृत रस केना पाबए।

❍

शब्द : 117

बीआ

बीआ खसए जेहेन धरती
तेहने तँ गाछो उगैत
रौद-बसातक सह पाबि
संगे-संग चलबो करैत।

लइते जनम धरतीमे
डेग उठा चढ़ए अकास
काले-क्रमे घुसैक-घुसैक
दुनू बीच करए-चाहए बास।

सिरजित भऽ स्वयं सिरजक बनि
हँसि-खिल बिलहए सनेस
भक्तक आह सुनि जेना
पकैड़ भगवन सिनेही भेष।

चक्रक चक्का पकैड़ चुहुटि
लगबए आस जिनगी केर
धरती-अकासक ओर दू
नहि अछि सोझ बाट भूमा केर।
धार अनेक धारी अनेक
विशाल वृक्ष धरती केर

खोलि हृदए सेवा निमित
अलिसा टगैत प्रेमीपर।

दुर्ग अनेक ढाल अनेक
दुर्गम बाट धरती केर
शक्तिसँ शक्ति सटि
सिरजै शक्ति शक्ति केर।

अकास बीच देख सदैत
सूर्ज संग-संग चान
अनेक तरेगन बीच एक
गाबए सदा गीतक तान।

खेल अजीव ऐ सृष्टिक
सिनेही सिनेह गुड़काबए गेन
हारि-जीतक मान न माने
बना रखए सदैत प्रेम।

जोग भोग सिरजए सदए
एक-दोसराक विपरीत चलए
दू पाटनक मध्य-बीच
सिरैज सृष्टि आगू बढ़ए।

❍

शब्द : 135

महजाल

महजाल पसैर पुरनी पोखैर।
माटि जलधर कात केचली
उड़ि उड़ि सदए चालि बदलए
पाबि गदियाएल जुआनी
नाचि-नाचि जिनगी बदलए।

एक-दोसरकेँ ठोठ दाबि
गैंची-अन्है रूप धड़ए
पाबि प्रकृतक वेढ़ंगी चालि
कानियौं खीज जिनगी धड़ए।

नीकक गुण छी नीक बनबैक
अधला किए पुस्तैनी छोड़त
अधला जँ चालि-वानि बदलए
नीक किए अभिमानी छोड़त।

भलेँ भभकि जाए इचना-पोठी
तेकर नहि परवाह करू
सजि रूप सरिता सरोवर
धीर भऽ धीरज धरू।

ससरैत देख महजालकेँ

जरैत जाठि चिकैड़ कहत
गतिया-गतिया रूकि ठमैक
सभ किछु सुनबैत चलत।

❍

शब्द : 80

बाट

चलि-चलि बाट बनबैत चलू
सोचि-विचारि चलैत चलू।
तीन चास जोतिते-जोतिते
ढेपा फुटि-फुटि माटि बनए।
चिक्कनमे सभ चाहे चलए
चलिते-चलिते बाट बनए।
मलैड़-मलैड़ ससरैत चलू
मखैड़-मखैड़ गबैत चलू।
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

पाँच पएर पड़िते-पड़ैत
चुनमुन माटि करए इशारा।
बनि पहरूदार दिन-राति
हँसि-हँसि दैत इशारा।
संगी-संग अकड़ैत चलू
डेग-डेग मिलबैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

बाट बनए जहिया जेतए
सोझ-साझक मांग करए
ऐगला-पैछला मिला-मिला
बीचो-बीच बढ़ैत चलए।
गीताक गीत गाबि-गाबि

जिनगी परखैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

सदिखन सनातन सहैम-सहैम
नव कनियाँक सद्दश कहए
नव सूत जेबर पाबि-पाबि
वसन्त राग भरैत कहए।
जँ किरदानी (कमैनी) नइ तँ जुआनी की
जँ जुआनी नै तँ मर्दगानी की
बिनु युद्धभूमिक मर्दगानी,
अछिया पड़ल जिनगानी छी।

चेत-चेत चित्त चेतन
समवेत संगीत बजबैत चलू
झूमि-झूमि मलड़ैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।
जिनगीक गीत गबैत चलू।

❍

शब्द : 129

डभियाएल डगर

नित नित्यानन निनाएले निकलए
देखए दुनियाँक दीन-दशा।
मधुआएल मन करुयाएल आँखिये
झलफलाइत देखए दशा-दिशा।

कोनो बाट एकपेरिया कहबए
खुड़पेरिया कहबए दोसर।
जोहैत सदए जेर जइ
बनैत बाट नव तेसर।
भोरहरबा अन्हार रहने
नीनपनी देलकैन पछाइर।
राड़ी-डबहाड़िक बीच पड़िते
हाथ-पएर देलकैन गछाड़ि।
ओझरी सोझरबैमे
नित्यानन भेला वेदम।
हारि नइ थकान थकिते
अबए लगलैन हिआ दम-दम।
विह्वल भऽ आर्त्त राड़ी
बिजैक बाजल कानि◌-कलैप।
संग मिलि सभ दिन रहलौं
लेलकैन बाँहि लपैक।

फूल फुलाइत जहिना सबतैर

तहिना ने फुलाइ छी।
पूरि संग रौद-बसातमे
संगे-संग उड़ियाइ छी।
एक चढ़ए देव सिर ऊपर
दोसर चढ़ए महा-अकास।
बाँकी सभ गलि-पचि
ससैर-ससैर पहुँचए पताल।

❍

शब्द : 100

लज्जैत

बिनु लज्जैतक जिनगी ओहने
बिनु परनक प्रतिष्ठा जेहने।
रस पाबि हरियाइत जहिना
नीरस होइत सुखाइत तहिना।
मधुरस रिसै विवेक वृक्ष
सिरजए सदि जे लज्जैत।

लज्जैत हीन जीवन ओहिना
गैचिया पाताल धड़ैत जहिना।
लज्जैत तँ शोभा जिनगीक
सजिते होइत आभूषित।
तीत-मीठ भेद बिनु बुझि
हँसि-हँसि होइत विभूषित।
लज्जैतक लत्ती अमर
सड़ितो-मरितो सिरजए शक्ति।
तर-ऊपर रसा-रसा
लगए करए सदैत भक्ति।
जिनगीक पद्धति रंग-बिरंगक
नीक-बेजाए बेड़ाएत केना।
पूबसँ उत्तर धरि सबतैर
मिलि समाज चलल जेना।

❍

शब्द : 73

गीत-1

ओढ़ि दुपट्टा नम-गम केर
बति वसंती बौड़ाइ छइ।

खटमीठ रस चूसि-चूसि
तिरपित भए औनाइ छइ।

सुरभि सुगन्ध पीब सिहैर
कू-कू कए कुकूआइ छइ।

चेत मन मधु स्वर तानि
बिलति-बिलति बिलबिलाइ छइ

दसो दुआरि दृष्टि दौगाए
चनैक चैत चुनचूनाइ छइ।

❍

शब्द : 40

(श्री शिवकुमार झा ‘टिल्लू'जी लेल..)

गंग स्नान

उठि भोरे छोड़ि घर,
चललौं नहाए गंग।
घर-परिवार समेट,
देह धरौल अँग।
अन्हरोखक राह हराएल,
झल-फल करए आँखि।
दुनू डेन पसाइर,
लगौल माछक पाँखि।
दिन जगल रश्मि छिड़ियाएल,
देखल तखैन गाम।
लटुआएल फुलवाड़ी सुखैत,
पहुँचल एक सुरधाम।

सभ पापक जननी अहाँ मैया
जुनि बिलहू अपन सनेस।
दूध बुझि भक्तजन पीबए
सनैक पड़ाए दूरदेश।

❍

शब्द : 53

फनकी

फनकी बना फसा शिकारी
फसौलक सौंसे जंगलकें।
बगरा-बुगरीक चर्चे केते
नथलक बाघ, गेंड़ा- घोड़ाकें।
खढ़-पातक बना-बना
बुनलक सक्कत जाल।
घुमा फेकैत भीड़ो कहाँ
बनि गेल तरे-तर महजाल।

खढ़क फनकी लगल बगड़ाकें
तइमे फसि गेल सियार।
डोराक फनकी लगल साँपकें
भ्रमक फनकी फसल बुधियार।

❍

शब्द : 43

सभ किछु छै जालेमे

सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
घुरियबैक लूरि जखने हएत
सभ किछु भेटत बातेमे।
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल।
देखैमे जहिना विकराल
तहिना ऐछो महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखियेमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइये
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकें के कहए
डोका-काँकोर धरि फँसैए ।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे।

❍

शब्द : 94

गंगा नाहए

गंगा नाहए सभ जाइ छैथ, बाबू
अहूँ किए ने जाए चाहै छी।
गहनक पूर्णिमा पड़ै छै
तैपर कातिक मासो छी।

के सभ जा रहल छैथ बौआ
जा कऽ कनीए भाँज लगाबह।
केना-केना के सभ जेता
झब दे कनी बुझने आबह।
पढ़ुआ काका, गुरु कक्काक
संग छित्तन-मित्तन दुनू भाँइ।
कनियाँ काकी सेहो जेती
भौजीक संगे लालो भाय।

बिनु संगीक संग गेने
ऐ उमेर बैमानी हएत।
तोरा केना असकरे कहबह
मनक संग प्रपंची हएत।
अहाँ विचार फुट देखै छी
आरो लोकैनक आरो विचार।
बीचमे नइ बुझि पबै छी
कहू कनी हृदैक विचार।
गंगा तँ दुनियाँक धारा छी

बहए सदा सभ कोण।
घेर बान्हि जँ अपने बूझब
थिक ई अपन मन।
दुनियाँक एक-एक मनमे
गंगा धार बनल छइ।
जे जानै-पहचानै ओकरा
नित स्नान करै छइ।

❍

शब्द : 122

गोधन पूजा

सरस्वती-लक्ष्मी दुनू बहिन
मिलि-जुलि गोधन पूजलैन।
मन संकल्प सिरैज दुनू
चलैक दिशा मन ठनलैन।
एक चचलि मटिआरी रस्ता
दोसर धेलैन गोलोक बाट।
दिलीपक अमूल्य सेवा देख
पंचागम रचि सजलैन घाट।

जे गाएक गोबरसँ
गोबरधन पहाड़ बनै छइ।
ऐ गोबरधन बखारमे
अन्न-कण अम्बार लगै छइ।
वएह गोबरधन उठा कृष्ण
जान बँचौलैन ब्रजवाला।

झाँट-बिहाड़ि, पाथर-ठनका सहि
मुरली तानि देलैन नन्दलाला।
क्षीर सागर किनछैड़ बिरैज
सरस्वती लक्ष्मी दिस देखलैन।
एके गाछक दू डारि छी

अपन-अपन पुरखा जगलैन।

एक चलए अकास मार्गसँ
दोसर धरती बीच ओंघराइत।
मने-मन दुनू आनन्दित
राति-दिन सदैत वौआइत।

❍

शब्द : 89

माटिक फूल

हँसि-फूलि चढ़ए देव ऊपर
कली फलैक बक्ष ऊपर
भूख-पियास मिलि आफन तोड़ए
जड़ि जनमए धरतीपर।

लीला अजीव अछि दुनियाँक
धरती-अकास छिड़िअबए क्षीर
भीर-कुभीर देख-देख
ससरए सदैत संग समीर।

एक फूल शोभा सुख पाबए
दोसर बाल-बोध सिर ढाबए
सृष्टि सिरैज तेसर हँसि गाबए
राग-विरागक ताल मिलाबए।

उड़ए सुगन्ध समा धरतीसँ
चालि चलाबए चाक कुम्हार
मृत कुआँ तर-ऊपर वसुधा
सानि-बाटि लगबए अम्बार।

पड़िते-फुहार चढ़िते अखाढ़

महमहबए दिन-राति सुगन्ध
कोण-कोण चारू कोण पसरए
निसाँ नचति बनि मदान्ध।

जे कहियो रोदियाह रौदमे
ठोंठ सुखाबए भूखै-पियास
धरि-धरती धीर हृदए
पीब, पाबि जिनगीक आस

उठि-बैस ओंघराइत छिछलए
कानि-कलैप दऽ दन्ड-प्रणाम
अश्रुधार बीच डुमकी लगा
जमुनिया धार बीच प्रणाम

सदिखन प्रेमी बाट जोहि-जोहि
छन-छन छनछनाइत मन
दाबानल-बड़बानल लहैरमे
जठरानल बीच तड़पए मन।

❍

शब्द : 115

झगड़ा

भाँग पीब भकुआ शिव
चुप भऽ बैसला आसन।
धो-धा सिलौट-लोढ़ी
पार्वती लेलैन चढ़ा।

लग आबि पाँजर बैसते
बीन-बिन्नी उठलैन मन।
नजैर उठा देखते
कड़ैक बजलैन मन।
सिहैर छाती डोलिते
थर-थर कपलैन तन।
कलपैत मन खिसिया
अधे-छिधे पुछल प्रश्न-

“अहाँ कहू केकर छी प्रेमी
गंगा आकि अपन।
सिर सजौने छी गंगाकेँ
पतिअबै छी हमरा।
पुरुखक कोनो ठेकान नै
बुझि पड़ैए हमरा?”

कनखिया शिवजी बजला-

“भाव लेल प्रश्न भावसँ
उठाउ सदिखन आगू।
चिन्मय रूप समेटि हृदए
बढ़ाउ डेग सदि आगू।”

❍

शब्द : 79

नजैर

आँखि पुछलक-
दीदी, सभ किछु देखतो,
किछु ने देखै छी।
कलपैत मन देख
भरि-भरि दिन कनै छी।

नजैरक उत्तर-
सगतैर तँ फूल छिटाएल-ए
गुणसँ भरल-पुरल।
रस चुसैक ज्योति बनाउ
भेटत तखने मीठका फल।

❍

शब्द : 33

कमलाधार

कमल-नयनसँ उगैत अश्रुकण
संग मिलि धार बनल छी।
समरस भऽ रंग-रूप बिसैर
नयन-कमल बनल छी।
काटि-खोंटि एकबट्ट केनिहारि
करत उकठपन काम।
सभ मिलि सोचि-विचारि कऽ
जपलौं कमला नाम।

❍

शब्द : 28

बाल कविता

पुत्र- बाबू यौ, पनिया दूध किए बेचै छी
एकरे ने पाप कहै छइ?
जानि-बुझि जे करए ढिठाइ
तेकरे जमदुत पकड़ै छइ?

पिता- कहलह बौआ मधुर बात,
सिहैर-सिहैर ह्रदए सिहैर गेल।
अजीव खेल धर्म-पापक
हँसि-हँसि जिनगी टुटैत गेल।

पुत्र- की अजीब खेल धर्म-पापक
गुरुवर-गिरिवर बनि कहू।
कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म,
बिलगा-बिलगा बुझा कहू।

पिता- बाल-बोध रहितो अहाँ
जिनगीक रहस्य-रस तकलौं।
जिज्ञासाक उठैत जुआरि
समए पेब-पेब पेलौं।

❍

शब्द : 66

भभूत

लगिते चाइन बाबाक भभूत
चेलबा हँसि-हँसि बाजल।
छाउर केना भभूत बनि
छजनीपर जा अँटकल।
सुनिते चेलबाक पेटक बात
पेट खोलि आसन लगौलैन।
आँखि खोलि नजैर मिला
प्रभुताक दर्शन करौलैन।

जिद्दी चेलबा मानता ओहिना
प्रभुताक परमान मंगलकैन?
पैरुख नाओं प्रभुताक कहि
झटपट अपन जान छोड़ैलैन।
जिद्दी कि जिद्दी चेलबा छी
पैरुखक परमान मंगलकैन?

सामर्थ कहि आँखि घुमा
चटपट अपन काज ससारलैन।
नमरी जिद्दी जेहेन चेलबा हुए
तइसँ कम की बाबाक चेलबा
तड़ैप-चेलबा लग आबि
समर्थकक परमान पुछलकैन।

शक्ति समर्थकक उत्तर दऽ
मुँह मारि बाबा बैसला।
बोलती बन्न देख बाबाक
डुमकी दैत चेला डुमला।

❍

शब्द : 92

झूठ-साँच

झूठ-साँचक साँच केते
उत्तरी-दछिनी ध्रुव जेते।
कोनो चलैत शुभ्र समीर संग
कोनो चलए वोन-झाड़क।
कोनो चलए धरती-धरातल
कोनो चलए शब्द जालक।

सत् बनबैले एक झूठ
हजार-हजार चालि धड़ैत।
मुदा एक साँचक शक्ति
सदए ढनमनबैत रहैत।
जहिना घनघोर घटाकेँ
हवा उड़बैत रहैए।
तहिना देखते बोनैया
लोकक सुन-गुन पबैए।

झूठ-साँच कहब केकरा?
जे शब्द हजारो बेर
बजलो उत्तर ठामहि रहत।
मुदा ओ जे बेर-बेर
सभ बेर बदलैत रहत।
रूप सजि नव श्रृंगार कऽ

मनकेँ मोहैत रहत।
शुभ्र ज्योति पड़िते सदैत
चेहराक रंग बदलै छइ।
मुँह खोलि किए ने
झूठक डाकैन दइ छइ।

साँचक पजरे-पजरा
चलि-चलि जान बँचबैए
केतौ छाँह केतौ ठमैक
मायापुरी सिरजैए।

❍

शब्द : 101

नव दुनियाँ

चलू यौ भैया चलू यै बहिनी
नव दुनियाँ बनबए चलू।
सभ स्वतंत्र अछि अपना-ले
अपन दुनियाँ बनबए चलू।
पाँच कलासँ बनल जीव
आनन्द कलासँ सज्जित छइ।
तीन कला सिरजैबला
संग मिलि संग चलै छइ।
आगूक जे आठ कला छइ,
ओ तँ अपने सिरजए पड़ैत।
जँ से नइ तँ, जहिना छी
तहिना काहि काटए पड़ैत।
नहि कठिन छै स्वतंत्र जन-ले
सोल्हो कलाक कलाकारी करब।
विश्वामित्र, विश्वकर्मा बनि
नव दुनियाँक सिरजन करब।
जहिना गाछक डारि मधुमाछी
जगह टेबि घर बनबैए।
तहिना ने सभ अपना-ले
जगह देख दुनियाँ बनबैए।

❍

शब्द : 86

पुरुषार्थ

हँसि-हँसि हम बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।
झाँपि-तोपि अपन किरदानी
मुँह खोलि बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

नोकरीमे जिनगी बितेलौं
पराधीन भऽ जिनगी जीलौं।
अपन पीठ अपने थपथपा
मालिकक सान देखा रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

सहि-मरि जे जिनगी जीलक
आत्म-चुहै कऽ सेवा केलक।
पवित्र मातृभूमिक सेवामे
पवित्रतासँ जिनगी लगौलक।
तेकरा हम ललकारि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

जाधैर नोकरी करै छेलौं
सर्भिसमैन कहबै छेलौं।
जहियासँ नोकरी बीतल
सर्भिससँ सेवा-निवृत्ति कहेलौं।

शब्देक ताना-बाना बुनि-बुनि
जिनगीक हाथ ससारि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

उचित-अनुचितक विचार केना
समरस मुँह बना बाजब
घूस-घासक चरचा केना
सकुचाइत मन, मुँह खोलि बाजब।
तैयो बोली झटैक-झटैक
झटहा मारि तोड़ि रहल छी
पुरुषार्थ बघाइर रहल छी।

❍

शब्द : 116

सरस्वती वन्दना

साले-साल किए अबै छी
क्षणे-क्षण अबैत रहू
हर क्षण हर मनकेँ
अमृतसँ भरैत रहू।
क्षणे-क्षण...

नव शक्तिक नव उत्साह दऽ
सिरजन शक्ति भरैत रहू
कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि
सिनेहसँ सिनेह सटैत रहू।
क्षणे-क्षन...

जे हूसल से हम्मर हूसल
तइले किए छी कलहन्त
सभ जागैए सभ सुतैए
एक दिन हेतै सबहक अन्त
नजैर-उठा देखैत रहू।
क्षणे-क्षण...

देवी अहाँ, मैया अहाँ
भेद केतौ अछि कहाँ
जोड़ल आँखि उठा-उठा

पले-पल देखैत रहू
क्षणे-क्षण अबैत रहू।

❍

शब्द : 70

भीड़-भार

अपने पएरे चलिते चलनिहार
दोसरपर नइ भार दैत।
मन उपकै चाइलिक खुशीसँ
संग-संग डेगो बढ़ैत।
लत्ती सदृश दोसर भरे
धुसि-धुसि खसि बाट-घाट।
धारक पानि सदृश फेका
धारासँ टुटैत रहैत लाट।

टुटिते लाट धरासँ
भीड़े-भीड़ बनैत रहैत।
एक्के-दुइये भीड़ टपैमे
भीरिमे भरमैत रहैत।
भीर-भारक दुनियाँमे
भीड़ा-भीड़ी जोर चलै छइ।
धक्कम-धुक्काक संग-संग
धक्का-मुक्की सेहो चलै छइ।

भार बनि नइ भार कहियो
अपन भार दोसरा दियौ।
अपन-अपन कन्हेठ भार
संग मिलि चलैत रहियौ।
लेब साँस आरामक जखने

भीड़े-भीड़ भार पकड़त।
गहुमन साँप सदृश बीख
समए पाबि सेहो लपकत।

कहैले साँपो हरि छी
हरी बेंग सेहो कहबै छइ।
नारायण सेहो हरी कहबए
नित: व्याकरण बुझबैए।

❍

शब्द : 101

सरस्वती हमर

हे माँ सरस्वती,
अपना ऐठाम ओइ दिन हे माँ
रस्तेसँ सम्हारि आनब।
भगवतीक रूप जइ दिन
बाँहि पकैड़ अरियाइत आनब।
सोग-पीड़ा दुनियाँक मनुक्खक
मोटरी बान्हि माथ चढ़ौने आएब।
अपन सोग-पीड़ा बना-बना
रक्तक संग सजौने आएब।
आनक यंत्रणा जखन अपन
संग मिल डेग उठैत चलत।
उत्पीड़ितक कथा-बेथा
ललकार मन भरैत चलत।
वसुन्धराक सिंगार जखन
विश्व सुन्दरी बनि नचत।
तखन, हे माँ सरस्वती
नयन सिक्त प्रेमाश्रु भरत।
कलमक नोक जखन अहाँ
प्रवाहित होइत ससरैत रहब
भगवतीक रूप गुण संग
अपना ताले गबैत रहब।

❍

शब्द : 82

अगहन

ठोर रंगि तर-तर करै छइ
लोक देख-देख मुँह दुसै छइ।
लगनक आश छोड़ि-छाड़ि
कूदि-फानि घर अबए चाहै छइ।

कहिया धार कुटाएब हँसुआमे
कहिया धारक सान बनाएब
कातिकक पुर्णिमो बीतल
कहिया देहमे पानि चढ़ाएब।

तीन दिन, आठ अगहनमे बाँकी
धड़फड़ बेसी, नइ अगुताउ।
धीरजसँ सभ किछु होइ छइ
तैबीच घरक काज सरिआउ।
गेल माघ पच्चीस दिन बाँकी
आबो किए छी मन्हुआएल।

आशा पाबि मन कलशै छइ
मौलाएलो गाछमे फूल ढनमनाएल।
संगे मिल चलब कटैले
बच्चोकेँ कोरा लऽ लेब।
लोटामे पानियोँ नइ बिसरब
पनबट्टी सेहो लैए लेब।

रतुका नाच बनौआ होइ छइ
दिन-दुपहरिया नाचब मैदान।
चौकीक तँ स्टेज नइ छिऐ
हँसबै, गेबै, मान-सम्मान।

❍

शब्द : 101

केना मेटत गरीबी

केना कऽ मेटत गरीबी हो भैया
केना कऽ...।
अछि भरल सोना माटिमे
भरल अछि हीरा-मोती।
खुनैक ओजारे अछि गजपट
केना कऽ पेबै मोती।
सोन बिना कानक जहिना
तहिना ने माटियो छइ।
ने अछि पानि आ ने श्रम छइ
ने खाद आ ने बीआ छइ।
तखन कोन आस करबै हो भैया...
सत्ते कहै छी ओजारो बनलै
नहर खुनेलै कोसीसँ।
धारक तँ चालिए अजीब
बिनु बरखे पानि औत केतएसँ।
खादक बदला माटि अबै छइ
बोरिंगक पाइपो तेहने नकली छइ।
पम्पिंग सेटक कथे की कहब
तीन बेर साले सिसकै छइ।
अहीं कहूँ केना हेतै यौ भैया
केना कऽ...।
बिनु खेतक आकार देखने
फसिलक केना पहचान करब।

उपजल दाही जखने हेतै
कोठीक किए जोगार करब।
विज्ञान बहुत उन्नति केलकहेँ
सच्चे कहै छी यौ भैया।
घासे बिखाह उपजि खेतक-खेत
कोन मनसूबे दुहबै गैया।
केना कऽ...।

ललो-चपोसँ काज नइ चलत
इमनदारीक नेत बनाएब।
फुलल-फड़ल खेत चमकत
देख वसन्ती तखन गीत गाएब।

ता धरि नइ चलतै यौ भैया,
ललकारा केतबो देबै।
ताल ठोकि केतबो कूदब
खलीफा नइ बनि पेबै।
सएह कहै छी सुनू यौ भैया
केना कऽ...।

❍

शब्द : 174

बाढ़िक सनेस

जँए नहाए कोसी जाइ छी
जाइ छी कमला घाट।
अपने फुड़ने आबि-आबि
धो-धा देखा दैत बाट।
हँसि-हँसि घरसँ निकलि
खोंछि भरने एली।
मुट्ठिए-मुट्ठी बाँटि-बाँटि
गामे-गाम बिलैह देली।
खोंछिक सनेसो तेहने
ठेंगी, खचरलत्ती ओ हराशंख।
हराशंखो तेहने गढ़ल छइ
ने छी डोका ने छी शंख।
खचरलत्तीक खचरपनीसँ
तंग-तंग होइए किसान।
काटि फेकब जेतए तेतएसँ
मोछ टेरैत देखबए शान।
गाछी-बिरछी, दिशा मैदानक
रोकैक ठीका ठेंगी लेलक।
खेत-पथार टहैल-टहैल
वोन-झाड़ सेहो अपनौलक।

❍

शब्द : 69

अगो-लोढ़ा

हे गे बेटी गे, हे गे धीया गे
आइ धरि दुखक दिन कटलौं
काल्हिसँ औत समए सुखक।
राति भरि जागि मन पाड़िहें
बीतल साल, मास दिन दुखक।
कोन नक्षत्र आबि रहल छइ
कनीए दे हमरो बुझा।
कोन सुख काल्हिसँ औत
सेहो दे नीकसँ सुझा।
धनकटनीमे हाथ लगेबै
हाँसू धार कुटौने छी।
संग मिलि तोहूँ लोढ़िहें
लोढ़ा बीछा तोरे ने छी।
चारि साल जेते जे लोढ़लौं
अगो तँ तोहूँ दैत एलँह।
भुरकुरी ढन-ढन करैए
कुटि-चुड़ि तोहीं खेलँह।
समए पाबि खेलियौ बुच्ची
सूदि दऽ पूरा करबौ।
अगो-लोढ़ा जोड़ि-जाड़ि
मूरिक संग सूदियो देबौ।
एहेन अलछनी हमहीं हेबौ।
माए-बापसँ सूदि लेब।

महाजनीक कारोबार कऽ कऽ
महाजनीक भार देब।
नहि बेटी नहि बुच्ची, नूनू
मुँह दाबि एना नइ बाजह।
जेते गहन लगल बीच अछि
दोबरा-दोबरा मुड़ घुरेबह।
सुनि◌-सुनि मन तड़पैए
माए-बाप की हम्मर नहि।
बेटा-बेटी भेद केतए अछि
सेवा की हम्मर नहि।

❍

शब्द : 137

हथियाक झटकी

चढ़िते चैत पतरा कीनलौं
सालक हाथक रेखा देखलौं।
देखते नजैर दौगल राशिपर
नाओं अक्षर तेकरा बीछिलौं।

खट-मिट्ठी राशि देख
पाछू दिस उनैट ताकलौं।
तीन नामे लोक जनैए
देखए कऽ मन थकेलौं।
आगू बढ़ि उपजा लग गेलौं
पानिसँ बेसी धाने देखलौं।
हवा-विहाड़ि, ठनका भुमकमक
चर्च-बर्च केतौ ने देखलौं।

मन खुशी भेल, घरहट बाँचल
भगवान भरोसे ई साल चलतै।
घरनीक तगेदा अनठबैत
एको घर नइ ऐ साल छाड़लौं।

हथिया तँ उनाड़ी बर्खाक
झटकी केतएसँ दौगल आएल।
मनक सभ खुशी मनेमे

सभटा रहि गेल धएले-धाएल।
एकटा घर माटि पकड़लक
दोसर चोंगरा बले ठाढ़।
तेसरक कोनचारी लटकल
चारिम भीतक भरे ठाढ़।

❍

शब्द : 97

रहसा चौर

भीतर मिथिलाक ओ भूभाग
चौड़गर एकटा चौरी छइ।
दूर-दूर धरि पसरल-पसरल
बिसवासू खेतीक भूमि नइ छइ।
नअ मास पानिए गुड़गुड़ा
हिआ-हारि कनबो करैए।
माटिओक कर्मक फल तेहने
अपने बेथे चिचिआ रहल-ए।
तीन मास सुखा सुख पाबि
करमी, केशौर कोढ़िला सजबैए।

जिनगी-मृत्युक भय मेटा,
संग मिलि सभ भाँज पुरबैए।
चारि गामक बीच बसल
नमगर-चौड़गर सीमा घेरैत
चारू कातक पानि गुड़ैक
अद्रेसँ झील बनबैत।

गामक माटिक जँ दशा एहेन
मिथिला राज केहेन बनतै।
बाहरे-बाहरक सुसकारीसँ
गहुमनक बीख केना झड़तै।
विचार इमानक केकरा कहबै

खोलि देखू मातृकोष।
अपने-आप प्रश्न पुछि
विचार करू सम्हारि होश।

❍

शब्द : 91

बेरोजगारी

राँड़ कानए अहिवाती कानए
तैसंग बर-कुमारि कानए जेना।
रोजगार कानए बेरोजगार कानए
हिबडिब करैत सरकार कानए तेना।
बेरोजगारसँ देश भरल छइ
बौस बिना कंगाल बनल छइ।
तैबीच रोजगारे हराएल
तमसगीर तमाशा देख रहल छइ।

सभ छी शुभचिन्तक देशेक
सभ विचारक संग नेता की।
मुसहर बीच मूस हेरा हराएल
धीया-पुता काल्हि खेतै की?
दिशाहीन रोजगार बनल छइ
रंग-बिरंग दुनियाँ बनल छइ।
केतौ पेन्शनधारीक रोजगार
तँ केतौ करैबला पड़ल छइ।

जाधैर दुनू दिशा मोड़ि
डोरीसँ नइ गतानब।
सूतल सपना अधनीनामे
दिन-राति देखैत रहब।

पाँच हजारक नोकरीमे
मोबाइल गाड़ी ओ चौक-चौराहा
खुशी-खुशीक जिनगी बना
गोधन दिन लिअ हुरियाहा।

❍

शब्द : 95

लीढ़ी पोखैर

सुदामा दीदीक खुनौल पोखैर
कुमोल बनि पड़ल अछि।
कियो मुइलही कियो लीढ़ी कहि
अपन आँखि मूनने अछि।

टटका नफ्फा सभ कियो देखए
घाटाक बाट देखबे ने करैत।
गामेक तँ छी सम्पति पोखैर
एहेन विचार उठबे ने करैत।
जहिया खुनौलैन पोखैर दीदी
तइ दिन छल ओ देवघर।
तियागिते ऐ दुनियाँकेँ
बनि गेल ओ फूसिघर।

कियो ने कलपरदार छै ओकर
तखन के विचार करत।
गामक सम्पति बुझि-बुझि
उत्पादित सम्पति बनौत
जाधैर प्रतियोगितामे बैसए
गाम-गाम तैयार नइ हएत।
ता धरि अहिना लीढ़ी पोखैर
नीकहो सभ बनैत जाएत।

चेतु, आबो चेतु, जे दिन बीतल,
से दिन बीतल।
उठा आँखि आगू बढ़ाएब
तखने पाएब भविष्य फल।

❍

शब्द : 103

बकरी भेराड़ी

टुटिते नीन खुजैत भक्क
मनमे साँझुका बात जागल
विचारि नेने रही काल्हिए
पहुँचते रोपब गाछ फलक।
टुटिते भक्क मन ठेलए लगल
शुभ काज विलम नहि।

मुदा हाथ लगबैसँ पहिने
अँटैक मन किछु ठमकल।
खेत अपन, खुरपी अपना
मुदा, बकरी भेराड़ी तँ नै
आइ धरि भेल अपना।

एक बकरीक भेराड़ी
आमक एक गाछ पालि पबए।
मुदा भेराड़ी तँ भेराड़ीए
आइ धरि नइ जानि पेलौं।
जकरा भेराड़ी छइ,
नइ छै ओकरा चास-बास।
जँ से रहितै तँ

करितए एक सजमनियों आस।
भरि देबै गाछक दड़ी

बकरीक सुखाएल भेराड़ीसँ।
समए-समए पटबैत रहबै
आशा पुरतै परुकासँ।

❍

शब्द : 91

महगी

दस सगे नितराइत विचार
दस सगा देख डरि रहल छइ।
एके गाम, परिवार भैयारी
भाए-बहिनसँ डरि रहल छइ।
कियो बाजए धी बसाएब पुन
तँ कियो चेतबैत धी-भागिन
खेलो सभ अजगुत छिड़ियाएल
खेलाड़ी देखबए तोड़ि तानि।

देखए पड़त, विचारए पड़त
एना होइए तँ केना भेल?
आजुक जे खाहिंस छइ
ओ हएत तँ केना हएत?
अरबो टन अन्न माटि पड़ल
करोड़ेमे जाँत पीसै छी।
उन्नति-उन्नति घोल करै छी
हृदए खोलि बाजै छी।

किछु दबाएल माटिक तरमे
तँ किछु काटए जहल गोदाम।
मौगियाहा पहरूदार बनि◌-बनि
कठपुतरी नाच देखबैत ठाम-ठाम।

जइ उन्नैस सए एक ईस्वी
मन धान तीन मन खेसारी।
रूपैआ बरबरि रहए
नजैर उठा देखू भैयारी।

❍

शब्द : 103

जरनबिछनी

जरनबिछनी, जिनगी बुझि
हथियार संग रणभूमि चलैत।
गाछी-बिरछी ओ बँसबिट्टी
ठहुरी-कड़ची बीछि-बीछि रखैत।
साँप-कीड़ाक डर कहाँ छइ
वोन-झाड़ हाथ बढ़बै छइ।
काँच-सूखल बेड़ा-बेड़ा
सजि-सजि पथिया रखै छइ।

बिसैर गेल कहिया केतए
नुआ होइ-छै नाँगट बचाएब।
सिहकल, मसकल फटल मैल
चेफड़ी सटल इज्जत बँचबैत।
जहिना लोहिया ओढ़ि-ओढ़ि
जुग बितौलैन लोमस बाबा।
चोंचा खोंता सिर सजि तूँ
मुँह छिड़ियबै छै मकइक लाबा।

कनी सुन गै जरनबिछनी
नाओं-ठेकान बतौने जो?
स्वतंत्र देशमे तहूँ बसै छें
से कनी-मनी कहने जो।
तोरो देश स्वतंत्र भेलौ

आकि भेलौ स्वतंत्र पुरखा।
देवी-दुर्गा कोइ ने देखलकौ
से कनी कहने जो।

❍

शब्द : 92

नव-फल

अहाँ बागमे हमहूँ बाबू
चुनि एक फल लगौने छी।
सुआद तँ नइ पौने छी
आशा नीकक धेने छी।
छी नइ हमर बाग ओ बौआ
पैछला पीढ़ीक लगौल छिऐन।

एकाएकी ओगरबाहि करैत
बगवाड़ि करैत बाग धेने छिऐन।
हुनके सबहक लगौल ओ बौआ
बेख-बुनियादि सेहो छिऐन
गम्हारि सीसो ओ ताड़-खजुर
खरही, खरहोरि सेहो छिऐन।
अपन कहाँ किछु कहलिऐ बाबू
युगक धरम किछु ने पड़ल?
पुरुखामे पौरुष दाबि
अपन किछु ने मन पड़ल?
तोहर सवाल सुनि हृदैमे
गुदगुदीक संचार होइए।
तीन शक्ति चलए जेतए
परिवर्तन साकार होइए।
धर्म सनातन यएह कहबै छइ,
समए संग सटल चलए।

दुलड़ैत-मलड़ैत संग
झुमि-झुमि गबैत चलए।
बौआ, तोहूँ तँ अपन किछु
दिन-देखार पथार पसारह।
दबले-दाबल केते दबाएल
रंगमंचपर खेल देखाबह।
तेसरा रोपलैन आम रघुनी भाय
घौंदा-छौंदे फड़लैन ऐबेर।
ओकरे एकटा आँठी आनि
खाली देख रोपलौं ऐबेर।

❍

शब्द : 129

पू-भर

माए गे, सभ कोइ पू-भर जाइ छइ
संगी संग हमहूँ जेबै।
गामक दशा देखते छीही
ऐठाम रहने की खेबै?
बौआ हौ, हम की कहबह
धीगर-पुतगर तोहूँ भेलह।
सुख-दुख तँ देखते छहक
आब की कोनो नेना छह।
एकटा बात बता दए
करए जेबहक कोन काज?
से काज तँ एतै जगेबह
किए जेबह आन राज।
भ्रम-जालमे सभ फँसल, माए
के केकरासँ कम जनैत।
धन छोड़ि धनवान बनल सभ
अपन बात बुझबे ने करैत।
पू-भर केतए जेबह तूँ
से कनीए हमरो कहि दाए।
मन हएत तँ पत्रो पठेबह
नाओं-ठेकान दिहह पठाए।

❍

शब्द : 88

चौरीक धनकटनी

नभम्बर-दिसम्बरक शीत ओस
पाबि जनवरी गेल पलाए।
दसतारक सेहो चलैत
तरे-तर जाड़ गेल जुआए।
ऊपर खेतक धान कटि-कटि
गहुमक बागु चलए लगल।

नार-पात समटैसँ लऽ कऽ
दौन-दोगौन हुअ लगल।
राति-दिनक सीमा तोड़ि
जी-जानसँ सभ भीड़ल।
जेते-काम तेते दाम
हँसी-खुशी भेटए लगल।
गहुमो बागु भेल,
धानो दौन भेल,
टालक पेनी सेहो छनल।
टीनक मुँह काटि-काटि
उसनियाक बरतन बनल।
एक्के धान उसनलापर
उसना-अरबाक खाढ़ बनैत।
चौरीक कटनी पछुआएले अछि।
अधखिज्जू खेत बाँकीए अछि।
सी-सी सिहकी पछबा धेलक

पूर्वो भांज पुरए लगल।
सुगम-सगुण पाबि-पाबि
शीतलहर चलए लगल।
अकाससँ पताल धरि
कोणे-सान्हिये ठंढ पकड़लक।
ठरल पानि ठाढ़ भऽ तपस्वी
सीस धानक हिआबए लगल।
एक तँ सिल्लीक चाभल,
दोसर पानि अकुराएल।
सड़ि-सड़ि सिस घार खसौने
पानिक तर सेहो नुकाएल।
पड़ल छगुन्ता ठाढ़ तपस्वी
हँसुआ नेने पानिमे ठाढ़।
छोड़ि देब कायरता होएत
लगले केना मानि लेब हारि।
जाबे प्राण बँचल अछि
ताबे केना पीठ देखाएब।
थोड़-थोड़ आश पकैड़
आशावान जरूर कहाएब।

❍

शब्द : 146

किसान

अपन दुख-दरद भाय
जाधैर अपने नइ बूझब।
ता धरि केना पाबि सकै छी
नीक भविष्यक नीक सोचब।
निच्चाँ-ऊपर सभ बजैए
किसानेक देश भारत छी
कटि-मरि किसाने सभ
अँग्रेजोकें भगौने छी।
जरि-उजैर केते गाम
केते लोक प्राण चढ़ौलक
पैंसैठ बर्खक आजादी की
पेटोक दुख मेटोलक।
जहिना आजादीसँ पहिने
चुसलक खून राजा-रजवार।
तहिना तँ आइयो होइए
चुसैए देशी-विदेशी करखन्नादार।

चिड़ै सभ जहिना गाछक ऊपर
खोंता बनबैए अपने लोले।
तहिना ने अपनो भऽ सकत
लुइर-बुइध अपने बोले।
निर्णायक दौग आबि रहल,
अछि निर्णायक मोड़।

मोड़ मोड़ि घुमाएब नइ जाधैर
पाएब केना थोड़ो-थोड़।
स्वतंत्र देशक स्वतंत्र जन
गहि एकरा धड़ए पड़त।
यएह छी सोचै-विचारैक
जीबैले लड़ए पड़त।

❍

शब्द : 103

टुटैत जिनगी

टुटैत जिनगीक बेथा
घुमि पाछू देखए पड़त।
सैयौ नइ हजारो बर्ख नै
जड़िएसँ देखए पड़त।
पाँच हजार बर्खक पुराण
हँसि-हँसि बाजि रहल अछि।
सुर-असुर, दानव-देवताक
ऐतिहासिक गाथा सुना रहल अछि।
लगभग पौने दू सए बर्ख पहिने
अँग्रेज आबि आसन जमौलक।
जकरा भगिते ऐठामक
जन-गण आजादीक साँस लेलक।
मुदा एतबे नै, कने आगू चलू।
हजार बर्ख की कहैए।
चारू दिस भजारि-भजारि, तेकरा
पुछियौ विवेकसँ निर्णए की करैए।
स्वर्णिम इतिहासक स्वर्णकाल
ओझुके भारत छल तहियो।
निचोड़ि-निचोड़ि, तर्क-वितर्क
निर्णए निरमाबए पड़त आइयो।

❍

शब्द : 79

कविता

नव पथक अनुकूल पथिककेँ
सही सवारी सुपथ-पथ चाही।
तहिना खुशी खुदखुदबए-ले
मुस्की सजल शब्द कविता चाही।
उपयोगी नव-नव वस्तुक
जोड़ि-जाड़ि छिहलैत डगर चाही।

हराएल रसिक प्रेमी-ले
बेराएल भाव कविता चाही।
बेराएल भाव तहिए सजैत
जहिए भेटैत छिड़ियाएल भंडार।
चुनि◌-चुनि चुनिया चुनैबिते
नुकाएल पबैत शब्द-सार।

गढ़ैत सदैत चमचमाइत शब्द
सिरजए अलंकार ओ छन्द।
चाहे केतबो केहनो हवा सिहकै
चलिते रहैत मुस्काइत मन्द।
मन्थर गतिए चलि मोहनि
परखए सदए दुध ओ पानि।
सिर ऊपर आकि नीच-मध्य

देख पकैड़ सम्हारि-वाणि।
नव पथक अनुकूल पथिककेँ
सही सवारी सुपथ-पथ चाही।
तहिना खुशी खुदखुदबए-ले
मुस्की सजल शब्द कविता चाही।

❍

शब्द : 93

बुड़िबकी

धरिया धारण केने माए
जाइ छेलौं स्कूल बाट।
बाटेमे रोकि काका
बुड़िबक कहि लगौलैन टाट।
बौआ, तोहर काका दिअर हेता
ओ देखलैन संग मोर।
हमरा देख तोरा कहलखुन
दुखी नइ हुअ थोड़ो-थोड़।
काकाकेँ छोड़ि दइ छिऐन, माए
तोंही तँ फडिया दे?
चुट्टी धारी सदृश
केना चलब सेहो सुढ़िया दे?
बुड़िबकक माने अनेक,
एक तोहर एक माए-बापक
तोहर जे छिअ, कहै छिअ
कान पकड़यहऽ थोड़बो-थोड़।

एके काज दोहरी-तेहरी
जेहेन जे से तेहेन करैए।
हल्लुक भऽ जेकर होइ छइ
काबिल ओ कहबैए।
बुड़िबक बुझि सवाल केलियौ
से कहाँ बुझौलेँ माए?

सरकारी घर ऑफिसमे
अपराधक दफा बनल छइ।
मुदा बाँकी निरपराधी लेल..?

❍

शब्द : 100

भुताहि गाछी

बीआ उगि अँकुरि-अँकुरि
बढ़ैत बनि बनल गाछ
पुरुष संग पौरुष पाबि
बनौल जिनगीक आस।

सोन्हि सिर सन्हिया धरतीमे
उठा पएर सुन-सान अकास
संगी सजि चलि दुओ संगे
बैस गेल धरती ओ अकास।

डेगे-डेगे डगर निरमा
नइ छै जेकर ओर-छोर
तृप्त चित्त बैस सरोवर
मढ़ै-गढ़ै छै साँझ-भोर।

घाट पहुँच देख तुलसी
अनन्त सरोवर झील
उमैर-घुमैर गाबए वसन्त
हुलसि-हुलसि भऽ तुलि।

अश्रु ओस सजि अनन्त कमल

लगबए भोम्हरा छाती
विष-अमृतक सेज सजा
प्रेम पसाइर दिन-राती।

बाँसक घर देख भोम्हरा
भोम्हरि बनौल माटि मुसरी
ढहि डगर हुच्ची बनिते
संग नाचए लगल टुसरी।

अपन सुख सिरजैले
उजाड़ि-उजाड़ि दोसरकेँ
वंश उजाड़न भेल बनौनिहार
क्षण-पल मेटबए दोसराकेँ।

हुच्ची खसि हिआ हारि
लगल तियागए जान-परान
एका-एकी मेटए लागल
हँसैत-खेलैत खनदान।

पावसक परसाद पाबए
हँसि-हँसि आबए भूत
पाबि परसाद पौरुख जगिते
बनि बदैल यमदूत।

सभ मिलि यमदूत निरमा
जअ-तिल चढ़बए यमराज
साटि-साटि सहे-सहे
नैयायिक बनौल धर्मराज।

अकास-पतालक बीच रचि
जिनगी-मृत्युक संसार
स्वर्ग-नरकक बीच बाँटि
लीला शुरू भेल अपरम्पार।

नि:सहाय निरीह धरतीकेँ
बनौल भोगक चास
तामि-कोरि परती-पराँत
ऊँचगर बनौल डीह-बास।

जामुन चढ़ि यमदूत हँसए
बना बास देवी फुलवाड़ी
जीन पसैर धरती चुमए
भूत लपैक बीट बँसवाड़ी।

देख दशा गाछी-बिरछीक
लगौनिहार भऽ गेल बताह

होइबला कहाँ होइ छइ
कानि-कुहैर भरए आह।

अबोध कुहैर बोध कुहैर
कुहैर भरए आहि
सिहैर-सिहैर सिसकए विवेक
बनि गेल गाछी भुताहि।

भूतक डर केकरा ने होइ छइ
बुढ़ हुअ आकि जुआन
मुदा भूत तँ भूते छी
जिन्दा रखैत सदैत धियान।

❍

शब्द : 226

(श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारी लेल..)

वोनक आगि

गाछ-बिरीछक रग्गड़सँ
लुत्ती छिटकै छै वनमे।
सूखल पात ठहुरी पकैड़
पसरै छै सघन वनमे।
धधड़ा धधकैसँ पहिने
करिया धुआँ पसरे छइ।
लगैत आँखि अश्रु करुआइते
जीव-जन्तु पड़ाइ छइ।
आगिक डर केकरा ने होइ छइ
चाहे बाघ हुए कि हाथी

मुदा,
धीरजसँ जे सहैत...
सएह कहै छी यौ भाय साथी।

❍

शब्द : 49

बीतल बर्खक विदाइ

अन्तिम सत्कार सुनू शिकारी
अन्तिम दिन कहै छी।
अन्तिम बात सुना-सुना
अन्तिम सत्कार करै छी।

हँसैत रहू सदैत अहाँ
हमरो तँ जीबए दिअ।
सभ किछु तँ लैए लेलौं
एतबो तँ बाजए दिअ।

नोर पीब हृदए अहाँक
शीतल सदैत रहैए।
मनक ताप झहैर-झहैर
सगतैर तँ कहैए...।

❍

शब्द : 45

संगी

संगे-संगे एलौं
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी।

संगे अबैत मिलि
ठेंसिया गेलौं बाट
संगिया छुटि गेल।
हम भुतिआइ छी।

अचेत भऽ पूब मुहेँ
पथराएल नयन निष्प्राण
बाटे लसिया गेल।
हम भुतिआइ छी।

आगू-सँ-पाछू
नोचि खाइले प्राण
मर्डाइत रहैए।
कोइ भुतिया बना बाट
तँ कोइ बहैट-बहैट
पेटे विलाइए।
हम भुतिआइ छी।

कोइ खुनि निरमा
नव बाट-घाट
तँ कोइ घाटे वौआइए।
हम भुतिआइ छी।

पिछैड़-पिछैड़ खसि-खसि
लतखुर्दन बनल छी
चारू कात घुमि-घुमि
टुक-टुक देखै छी
चौदहो भुवनक बाट
चलैत चौदहो दिस
कोन बाट पकैड़
देखब चौदहो दिस।
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी।

❍

शब्द : 93

बेथा

पुछत के केकरा यौ भाय
अपने बेथे सभ बेथाएल।
घसा-घसा चानी बनि टलहा
चीन-पहचीन सभ हराएल।
कोन कष्ट किनका पकड़ने
देखनिहारो बौआएल छैथ।

रंग-बिरंगी चश्म दृष्टि
मने-मने हराएल छैथ।
दिअ पड़त दृष्टि धरती
तीन-दिशा तीनू चलए।
आत्मिक भौतिक ओ देवी
जगह पाबि तीनू खेलए।

एक खेले तन-मन केर भीतर
दोसर करए तेज परहार
तेसर तीनू बाट घेरने
रोकि-रोकि बिलहए उपहार।
तत्व कहैत मुँह खोलि-खोलि
तीनूक तीनू छी तकरार।
खोलि आँखि अगात देख
फुलाएत अभिमन्यु भकरार।

कहाँ अछि कठिन बाट जिनगीक
चिक्कन चालि चलैत चलू।
जिनगी तँ पानिक बुलबुल्ला
परेख-परेख छाती धरू।

❍

शब्द : 92

धब्बा

रंग-रंगक धबैत धब्बा
दोस्ती कऽ संग धेलक।
उकैन सिर चढ़ा गाछ
रीति-नीति सब गमौलक।
सुखि पात पतझड़ पाबि
पथार पसैर धरतीपर।
नग्न–बेनग्न बनि वृक्ष
नोर ढड़कए करनीपर।

दर्शनक सभ महिमा गाबए
जहिना देश तहिना विदेश।
दिशा विहीन भऽ भऽ
कोन गीत गौत सु-देश।
धन जीवन आकि जीवन धन
पैसि गंगा देखए पड़त।

अपना-ले अपने आँखिये
गंगाजल पीबए पड़त।
विदुषी आकि ऋृषिका बनि
पुरबा पीब फुफुआएब।
धुन गुणक संग नाचि
नर्तक बनि ठिठियाएब।

मति-विमति पबिते पाबि
दिशांसक खुमारि चढ़ैत।
ढड़ैक◌-ढड़ैक ढाल ढल
हँसि-हँसि वसन्त गबैत।

❍

शब्द : 85

पितृपक्षक भोज

अमावास्या आसिन केर
बितते भोजक लगल ढबाहि।
आन-आन ओरियानक संग
महाजनी चाउरक लगैत सवाइ।

गाम-गामक महाजनोक
रंग-बिरंगक हुकुम चलैत।
केतौ सवाइ तँ केतौ
डेरही, पौन-दोबर चलैत।
जेकर लाठी तेकर भैंस
खाली ई खिस्से नइ छी।
पइस नहाएब जखन पोखैर
तखन बूझब अपने ने किछु छी।

मुदा गुन भेल, भाय हमरा
जाति-जातिक रग्गड़ मचल।
काटि-छाँटि एकबाहि केलक
मनमे खुशीक तूफान मचल।
जातिओ तँ जातिए छी
दिन-राति रग्गड़ करैत।

समए पाबि जहिना सिंगरहार
खुशी-खुशी अपने झड़ैत।

गाममे जाति असकर
असकर अछि दियादी।
बिनु भोजे उद्धार सभ कियो
बाबा, काका, भैया आदि।

❍

शब्द : 90

ठनका

कहाँ बुझि पेलौं अखन धरि
तड़कैत ठनकाक मिरगी।
आगि-पानि दुनूक बीच
पकैड़◌-पकैड़ चाभि जिनगी।
सच्चे कहल जाए यौ भैया
हाथ चढ़ा सिर पकरू।
साहोर-साहोरक, स-हरि स-हरि
धुन दिए
कहाँ छै ठनका उकरू।
गुलाबी गाढ़ लाल देख
लग खसैक ठनकाक आगम।
आँखि-कान आबो बचाउ
नइ तँ बाट भेटत दुर्गम।

खाली-खाली अकासमे
एहेन ठनका बनै केतए?
अनचोकेमे उठिते उठि
एते शक्ति अनै केतए?
गैस-तरल, तरल गैस
आँखि मिचौनी खेल करैए।
उड़ि-उड़ि अकास चढ़ि
आगिक अँगोर बनैए।

वएह अँगोराक शक्ति पाबि
उसरन-बिसरन दुनू बनैए।
सूतल मन आशा जगाउ
पानि◌-पाथरक बचाव बनाउ
सोलह कला सजल अहाँ
जिन्दादिलीक वसन्त गाउ।
मंजिल दूर कोनो नइ छइ,
दुनियाँक नक्शा बनल छइ।
चीन्ह-पहचीन्ह बाट ताकि
नापल डेग गनल छइ।
बनि बटोही बाट घरू
भरल-पूरल संसार छइ।
रस्ते-पेरे बटखरचा भेटतै
संगबेक भरमार छइ।

❍

शब्द : 124

झपासा

पहिले-पहिल जिनगीमे
गिरहकट भाइक बुझलौं झपासा।
एहेन मुँहचुरू बनब
मनमे नइ उठल तेहेन आशा।
सभ दिन सुधबा-बुधबा रहलौं
छल-प्रपंचक भाँज नइ बुझलौं।
बाबू वचनक निमर्जना,
निश्चल मने करैत एलौं।

मुहसँ कहियो गारि नइ निकलल
फलो नीके भेटैत रहल।
ओना सुनने छेलौं गिरहकटक
बाबूक, मेलाक बात मन पड़ल।

गिरहकट भाइक चालि सभ बुझैए
हमहींटा बिनु बूझल छेलौं।
नइ बुझि पेलौं हुनक झपासा
ओंघरा-पोंघरा खाधिमे खसलौं।
बेटा मुड़नमे अगुआ कऽ
नौत-हकार दिअए पठौल।

किरदानी तेहेन ने केलैन
अगुआक अगुआइ फल पौल।

अहूँकेँ कहै छी भाय
झपासासँ सात लग्गा हटल रहब।
गिरहकट सबहक बातसँ
सदैत अपनाकेँ बँचबैत रहब।

❍

शब्द : 95

शिवचरन

सोलह साल पोहुलका शिवचरना
शिवचरन बनि बिरजैए।
जे कहियो गामक मैल छलए
होशगर किसान कहबैए।
भूमकमक किछुए बर्ख बीता
शिवचरना छोड़लक गाम अपन।
कियो कहए छोड़लक, कियो छोड़ौलक,
नइ बजैए कथा अपन।
खसैत-खसैत, खसैत शिवचरना
गामक पतित कहबए लगल।
छाती जखन काज नइ केलकै
गाम छोड़ि, नेपालक बाट धेलक।

आन देश आन मुलूकमे
बिनु जगजगार लोक मनुखे रहैत।
लूरि-मुँह जेहेन रहए छइ
तेहने शक्लक बाट धरैत।
विराटनगरसँ कोस भरि उत्तर
एक गिरहस्त ऐठाम पहुँचल शिवचरना।
तरकारीक खेतीक नक्शा बना
बीघा भरि खेत लेलक भरना।
घराड़ीक पाइ रहबे करै
खेतेमे चापाकल धसौलक।

दु-परानीक खोपड़ी बना
मेहनतक आसन जमौलक।
साल भरि बाद नोकर रखलक
मेहनतसँ खेतो दोहरौलक।
साले-साल उठैत-उठैत
गिरहस्त अपनाकेँ पौलक।
मनमे उठलै देस-कोस,
गाम-घर ओ सर-समाज।
बेचि-बिकीन सभ किछु नेपालक
आबि गेल अपना समाज।
संजोगो नीक भेटलै
दस बीघाक एक पार्टी भेटलै।
एकेठाम दसो बीघा कीनि
घर-घराड़ी सभ किछु भेटलै।

❍

शब्द : 140

चौठचन्द्रक छाँछी

चलैत चाक देख कुम्हैन
तिरछिया तीर छोड़लैन तानि।
कोन लोभ लटकल अहाँ छी
जहिना बगुला, पाछू दौगैत जानि।
प्रीतम प्रीत पाबि कुम्हार
बिहुसि बाजल, छाती खोलि तानि।
सभ दिनसँ करैत रहल छी
तेकरा केना छोड़ब जानि।
भादो सन उकरू मासमे
विधाताक चाक चलबै छी।
पानिि-बुन्नीक ठेकान कोनो ने
अनेरे फज्झति सुनबै छी।
जे फज्झति करए अहाँकेँ
तेकरा पुछब अपन किरदानी।
लोहा-लक्कड़क दूध पौर-पौर
गाए-महींसक करैत बदनामी।
छोड़ि दिअ सभ गर-गिरहत
बेशर्म सभ बनल जाइए।
देवियो-देवताकेँ ठकि-फुसिया
छाती तानिि-तानि चलैए।

❍

शब्द : 80

भरदुतिया

आइये ने भरदुतिया छी माए
पिरही करवनी धुअए जाएब।
साल भरि माटिक लेढ़ाएल
चिक्कन धोय करवनी सजाएब।
बिनु सुखने लिखिया केना हेतै
बिनु लिखिये आसन केना बनतै।
भाए-बहिनक सगुनिया पाबैन
बिनु निअम-निष्ठे केना चलतै?

पुरनि तँ पाड़ले अछि बेटी
कटहरक रंग छै सटल।
मलि-मलि माटि धोइ दिहक
सुखिते चमचमाए लगत।

पानो-मखानक ओरियान
अखन धरि पछुएने छी।
पाबैनक ओरियान करह तूँ
अँगना घर सम्हारै छी।
बाल-बोध बुझि बनियाँ,
हमरा तँ ठकिए लेत।
पाइयो बेसी-बेसी लऽ लऽ
चीजो तँ दबके देत।

ई सभ बात सोचए कियो
भरल-पूरल पाबैनमे।
राम-धाम सभ सहि
भाइक हाथ पुजैमे।

❍

शब्द : 92

फूसि

एहनो फुसि बजै छी
जइ ढेरीपर बैसल छी
ओ कहै छी, किछु ने अछि
अकर्म-विकर्मक बात बिनु
मुँह उघाइर बजै छी
एहनो फुसि बजै छी।

लेश मात्र जे अछि नै
तेकरा ढेर बुझै छी
ब्रह्मलोक, शूरलोक, देवलोकक
सदैत बात बजै छी
एहनो फुसि बजै छी।

❍

शब्द : 45

चिक्कनि माटि

सभ कोइ जाइ छै माटि आनए माए
हमहूँ जाएब अनैले।
चारिमे दिन दिआरी पाबैन
घर-ओसार छछाड़ैले।
अखन ते बच्चा छेँ बेटी
केना कहबौ माटि माथ उठबैले
मटिखोभा महारक ऊपर
केना कहबौ तइ चढ़ैले।

जेना-जेना सभ करतै माए
तेना-तेना हमहूँ करबै।
संगे जेबै, संगे एबै
पथिया भरि कऽ लौबै।
कहले तँ बड़ सुन्नर बेटी
नइ बुझबिही माटिक किरदानी।
जे माटि चमकबै माटिकेँ।
धसना खसि मारै जिनगानी।
दोसर-तेसर काज उताहुल
नइ जा एहत आइ हमरा।
संगे-संग काल्हि चलिहेँ बेटी
तोरे आशा ने अछि हमरा।

❍

शब्द : 82

झारू-बाढ़ैन

दसे दिन दिआरीकेँ माए
अँगना-घर कहिया करबिही।
झोल-झाल लटकल सौंसे
चार-देवाल कहिया झाड़बिही।

वएह ओरियान करै छी बेटी
सीखि ले तोरो काज देतौ।
देखिये-देख, सीखिये सीख
ऐगला दिन काज हेतौ।
नारिकेलक छाजा चीड़ि-चीड़ि
किल्ली दऽ झारू बनाएब।
निछा-निछा राड़ी-डबहारी
मुड़ी-छोपि बाढ़ैन बनाएब।
आब कि केतौ चौरकाँटु भेटै छइ
बाढ़ि आबि सभटा उपटौलक।
केतौ-केतौ जौं बँचलो छइ
तेकरो तँ बकरीए निघटौलक।

झारू-बाढ़ैन मठौठ केना पौत
तखन केना झोल झड़तौ।
से जँ नइ झड़लौं माए
तँ लटैक-लटैक घर खसतौ।

से तँ बेस कहलेँ बेटी
आब कि केतौ राहैड़ होइए।
जहियासँ राहैड़ उपटल
लाड़ैनो बनबैले सिहन्ता होइए।
जेना-जेना समए ससरै छइ
तेना-तेना ससरैत चल।
महक जेना हवा पसरै छइ
तेना-तेना पसरैत चल।
बाँसक छिपाठी टोनि-टोनि
झारू-बढ़ैन बान्हि देब।
दोगे-सान्हिये, कोने-कानिए
चिक्कन-चुनमुन बना देब।

❍

शब्द : 120

डगरीक डगर

ब्रह्म मुहूर्त भोरहरबामे
डगरीक डगर बजल भरि गाम।
जैहह दरिदरा अबिहह लक्ष्मी
मंत्र पजड़ल मनक धाम।
सूप बजौने ऊँट भगै छइ
नानी-नाना कहने छैथ।
सबुरे गाछ मेवा फड़ै बेटी
झुनकुटही दादी कहने छैथ।
सबुरक गाछ केहेन छै माए
कनी-मनी हमरो देखा दे।
किए वोन-झाड़ लगाएब
फुलवाड़ीक लूरि बता दे।
अखन अहाँ बाल-बोध छी
फूलक गुण-अवगुण सीखू।
गुणे-अवगुन फूलक गुण छइ
बुझै-लगबैक लूरि सीखू।
सबुर शब्देटा सँ नइ होइ छइ
विशाल-वृक्ष सेहो होइ छइ।
रंग-रंगक फूल-फड़ संग
मेवोक फल लगै छइ।

❍

शब्द : 80

चपरासी भाय

पाबि पद चपरासी केर
खुशी हँसी बनि उठल परिवार।
धरती छोड़ि अकास छिटकए
सुर्ज-चान संग करत वास।
आइ धड़ि खिलचल घर
समाजक विलटल परिवार
बसैत मनुख मनुखेक संग
चाहे जेहेन हो परिवार।

ओसारेक एस्टुलपर
भेटलैन काज भाय चपरासी
पद गढ़ि अँग ऑफिसक
रूप सजौलैन दरवारिक।
नाचि मन गाबए लगलैन
खिखिया ताल देखबए लगलैन
आँखि मारि इशारा करैत
सुर-ताल झुमए लगलैन।
रोब कहाँ रूआब कहाँ
गनल दिन पदक छी।

लेखा-जोखा सबहक होइ छइ
नीचाँ-ऊपर चाहे कुरसी।
निचला कुरसी कखनो कूदि

तोड़ि-फाड़ि धरतीपर पटकए
बतिया उपरका चीड़ि-चाड़ि
दोख मढ़ि-मढ़ि फँसरी लगबए।

❍

शब्द : 90

नोत

भोरे आबि लालभाय देलैन
नोत कोजगराक घरजाना।
नाओं कहि फुटा कऽ कहलैन
नइ भेल बाबू मन-माना।
परिवार तँ परिवार होइ छइ
फुटा नोत देब अनुचित।
बिनु विचार केने ता धरि
केना कहब एकरा उचित।
बेस पुछलह बौआ तूँ
तँए तोरा कहै छिअह।
वृद्धा पेंशन दरखासक तारीक
दुनू केना निमाहब आइ।
तखन कि करबै बाबू
रस्ता तँ अहीं देखाएब?
केते महत केकर छइ
छी कोन बड़ भारी खाएब।
एकजना बना परिवारमे
धुरीकेँ नेने पकैड़।
पेट भरि खाइ खातिर
डारि-पात दइए छकैर।

तेतबे नइ बौआ, आरो सुनह!
बाल-बोध घरक भेलह।

तोरा छोड़ि खाएब उचित
तोरो तँ जाइले केना कहबह।

जखन अहाँकेँ नोत पड़त
खतियान सेहो बनबै करत।
खतियाने ने खत्ती दऽ दऽ
आड़ि-धूर बनबैत रहैत।

कहलह तँ बेस बौआ,
मुदा तोहूँ बन्हले छह।
ने उपनैन भेलह बिआह
तोहर कोन मदीए छह।

❍

शब्द : 128

लटुआ

लहैकते आगि मनमे
लटुआ-लटुआ लटए लगैत।
देख, आशाक अवरूद्ध बाट
मुरैझ-मुरैझ टगए लगैत।
रंग-बिरंगक आगि पजैर
पकैड़ मन झरकाबए लगैत।
तड़ैप-तड़ैप, छटपटा-छटपटा
धरती फाड़ि निकलए लगैत।
पटुहा भेल नगर (गाम) देख
बिलगा-बिलगा गुनए लगैत।

कियो पीड़ित अन्न-वस्त्र बिनु
कियो अवासक आस लगबैत
कियो मनुखक जिनगी पाबए
ज्योति पबैले कियो मुँह बबैत।
हरा गेल आकि पड़ा गेल
बुझा दिअ हमरो यौ भाय
लुटा गेल आकि छीना गेल
सेहो कनी दिअ बुझाए
सभ चाहए सुखसँ जीअब
माएक सजौल आँगनमे।
बेचैनीसँ चैन नै पाबए
लेत साँस निचेन आँगनमे।

कहियो बल, कहियो सुसकारी
आइ धरिक इतिहास कहै छइ।
एकैसम सदीक मशीनी मनुख
तेकरा-ले की सभ कहै छइ।

❍

शब्द : 103

एकैसम सदीक देश

पैघ आकांक्षाक सदी एकैसमी
उत्तरार्द्ध बीसमीए छूलक मन।
नव-नव लूरि-बुधिये बले
सुख-समृद्धिक, भरतै मन।
रंग-बिरंगक रूप सजल छइ
दुनियाँक आजुक रंग
आगू भऽ कोनो दौगै छइ
कोनो पाछू रगड़ै छै तन।
पहाड़-पहाड़ी, पठार बीच
नदी-पोखैर, झील जहिना।
गढ़ल-बनल देश अपन
आदिवासीसँ उद्योगपति तहिना।
कियो कलकलाइत पेट अन्न-ले।
तँ कियो ललाइत रैन-बास-ले।
कियो भनभनाइत चिकन देह-ले।
कियो चिचिआइत मुँह बोल-ले।
चित्र-विचित्र बनल देश छइ
देख सुनि, बुझि विचार करू।
सोचि-सोचि, विचारि-विचारि
एक रंगा तसवीर सजू।
एक दिस सिक्किम, मिजोरम
नागालैंड ओ मणिपुर।
दोसर लेह लेह-लद्दाक देख
कनैत-कुहरैत जेसलमेर।

समुद्र ऊपर मुम्बै हँसै छइ
भोगक भंडार सजल छइ।
पाबि-पाबि हिलकोर समुद्रक
स्वर्गक संसार बनल छइ।
उठैत प्रश्न अछि एतए?
मुम्बैए, महान भारत छिऐ
आकि अरूणाचल, झारखंडो
भारते छिऐ, भारते छिऐ।
आगू देखैसँ पहिने
उनैट पाछुओ देखए पड़त।
जेकरा कलपलदार बुझै छी
संहारक बनि चलैत रहत।
एकैसम सदी पहुँचलोपर
नर-संहार एहेन केना?
की एहने सुख-समृद्धि लेल?
मड़चड़ बनल, आवास जेना?
जएह सर्जक बनि ठाढ़ होइए
वएह विध्वंसक बनि पड़ैए।
सुख-समृद्धिक रंगमंचपर
दरिद्रा-दुख नाच करैए।
जेकरा बले नाच करब
बामा-दहिना भौक माड़ैए
आँखि-मिचौनी खेल पसाइर
अपन पीठ अपने ठोकैए।
अपन पीठ...।

❍

शब्द : 178

मधुमाछी

पुष्प रस पीब मधुमाछी
मधुर चालि चलए मधुमास।
मोहि-मोहि रस बना मधु
बिलहए उपकारक आश।

माछी रहितो तान मारि-मारि
गबैत जिनगीक गीत।
वायु सदृश गन्ध पसाइर
बनैत सबहक हीत।

डंक रहितो डंकिनी नै
जोगा मधु मधुरानी।
सबहक सिनेह पाबि राति-दिन
महतानि बनि कहबए रानी।

महलक बीच संग-संग
बाँटि काज चलबए दरबार।
जे जेहेन से तेहेन करि
पबैत स-मान परिवार।

उपैत धन जोगा-जोगा
महल बीच सजबए रानी।
सबहक सभ छी सभ छी एक
मुस्की दऽ-दऽ सुनबए रानी।

कियो उपैत, करैत कियो रच्छा
कियो पसारए परिवार।
एक सूत्र संचालित भऽ
हँसैत-बजैत बार-बार।

अजगुत मोहनि छाती सजा
सिरजति नाजुक परिवार।
हराएल-ढराएल बाजि-बाजि
नित सजबए राज-दरबार।

तियाग-तपस्या समेत बीछि
जोगबए मान-सम्मान।
जे लेलौं से देने जाइ छी
नै कहब कियो बेइमान।

की लए एलौं की लऽ जाएब
जानए जागल नैनि।
घर नै सजने बनबै केना
सजल घरक गिरथानि?

आबो सुनू, सुनू आबो
छाती फाड़ि कहै छी।
अपने केलहा छी अधिकारी
सदएसँ सुनै छी।

पौरुष पाबि पूजू विवेक

लाज जेकर जेबर छी।
डेगे-डेग सम बना चालि
दिन-राति सजबै छी।

जे जे छी से सएह छी
परखू अपन-अपन सीमा।
केकरो मनमे ई नै उठए
भसिया गेल बालुक सीमा।

कालक टुकड़ी सभकेँ भेटल
अपन-अपन छी रक्षक।
कलंकक मोटरी बान्हि जुनि
हँसाउ नाओं बनि भक्षक।

देव केतए दानव अछि केतए
दुनियाँक सभ लीला छी।
बेमत भऽ इन्द्रिय घोड़ा
दानव देव बनै छी।

❍

शब्द : 215

(श्री गजेन्द्र ठाकुर आ श्रीमती प्रीति ठाकुर लेल..)

जुआनी

समए संग चढ़ैत जवानी
सूति-जागि चलैत अछि।
नट-नटीक रंगमंच गढ़ि
घर-अँगना नचैत अछि।

चैत चित्त चढ़िते चढ़ैत
योग-वियोग बीच मर्ड़ाइत।
लहलहाइत, फन-फन फनैत
दन-दन-दनाइत तड़पैत।

कात-करोट देख-देख
सोल्हो श्रृंगार सजबैत।
योगी-वियोगी बनि-बनि
राग-तान, सुर मिलबैत।

हपैत हवा थर्ड़ाएल ज्योति बीच
वेदनक वाणसँ बेथित
तन्नुक तन अधखिल्लू मन
टुकड़ी-पुरजा भऽ उड़ैत।
शीतल समीर सिहरैत सज्जा
कलैप कलसि कोमल कली
हँसि-कानि झर-झर झहैर

नयन-नीर कोमल डली।

कड़ैक जुआनी झड़ैक-झड़ैक
हिअबए राह जिनगी केर
बैंकिंग बालु बना-बना
खिल पकैड़ फेक साधि केर।

❍

शब्द : 80

तरंग

सबतैर जगबए प्रेम एकचित्त
दोसर सदैत विवाद करए
एमहर-ओमहर छोड़ि-छाड़ि
बीचका बाट पकैड़ रहए।
रंग-रूप, चेहरा अनेक
चेतन-चित्त तँ एक रहैत।
मुदा वृत्तिक किरदानीसँ
सदिखन तँ उगैत-डुमैत।
सत् बनि कखनो राज-बिराजए
रज बनि◌-बनि शासन करए
धरिते धारण तम तम-तमा
झहैर-झहैर फुनगीसँ गिरए।
खेलक खेल काल सिरजैए
अपनो तँ खेले बनैए
कहाँ रखि पाबए दिन-राति
गतिएकेँ मतियो बदलैए।
सृष्टिक तँ खेले विचित्र
सुख-दुख संग दिन-राति चलए
खेलए जेहेन खेल खेलाड़ी
ओहने ओ खेलौना पाबए।
कोनो खेल धरती बीच खेलए
खेलए कोनो सतरंगी अकास
कोनो सत् सागर खेलए

चुटकी बजा-बजा रनबास।
विवेकसँ पुछए जखन चित्त
थिसिस एन्टिथिसिसक बीच पड़ए
सिनथिसिस तँ सिनथिसिस छी
अ, उ, म.क विचार करए।

❍

शब्द : 107

ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं

ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं
हरे जोतितौं, कोदारिए पाड़ितौं।
रिकशे चलैबतौं, ठेले ठेलतौं
उपहासक पात्रो तँ नहियेँ बनितौं।
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
कियो कहए भुसकौलहा हमरा
कियो कहैत चोरि पास।
कियो कहैत किनुआ डिग्री छी
चारू दिस होइए उपहास।
धौना खसा तँ नहियेँ चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
नै पढ़ने नहियेँ होइतए
पढ़ुआ कनियासँ बिआह।
नै जोड़ए पड़ैत खर्च सिनेमाक
नै जोड़ए पड़ैत साजो श्रृंगार
सीना तानि गामोमे चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
केतएसँ पुराएब खर्च बच्चाकेँ
केतएसँ आनब कनभेंट खर्च।
केतएसँ पुराएब इंगलीस ड्रेस
केतएसँ आनब आवासीय खर्च।
भाग-भरोसे जे ठेलि पड़तौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं

कोठीक नोकरी कोठिए करितौं
चोरा-नुका कऽ खुब कमैतौं।
अँगरेजिया फैशनमे सजि-धजि
बम्बैया हीरो कहबितौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।

❍

शब्द : 114

नँगरकट घोड़ा

यज्ञ सजल यज्ञभूमि
पहुँचल रंग-बिरंगक घोड़।
जेहने रंग पानिओ तेहने
एक-दोसर बीच केलक होड़।

हिनहिना-हिनहिना सभ डाकए
जीतब बाजी ऐ भूमिक।
बनि तीन अगुआ-अगुआ
लीअ भजारि ऐ शक्तिक।
फटैक फटकारि एक-दोसरकेँ
मुँह मारि निकालू बात।
अनसोहांत जखने झमकब
धक्का दऽ, कऽ देब कात।
फूसि बजैक अभ्यास पूर्वा
सभ दिन सिखलक गर लगा।
बेर पाबि बिहुसि बाजल
अछि चढ़ल खुमारि निसाँ।
शीतल सिहकी सजि सिहकए
जुनि अलिसा करू विश्राम।
चलए दियौ मिलि दुनूक संग
बहए दियौ देहक सभ घाम।
नै बुझलक सूतल आकि जागल
गमा चुकल पहिने दुनू सींग।

ठूठ नाँगैर ठिठुरए लगलै
सुआस पाबि भेल तल्लीन।
सीमा-सरहदकेँ बिनु बुझने
तड़ैक-तड़ैक तड़कए लगल।
बेहोश भऽ जखने खसल
नँगरकट्टा कहबए लगल।

❍

शब्द : 111

गीत-2

मुहसँ बोल कन्ना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छइ
टीससँ टिसकै छै छाती
लहि-लहि लटुआएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना...।

आशाक सभ आशा मेटलै
बाटे सभ धेराएल छइ
केकरो कहने किछु ने भेटत
अपने बेथे बेथाएल छइ
मुहसँ बोल कन्ना...।

चोटसँ चोटाएल छै मन
ढहि-ढहि कऽ ढनमनाइ छइ
तैयो हँसि-हँसि नाचए-गाबए
राति-दिन बड़बड़ाइ छइ
मुहसँ बोल कन्ना...।

❍

शब्द : 55

फुलबतिया

फूल देख फुलाइत जेना
मालिक दल-दल फुलवाड़ी
तहिना देख फुलबतिया
जुड़ाइत पिताक बखारी।
आशा आस उगा अँकुरा
सुरकुनियाँ दऽ दिन-राति चलए
फड़ देख-देख जिनगी
सुख-सन्तोष सहैज धरए।
करए समर्पण फूल जहिना
प्रेमी जिनगीक बाट
देख प्रेमिक प्रेम तहिना
बिहुसए सदए सरोवर घाट।
प्रेमी प्रेमिकाक बीच सदए
जीवन धार बहै छइ
चान सूर्ज बीच सदए
क्षण-पल संग चलै छइ।
तपल जिनगीक तापसँ
तियाग उछलि कुदैत
दुनियाँक रंगमंचपर
लीला सदि देखबैत।

❍

शब्द : 70

करैलाक फूल

दिन भरि बैशाख जेठक
अगियाएल रौद जरि करैलाक कोढ़ी।
कोनो फड़ ऊपर, कोनो बिनु फड़े
डुमैत किरिण होइत भकरार कोढ़ी।

पीड़ासँ पीड़ित भऽ भऽ
पीअर वस्त्र पहीरि चमकए।
सी-सी सिहकीक संग पाबि
मुस्की दऽ दऽ मधु रस छिड़कए।
माटि ऊपर छिड़िया-छिड़िया
जिनगीक संघर्ष करैत।
अपन जान बचा-बचा
सुगन्धक संग फड़ो पसरैत।
बिनु सेवाक जिनगीए की
जरैत-मरैत ओ जानए।
तीत सुआद हिस्सो पाबि
सेवाक गुण-धरम पहचानए।
अकास चढ़ि बिहुसि-बिहुसि
अगड़ाइत-मगड़ाइत बजैए।
सुनू मीत, कनी हमरो सुनू
मधुक प्रेमी लोक कहैए।

❍

शब्द : 80

गिरहकट

घाट सिमरिया नहाए गेलौं
बुझि गेल केना गिरहकट।
पाछू बुझलौं गिरहकट छलए
आँचरक पाइ लेलक काटि।
जहिना कुसियारक गिरहपर सँ
काटै छी मीठ रसक पोर।
तहिना गिरह बान्हि गिरहकट सभ
करैत रहैत साँझ-भोर।

जेतए जाएब तेतए देखब
गिरह बान्हिि-बान्हि जाल बनल।
बैसल-बैसल गिरहकट सभ
अछि सत्ता-शासन चिपकल।
जिनगीक कोनो कोण नै
गिरहकटसँ छुटल अछि।
एहेन विकट समैमे
जिनगी भार बनल अछि।
नव-नव जाल बना-बना
मकड़जाल पसारने- अछि।
दिनक-दिन, रातिक-राति
ओझरा-ओझरा कुहैत अछि।

❍

शब्द : 72

मोबाइल फोन

तीन बजे राति आएल फोन।
एकांत चढ़ तुरूछल मन।
हेमालयक आँगन वनमे
पतखर्रनी एक खड़ैत पात
एक कोमल एक खड़खड़ देख
मन-विवेकक भेल मतेक, मकेत
एक्के गाछक दू पात देख
काज उगल ओकरा मनमे
एकक आसन एकक भोजन
तखन भरत बैभव तनमे।

❍

शब्द : 42

पैछला गणित

आइसँ गणित पढ़ए जाइ छी
अहूँ किछु सिखा दिअ भाय।
घरसँ निकलि ने स्कूल जेबै
घरक गणित बुझा दिअ भाय।
अहाँ भैयारी नै सहोदर छी
झूठ नै बाजब अहाँसँ
गणित तँ हमहूँ पढ़ने छी
लाभ केते हएत हमरासँ।
धूर-कट्ठा, बीघा पढ़ने छी
पढ़ने छी सेर-पसेरी।
कनमा-पौआ, बोरा पढ़ने
चौअन्नी-अठन्नी आरो भड़ी।
आब कहाँ चरचा चलै छइ
ऐ सभ हिसाबक भाय।
तखन केना मेल बैसत
बुझा दिअ कनी हमरो भाय।
एक चलैत शहर-बजार
दोसर, गाम-देहात चलैत।
दुनूक गोरा जखन एकठाम
बैस अपन निर्णए करत।

❍

शब्द : 83

कॉमन सेन्स

बाबूजी, कॉमन सेन्स केकरा कहै छइ
फड़िया कऽ सिखा दिअ।
आइये स्कूलमे सीखलौं
परिवारोमे बुझा दिअ।

घुसकबैत मुस्की घुसका पिता
चारि मोतीकेँ आठ बनौलैन।
ने अद्दी-गुद्दी आ ने अजोह
मुस्कियाइत गुरु मुँह खोललैन।
जिज्ञासासँ मुँह उठा पुत्र
लोलक-बोल सुनए चाहलक।
जहिना लोलमे बोर पड़ै छइ
तहिना अजोध शब्द उठौलक।
झपैस पिता जिज्ञासा पुत्रक
बरसौलैन शीतल अश्रुकण।
कॉमन सेन्ससँ पकैड़
अजोधक केलैन पोस्ट-मार्टम।
एक पुत्र जनमै बीस बर्खमे
क्रमश: जनमै अन्त पचास।
की दुनूक बीच दूरियो हेतै
अही प्रश्नमे हएब पास।

❍

शब्द : 81

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-44-5

तीन जेठ एगारहम माघ

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

तीन जेठ एगारहम माघ

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-48-3

दाम : ` 200/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

Teen Jeth Egarham Magh
Anthology of Maithili Songs by Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर

गाछक रंग बदैल/10
मुँहक हँसी केहेन/12
झोंक जुआनी झोंकए/14
बैसले-बैसल नाचि/15
गुमकीमे वौआए/17
भूत बनि भुतियाएल/19
सुखले मे सभ/21
दीनक दिन केना/23
कोढ़ पकड़ि/25
जाल समाज/27
मीत यौ, देहक पानि/29
आश प्रेम संग/31
विषय दस/33
धर्मक फूल/35
किछु ने करै छी/37
अपने पाछू/39
उठी-बैसी/41
गर-मुड़/43
मनक बेथा/45
रहल नै/47
पकड़ि समए/49
सतरंग ऐ/51
दुनियाँक जेहने/53
चढ़ि अन्हार/55
एक विष/57
पेटक ताप/59
जेहेन मुँह/61
धार संग नाह/63
मन मशीन/65
खट-मीठ/67
झोंकमे/69
पबिते पैग/71
हेल-मेल जाधरि/73
कौशल जखनि/75
उमकीमे उमकि/77
जिनगीक कुन्ज/79
सत-चित/81
पड़िते पएर/83
अहाँ किए/85
घट-घट घोंट/87
जहिना बारह/89
दुनियाँ घोड़ाएल/91
बहलि बहील/93
हलचल जिनगी/95
टकटक ताक/97
भीख मांगि/99
बकरी खुट्टी/100
अमरा अँचार/102
घरे-घरे/104
बेटी किए/106
मनक भाव/108
सिरजन सिर/110
दूधक भूखल/112
मारी-बेमारी/114

गाछक रंग बदैल

गाछक रंग बदैल रहल छै
मौसम संग सुधरि रहल छै।

थल-कमल जकाँ कहियो
गाढ़-लाल-उज्जर बनै छै।
तहिना फूल-फल कोढ़ी जकाँ
झरि-झरि कोनो फलो बनै छै।
गाछक रंग बदैल रहल छै
मौसम संग...।

आशा आश लगा-लगा
जीत अपराजित बनैत रहै छै।
सुधरि रूप बदैल चालि
कारी काजर चमकि उठै छै।
गाछक रंग बदैल रहल छै
मौसम संग...।

लत्ती पानि रूप बदैल
थल-कमल बनैत रहै छै

तहिना लत्ती अपराजित
गाछ बनि गछाड़ि धड़ै छै।
गाछक रंग बदैल रहल छै
मौसम संग...।

❍

शब्द संख्या : 79

मुँहक हँसी केहेन

मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप देखैत चलियौ।
छाती केना दलकि रहल छै
सूर-तान भजैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

जिनगी जेकर जेहेन रहै छै
छाती तेहने गनैत चलियौ।
हलसि-कलशि कहैत रहै छै
एेना पारदर्शी बनैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

जखने पालिस शीशा लगतै
झल अन्हार गनैत चलियौ।
झल अन्हार अन्हार बदैल
एक्कभग्गू इजोत देखैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

देखि-देखि ओ सुनि-सुनि कऽ
हँसैत डेग उठबैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप देखैत चलियौ।
मुँहक हँसी...।

❍

शब्द संख्या : 90

झोंक जुआनी झोंकए

झोंक जुआनी झोंकए लगै छै
उष्मा पाबि उमसए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

जाधरि सिर सृजै शिशिर छै
हार-मासु सिहरैत रहै छै।
सुनिते कोइली कुहुकि वसंती
भन-भन मन तन तनए लगै छै।
भन-भन मन तन तनए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

रंग-विरंगक वन-उपवनमे
रंग-रंग फूल फूलए लगै छै
पाबि रस मधुमाछी सिरजि
बीख रंग चुभकए लगै छै।
बीख रंग चुभकए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

❍

शब्द संख्या : 62

बैसले-बैसल नाचि

बैसले-बैसल नाचि रहल छै
गुड़-चाउर मन फाँकि रहल छै।
सिसकैत-सिहरैत कतौ देखि
संग मिलि कऽ कानि रहल छै।
संग मिलि कऽ कानि रहल छै।
गुड़-चाउर...।

उधि उधियाइत धार देखि
संग मिलि कऽ दाबि रहल छै।
घट-घट घटिया घाट बना
मरघट घाट घटबैत रहै छै।
मरघट घाट घटबैत रहै छै।
गुड़-चाउर...।

ने जीवै छी ने मरै छै
घोंटे-घोंटे पानि पीब रहल छै।
घेँट-घेँट घटि घटिया
सूखि-सुखा सुख पेब रहल छै।
सूखि-सुखा सुख पेब रहल छै।
गुड़-चाउर...।

केते जीवै छै केते मरै छै
कनिको ने बूझि पेब रहल छै।
असगर फुसिए बरसपतिया
फोड़ि-फोड़ि मुँह बाजि रहल छै।
फोड़ि-फोड़ि मुँह बाजि रहल छै।
गुड़-चाउर...।

❍

शब्द संख्या : 101

गुमकीमे वौआए

गुमकीमे गुमका रहल छै।
औला-बौला टौला रहल छै।
गुमकीमे...।

घाम-पसिना बहि रहल छै
आश-निराश चलि रहल छै।
धक्कम-धुक्कम जगि रहल छै
औलाइत-बौलाइत मन कहै छै।
गुमकीमे...।

करवनो अन्हर-बिहारि देखै छै
झाँट-पानि बिच पड़ए लगै छै।
मुदा, तैयो मन ममोरि
अशिया आस लगा रहल छै।
गुमकीमे.....।

जखने मन विसवास उठए
इजोत जोत पाबए लगै छै।
पबिते जोत जोति जोतिया
बनि खेत उपजए लगै छै।

बनि खेत उपजए लगै छै।
गुमकीमे.....।

❍

शब्द संख्या : 69

भूत बनि भुतियाएल

भूत बनि भुतियाएल छी
मित यौ बनि भूत भुतियाएल छी।

संगे-संग जगलौं
संगे-संग उठलौं
संगे-संग चालि चलि
संगे रहि हराएल छी।
संगिया मरि गेल
हम भुतियाएल छी।

केकरा कहबै भूत भविष्य
वर्त्तमान छिड़ियाएल छी।
रग्गर बिच फक्कर बनि
लाजे-पड़ाएल छी।
भूत बनि भुतियाएल छी।
बनि भूत भुतियाएल छी।

छोर एक भूत-भुतिया
दोसर भविस मराएल छी।
आगू-पाछू नेनसुन

बीर्तमान वर्तमान पड़ाएल छी।
मीत यौ, वर्तमान हराएल छी।
भूत बनि भुतियाएल छी।

❍

शब्द संख्या : 70

सुखले मे सभ

सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।
सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै।
सूखल जानि जेतए पएर रोपै
काह-कूह सभ तेतए जमल छै।
सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।
सुखलेमे सभ.....।

सूखल धरती जेतए पड़ल छै
झल-फल नजरि तेतए तकै छै।
झलफल झल-अन्हार बनि
झलझलाएल महजाल फेकै छै।
झलझलाएल महजाल फेकै छै।
सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।
सुखलेमे सभ...।

अन्हर जाल फरिच्छ मानि
भोर भुरुकबा सुर्ज कहै छै।

अनहा सागर ओन्ह-ओन्हि
भवसागर सागर पाड़ करै छै।
भवसागर सागर पाड़ करै छै।
सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।
सुखले मे सभ...।

❍

शब्द संख्या : 105

दीनक दिन केना

दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
रतुके काजे दिनो गमा कऽ
बढ़ती कहाँ तानि पाबै छै।
बढ़ती कहाँ तानि पाबै छै।
दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
दीनक दिन केना.....।

बिनु तनने घोकचि-मोकचि जौं
जाड़ माघ आबैत रहै छै।
चैतक चेत चेतौनी ओहिना
सिर जेठ जारैत रहै छै।
सिर जेठ जारैत रहै छै।
दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
दीनक दिन केना.....।

तीन जेठ एगारहम माघ
तीनू लोक देखैत सुनै छै।

देह-पसेना सुरकि चाटि कऽ
माघे ने माघो कहबै छै।
माघे ने माघो कहबै छै।
दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
दीनक दिन केना.....।

❍

शब्द संख्या : 111

कोढ़ पकड़ि

कोढ़ पकड़ि कोढ़ी कहै छै
कोंढ़िया कोढ़ पकड़ने छै।
केना कऽ फड़बै-फुलेबै
रेहे-देह पकड़ने छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

देखलोसँ नहि देखि पड़ै छै
सुनलोसँ नहि सुनि पबै छै।
टीश-पीड़ा टीशा पीड़ा
घोर-घोर मन बनबैत रहै छै।
घोर-घोर मन बनबैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

नहि कहियो फड़बै-फुलेबै
झखि-झखि आशा तोड़ने छै।
सकारथ अकारथ बनि-बनि
दीन राति झहरैत रहै छै।
दीन राति झहरैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

फड़ैसँ पहिने फुलहरि
सूखि-सूखि धरती धड़ैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि कोढ़ी-कोढ़िया
राति-दिन सुनैत रहै छै।
राति-दिन सुनैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि...।

❍

शब्द संख्या : 85

जाल समाज

जाल समाज महजाल बनल छै
हाना बनि परिवार सजल छै।
जाल समाज महजाल बनल छै।

बिनु नापे हाना बनि बन
हाना बीच खाना सजल छै।
हाना बूझि खाना लपकि
खानामे जा-जा फँसै छै।
खानामे जा-जा फँसै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

जान गमौनाइ खेल खेलि
बँचैक कहाँ उपाए करै छै
ऊपर कूदि-कूदि फानि चाहि
गोर गोरिया गुहारि करै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

जालो रूप अदलि- बदैल
कखनो शब्द भवजाल कहै छै।
भवजाल घुरिया-घुरिया

डूमि◌-डूमि भवसागर मरै छै।
डूमि◌-डूमि भवसागर मरै छै।
जाल समाज.....।

❍

शब्द संख्या : 83

मीत यौ, देहक पानि

मीत यौ, देहक पानि तखनि फुलाइ छै
कोढ़ी बनि काज रूप लगै छै।
देहक पानि तखनि फुलाइ छै।

कोढ़ीए ने फुलो-फड़ो संग
बाँहि पकड़ि संकल्प कुदै छै।
देहक पानि.....।

जाधरि मन संकल्पित नहि
ताबे केना उद्देश्य कहबै छै
संकल्पे ने तन-मन बीच
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।
मीत यौ, देहक पानि.....।

काम-धाम जहिना बनै छै
तहिना ने कर्मो-धर्म कहबै छै
धर्मे ने धारण करैत
पथ-पानि चढ़बैत चलै छै।
मीत यौ, देहक पानि.....।

जेहेन पथ-पानि भेटै छै
तेहने जिनगी हँसि चलै छै।
हँसि-हँसि हँसिया-हँसिया
सौन पूनो चान कहै छै।
सौन पूनो चान कहै छै।
देहक पानि.....।

❍

शब्द संख्या : 100

आश प्रेम संग

आश प्रेम संग झूमि रहल छै
लाल टमाटर चूमि रहल छै।
आश प्रेम...।

पथ बीच सन्यासी जहिना
झींक दऽ दऽ जाँत भरै छै।
आस कहाँ संग छोड़ैए
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।
आश प्रेम...।

लाल टमाटर बनि सन्यासी
खटमीठ रूप धड़ैत रहै छै।
नै मीठ तँ खट्टो नहियेँ
अपन नाव हेला हेलै छै।
अपन नाव हेला हेलै छै।
आश प्रेम...।

गीत गीता गाबि सन्यासी
भगवत भजन करैत रहै छै।

सबूर पाबि सबर सबरी

मरितो राम एबे करै छै।
मरितो राम एबे करै छै।
आश प्रेम संग...।

❍

शब्द संख्या : 91

विषय दस

विषय दस सिलेबस प्रवेश
दसो दिशा देखैत रहै छै।
तीन भूज जियामिती तहिना
गीत व्यास गबैत रहै छै।
गीत व्यास गबैत रहै छै।
दसो दिशा...।

सून अप्पन हिस्सा कहि-कहि
ठेहुन रोपि अड़ल रहै छै।
अंकसँ हिसाबो तेहने
रथ जिनगी घिचैत चलै छै।
रथ जिनगी घिचैत चलै छै।
दसो दिशा...।

आगू भलहिं काटि-छाँटि
घटबी घाट बढ़ैत चलै छै।
होइत-हबाइत धकिया-धुकिया
हिस्सा अपन कहबैत चलै छै।
हिस्सा अपन कहबैत चलै छै।
दसो दिशा.....।

अपने हिस्से नाचि-नाचि
अपने गीत सुनैत रहै छै।
अपन-अपन अपना-अपना
मंच जिनगीक मचैत रहै छै।
मंच जिनगीक मचैत रहै छै।
दसो दिशा...।

❍

शब्द संख्या : 93

धर्मक फूल

धर्मक फूल फुलेबे करतै
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै
धर्मक फूल...।

सान धार बनेबे करतै
काम-धाम सजेबे करतै।
भीड़-कुभीड़ किछुओ ने बूझि
असंख्य-शंख बजेबै करतै।
धर्मक फूल...।

धड़ घनेरो धार घनेरो
रूप कृष्ण कहेबे करतै
बान पकड़ि वाणी बदैल
निसाँस-साँस भरेबे करतै।
निसाँस-साँस भरेबे करतै।
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै।
धर्मक फूल...।

बनि फुलवाड़ी फूल सजि-सेज
माला फूल बनेबे करतै

हजार हाथ नाओं हजार
सहस्र बाढ़नि कहेबे करतै।
मीत यौ, सहस्र बाढ़नि...।

करु-पाण्डु बीच सदए
नाद-शंख बजेबे करतै
जय-पराजय गढ़नि गढ़ि
भारत-महाभारत रचेबे करतै।
मीत यौ, भारत-महाभारत रचेबे करतै।
धर्मक फूल...।

❍

शब्द संख्या : 89

किछु ने करै छी

किछु ने करै छी, मीत यौ
किछु ने करै छी।
मीत यौ किछु ने करै छी।

गेड़ू चौक मारि गनगुआरि
दिन-राति रमि रमल रहै छी
अथबल बनि आस-असरा
सभ किछु तियागि रहल छी
किछु ने करै छी।

जरि मरि गेल मन-कामना
तैयो देखि-देखि देखै छी
भेस बदैल भँसि-भँसिया
समए देखि भखैत रहै छी।
मीत यौ, किछु ने करै छी।

बोनक बाट आगू पड़ै छै
उत्तरे-दछिने धार बहै छै
घटि-घटि घटिया घाट बनि
घोंटे-घोट पीबैत रहै छी

मीत यौ...।

ससरि-ससरि ससरैत
गाछ धरती धड़ै छी
धरतीमे धरिया धरिया
लक्ष्मी-नाग कहबैत रहै छी
मीत यौ...।

❍
शब्द संख्या : 93

अपने पाछू

अपने पाछू बौआइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू बौआइत रहै छी।
दिन-राति ढहनाइत रहै छी
राति-दिन गनहाइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

पछुआ बनि पछुआर पहुँचिते
पेट-पीठ, पाँजर देखै छी
हड्डी छाती छिटैक-सिहकि
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

जूआ-जुआ, जूआ-जुआ
नांगड़ि अँठि चलैत रहै छी
लादक ऊपर लादि-लादि
टूटि-टूटि गीरह बनैत रहै छी
टूटि-टूटि गीरह बनैत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

अपनाकेँ अप्पन बूझि-बूझि
अपने पाछू ओझराएल रहै छी
अपनापन भाव बिनु बुझितो
अगू-पाछू नचैत रहै छी।
अगू-पाछू नचैत रहै छी।
मीत यौ, अपने पाछू...।

❍
शब्द संख्या : 98

उठी-बैसी

हमर तेही मे नाम,
हमर तेही मे नाम।
हमरा उठलेसँ काम,
हमर बैसलेसँ काम
हमर तेहीमे नाम...।

उठी लेब कि बैठी,
बाजू-बाजू धड़-धड़ाम
उठी लऽ जँ बैसब,
आ कि बैठी लऽ जँ उठब
छुबिते भरब पद पराम
हमर तेहीमे नाम,
हमर तेहीमे काम।

खेल खेलाड़ी खेलि खेल
बाल-बोध लिखबै छै नाम
खेल जिनगीक खेला-खेला
मृत-अमृत पबै सूरधाम।
हमर तेहीमे नाम
हमर तेहीमे काम

हमरा उठले से काम,
हमरा बैसले सँ काम।

❍

शब्द संख्या : 71

गर-मुड़

गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
पेब धार साबे जेना
बाणिक बानि धड़ैत रहै छै
कोमल-किसलय किछु ने बूझि
पछुआ रूप धड़ैत रहै छै।
गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
गर-मुड़...।

तहक-तह तहिया-तहियासँ
छल-छल छल्ली बनैत रहै छै
समटनिहार संगी जहिया जेहेन
तेहने तहिया बोझ बनै छै।
गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
गर-मुड़...।

गर-मुड़ ठानि बानि पकड़ि
गर-मुड़ चालि चलैत रहै छै।

गर-मुड़ बटगमनी गाबि
कोइली तान भरैत रहै छै।
कोइली तान भरैत रहै छै।
गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
गर-मुड़...।

❍

शब्द संख्या : 99

मनक बेथा

मनक बेथा कहब केकरा हे बहिना
सभ दिनसँ होइते एलै।

बनि-बनि बेथा कथा बनि-बनि
मरण-करण बनिते एलै।
मृत-अमृत रगड़ि-रगड़ि
दिन-राति कहिते एलै।
मनक बेथा...।

खरहा बनि-बनि कथा-पिहानी
राति-दिन भूकिते एलै।
पेट वायु जहिना भूकै छै
खेरहा खरही कहिते एलै।
मनक बेथा...।

मोटरी मोटा माथ चढ़ि-चढ़ि
ठोह फाड़ि कनिते एलै।
कूहि-कूहि, कुहरि-कुहरि
आदिएसँ कहिते एलै।
मनक बेथा...।

मुदा आदि-अंत दुनू सहोदर
सभ दिनसँ होइते एलै।
आगूओ हेतै, आइओ हेतै।
दिशा दसो कहिते एलै।
मनक बेथा...।

❍

शब्द संख्या : 74

रहल नै

रहल नै तकनिहार मीत यौ
नै रहल तकनाहार।
तकतियान अपने सिर चढ़ि-मढ़ि
रहल नै देखिनिहार, मीत यौ
रहल नै...।

रहल सभ दिन ताक तकैमे
धाक अपन पकड़ैपर।
जमिते धाक धकेल-धकेल
ठेल ठेल ठेलिया ठेलैपर
मीत यौ, ठेल ठेलि ठेलिया ठेलि
रहल नै...।

ठेल-ठेल ठेलि ठेलिया
ठेला ठाला बनबैपर।
ठेल पटै रगड़ि-रगड़ि
रंग स्वरूप बदलैपर
मीत यौ, रंग स्वरूप बदलैपर
रहल नै...।

हेरि-हेर, हरणि हरण
अबैत रहल बनि-बनि अन्हार
घेरा-घेरि घेड़ा बान्हि-बान्हि
पटकि बैस छातीपर।
मीत यौ, पटकि बैस छातीपर।
रहल नै...।

❍

शब्द संख्या : 82

पकड़ि समए

पकड़ि समए संकल्प नै ठानब
गति कर्म पेबै केना?
बिनु बूझल बिनु बूलि बटोही
घन-सघन बुझैत जेना।
पकड़ि समए...।

ओर-छोड़ पकड़ि-पकड़ि
काम-कर्म पहुँचै जेना छै
संग श्रम-समए मिलि तहिना
सुफल-फल पाबै तेना छै।
पकड़ि समए...।

संगम बीच श्रम ओ समए
खुशी-खुश खुशिआइ जेना छै
पाबि संग संकल्प तहिना
धर्म-कर्म सिरजैत चलै छै।
पकड़ि समए...।

गनगनाइत कर्म गमगमाइत तहिना
सागर-झील टपबे करै छै।

झील-झिलहोरि सरोवर तहिना
जिनगीक हेल-हेलबे करै छै।
पकड़ि समए...।

❍

शब्द संख्या : 71

सतरंग ऐ

सतरंग ऐ संसारमे
समरस रंग धड़ैत रहै छै।
धार-कोन अन्हार-बिहाड़ि
राति-दिन पेबैत रहै छै।
राति-दिन पेबैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

कहि सुलक्षण बनि कुलक्षण
घटिया घाट घटैत रहै छै।
जुआ जोति पछुआ पकड़ि
दब-उनार करैत रहै छै।
दब-उनार करैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

सिनेह सिनेहिल सहटि-बहटि
गारा-जोड़ करैत रहै छै।
सिरजमान होइए जेतए
काँट-गुलाब हँसैत रहै छै।
काँट-गुलाब हँसैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

संग मिलि मधु डंक जेना
सूर-तान भरैत रहै छै।
रानी-बीच मधुरानी तहिना
मधुपान करबैत रहै छै।
मधुपान करबैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

❍

शब्द संख्या : 86

दुनियाँक जेहने

दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
पात्र बनि जेहेन पाट खेलबै
देखिनिहारो तेहने देखै छै।
दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
दुनियाँक जेहने...।

चाहै सभ छै चैन चीत
दुख-भुख दुनियाँ सेहो कहै छै।
सुख सुखाएल सूतल-पड़ल
सिर संजीवनी भेटै कहाँ छै।
सिर संजीवनी भेटै कहाँ छै।
दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
दुनियाँक जेहने...।

हरि अनंत हरि कथा अनंता
हँसि गीत भागवत गबै छै।
हेरि शक्ति शक्ति हरीक

बाघ चढ़ि भगवती कहै छै।
बाघ चढ़ि भगवती कहै छै।
दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
दुनियाँक जेहने...।

❍

शब्द संख्या : 98

चढ़ि अन्हार

चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
तहिना ने इजोरो बढ़ि-बढ़ि
मास पूर कहबैत चलै छै।
मास पूर कहबैत चलै छै।
चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
चढ़ि अन्हार...।

काटि इजोर कपचि-सपचि
पून प्रकाश पाबैत कहै छै।
खेल जिनगीक खेलाड़ी
चढ़ि-चढ़ि रंगमंच कहैत रहै छै।
चढ़ि-चढ़ि रंगमंच कहैत रहै छै।
चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
चढ़ि अन्हार...।

जस-जसोदा भेद बिनु बुझने
लीला धड़धड़बैत चलै छै।

तीत-मीठ, असाइन-विसाइन
सिर चढ़ि सजबैत रहै छै।
सिर चढ़ि सजबैत रहै छै।
चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
सिर चढ़ि...।

❍

शब्द संख्या : 94

एक विष

एक विष जहर जहान
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
अजोह सोहि जग-जगा
बीस ज्ञान कहबए लगै छै।
विश्व ज्ञान कहबए लगै छै।
एक विष जहर जहान
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
एक विष...।

सुख-दुख संगे संग चलि
पटका-पटकी करैत रहै छै।
अपन-अपन रस्ता पकड़ि
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
एक विष जहर जहान
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
एक विष...।

निसाँ विष खिस्सा विष
कथा विष बतकथा विष

विसाइत विष विसविसा विसा
देह बिखाह बनबैत रहै छै।
भाय यौ, देह बिखाह बनबैत रहै छै।
एक विष जहर जहान
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
एक विष...।

❍

शब्द संख्या : 100

पेटक ताप

पेटक ताप जहिना तपै छै
तपै छै तहिना मनक ताप।
वेद-पुराण मीलित मिलि-मिलि
एक वरदान दोसर अभिशाप।
पेटक ताप...।

तपैक तप तपस्या जहिना
सभकेँ तपैक अछि दरकार।
बिनु तापे तप केना तड़तै
पेते केना उचित-उपकार।
पेते केना उचित-उपकार।
पेटक ताप...।

विलपि-विलपि भगवत मंगै छै
बीच व्यास भागवत देखै छै।
शक्ति पाबि शालीनी जहिना
सिंह सवार शंख फूकै छै।
सिंह सवार शंख फूकै छै।
पेटक ताप...।

तपिते मनक ताप तरंगि
धार तरंगित हुअए लगै छै।
अकार-धार सकार बनि
सागर गंगा कहबए लगै छै।
सागर गंगा कहबए लगै छै।
पेटक ताप...।

❍

शब्द संख्या : 89

जेहेन मुँह

जेहेन मुँह तेहेन हँसी
सभ दिन हँसैत एलैए।
मुँहक जेहेन गढ़नि-मढ़नि
तेहने तान भरैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

जाधरि डोर नै बनि-बनि
घास साबे कहबैत एलैए।
बनिते डोरी समेटि-बटोरि
गृह-वास कहबैत एलैए।
गिरह-वास कहबैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

जीह-दाँत सभ संग पूरै छै
आँखि-कान सभ संग एलैए।
लहरि बीच लहरि लहरा
हास-हहास हँसैत एलैए।
हास-हहास हँसैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

कनैत-खिजैत सभ सभदिना
जिनगी धारण धड़ैत एलैए।
कननी कानि अदैल-बदैल
जिनगी जीत कहबैत एलैए।
जिनगी जीत कहबैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

❍

शब्द संख्या : 77

धार संग नाह

धार संग नाव तखने चलै छै
धार जलदार बनल रहै छै।
धार जलदार बनल रहै छै।
धार संग...।

देख मानसून लपकि-झपकि
धरा-धार बनबैत रहै छै।
ओद्र आद्र पेब पाबि
मैज-मजैर मोजर धड़ै छै।
मैज-मजैर मोजर धड़ै छै।
धार संग...।

जन-जना मनसून पबै छै
तेना-तेना नाव धार चलै छै।
पूरबा-पछबा झोंक पाबि-पाबि
तेज मन तेजिआ चलै छै।
तेज मन तेजिआ चलै छै।
धार संग...।

गति धार जलधार जहिना

मतियो तहिना मनसून चलै छै।
गति-मति करवनो संग-संग
तँ कखनो झहरैत रहै छै।
तँ कखनो झहरैत रहै छै।
धार संग...।

झैड़-झैड़ झिहीर-झिहीर
झिझिर कोण कोणियाँ खेलै छै।
पकड़ि कोण कोण कोनियाँ
जीत-हारि मनबैत कहै छै।
जीत-हारि मनबैत कहै छै।
धार संग...।

❍

शब्द संख्या : 108

मन मशीन

मन मशीन मंत्रणा करै छै
युग-परिवर्तित हेबे करतै।
सभ दिनसँ होइते एलैए
आगुओ दिन हेबे करतै।
युग परिवर्तित...।

मथि-मथि मन मशीन बनि
तर्ज गीत धड़बे करतै
साधन युक्त परिवार तहिना
धड़धड़ा धार बहबै करतै।
धड़धड़ा धार बहबै करतै।
युग परिवर्तित.....।

एक अलंग मशीन जिनगीक
दोसर नीति कहेबे करतै
नीति-अनीति कुनीति बनिते
एक-सँ-एक लड़ेबे करतै।
एक-सँ-एक लड़ेबे करतै।
युग परिवर्तित...।

कूदि एक जहिना दस बनि
तहिना दस-बीस सेहो कहै छै।
दस दसमुँह रावण जेना
आनन दसानन कहबे करतै
आनन दसानन कहबे करतै।
युग परिवर्तित...।

❍
शब्द संख्या : 83

खट-मीठ

खट-मीठ बनि-बनि चाट चाटि
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
चिक्कन केना बनेबै यौ।
खट-मीठ बनि-बनि चाट चाटि
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
सुआद आम...।

तेतरि रोपि तेहेन लगेलौं
गुड़-आम संग पेलौं यौ
रंग बदैल सुआदो बदैल
अपकृत-प्रकृत कहेलौं यौ
खट-मीठ बनि-बनि चाट चाटि
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
सुआद आम...।

जेहने फल पेलौं तेतरिक
तेहने गढ़ि हवा बनेलौं यौ
चर्क-कुष्ट निमंत्रित कऽ कऽ
रोगाएल-मराएल बनेलौं यौ
रोगाएल-मराएल बनेलौं यौ।
खट-मीठ बनि-बनि चाट चाटि
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
सुआद आम...।

❍
शब्द संख्या : 104

झोंकमे

झोंकमे झोंका गेलौं, मीत यौ
छोड़ि जिनगी उड़िया गेलौं।
झोंकमे...।

पार नै पाबि गुणा-भाग
धन-धरम किछुओ ने पेलौं।
मान-दान घाट घटि-घटि
अपसोचै नहा गेलौं
झोंकमे...।

नै जानि दुनियाँ-दिवाना
भरल दिवाना दुनियाँ पेलौं।
प्रेमी-प्रेम पकड़ि-पकड़ि
अपने तँ किछुओ ने पेलौं।
मीत यौ, झोंमे...।

बिनु प्रेम खाली नै दुनियाँ
राधि-अराधि किछुओ ने पेलौं
मुंडे-मुंडे मति-विमति बीच
सुमैतिए-कुमैत सभठा पेलौं।

सुमैतिए-कुमैत सभठा पेलौं।
मीत यौ, झोंकमे...।

❍

शब्द संख्या : 63

पबिते पैग

पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
छान-पगहा बीच बन्हि
घोड़छनि चालि चलए लगै छै।
पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
घोड़छनि...।

उठिते दोसर पैग-पग
सिंह-सिंहासन सजबए लगै छै।
कुदैक-कुदैक फानि-फना
फन-फना एतए डुमबए लगै छै।
फन-फना एतए डुमबए लगै छै।
पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
घोड़छनि...।

चढ़ि-चढ़ि डंक डकडका
गद-गधैया पकड़ए लगै छै
ता-थइ, ता-थइ नाच-नाचि

गाम गदह करए लगै छै।
गाम गदह करए लगै छै।
पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
घोड़छनि...।

❍

शब्द संख्या : 82

हेल-मेल जाधरि

हेल-मेल जाबे नै पकड़ब
जिनगीक कोनो भरोस नै।
रंग-बिरंग सरोवर सगर छै
पार जेबाक संतोष नै।
हेल-मेल...।

कोनो थीर, जलजलाइत कोनो
जुआरि जगल छै सजल-धजल।
पबिते पेट उनटा-पुनटा
देखैए रूप जीलहा-मरल।
हेल-मेल...।

दूर-दूर, हटि-हटि सजल छै
दुर्गम दुर्ग सिरजैत रहै छै।
दुर्ग देख दुखास जेना
कल्प-कल्पना करैत रहै छै।
कल्प-कल्पना करैत रहै छै।
हेल-मेल...।

अन्हर बिहाड़ि उठि उठा

अनहर जाल फेक कहै छै।
इजोत-अन्हार मीलि दुनू
पूनो-अमावस कहि कहै छै।
पूनो-अमावस कहि कहै छै।
हेल-मेल...।

❍

शब्द संख्या : 77

कौशल जखनि

कौशल जखनि कोसल बनै छै
कोसलिया एबे करतै।
लाख परयास केलो पछाति
ढंस घर हेबे करतै।
कौशल...।

कोसल असगर नै पनपै छै
पनपै छै दोसर-तेसर।
चालि कुचालि धाड़ी-धड़िया
भूमि बनैत रहै छै उसर।
कौशल...।

उसर उस उसरा उजरा
सज्जी नाओं धड़बैत रहै छै।
भूमिक भूमा शक्ति छीनि
उसरा उस गबैत रहै छै।
उसरा उस गबैत रहै छै।
कौशल...।

कोसलिया परिवारो तहिना

सूखि-सूखि सुखैत रहै छै।
ऊपरे-ऊपरे छीटि अछीनजल
फूकि शंख काल भगबै छै।
फूकि शंख काल भगबै छै।
कौशल...।

❍

शब्द संख्या : 79

उमकीमे उमकि

उमकीमे उमैक गेलै
भाव भँवर भरैम गेलै।

अबिते उमकी चित-वृत्ति
रमकीमे रमकए लगै छै।
अतल-गहन गहन-अतल
पाबि-पाबि पनिआए लगै छै।
पाबि-पाबि पनिआए लगै छै।
उमकीमे...।

तीले-तील तिलकि-तिलकि।
कौओ बेरागी बनै लगै छै
कल्प-कल्प रमकि झुमकि
अनजनुआ कहबए लगै छै।
अनजनुआ कहबए लगै छै।
उमकीमे...।

उमकि-उमकि लपकि झपकि
लोल-बोल धड़ए लगै छै।
बिनु रंग-रूप बदलनौं सदि

कोकिल स्वर भरए लगै छै।
कोकिल स्वर भरए लगै छै।
उमकीमे...।

❍
शब्द संख्या : 67

जिनगीक कुन्ज

जिनगीक कुन्ज भवनमे
बिहार कुन्ज करए लगै छै।
दुनियाँक भवसार बीच
भव आनन बनबए लगै छै।
भव आनन बनबए लगै छै।
बिहार कुन्ज...।

आनन-फानन बीच-बीच
हजार आँखि देखैत रहै छै।
सरमे-भरमे चुनि-चुनिया
सागर भव भरैत रहै छै।
सागर भव भरैत रहै छै।
बिहार कुन्ज...।

आँखि बीच अँखिया-अँखिया
डिम्ह डिम्हा भाँगैत रहै छै।
क्षीर-नीर निखड़ि-निखड़ि
घाटे-घाट चुनैत रहै छै।
घाटे-घाट चुनैत रहै छै।
बिहार कुन्ज...।

जेहेन आँखि पाँखि तेहेन
बास गाछ बनबैत रहै छै।
गाछ-पात फूल फलनि
संग मिलि जीवैत रहै छै।
मिलि संग जीवैत रहै छै।
जिनगीक...।

❍
शब्द संख्या : 88

सत-चित

सत-चित आनन-फाननमे
भव आनन बिलटि गेलै।
शील बनि शीला चढ़ा
लोढ़ि-बीछि रगड़ए लगलै।
लोढ़ि-बीछि रगड़ए लगलै।
सत-चित आनन-फाननमे
भव आनन बिलटि गेलै।
सत-चित...।

वाण-वाणि चेत-अचेत
चाल-चालि चलबए लगलै
बीचमान बनि बिचमानि
नीर-छीर मिलबए लगलै।
दूधे-पानि मिलबए लगलै।
दूधे-पानि मिलबए लगलै।
सत-चित...।

मुख-बिमुख पथ पथरा
गुआरि गर लगबए लगलै।
आनन चित सरि-सरिया

ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
सत-चित...।

❍
शब्द संख्या : 60

पड़िते पएर

पड़िते पएर हवा पोखरि
डेगे-डेग डगरए लगै छै।
झील-मिलि, हिल-मिलि हील
पकड़ि बाँहि संगरए लगै छै।
पकड़ि बाँहि संगरए लगै छै।
पड़िते पएर हवा पोखरि
डेगे-डेग डगरए लगै छै।
पड़िते पएर...।

धक्कम-धुक्कम मुक्कम जना
धक्कम-मुक्कम चलए लगै छै
सिहकिते नाद चहकि चिहकि
धरा धार धड़बए लगै छै।
धरा धार धड़ए लगै छै।
पड़िते पएर...।

हिल डोला हिलोरि-हिलोरि
किनछड़ि कोण पकड़ए लगै छै।
तड़पि-तड़पि तड़पन करैत
ठौर अपन घर धड़ए लगै छै।

ठौर अपन घर धड़ए लगै छै।
पड़िते पएर...।

❍
शब्द संख्या : 79

अहाँ किए

अहाँ किए रूसल छी हे बहिना
अहाँ किए रूसल छी हे।

हल-चल, हल-चल
सभ दिन करै छी
चल-हल चल-हल
कहाँ पेब पबै छी
तैयो अहीं मगन
कानि-हँसि कुचड़ै छी
कानि-हँसि कुचड़ै छी
अहाँ किए...।

राति दिन एकबट्ट बनौने
सभकेँ सभ लागल रहै छी।
लागि भीड़ कियो, भीड़ लागि
रमझौआ करैत रहै छी।
रमझौआ करैत रहै छी।
अहाँ किए...।

राम काम अमृत अमोध
रमझौआ बीच पड़ल रहै छी
झौआ बन बौआ-बौआ
खर्ड़ा बनि खरड़ाइत रहै छी।
बनि खर्ड़ा खरड़ाइत रहै छी।

अहाँ किए...।

❍
शब्द संख्या : 82

घट-घट घोंट

घट-घट घोंट घोटै छै
मीत यौ, घट-घट घोंट घोटै छै।

तरसैत-तरपैत तनतनाइ छै
तन-फन मन भनभनाइ छै
हक-हका, हकहका कहै छै
अपनमे दरकार धड़ै छै।
अपनमे दरकार धड़ै छै।
घट-घट...।

अपन माइन एकबट्ट मानि
हँसमुँह मन मुस्की भरै छै।
मन-सम्मान, समान मान
तानि छाती समवाण तनै छै।
तानि छाती समवाण तनै छै।
घट-घट...।

जे चिन्हत तेकरे ने चिन्हबै
बीच-बीच बिचमानि बजै छै।
धर्म सनातन ठुमकि-ठुमकि

राति-दिन परिछान करै छै।
राति-दिन परिछान करै छै।
मीत यौ,
घट-घट...।

❍
शब्द संख्या : 76

जहिना बारह

जहिना बारह दिन बजैत
तहिना ने रातियो कहै छै।
बीच-बिचौबलि बीछि-बेड़ा
दुनूमे समतूल भरै छै।
दुनूमे समतूल भरै छै।
जहिना बारह दिन बजैत
तहिना ने रातियो कहै छै।
जहिना बारह...।

जेठक बारह नम-नमड़ि
बारह राति पटिअबै छै।
मघजल्ला पसारि-पसारि
हार जाड़ बढ़िअबै छै।
हार जाड़ बढ़िअबै छै।
जहिना बारह...।

करवनो बाम दहिन घुसुकि
दुनू दिस कपचैत रहै छै।
निखरि◌-निहारि नहि देखि
झपकी-लपकी सहैत रहै छै।

झपकी-लपकी सहैत रहै छै।

जहिना बारह...।

❍

शब्द संख्या : 71

दुनियाँ घोड़ाएल

दुनियाँ घोड़ाएल छै निसाँमे
घट-घोट घोटैत कहै छै।
सुखचन-दुखचन कुहि-कुहि
भटैक-भटका मारैत रहै छै।
भटैक-भटका मारैत रहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल छै निसाँमे
घट-घोट घोटैत कहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल...।

सुख-चैन सोच-असोच
सूखल धार बहबैत रहै छै।
काँट-कुश बन-बन बना
धार-धड़ि धड़बैत रहै छै।
धार-धड़ि धड़बैत रहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल...।

सूखल-टटाएल रसाएल जिनगी
रसाएल जीव कहबए लगै छै।
भुख-पियास पचि पचा-पचा
सार-वेद गाबैत रहै छै।

सार-वेद गाबैत रहै छै।

दुनियाँ घोड़ाएल...।

❍

शब्द संख्या : 69

बहलि बहील

बहलि बहील बहिला कहै छै
आश हमर कहियो नै करिहह
फुलकि-फलकि ढेनु-ढेनुआरक
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
बहलि बहील बहिला कहै छै
आश हमर कहियो नै करिहह
फुलकि-फलकि ढेनु-ढेनुआरक
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
बहलि बहील...।

बहलि मन दहलि-दहलि
बाँझ गाछ धड़ैत रहै छै।
पकड़ि डारि डोला-डरा
लस्सा–लोल छोड़बए लगै छै।
लस्सा–लोल छोड़बए लगै छै।
बहलि बहील...।

लटपट-सटपट बझ-बझीन
गीत वधैया गाबि कहै छै।

ता धीन ताधीन धीन ता धीन
सूर तानि टहिआए लगै छै।
सूर तानि टहिआए लगै छै।
बहलि बहील...।

❍

शब्द संख्या : 86

हलचल जिनगी

हलचल जिनगी हलसि-खिलचि
हर-हरि चालि चलै छै।
बीर्तमान भविष्य कहि-सुनि
भूत-बंगला सजबै छै।
मीत यौ, भूत-बंगला सजबै छै।
हलचल जिनगी हलसि-खिलचि
हर-हरि चालि चलै छै।
हलचल...।

जहिना आनक पोखरि डरान
तहिना गाछी कहै छै।
अधसर-अधमर पोखरि सिरजि
जम-जजमान फुफकारि कहै छै।
मीत यौ, जम-जजमान फुफकारि कहै छै ।
हलचल...।

भाग बैसि एक वीणा-धारणी
बहिना बाँहि पकड़ि कहै छै।
वाम-दहिन चालि चलि-चालि
धाम-काम धड़बए लगै छै।

मीत यौ, धाम-काम धड़बए लगै छै।
हलचल...।

❍

शब्द संख्या : 71

टकटक ताक

टकटक ताक तकै छी हे मइए
आहाँ किए आँखि मुनने छी।
गड़-गड़ गाल गबै छी मइए
तखनि किए कान खोलने छी।
तखनि किए कान खोलने छी।
टकटक ताक तकै छी हे मइए
आहाँ किए आँखि मुनने छी।
टकटक...।

जन-मन-धन धिआनए मइए
छूटि केना के जाइ छी।
डारि-पात अमृत भरि-भरि
विष-रस केना बनैत छी।
विष-रस केना बनैत छी।
टकटक...।

कन-कन मणि मन-मन मइए
अन्हार किए छोड़ैत छी।
रचि अन्हार इजोत-जोत
तखनि एना किए विषविषबै छी।

तखनि किए विषविषबै छी।

टकटक...।

❍

शब्द संख्या : 79

भीख मांगि

भीख मांगि दुनियाँ भिखारी
दानी शिव कहबै छी यौ।
हे यौ भोलानाथ
दानी शिव कहबै छी यौ।
राति-दिन समैट-समटै छी
भीखमंगा कहबै छी यौ
धड़ि भीख धारा बनै छी
धार भीख बहबै छी यौ
धार भीख...।

शिखर सिर अकुर-सकुर
चोटी सिर पकड़ै छी यौ
धार बनि धरिया-धरिया
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।
हे यौ भोला बाबा
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।

❍

शब्द संख्या : 66

बकरी खुट्टी

बकरी खुट्टी खुटेस-खुटेस
जिनगीक जिनगी पाठ पढ़ै छै।
कुन्ज भवनमे लाल बिहारी
लीला रचि-रचि रास करै छै।
लीला रचि-रचि रास करै छै।
बकरी खुट्टी खुटेस-खुटेस
जिनगीक जिनगी पाठ पढ़ै छै।
जिनगीक जिनगी...।

रंग-बिरंगक पात खुआ
रस अमरीत चुसबैत रहै छै।
मनक मक्खन चोरि-छोड़ि
गरदनि बान्ह पड़ैत रहै छै।
मीत यौ, गरदनि बान्ह पड़ैत रहै छै।
जिनगीक जिनगी...।

बीर्त रहितो बकरी जेना
साँढ़-धाकर कहैत रहै छै।
मनहाएल-मनहाएल रहितो
सुरीति रीति सुरैत धड़ै छै।

मीत यौ, सुरीति रीति सुरैत धड़ै छै।
जिनगीक जिनगी...।

❍

शब्द संख्या : 82

अमरा अँचार

अमरा अँचार चटै छै
मीत यौ, अमरा अँचार चटै छै।

अमौर-मौर बनि बना
अबिते रस बदलै छै।
पानि जीह पाबि पनिया
चहटि चुहुटि धड़ै छै।
चहटि चुहुटि धड़ै छै।
मीत यौ...।

जेहने फड़क रंग-रूप
तेहने ते पातो धेने छै।
नमहर-नमहर गिरह-गेँठ
बिनु गिरहेक डारि पकड़ै छै।
बिनु गिरहेक डारि पकड़ै छै।
मीत यौ...।

चटिते अचार अम अमड़ि
अमरजोत देखए लगै छै।
जीवन जन छोड़ि-मोड़ि

मरण वाणि पकड़ए लगै छै।
मरण वाणि पकड़ए लगै छै।
मीत यौ...।

❍
शब्द संख्या : 76

घरे-घरे

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै।
अध-मरल गाम पड़ल छै।
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।
घरे-घरे...।

इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै।
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै।
ज्योतिरमान जगल छै।
घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।
घरे-घरे...।

बनि कनियाँ-पुतरा पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै।

राति-दिन एकबट्ट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै।
नाचि नाच नचैत रहै छै।
घरे-घरे...।

❍
शब्द संख्या : 75

बेटी किए

बेटी किए बनेलौं, शिव यौ
बेटी किए बनेलौं।
भूख पेट दुख बनि बना
हमरे किए सजेलौं
हमरे किए सजेलौं
बेटी किए बनेलौं, शिव यौ
बेटी किए बनेलौं।
बेटी किए...।

सजि साजि सिर सजा
दोखा जान किए देलौं
किछु ने कामना मनमे ठनने
एहेन किए बनेलौं।
एहेन किए बनेलौं।
बेटी किए...।

मन-मन माली बैसल छै
मालिन किए बनेलौं
मन-मलिन मुँह कानि-कानि
बेटी किए बनेलौं।

हे शिवदानी हे बमभोला
बेटी किए बनेलौं।
बेटी किए...।

❍

शब्द संख्या : 72

मनक भाव

मनक भाव समेटि-समेटि
मनोभाव पनपए लगै छै।
सुभाव अभाव कुभाव भव
रूप रंग सजबए लगै छै।
रूप रंग सजबए लगै छै।
मनक भाव समेटि-समेटि
मनोभाव पनपए लगै छै।
मनक भाव...।

महकि महि परखि निखारि
भवन भव सिरजए लगै छै।
उक-भाव लपकि लपाक
बिन भावुक सजबए लगै छै।
बिन भावुक सजबए लगै छै।
मनक भाव...।

भाव-भावुक रमैक-चमैक
भाव लोक सिरजए लगै छै।
आनन कानन मानन मानि
भवानन कहबए लगै छै।

भवानन कहबए लगै छै।
मनक भाव...।

❍

शब्द संख्या : 75

सिरजन सिर

सिरजन सिर पकड़ि-पकड़ि
जड़ि धरती धड़बै छै।
पति-पन पाँति पतिया
उपवन-वन सजबै छै।
भाय यौ, उपवन-वन सजबै छै।
सिरजन सिर पकड़ि-पकड़ि
जड़ि धरती धड़बै छै।
जड़ि धरती...।

सजिते वन उफनि उपनि
धरती धार बहबए लगै छै।
सुध-असुध कहि सुनि-सुनि
घटि-बढ़ि घाट बनबए लगै छै।
भाय यौ, घटि-बढ़ि घाट बनबए लगै छै।
जड़ि धरती...।

कोने-कानी खूटि-खटि
धोबि घाट सेहो बनबै छै।
निरजन, निरमल बसि-बसु
हारि-जीत दुनियाँ कहै छै।

भाय यौ, हारि-जीत दुनियाँ कहै छै।
जड़ि धरती...।

❍

शब्द संख्या : 75

दूधक भूखल

कनि-कनि कानि कहै छै।
कनी-कनी कान पकड़ि-पकड़ि
कर्ण-अंग धड़ैत रहै छै।
निरलोभ, निसकपट बनि-बनि
अखंड बनि बसैत रहै छै।
अखंड बनि बसैत रहै छै।
कनि-कनि कानि कहै छै।
कनी-कनी कान पकड़ि-पकड़ि
कर्ण-अंग धड़ैत रहै छै।
कनि-कनि...।

रंग-रंग कनजरि बनि वन
रंग-रंग मुँह धड़ैत रहै छै।
रंग-रंग गुनि गुन सुनि
फलाफल छिटकैत रहै छै।
फलाफल छिटकैत रहै छै।
कनि-कनि...।

जड़ि कोनो फल फलागम
फुलहरि कोनो झड़ैत रहै छै।

जड़ि-जड़ि कनकि-कनकि
कलश-पल्लव भरैत रहै छै।
अपेछित, पल्लव कलश भरैत रहै छै।
कनि-कनि...।

❍

शब्द संख्या : 80

मारी-बेमारी

मारी-बेमारी के कहए
महामारी बीच पड़ल छै।
के केकरा कहतै-सुनतै
आने-आन धड़ा धड़ छै।
भाय यौ, आने-आन धड़ा धड़ छै।
मारी-बेमारी के कहए
महामारी बीच पड़ल छै।
मारी-बेमारी...।

पानि जरि अगिया आगि
रस रसराज पबै छै।
केकरा कहबै, कहि के सुनतै
खट-रस रस भरल छै।
भाय यौ, खट-रस रस भरल छै।
मारी-बेमारी...।

खट्टर कका केर खटरास
खिया-खिया खरकटाएल छै।
मजनी रगड़ि-रगड़ि खरकिट्टी
सेनुर-सोहाग बुलबुलाएल छै।

भाय यौ, सेनुर-सोहाग बुलबुलाएल छै।
मारी-बेमारी...।

❍

शब्द संख्या : 71

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ◌

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-48-3

सरिता

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

सरिता

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-46-9

दाम : ` 200/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SARITA
Anthology of Maithili Geet by Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर

परदेश जेतै/10

ओज ओझरी/13

पानि बीच/15

बंसी धार/18

जीबठ बान्हि/20

राति-दिन/22

तेहरौनी/24

गेल उमरिया/26

कर-करनाम/28

मनुख कहाँ/30

चान कौसिकीय/32

घट-घट/34

ओल ओड़ि/36

निरजन वन/38

हरबाह/39

हर हलक/41

सालक विदाइ/42

मोनि मन/43

सेड़ाइते/44

दिन-रातिक/45

अबिते आँगन/46

समाज सजल/47

सभ मिलि/48

सोच सकार/50

अबिते अगहन/51

उपजल खेत/53

धूल चरण/55

उनटन/57

जान विचार/58

चालनि-सूप/59

मरम देखि/61

वेद-भेद/63

भक-इजोतमे/65

जेठुआ गरे/67

निर्जन वन/69

छगुन्तामे पड़ल छी/71

सुआगत की लए/73

सुआगत अपनेक/75

वृद्ध केना/76

समए केर/78

भगवती गीत/80

आनक बोझ/82

अड़कन-मरकन/84

हाल-बेहाल/86

आजादीक उमंग/88

बुधिए भोतिया/90

घर-घरा/92

जा बौआ/94

लत-लत लत्ती/96

पीड़ित रीति/97

अकार-सकार/99

मंगनी-चंगनी/101

आन्ही-अन्हर/103

सुफल काज/105

परदेश जेतै

भैया यौ, परदेश जेतै।
नै छै लज्जति गाम-घरमे
नै छै चालि-बेवहारमे।
बोली-वाणी एकोमे नै छै
नै छै आसे-बिसवासमे।
अहीं कहू भाय, केना कऽ रहतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

मर्त बनि भूमि मर्द जखने
धड़ि धड़ लज पट-पेटमे।
हंस-हँसि हीं-हीं हिया-हिया
कू-लजति सू रणक्षेत्रमे।
अहीं कहू भाय, केना कऽ जेतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

छेलै भूमि कहियो भूमा सन
बास-सुबास सजैत छेलै
देव-दानव मानव बनि-बनि
अरूप-सरूप बनैत गेलै।
अहीं कहू भाय, केना कऽ टिकटै

भैया यौ, परदेश जेतै।

दूर बसि दुर्वासा देखि-देखि
ललकारी ललकारि भरै छै।
दूर देश दुर-दुर दुरदुरा
अपन पौरुष पाबि कहै छै।
अहीं कहू भाय, दम केना कऽ अँटतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

कमल सगर किलकारी भरि-भरि
बेथा-कथा हेल-हेल कहै छै।
भूम-कुभूम भूमहुर बनि-बनि
त्राहि-माम कंश कृष्ण कहै छै।
अहीं कहू भाय, किए कऽ जेतै
किए जेतै, किए ने जेतइ।
अहीं कहू भाय, केना नै लीबतै
भैया यौ, परदेश जेतै।

आन अपन अपना-अपना
मद बोतल-शीशी भरै छै।
पीविते मद मदहोश बनि-बनि
चीन-पहचीन बिसरए लगै छै।

अहीं कहू भाय, बिसरल मन केना कऽ पड़तै
भैया यौ, परदेश जेतै।

घोड़ा-हाथी, ऊँट बनि-बनि
रह-राही रणबास चलै छै।
योद्धा-युद्ध सरसिज सिरजि
वीरभूम नाओं धड़बए लगै छै।
अहीं कहू भाय, किए ने रहतै
नै यौ भैया, जेबे करतै, जेबे करतै।

❍

शब्द संख्या : 197

ओज ओझरी

ओज ओझर सोझ सोझड़ै
पछुआ पोझर पोझ पकड़लक।
ओज-सोझ सोझर करैमे
सोझर सोझ पोझर पकड़लक।
सोझर सोझ पोझर पकड़लक
पछुआ पोझर...।

घीचि-घीचि पछुआ पक-पकड़ि
चढ़ि टिकासन बासन बनौलक
कखनो मुहगर कखनो चीत
चालि चलि सिंघासन मारलक।
चालि चलि सिंघासन मारलक।
पछुआ पोझर...।

पोझरी ओझरी बनि विगड़ि
सोझरी बाट सोझा भगौलक।
छाती हाथ धड़ धक-धकेलि
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पोझर-सोझर सरसिज भगौलक।
पछुआ पोझर...।

अपने रोपल गाछी भुताइ
आकि पोखरि नाओं चढ़ौलक
पोखरि भुताइ आकि गाछी
मन मन्दिर बिस बैस कहलक।
मन मन्दिर बिस बैस कहलक।
पछुआ पोझर...।

❍

शब्द संख्या : 86

पानि बीच

पानि बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै?
सजि-सजि साजि सरोवरो-झीलो
तहिना संग सगरो सजबै छै।
पानि-बीच समुद्र बसल छै
आकि समुद्र पानि कहबै छै।

बनि धुआ धुधकारि बनि-बनि
अकास नील सजबए लगै छै।
धड़-धड़ि धार धड़ि-धड़ि धरती
कमल नील खिलबए लगै छै।
पानि बीच...।

बूने-बून बड़-बड़ बनि-बनि
धड़ धरती धन राशि धड़ै छै।
दस दुआरि लक्ष्मी बनि-बनि
अकास-पताल बखार बनै छै।
पानि बीच...।

मन मण्डल धनमण्डल बनि-बनि

ही पत ही अकसि खसै छै।
मह-महा महि-महि मुखमण्डल
मक्खन बनि अमृत बसै छै।
पानि बीच...।

कखनो मधु कटि कट कखनो
नम-नम नाम धड़बए लगै छै।
चढ़ि अकास अकैस झकैस
धड़-धरती धन राशि धड़ै छै।
पानि बीच...।

सुवास-अकास मह महा-महा
सिज-सिर समर सजबए लगै छै।
जन-जनि जननी कहि
अकास गनजन करए लगै छै।
अकास गनजन करए लगै छै।
पानि बीच...।

जूही-बेली संग सहेली
सहलि सहला रस भरै छै।
बनिते रस-रस रसिया
लटपट-खटपट करए लगै छै।
लटपट-खटपट करए लगै छै।

पानि बीच...।

एबा-जेबा बाट बनि-बनि
गंग अकास बहए लगै छै।
धड़-धड़ा धरती धरि-सजि
नाभि कमल खिलबए लगै छै।
पानि बीच...।

नरम-गरम सरम बनि-बनि
सिंगार सजि सिर चलए लगै छै
पेब प्रेम पहिया प्रसून बनि
प्रेम रस भक्त पबए लगै छै।
पानि बीच...।

❍

शब्द संख्या : 191

बंसी धार

किनहरि बैसि कन्ह-कन्हुआ
बंसी धार लगौने छिऐ।
चेल्हबा-पोठी बोर बना
रेहुक सिरा सजौने छिऐ।
रेहुक सिरा सजौने छिऐ।
बंसी धार...।

लहकि-लहैकि लहकी लहका
घिड़नी चाइल धड़ौने छिऐ
धारे बीच खेल खेला खेलारी
हेला हेल हेलौने छिऐ।
हेला हेल हेलौने छिऐ।
बंसी धार...।

बिनु छिपे छीप छीप-छीप
उनटा पट पटकने छिऐ।
पुछड़ी-पूछ पकड़ि-पकड़ि
हरदा-हरदी लगौने छिऐ।
हरदा-हरदी लगौने छिऐ।
बंसी धार...।

सुआद-कुआद बुझने बिना
जिनगी धार धरौने छिऐ
हारि थाकि मन मारि-मारि
अस्त-उदय देखौने छिऐ।
अस्त-उदय देखौने छिऐ।
बंसी धार...।

❍

शब्द संख्या : 79

जीबठ बान्हि

जीबठ बान्हि जिनगी जखन
आगू डेग उठबए लगै छै।
धड़ धरती अस-असा अकास
सहर सिहरि डोलए लगै छै।
सहर-सिहरि डोलए लगै छै।
आगू डेग...।

वायुमण्डल बन वाय जेना
तहिना जिनगी जीब बनै छै।
आनन-कानन बीचे बीच
जीवन-धार बहैत रहै छै।
जीवन-धार बहैत रहै छै।
आगू डेग...।

मृत भूमि अमृत बनाबए
अगुआ डेग उठए लगै छै।
पछुआ पछ पछाड़ि-पछाड़ि
हीय हृदए मढ़ए लगै छै।
हीय हृदए मढ़ए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।

मढ़िते हीर हृदए जखनि
सीर-सिर, सीर-सिर बढ़ए लगै छै।
पबैत पुन्ज परकाश जखनि
पुष्प कमल सजबए लगै छै।
पुष्प कमल सजबए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।

लतरि लता लट लटैक
जन-जनक फुलवाड़ि बनै छै।
नित्या-नन्द संग-संग सीता
जानकी जनक कहबए लगै छै।
जानकी जनक कहबए लगै छै।
जानकी जनक...।

बिनु जिनगानी जिनगी ओहने
बिनु तार तरमण्डल कहै छै।
एकतारा कखनो सितार बनि
पौरुष बुद्ध लहरए लगै छै।
पौरुष बुद्ध लहरए लगै छै।
जीबठ बान्हि...।

❍

शब्द संख्या : 144

राति-दिन

लगल पाँति पतिआनी गढ़ि-गढ़ि
राति-दिन बिचड़ैत रहै छी।
भद्र-भद्रता तँ यएह ने भेल
मरि मुँह कुहरैत रहै छी।
मारि मरि मन कुहरैत रहै छी।
राति-दिन...।

करनी-धरनी बढ़नी बनि-बनि
घटनी-बढ़नी कहैत रहै छी।
कोइली बोल ककह ककैह
मुँह बाझ अमरीत घोड़ै छी।
मुँह बाझ अमरीत घोड़ै छी।
राति-दिन...।

बनि माली थल-मैल मैल
मृत सिंगार सजबए लगै छी।
मुँह देखि मुंगबा बिलहि
बाड़ी सिर सजबए लगै छै।
बाड़ी सिर सजबए लगै छै।
राति-दिन...।

फुइस-फटक फटकि-फटकि

अनिष्ट-इष्ट कहैत रहै छी।
भूख मन भूक-भूक भूका
सजि मन सिर सजबए लगै छी।
सजि मन सिर सजबए लगै छै।
राति-दिन...।

❍

शब्द संख्या : 94

तेहरौनी

तेहरौनी जोत-इजोत पाबि
उठा हाथ छह चास कहै छै।
पबिते हर हरहरा हरहरा
रूप सिंगार परकीत कहै छै।
रूप सिंगार परकीत कहै छै।
तेहरौनी...।

असिया आस आस असिया
सजि सेज श्रृंग शेर कहै छै।
पबिते पौरुष प्रकृति प्रेम
भजन भक्त भजि-भजि कहै छै।
भजन भक्त भजि-भजि कहै छै।
तेहरौनी...।

रूप बहुरूप सरूप गढ़ि-गढ़ि
साले-साल उसरैत कहै छै।
अहिना आगू असिया-असिया
चौसठि सिंगार सजैत रहै छै।
चौसठि सिंगार सजैत रहै छै।
तेहरौनी...।

प्रेम परकीत सोभाव गुण

बरैस-बरैस बेरसैत रहै छै।
तोष-आसु घोड़ि-घोड़ि घोड़
अमृत रस विषपान करै छै।
अमृत रस विषपान करै छै।
तेहरौनी...।

❍

शब्द संख्या : 93

गेल उमरिया

गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
दगल-दाग लगलै कंचन कायामे।
देख-देख दुनियाँ मन भड़छलै
रंग-रूप रस पीबामे
भूक भौक भौकिया-भौकिया
चोकड़ि गेल फल खेबामे।
चोकड़ि गेल फल खेबामे।
गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
दगल-दाग लगलै कंचन कायामे।
गेल उमरिया...।

असिया आस आश मारै छै
कुन्ज–निकंुज बोन भड़मै छै
कद-कद कदम गाछ हिलै छै
कृष-कृष कृष्णकेँ पेबामे।
कृष-कृष कृष्णकेँ पेबामे।
गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
गेल उमरिया बित फुसिए मायामे
दगल-दाग लगलै कंचन कायामे।
दगल दाग...।

राधा पाश पकड़ि-पकड़ि
झुलना कृष्ण झुलबै छै।
बात-बाट संग मीलि मिल
एकबट्ट बनि बन झुलै छै।
एकबट्ट बनि बन झुलै छै।
कद-कद कदम गाछ हिलै छै।
कृष-कृष...।

❍

शब्द संख्या : 102

कर-करनाम

डिबिया ऊपर मोमरी इजोत
कर-करनाम करैत एलै।
बनि फूल खेल खेलि
मोमरी मन भरैत एलै।
मोमरी मन भरैत एलै।
कर-करनाम...।

जेहेन तेल तेहेन इजोत
रसि रस राशि रसैत एलै।
कठ-कठगैनी हँसि-हँसि कटि
डिबिया रासि जरैत एलै।
डिबिया रासि जरैत एलै।
कर-करनाम...।

बनि इजोत बन-बन करए
गन्ह हवा गमकैत एलै।
सिक्त-सिक्त शिखा पकड़ि
परिचए अपन धड़ैत एलै।
परिचए अपन धड़ैत एलै।
कर-करनामा...।

पात बीच फूल फूलि फुला
करिया झुमड़ि खेलैत एलै।
बिनु पाते मगर पसीद
रंग-रभस करैत एलै।
रंग रभस करैत एलै।
कर-करनाम...।

❍

शब्द संख्या : 82

मनुख कहाँ

मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ
मीत यौ, मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
नै भेल लूरि-बुधि जीबै केर
नै बदलल चाइल-प्रकृति
अपने जेना जे अबैत गेल
तनलिऐ तहिना तानि गीत।
तनलिऐ तहिना तानि गीत।
ताल-मात्र बुझि नै पेलिऐ
मनुख कहाँ...।

चालनि चाल चालि नै ताबे
गुर-चौल कात केना रखबै।
आँकर-पाथर जा नै बेरतै
सुआद-कुआद केना बुझबै।
अखनो धरि से कहाँ बुझलिऐ
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
मित यौ...।

उत्तर-पूब सोपान सजल छै
अकास-पताल पकड़ि बैसल छै।
सत तल जेना उत्तर बसल छै
अतल-पतल सेहो बनल छै।
आइयौ कहाँ से बुझि पेलिऐ
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
मित यौ...।

ढहि केतौ ढनमन केतौ
ढनमन-टनमन होइते एलिऐ
मन मनुआ मन्हुआँ महुरा
अमरीत मिरीत पीबैत एलिऐ।
अमरीत मिरीत पीबैत एलिऐ।
मनुख कहाँ हम बनि पेलिऐ।
जहिया दुनियाँ-जहान जनबै
मनसुख तहिया बनि पेबै।
मनसुख तहिया बनि पेबै।
मित यौ...।

सोंखि-सोंखि सुख-चाइन पेबै
आनन-कानन भड़मैत पेबै।
आनन-कानन भड़मैत पेबै।
जीता जी जिनगानी गेबै।
जीता जी जिनगानी गेबै।
मित यौ...।

❍

शब्द संख्या : 153

चान कौसिकीय

चान कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखनि मोती पेलकै।
अड़ैक मन तड़ैप-तड़ैप
अरपित-सँ-तरपित पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखनि...।

लाभ-लोभ ससैर-पसैर
जिनगी धार बहैत पेलकै।
पटे-पट पटि पेट पटिया
गंग अकास हँसैत धेलकै।
चन्द्र कौसिकीय धड़ि धार
डूमि जखनि...।

शिखर शीश सरणि सजि
धरती सुनि धारा धड़ौलकै।
धारे-धार धड़ि धड़िया
सागर-गंगा सटैत पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।

सगर सागर संग सङोरि
चीत शान्त चेतबैत पेलकै।
कमल नील अकास गढ़ि मढ़ि
सत् सागर अकास फुलेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।

अधर्म-धर्म सुधर्म बनि
सुधर्म-धर्म डेगैत धेलकै
जिनगानी गीत गाबि-गाबि
हरिहर हार चढ़ैत पेलकै
हरिहर हार चढ़ैत पेलकै।
चन्द्र कौसिकीय...।

❍

शब्द संख्या : 93

घट-घट

घट-घट घाट घटवार बीच
भाँज केना पेबै ओइपार।
रंग-बिरंग घट घाट घटि-घटि
पार केना जेबै ओइपार।
पार केना जेबै ओइपार।
घट-घट...।

कमला-कोसी गंगा-जमुना
बैसल छै घट-घट घटवार।
अपन-अपन रूप-छबि
फेक रहल छै दुनू पार।
फेक रहल छै दुनू पार।
घट-घट...।

धारे-धार मानै छै मनुआँ
मोइन फूटल छै बीचला धार।
घर-घड़िआर बसोवास बनि
चाभि रहल छै दिन-देखार।
चाभि रहल छै दिन-देखार।
घट-घट...।

चढ़ि गाछ गनगुआरि जहिना
किसलय-कलश करए उपकार।
संयम बनि संयासी कहि-कहि
भरमै छै सौंसे संसार।
भरमै छै सौंसे संसार।
घट-घट...।

❍

शब्द संख्या : 81

ओल ओड़ि

ओल ओड़ि ओलि-ओलि
सभटा कब-कब गाड़ि देलकै।
कन्द–केशौर मुँह मुंगबा दऽ
तड़ि-तड़ि तरूआ बनौलकै।
मीत यौ, तड़ि-तड़ि...।

बेधि सिर कुशियार डाभ-कुश
तड़तड़ाइत तर तामि देलकै।
उनटा-पुनटा सुखा-अबा
मुंगरीसँ झोझड़ा देलकै।
मुंगरीसँ झोझड़ा देलकै।
मीत यौ, तड़ि-तड़ि...।

बेवहार विधि सेज सहेज
तर-ऊपरा रंग चढ़ा देलकै।
कचे-बचे फल-फूल लटका
हावामे उड़िया देलकै।
हावामे उड़िया...।

हीय चढ़ि हाथ-पएर पसारि
नापि-नापि मनुखाह बनौलकै।
कंट गुल गुलाब सजि-धजि
कीच कमल कोखिया देलकै।
मीत यौ, कीच कमल...।
कोसा कोख रगड़ि-रगड़ि
तानी-वाणी रंग चढ़ौलकै।
नख-सिख, सिख-नख रचि-बसि
नचनी-नाच नचा देलकै।
मीत यौ, नचनी-नाच...।

❍

शब्द संख्या : 87

निरजन वन

निरजन वन निरजल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
सतरंगी-बहुरंगी खेल खलमे
अपन पएर पखाड़ि रहल छै।
अपन पएर पखाड़ि रहल छै।
निरजन...।

सुरूजो एक धरतीओ एक्के
अग-जल हवा सिहकि रहल छै।
खल-खल खलि खलिया-खलिया
टूक-टूक टुकड़ी तोड़ि रहल छै।
टूक-टूक टुकड़ी तोड़ि रहल छै।
निरजन...।

जेहेन जल-थल जतए रहै छै
सिरजन सिर तेतए रचै छै।
मन-तन धधकि-धधकि तेतए
पछ सरि पंछी बनैत रहै छै।
निरजन वन...।

❍

शब्द संख्या : 67

हरबाह

जोति हर हरबाह कहै छै
मीत यौ, हर जोति हरबाह कहै छै।

नीचा-ऊपर खेत बनि-बनि
चोटी-ढाल बनल छै।
बून पपीह सु-आती पकड़ि
मृत-अमृत रसपान करै छै।
मृत-अमृत रसपान करै छै।
मीत यौ, हर जोति...।

कीर्त-वीर्त आ प्रकृत
तारा-ऊपरी सिर सजै छै।
पसरि लतरि लत्ती जेना
लत-मरदन करैत रहै छै।
लत-मरदन करैत रहै छै।
मीत यौ, हर जोति...।

चोटी पानि टघड़ि-टघड़ि
झील-सरोवर सजैत रहै छै।
बाल-भाल कुशक कलेप
स्थल-मरू बनबैत रहै छै।

स्थल-मरू बनबैत रहै छै।
मीत यौ, हर जोति...।

❍

शब्द संख्या : 79

हर हलक

हर हलक हलन्तमे
मीर-दोल तेहल बनै छै।
पुर-पुष्कर पुरस्कर
घाट-बाट घटैत रहै छै।
घाट-बाट घटैत रहै छै।
हल-हलक...।

एक-दू तीन चारि चालि
गति इंजीन गाड़ी धड़ै छै।
अन्हाँ-गाहिंस छड़ छूटि
फरकेसँ फीफीआइत रहै छै।
फरकेसँ फीफीआइत रहै छै।
हल-हलक...।

लंक मारि लपकि-लपकि
संगे-संग चलैत रहै छै।
करनी, भरनी, मरनी बीच
धार अगम बहैत रहै छै।
धार अगम बहैत रहै छै।
हल-हलक...।

❍

शब्द संख्या : 62

सालक विदाइ

भाव-अभाव बिनु केना फुटतै
फुटलोपर लेतै के यौ।
अभाव-भाव सुभाव सुधरि
दर्पण-दर्शन देखौतै यौ।
दर्पण-दर्शन...।

दर्पण साहित्य समाज कहि
दृष्ट–दर्शन छिपौलकै यौ।
एना-केना बाट बना
बटोही बाट भोतिऔलकै यौ।
बटोही...।

एक्कैस-बीस समए ससरि
नचिनी नाच नचै छै यौ।
बिनु अखियासे जन-मरम
जिनगी भसान भसै छै यौ।
भाव-अभाव बिनु केना फुटतै
फुटलोपर...।

❍

शब्द संख्या : 52

मोनि मन

मोने मन उमड़ि-घुमड़ि
बिढ़नी गीत गबैत रहै छै।
सिंह-बाघ धरती धमकि
पानि गोहि मोहैत रहै छै।
बढ़नी गीत...।

घटनी-बढ़नी कहि-सुनि
बढ़नी घटनी करैत रहै छै।
बढ़नी झाँटि झाड़ि-झटिया
मारि बढ़नी मारैत रहै छै।
बिढ़नी गीत...।

सेवा कहि-कहि सभ ठक
ठेका रस पीबैत रहै छै।
मुदा कि, पबिते जिनगीक रस सेवा
स्पद-प्रेम मिलि मीलि गबै छै।
स्पद-प्रेम...।
मोने मन उमड़ि-घुमड़ि
बिढ़नी गीत...।

❍

शब्द संख्या : 61

सेड़ाइते

मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।
हेराइते हरै छै, डेराइते डरै छै।
मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।

भात-बात बासि बसिया
बसिया-लसिया रूप धड़ै छै।
बसिया-टटका कहि सुनि-सुनि
निसाँ नसा चढ़बैत रहै छै।
निशा नसा चढ़बैत रहै छै।
मीत यौ, सेराइते...।

वाह रे मन, इच्छित जीवन
चाहक हाल बुझैत रहै छै।
पानि कहि सेराएल चाह
हटा कात फेकैत रहै छै।
हटा कात फेकैत रहै छै।
मीत यौ, सेराइते...।

मीत यौ, सेराइते सड़ै छै।
हेराइते हरै छै, डेराइते डरै छै।

❍

शब्द संख्या : 77

दिन-रातिक

दिन-रातिक आँखि मिचौनी
अन्हरा-दिठड़ा खेल खेलै छै।
दिन-सुदिन कहि सुना-सुना
निसभरि राति रमैत रहै छै।
निसभरि राति रमैत रहै छै।
अन्हरा-दिठरा...।

दिना दोख घिसिया-तिरिया
नित: नोन नश-नश भरै छै।
अधा जिनगी अलबा-दोलबा
अदधे आँखिक बीच उड़ै छै।
अदधे आँखिक बीच उड़ै छै।
अन्हरा-दिठरा...।

दिठड़ा डेग बढ़ि-बढ़ि बढ़ा
लपकि बाँहि अन्हरा पकड़ै छै।
पकड़ि बाँहि नूनू-दूनू
राति काटि प्रभाती गबै छै।
राति काटि प्रभाती गबै छै।
अन्हरा दिठड़ा...।

❍

शब्द संख्या : 68

अबिते आँगन

अबिते आँगन अलकि-झलकि
दोग-सान्हि देखए लगै छै।
दोगे-दोग दौड़ दूर देखि
अलकक चान दौड़ए लगै छै।
अलकक चान दौड़ए लगै छै।
अबिते आँगन...।

सोनि-सानि शून सन्हिया
उगडुम डुमउग करए लगै छै।
उगि-डूमि डुककुनिया मारि-काटि
चितंग चेल चेतबए लगै छै।
चितंग चेल चेतबए लगै छै।
अबिते आँगन...।

जहिना लहास धार धरा
चीत-पट परिचय करए लगै छै।
अलकि-पलकि अलि-अल कहि
अलकक चान देखए लगै छै।
अलकक चान देखए लगै छै।
अबिते आँगन...।

❍

शब्द संख्या : 70

समाज सजल

समाज सजल छै छिपाड़-उकट्ठी
छीप-उकठपना बेवसाय बनल छै।
रंग-बिरंग समाज गढ़ि-मढ़ि केर
रंग-रंग छीप सदि कटैत रहै छै।
रंग-रंग छीप सदि कटैत रहै छै।
समाज सजल...।

आस-वियास बनिते जहिना
चोर-माखन कृष्ण कहै छै।
गोप-गोपी बीच उमैक
कहि उमैक उकठपन करै छै।
कहि उमैक उकठपन करै छै।
समाज सजल...।

भावो लोक तहिना भावए
मारि सेन्ह कटिया कहै छै।
शास्त्री, शब्दशास्त्री कहि
कर्ता-धर्ता ब्रह्म कहै छै।
मीत यौ, कर्ता...।

❍

शब्द संख्या : 67

सभ मिलि

सभ मिलि हमरा बाड़ि देलकै।
अपना समाजसँ टारि देलकै।
सभ मिलि हमरा बाड़ि देलकै।

बनि-बनि बदलि-बदलि
वारिस वर्ष मेघ कहौलकै।
माटि-छोड़ि बालु पकड़ि
अपने मुँह अपने भरलकै।
अपने मुँह अपने भरलकै।
मीत यौ, अपने मुँह अपने भरलकै।
अपना समाजसँ...।

बाड़ि चोरवत्ती देख अन्ह
अन्है जलधर बसौलकै।
बास बासुकि कहि-कहि
सिर शिव मलि मढ़लकै।
मीत यौ, सिर शिव मलि मढ़लकै।
अपना समाजसँ...।

अपना समाजसँ टारि देलकै।
चास-बास-अगवास बनि वन
सिर आगू पीड़ सजौलिऐ।

पंच-एकक फन्द फड़ि फल
मेव पंच प्रसाद बँटलिऐ
मीत यौ, मेव...।

❍

शब्द संख्या : 83

सोच सकार

सोच सकार हकारि-हकार
नैन-उपनैन बुलि-बुलि बँटै छै।
मानि-मन बानि-बनि बन
नकार-सकार सकारि कहै छै।
सोच सकार...।

शब्द-शक्ति पकड़ि भक्ति
कर्म-धर्मक चारा छिटै छै।
शब्द-कर्म आकि कर्म-शब्द
हकारि-हकारि हकार कहै छै।
सोच सकार...।

चालि-चक्र पकड़ि वक्र
सिनेह सिक्त अर्जुन धबै छै।
सकारि-सकार बिलहि हकार
आनन नन कानन पबै छै।
मीत यौ, आनन नन कानन पबै छै।
सोच सकार...।

❍

शब्द संख्या : 57

(नव वर्ष २०१३क शुभकामना...)

अबिते अगहन

अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।
चर-चाँचर आँचर पकड़ि
उजाहि सिल्ली चरए लगै छै।
उजाहि सिल्ली चरए लगै छै।
अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।

आँचर धन चाँचर पकड़ि
गरि गारा गाबए लगै छै।
अकुल-सकुल रभसि राग
राति-दिन गाबए लगै छै।
राति-दिन गाबए लगै छै।
अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।

जेकर छेलै तेकर गेलै
अपन कहि हहकारि कहै छै।
धनबल मनबल सिर चढ़ि
राग-विराग अलापि कहै छै।
अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।

अबिते अगहन ओस ओसा
धड़-धरती धड़ए लगै छै।

❍

शब्द संख्या : 90

उपजल खेत

उपजल खेत जजाति जहिना
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
कोणे-काणी हिया-हिया
रखा-राखी सिर सैंत सजै छै।
रखा-राखी सिर सैंत सजै छै।
उपजल खेत जजाति जहिना
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
उपजल खेत...।

बोन-बाध बिनु रखा राखी
निर्जन निरबल कहए लगै छै।
आलत-पालत फालत बनि
परती-पराँत कहए लगै छै।
परती-पराँत कहए लगै छै।
उपजल खेत जजाति जहिना
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
उपजल खेत...।

मरल धार चहि चहटि पेट
मूर्द-घाट सिरजए लगै छै।
बजारि बज्र परतीओ तहिना
मूड़धन धाम बनबए लगै छै।

उपजल खेत जजाति जेनाही
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
उपजल खेत जजाति जहिना
मुड़हन, दोहन तेहन कहै छै।
उपजल खेत...।

❍

शब्द संख्या : 106

धूल चरण

धूल चरण चरणामृत कहि
दर्शन कवि दरसबैत एला
रज सिर सहज सहेजि सजि
गुड़ गोसाँइ सिखबैत एला।
गुड़ गोसाँइ सिखबैत एला।
धूल चरण...।

हर क्षण हर पल पकड़ि-पकड़ि
जीअन-मरण जोड़बैत एला
चीत चेता चकोर चितबन
आँखि-फाँड़ि फड़कैत एला
फाड़ि-आँखि फड़कैत एला।
धूल चरण...।

जीता जी गुहाँ-भत्ता
मर्म मरण महि महियबैत एला
चरण पकड़ि चन चान चना
जल-थल नभ नमबैत एला
जल-थल नभ नमबैत एला
धूल चरण...।

चरण-शरण कहि शरणागत

रूप रोबोट धड़बैत एला
जीवन मुक्त मुक्ति जिनगीक
नाओं राम रटबैत एला।
नाओं राम रटबैत एला।
धूल चरण...।

❍

शब्द संख्या : 87

उनटन

उनटन उबटन सदि-सदि बनि
बोध बाल धड़ धड़ैत एलै
अदलि-बदलि रीति-नीतिकेँ
सून-शून्य सुनबैत एलै।
मीत यौ, सून-शून्य सुनबैत एलै।
उनटन उबटन...।

दस-बीस, तीस तीन तेबर
जेबर बनि-बनि सजैत एलै।
नबे-अस्सी खस्सी खखसि
खड़-खड़ाइत खसैत एलै।
खड़-खड़ाइत खसैत एलै।
उनटन उबटन...।

पछिया पछ पकैड़ पछुआ
पूब-पूब पुपुआइत एलै
डेन पकड़ि वामा-दहिना
पाट धोबि पटकैत एलै।
पाट धोबि पटकैत एलै।
उनटन उबटन...।

❍

शब्द संख्या : 61

जान विचार

जान विचार अबिते अँगना
जनदार बास कहबए लगै छै।
कर्म-शब्द रचि-रचि बसि-बसि
रूप कर्म सजबए लगै छै।
रूप कर्म सजबए लगै छै।
जान विचार...।

भाव कहै छै अभाव शब्द
कर्म गवाही दइत कहै छै।
करता-धरता जे जन जान
साधि-साधि मंगल गबै छै।
साधि-साधि मंगल गबै छै।
जान विचार...।

कर्म-धर्म कि शब्द-धर्म
आँखि मिचौनी खेल खेलै छै।
तिरछा-तिरछा तीन-तेबाट
बिरिछ-तिरिछ रोपए लगै छै।
जान विचार...।

❍

शब्द संख्या : 65

चालनि-सूप

चालनि-सूप चालनि एलौं
भाय यौ, सूप-चालनि चलनि एलौं।
कखनो घाट कखनो अगम
बीच पानि चलिआइत एलौं।
पकड़ि पाँखि सुगना गीधक
चाल चील चिलिआइत एलौं
भाय यौ, चालनि...।

कखनो सिमटी बालु बनि
संगे-संग पथराइत एलौं।
दोखरा-तेखरा कखनो बनि
मुरही संग भुजाइत एलौं
भाय यौ, मुरही संग भुजाइत एलौं।
चालनि-सूप...।

जल्ला सिर गाछ पकड़ि
बाँस जाल जलिआइत एलौं।
अल्हुआ-सुथनी फल पकड़ि
मरिया-अरिया फेकाइत एलौं
भाय यौ, मरिया-अरिया फेकाइत एलौं।
चालनि-सूप...।

करनी-धरनी बढ़नी बनि

अँगने घर बहराइत एलौं।
गुड़ा-खुद्दी खखरी बनि
गुड़चल्ला-चला चलाति एलौं
भाय यौ, गुड़चल्ला चला चलाति एलौं।
चालनि-सूप...।

❍

शब्द संख्या : 88

मरम देखि

मरम देखि मर्माहत होइ छै
मर्म देखि मर्माहत होइ छै।

डाह मरम मरण देखि
मर्माहत टुक-टुक तकै छै।
तारन-मारन देखि-देखि
तिलमिला तिल-तिल खसै छै।
तिलमिला तिल-तिल खसै छै।
मरम देखि...।

मर्मक आहत देखि-देखि
घात-अवघात हृदए लगै छै।
तइर तीर तीड़ि-तीड़ि
सगर देह सकबेधल देखै छै।
सगर देह सकबेधल देखै छै।
मरम देखि...।

मर्म मारि सुमारि छोड़ि
कुमारि मारि मारैत रहै छै।
अढ़ि-मोड़ि ऍंठि रस्सी
बाट-घाट सकबेधल देखै छै।
बाट-घाट सकबेधल देखै छै।
मरम देखि...।

मर्म एक दुनियाँ बसि बसा
जिनगीक पाठ पढ़ैत रहै छै।
दोसर मरम मरण बनि-बनि
भूत-राकश टहलैत रहै छै।
भूत-राकश टहलैत रहै छै।
मरम देखि...।

❍

शब्द संख्या : 98

वेद-भेद

वेद-भेद रंग रभस्य
पबिते रस रहस्य भरै छै।
भेद भेदिया भेदि-भेदि
तल-ऊपर चक्की गढ़ै छै।
तल-ऊपर चक्की गढ़ै छै।
वेद-भेद...।

भेदि भेद भेदिया भभा
हँसि-हँसि सूरतान भरै छै।
शून-सुनि कुभेद-भेद
मने-मन सिरजैत रहै छै।
मने-मन सिरजैत रहै छै।
वेद-भेद...।

मन-मन्वतर विचारि कुचाड़ि
भेदि भेद भेदैत रहै छै।
विचारि बीच कुचाड़ि-सुचाड़ि
शक्ति शिव सुरतानि कहै छै।
शक्ति शिव सुरतानि कहै छै।
वेद-भेद...।

करम-धरम आकि धरम करम

वेद-भेद भेदिआए कहै छै।
तत्व हीन उकटि-पकटि
शूरधाम सूर-सुर चढ़ै छै।
शूरधाम सूर-सुर चढ़ै छै।
वेद-भेद...।

❍

शब्द संख्या : 81

भक-इजोतमे

भक-इजोतमे पड़ल छी
भयार यौ, मीत यौ, भाय यौ
भक इजोतमे पड़ल छी।

खेती मुँहक सुख-सुहनगर
साड़ी हरिअर आस चढ़ै छै।
उक्खरि बीट समाठ सीस बनि
गर्भ संक्रान्ति भरैत रहै छी।
भक-इजोत...।

भुक-भुक भुकजोगनी टहलि
इजोत-अन्हार करैत रहै छै।
थाहि-थाहि थोपड़ी थपथपा
टाहि टहाका मारि कहै छै।
भक-इजोत...।

कातिक कंत देखैले
कलहंत कण्ठ कलपैत कहै छै।
कोकिल कण्ड तानि मधुर
कौआ-कागा सिर चढै छै।
भक-इजोत...।

जेकरा लूरि छै घर बनबए
चाहे घास चाहे ठौहरी।
बोली-वाणी कुसि कुसिया
हँसैत वंश दौड़बैत चलै छै।
हँसैत वंश दौड़बैत चलै छै।
भक-इजोत...।

❍

शब्द संख्या : 89

जेठुआ गरे

जेठुआ गरे गर लगिते
बनि अन्हर-बिहाड़ि धड़ै छै।
बिहरन समए बनि-बनि बना
विरह-वेदना कहए लगै छै।
जेठुआ गरे...।

चैत-बैशाख जेहेन तपस्या
हलचला धड़ती सिंचै छै।
सम-समए समेटि सिजति
हाले हल युग-धर्म कहै छै।
हाले हल युग-धर्म कहै छै।
जेठुआ गरे...।

जन-जनक जेना जनक
मिथिला काम-धाम कहबै छै।
देश-देशान्तर रथी महा
सिख सिर सजबैत रहै छै।
सिख सिर सजबैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

बट-कट कटि बट वृक्ष
जिनगी बाट धड़ैत रहै छै।

राग-विराग तजि तियागि
चोंचिया चोंच हंस भरैत रहै छै।
चोंचिया चोंच हंस भरैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

सर-नर रस्ता पकड़ि-पकड़ि
श्रृंग-श्र्ृगी श्रृंगार करै छै।
रथी-महारथी जगमे
पुत्र-यज्ञ श्रृंगी कहबैत रहै छै।
पुत्र-यज्ञ श्रृंगी कहबैत रहै छै।
जेठुआ गरे...।

❍

शब्द संख्या : 109

निर्जन वन

निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
सतरंगी सतसंगी कहि-सुनि
अप्पन पएर पखारि रहल छै।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
निर्जन वन...।

एक सूर्य धरतीओ एक
अग्नि्-वासु जल सिक्त करै छै।
तूर-तूर तोड़ि तुरिया तूर
तक-तक तकली काटि रहल छै।
तक-तक...।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।

जइसन जतए जल-थलिक गति
सिरजन सिर तेतए तेहन चलै छै।
तन-मन-धन धरम तेतए
हँसि-हँसि पक्षी हंस हँसै छै।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।

निर्जन वन...।

हंसा बनि-हंस हँसि-हँसि
सत साखी मंगल रचै छै।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।
गुड़-गृह...।
निर्जन वन निर्जल पक्षी
गुड़-गृह गुरु गुहारि रहल छै।

❍

शब्द संख्या : 112

छगुन्तामे पड़ल छी

छगुन्तामे पड़ल छी
भाय यौ, छगुन्तामे पड़ल छी।
छग-छगा, छक-छका-छक-छका
चालि कुबुधि सुबुधि देखै छै।
छक-छका मेरिचाइ जेना
ड़ब-ड़बा जीह-ठार लगै छै।
भाय यौ, ड़ब-ड़बा...।

सिख-सीखि सिखा-सिखा
सजि सिर सिरिस कहै छै।
कर्ता-धर्ता-भर्ता भजार
सीस चढ़ि सिरमतिया कहै छै।
कलपि देखि कलपै छी
भाय यौ, कलपि देखि कलपै छी।
छगुन्तामे...।

भरनी-तानी भरि ताना-वाना
दिन-राति मखड़ैत रहै छै।
सुता सुत तानि ताना भरना
लट्टा-कट्टा सजैत रहै छै।
देखि-देखि करूआइ छी
भा यौ, देखि-देखि करूआइ छी
छगुन्तामे...।

सूत फेकि सुतियार बनि
रंग-बिरंग जाल बुनैत रहै छै।
इचना-पोठी संग रौह-भाकुर
ग्राह-गोहि गोहियाइत रहै छै।
मरमसँ मरमाइ छी
भाय यौ, मरमसँ मरमाइ छी।
छगुन्तामे...।

❍

शब्द संख्या : 100

सुआगत की लए

सुआगत की लए करब अहाँक
सुआगत की लए करब अहाँक।
नै अछि एको विधि बेवहार
धएल धर्मक चरचे की करब।
सर-समांग एको ने देखै छी
तइओ सुआगत करबे-करब।
असे नै बिसवास कहै छी
की लए सुआगत करब अहाँक
सुआगत की लए करब अहाँक।
हेरल-हेराएल भोथिआएल बोन
चीन-पहचीन उड़िया गेलै
कीच कमल कोशिया कुरबा
जोति जल जोतिया गेलै।
आसा-आस असिया अलिसा
जुड़ा-जुड़ा कहै छी
सुआगत की लए करब अहाँक।
इच्छा–आशा सखी-सहेली
सजि फुलडाली संग-सुसंग
आस मारि बेआस मरि-मरि
छी समर्पित अंग-प्रत्यंग।

भव-भार भरि-भरि भरै छी
सुआगत की लए करब अहाँक।
सुआगत की लए...।
❍
शब्द संख्या : 93
('विदेह' सम्मान समारोह- २०१३क अवसरिपर)

सुआगत अपनेक

सुआगत अपनेक करै छी
अभिगत अपने सुआगत करै छी।
गुरु-गरु बड़ सिर सिरजन बर
हारि-हीय हिहिया कहै छी
सुआगत अपनेक करै छी।
नैन-बैन संग, बैन-चैन संग
चैन-मैन संग, मानि सानि कहै छी
तथागत,
अपनेक सुआगत करै छी।
असि आस निरास संग
बास बसि बिसवास कहै छी।
हम-अहाँ, अहाँ हम
गोप-गोपाल गोपी कहै छी।
सुआगत अपनेक करै छी
अभिमत,
सुआगत अपनेक करै छी
सुआगत...।
❍
शब्द संख्या : 63

('विदेह' नाट्य उत्सव- २०१३क अवसरिपर)

वृद्ध केना

वृद्ध केना भेलिऐ
आँइ यौ बौआ
वृद्ध केना भेलिऐ।
बाटे बहकि-बहकि
धक बाढ़ि हेललिऐ।
वाम-दहिन भाँज बिनु
बुझि सूर भड़लिऐ।
वृद्ध केना...।

बसि बास पीपही गछिया
रिआइते खिया खिऔलिऐ
निमोछा-निमोछी कहि सुनि
आम-कटहर कहौलिऐ।
बौआ, आम-कटहर कहैलिऐ।
वृद्ध केना...।

सात दिन सातो जनम
बुझियो नै कहाँ पेलिऐ।
तेहने आसो असा
पेब-पेब झखौलिऐ।
भाय यौ, पेब-पेब झखौलिऐ।
वृद्ध केना...।

वृद्ध-सँ-समृद्ध कहबए
समृद्ध समाज सेज सजैए
साज सिंगार सोल्हो कला
रीत वसन्त सूर-तान भरै छै।
बुझिओ कहाँ पेलिऐ।
भाय यौ, बुझिओ कहाँ पेलिऐ।
वृद्ध केना...।

सभ चाहए वसन्ती-वसन्त
धक्का बुढ़ाढ़ी खाइत एलिऐ।
गजुआ-बँझिया बाँझ-बाँझीन
लस-लस्सा बनैत रहलिऐ।
बौआ, लस-लस्सा बनैत रहलिऐ
वृद्ध केना...।
❍
शब्द संख्या : 101

समए केर

समए केर भूचालिमे
जिनगी बोहिया गेल।
जी-वन वन जीवन बीच
बोहिआएल बाट बटिया गेल।
समए केर...।

सजल-बसल मन मनिक
विष-विसाइन बनैत गेल।
उजड़ि-उपटि झाड़-झपटि
सखुआ शंख रोपा गेल।
समए केर...।

घुमि◌-ताकि जखनि पाछू
मड़िआएल मेघ पकड़ा गेल।
हरल-मरल बाट-घाट
घटिया घाट घटा गेल।
समए केर...।

पकड़ि पएर चारिम पहर
अस्ति-चल-अस्ति भेटैत गेल।
घेरि-घेरि घेंट घेंघिया
दुखरा-दुख कहैत गेल।
समए केर...।

❍

शब्द संख्या : 60

भगवती गीत

एना किए बनेलौं हे मइये
एना किए बनेलौं।
दुनियाँ रचै-बसैले
दुनियाँ अहाँ बनेलौं।
भूमा भोग भगा-भगा
माइयक कोर छोड़ेलौं।
हे मइये...।

सूखल रोटी अल्लू सनि सानि
दिन-राति किए खुएलौं
बाँकी भगा-भगा कऽ
रोग-वियाधि पठेलौं
एना किए...।

जामंतो फूल-गाछ सिरजि
जामंतो फूल-फल सजेलौं
चीन-पहचीन विस बिसरा
अगुआ थारी खि◌ंचलौं, हे मइये
एना किए...।

बानि वहारि नैन दहाड़ि
बनवासी बना पठेलौं।
कलपि-तड़पि तैयो कहै छी
हीआ जोगि जोगेलौं हे मइये
एना किए...।

❍

शब्द संख्या : 70

आनक बोझ

आनक बोझ उठाबै खातिर
अपनो बोझ भड़कि गेलै।
दबि-दबि, उनरि-उनरि
जुन्ने बीच ससरि गेलइ।
मीत यौ, जुन्ने बीच ससरि गेलइ।
अपनो...।

पसरल पानि धार तरहत्थी
बीतल-अतल बनैत गेलै।
सिर ससरि-ससरि सर
अपनो पएर पिछड़ैत गेलै।
मीत यौ, अपनो पएर पिछड़ैत गेलै।
अपनो...।

रहलै ने सुधि-बुधि मिसिओ
मोसिआनी बदलैत गेलै।
उज्जर कागज-कलम कहि-सुनि
आखर कारी अंकड़ैत गेलै।
मीत यौ, आखर कारी अंकड़ैत गेलै।
अपनो...।

घूरि घूर घुड़लै जखनि

मारि मेघ मारैत गेलै।
कटि कोदारि कोदरकट्टा भऽ भऽ
रूप अमावस धड़ैत गेलै।
जुन्ना बनि ससरैत गेलै।
अपनो...।

❍

शब्द संख्या : 85

अड़कन-मरकन

अड़कन-मरकन बीछि-बीनि
सूर-तान तनैत एलौं।
कूह केना फटै अमावस
भोर-साँझ कहैत एलौं।
भोर-साँझ कहैत एलौं।
अड़कन...।

परात-पराती सान सानि
लहरि स्वर लहरैत एलौं।
रौद-बसात अङेज-अंग
ता-थइ नाच नचैत एलौं।
ता-थइ नाच नचैत एलौं।
अड़कन...।

तम-तमाएल परती-परात
रस-रसा रसाइत एलौं।
घोंटे-घोंट घेंट घोंटि
रस अमृत पीबैत एलौं।
रस अमृत पीबैत एलौं।
अड़कन...।

मृत-अमृत सटल-हटल

रंग-रास रसबैत एलौं।
जाबे बरतन ताबे करतन
करम-धरम बुझबैत एलौं।
करम-धरम बुझबैत एलौं।
अड़कन...।

❍

शब्द संख्या : 67

हाल-बेहाल

हाल-बेहाल नेहाल बनिते
प्रेमी प्रेम छोड़ैत एलै।
पाबि वसन्त भोम्हरा जेना
रस अन्हार धड़ैत एलै।
रस अन्हार धड़ैत एलै।
हाल-बेहाल...।

पुन्ज पुष्प परमलील बनि-बनि
राग-विराग जपैत एलै।
जोग-भोग जोगिया-भोतिया
सजि संबन्‌ध सजैत एलै।
सजि संबन्ध सजैत एलै।
हाल-बेहाल...।

जोर बाजि ललकारि ललकि
शुम्भ-निशुम्भ रचैत एलै।
समए शुभ-अशुभ काल कहि-कहि
समए-काल खेलैत एलै।
समए-काल खेलैत एलै।
हाल-बेहाल...।

बनिते काल समए कलि कलिया

अपराजित रंग कहैत एलै
रंग संग लत्ती लत-लतड़ि
फूल रंग बदलैत एलै।
फूल रंग बदलैत एलै।
हाल-बेहाल...।

❍

शब्द संख्या : 78

आजादीक उमंग

आजादीक उमंग उमकि
घाटे-बाट छिछिया गेलौं।
सत्त-समुद्र पहाड़ बीच सत्त
डेगे-डेग बौआ गेलौं।
भाय यौ, डेगे-डेग बौआ गेलौं।
घाटे-बाट...।

तल मोड़ि तम तमाएल पताल
छुबूधि भऽ छुछिया गेलौं।
आजादीक उत्साह उमकि
दिने-राति भोतिया गेलौं।
भाय यौ, दिने-राति भोतिया गेलौं।
घाटे-बाट...।

प्रशान्त-शान्त ललिया कलिया
जोर पकड़ि डिरिया गेलौं।
डिरियाइत पताल-अकासमे
डोह डाबर डीह कहेलौं।
आजादीक उत्साह उमकि
घाटे-बाट बौआ गेलौं।
भाय यौ, घाटे-बाट...।

बोन-बोनैया गीत गाबि

बनि शिकारी वीन बजेलौं।
मोड़ि मनुआ तोड़ि जिनगी
दिने-देखार बहकैत गेलौं।
दिने-देखार बहकैत गेलौं।
बाटे-घाट...।

ठाढ़े-ठाढ़ ठिठु ठिठुरि-ठिठुर
रौद पाबि लू-लुआ गेलौं।
बनि बरखा बरसाती बनि
तरे-ऊपरे दहा गेलौं।
आजादीक उमंग उमकि
घाटे-बाट बौआ गेलौं।
भाय यौ, घाटे-बाट...।

❍

शब्द संख्या : 104

(गणतंत्र दिवस- २०१३क अवसरिपर...)

बुधिए भोतिया

भोथ बुधि भोतिया गेलै
भाय यौ, कोकनल जड़ि रोपा गेलै।
बुधिए भोतिया गेलै।

जेना-जेना जड़ि जड़ जड़िया
कोन-कान तहिना कोना गेलै
सुख-दुखक बीचमानि मानि
दुखिया दुख-सुख सुखा गेलै
दुखिया दुख-सुख सुखा गेलै
भाय यौ, बुधिए...।

अपन कि परिवारो तेहने
फूले बीआ छीटा गेलै
बनि माली मलकान पकड़ि
भागे-भाग भोतिया गेलै।
भागे-भाग भोतिया गेलै।
बुधिए...।

घरे-घर सरे-सर समाज
पेन कट्ट लोटा पसरा गेलै

जड़ि कट लट छिड़िया गेलै
दइते मुँहमे पानि जहाँ
धरती बीच छिड़िया गेलै।
भाय यौ, धरती बीच छिड़िया गेलै।
बुधिए...।

जेहने वखार गोनू झाक
पेनकट खाधि खुना गेलै।
देहे-मोने पसरि-पसरि
भोथाएल बुधि भोथा गेलै।
भाय यौ, भोथाएल बुधि भोथा गेलै।
बुधिए...।

नीचाँ-ऊपर सुत सुता-सुता
पटिया पाट पटिया गेलै।
चीत-पट, पट-चीत सुत-सुता
रस-जिनगीक सोंखा गेलै।
जिनगी रस सोंखा गेलै।
जिनगीए हरा गेलै।
भाय यौ, जिनगीए हरा गेलै।
बुधिए...।

❍

शब्द संख्या : 129

घर-घरा

घर-घरा घर घड़ा घैल
पकड़ि पग घैलची बैसल छै।
जल बीच जल धारा बनि
तन-मन बीच जलदार बहै छै।
तन-मन बीच जलदार बहै छै।
पग पकड़ि घैलची...।

बिनु पएर बिनु सीर सजि
दिवा राति बस-बस रहै छै।
मग्न भऽ निमग्न बनि-बनि
संग समीर शीतल बनल छै।
संग समीर शीतल बनल छै।
पकड़ि पग घैलची...।

ठोप ठोकि पन बनि-बना
आगू बढ़ि जलधार बनै छै।
अपन पथ पग-पग पकड़ि
धार कमल खिलबए लगै छै।
धार कमल खिलबए लगै छै।
तन-मन बीच...।

बनि धार धर धरती कटि
ओर-छोर जिनगी बनबै छै।
उतर-दछिन दिस दिशा पकड़ि
हँसैत जिनगी धार बहै छै।
हँसैत जिनगी धार बहै छै।

कमला गीत गाबि-गाबि
झल-झील सागर कमल सजै छै
नील स्वर नीलकण्ड भऽ
नल-नील अकसि अकास उड़ै छै।
नल-नील अकसि अकास उड़ै छै।
तन मन बीच...।

❍

शब्द संख्या : 127

जा बौआ

जा बौआ नीन नइ तोड़ब
कियो ने जिनगी देख पेबै।
जिनगी बिनु जिनगानी ओहए
कोन सुर मुहेँ गाबि पेबै।
कोन सुर मुहेँ गाबि पेबै।
जा बौआ...।

नइ जा पुरूखपना पुरुखमे
नीन तोड़ि बटबानि गेबै।
तकितो भक भकुआइए रहि
जीता जी जड़ाइते गेबै।
जीता जी जड़ाइते गेबै।
जा बौआ...।

समर भूमि संसारमे
खाड़ी तीन सजल पेबै।
देव-दानव मानव कहि
पशु चढल पबैत पेबै।
पशु चढल पबैत पेबै।
जा बौआ...।

टुटैत नीन जेना बगरा-बुगरी
उङि रजधानी पबैत पेबै
राजमाता बनि-बनि, सजि-सजि
साड़ी अकास सुखैत पेबै।
साड़ी अकास सुखैत पेबै।

जागू-जागू, तोड़ू-तोड़ू
भक-भौक जिनगीक बाट पेबै
बोले-बोल घोर घोरि-घारि
कटैत जिनगीक बाट पेबै।
कटैत जिनगीक बाट पेबै।
जा बौआ...।

❍

शब्द संख्या : 106

लत-लत लत्ती

लत-लत लत्ती लप लपकि
बिनु पएरे दौगेैत चलै छै।
गरे-गर गोर गाड़ि-गाड़ि
आगू उठि अँखिमुनी तकै छै।
आगू उठि अँखिमुनी तकै छै।
लत-तल लत्ती...।

उठ उठा ऊपर उप-उपकि
दस दिस जिनगी पबए चाहे छै।
कर-कड़चीक सहयोग पाबि
घर-मचान गृहबास करै छै।
घर-मचान गृहबास करै छै।
लत-तल लत्ती...।

हँस हँसि आँखि फड़-फड़का
केतौ पात केतौ फूल सजै छै।
तँए कि केतौ भद-भेद-कुभेद
फूलपात देव शीश चढ़ै छै।
फूलपात देव शीश चढ़ै छै।
लत-तल लत्ती...।

❍

शब्द संख्या : 73

पीड़ित रीति

बिनु तीत परतीत केना
पीड़ित रीति बानि बनि पेतै।
गर-गरा गरदनि पकड़ि
सुरीति रीति केना गाबि पेतै।
सुरीति रीति केना गाबि पेतै।
पीड़ित रीति...।

रस तीत बीस बाणि पकड़ि
जी जिनगी बँटाइत जेते।
हंस जेना दू-पन निरा
पी-पीबि दूध पानि फेकतै।
पी-पीबि दूध पानि फेकतै।
पीड़ित रीति...।

बाट पकड़ि रति रीत रीत
मन्दिर मनक कपाट धड़ेतै।
हरक पट पाट पकड़ि-पकड़ि
नासा-आसा संगे चलेतै।
नासा-आसा संगे चलेतै।
पीड़ित रीति...।

रति देख रीतराज पकड़ि

मसिया मसि-मसि मास कटेतै।
कहियो शिशिर शरद कहियो
मील-मिल बारहो मास गेतै।
मील-मिल बारहो मास गेतै।

रंग-बिरंगक चान सुर्ज
संगे-संग दिन-राति चलेतै।
अपन-अपन बोलिये-वानिये
पार्वतीक शिव पार पेतै।
पार्वतीक शिव पार पेतै।
बिनु तीत...।

❍

शब्द संख्या : 106

अकार-सकार

सुखाएल धार सुखा-सुखा
अकार-सकार धेने रहै छै।
धड़ि-धार धरा मन कहियो
समरीत सुख पेने रहै छै।
समरीत सुख पेने रहै छै।
अकार-सकार...।

घटि-घट माटि बालु भलहिं
माटि-माटिक कहैत रहै छै।
पातक पानि पता केने
समए संग छिछिया कहै छै।
समए संग छिछिया कहै छै।
अकार-सकार...।

धड़ धड़ि धरती पग पकड़ि
बल-बलिदान होइते रहै छै।
तँए कि पानिक प्रीत बिसरि
धड़ा नाओं धेने रहै छै।
धड़ा नाओं धेने रहै छै।
अकार-सकार...।

बेसिया बेस अदलि-बदलि

जीबंत जीन जीवन कहै छै।
तँए कि अटल प्रेमीक प्रेम
शक्ति संकल्प डिगब कहै छै।
शक्ति संकल्प डिगब कहै छै।
अकार-सकार...।

करम अपन करतब अपान
सुख सोपान सुखबाट कहै छै।
चित्रकूट सुग्गा पढ़ि-पढ़ि
सुखाएल धार टपैत कहै छै।
सुखाएल धार टपैत कहै छै।
अकार-सकार...।

❍

शब्द संख्या : 117

मंगनी-चंगनी

टेनशन बीच पड़ल छी
मीत यौ, बीच टेनशन पड़ल छी।
मनक ताप संताप बनि-बनि
मने मन गमकै-महकै छी।
भीतर-बहार गठजड़ि जोड़ि
सीर टेनशन सनियाए लगै छी।
सीर टेनशन सनियाए लगै छी।
टेनशन बीच...।

समए संग-संग पेब पबि
कोढ़ी-बाती फूल सजै छी।
अबैत हवा पट पीठ पाटि
टेनशन टनटनाइत कहै छी।
टेनशन टनटनाइत कहै छी।
टेनशन बीच...।

जाबे विचार संग नहि
हसि हंस हँसि गाबि कहै छी
जखनि कजविचार संग मीलि
सखी-बहिनपा कहि कहै छी।
सखी-बहिनपा कहि कहै छी।
टेनशन बीच...।

ताबे गोटी लाले रहत
जाबे कछाँटि नइ देखै छी।
टेनशन भैया अहीं कहू
टेनशन भऽ टेनशन कहै छी।
टेनशन भऽ टेनशन कहै छी।
टेनशन बीच...।

❍

शब्द संख्या : 105

आन्ही-अन्हर

अन्हर केर अन्हार टपैमे
आन्ही-अन्हर झेलए पड़तै।
झेल-झेल झालड़ि झल-झाड़ि
नागिन राग अलापए पड़तै।
नागिन राग अलापए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

रातिक राति अन्हार वाणि
गहे-गह गहि गहियबए पड़तै।
रेहे रेह राही राह रहि
राहगीर राह बनाबए पड़तै।
राहगीर राह बनाबए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

जेहेन रीत तेहेन इजोतमे
दीन देखार देखाबए पड़तै।
वेद-कुभेद भेद भेदि भेद
रुचि वेद पंच पचाबए पड़तै।
पंच वेद रुचि पचाबए पड़तै।
पंच वेद रुचि पचाबए पड़तै।
आन्ही-अन्हर...।

जएह अन्हार सहए इजोत
कल्पना सपना देखए पड़तै।
सपना तँ सपने रहि-रहि
कल-कल कल्पना करए पड़तै।
कल-कल कल्पना करए पड़तै।
अन्हर केर अन्हार टपैमे
आन्ही-अन्हर...।

❍

शब्द संख्या : 97

सुफल काज

सुफल काज जेते जिनगीमे
सफल-सुफल कहबए लगै छै।
फले-फल वन-वन बनैत
बगिया बाग बनए लगै छै।
बगिया बाग बनै लगै छै।
सुफल काज...।

पूस पूसौंट कहि-कहि सुनि
मसिया फल पेबए लगै छै।
अधिया हस्त अधिया अदरि
पख मसिया पेबए लगै छै।
पख मसिया पेबए लगै छै।
सुफल काज...।

पखिया पख पखेरि-पखारि
सतिया सात सतिया लगै छै।
अंठिया आठिक आड़ि बनि
हपता-सपता बनए लगै छै।
हपता-सपता बनए लगै छै।
सुफल काज...।

काम-धाम की धाम-काम
मन मन्दिर मनबए लगै छै।
अगैल-बगैल लतैड़ फैड़
अमरलत्ती कहबए लगै छै।
अमरलत्ती कहबए लगै छै।
सुफल काज...।

छुच्छ हाथ मुँहमे जहिना
किछ ने दऽ पाबि पबै छै।
वेद भेदन भेद ने बुझि
कर्मक फल पबैत रहै छै।
कर्मक फल पबैत रहै छै।
सुफल काज...।

❍

शब्द संख्या : 118

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-46-9

राति-दिन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

राति-दिन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-45-2

दाम : ` 250/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

RAIT-DIN
Anthology of Maithili Poems by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित

एकसत्तैर

मनमनियाँ : 10
सघर्ष : 16
साँझ-भोर : 20
समए : 22
जिनगीक मोड़ : 24
अकलबेड़ा : 26
धूप-छाँह : 30
माए : 32
साथी : 34
घरक लोटिया बुड़ले अछि : 36
जुग बदलल जमाना बदलल : 38
फँसरी- 1 : 40
गरीबी : 41
दबाइए रोग : 43
मुँहक झालि : 45
किछु सीखू किछु करू : 47
पत्नी : 49

चेतन चाचा : 51
पौरुष : 56
घोड़ मन (भाग- 1) : 59
घोड़ मन (भाग- 2) : 61
घोड़ मन (भाग- 3) : 63
घोड़ मन (भाग- 4) : 65
अलकक चान : 66
शिशवोनी : 69
फगुआ : 75
शील : 77
प्रिय : 83
अपनेपर : 87
डायरी : 90
मानव गुण : 92
छुटि गेल : 95
मरल घाट : 97
हल्लुक काज : 104
बीघा भरि चास-बास : 108
पट्टा छीमी : 111
बदरीहन : 114
बालि वध : 117
अनेरुआ वन : 119
फँसरी- 2 : 121
विचलित मन : 123
गुड़ घाव : 125
एकटा बताह : 127
हुसि गेल : 129
अखड़ा जिनगी : 131
बिटगरहा : 133
बाल गीत : 136
गाछी भुताइ : 138
अंडीक छाहैर : 140
परदेशी : 142
अन्हराएल छी : 144
ओ दिन : 146
सती-वेश्या : 149
दूजा भाव : 154
जीबैले लड़ए पड़त : 156
पगलखना : 158

मनमनियाँ

मैथिली कथा-गोष्ठीक आयोजनमे आठ दिन बँचल छल। जनकपुरक गोष्ठी तँए जेबाक विशेष जिज्ञासा। आने बेकती जकाँ गोष्ठीमे नव कथाक पाठ करै छी। कथा पाठसँ मनमे ताजगियो बनल रहैए। गोष्ठीपर नजैर पड़िते बामा हाथक ओंगरीपर दिन गनलौं। आठमे दिन गोष्ठी छी, कथा कहाँ भेल? पनरह-बीस दिन पहिने जे लिखने छेलौं से तँ 'विदेह' ई-पत्रिकामे आबि चुकल अछि। ओह! अनेरे कथा पठेलौं...। केना नै पठबितौं? अनुभवो तँ किछु छिऐ। कहलो गेल छै-

"जेतए ने जाए रवि, तेतए जाए कवि मुदा जेतए ने जाए कवि तेतए जाए अनुभवी।"

भेलो तहिना रहए। एकटा सम्पादक गिड़गिड़ाएल रहैथ जे वस्तुक अभावमे पत्रिकाक ऐगला अंक बिलैम सकत। मुदा पठौलापर दू सालक बाद छपलैन। खाएर जे होउ। आठ दिन कथा लिखैले समए जँ कम नै भेल तँ बेसियो नहियेँ भेल। प्रश्न लिखनिहारपर निर्भर करैत अछि। तँए कोनो ओझरी नै बुझि पड़ल। नजैर जनकपुर दिस बढ़ल।

एक दिस नव प्रजातंत्र देशक गोष्ठीमे भाग लेब, जे हजारो बर्खसँ राजतंत्री बेवस्थाक जिनगी पाबि घँसाएल सिक्का जकाँ भऽ गेल अछि। जेकर चिन-पहचिन खिया कऽ एकबट्ट भऽ गेल अछि। खाली अकार मात्र शेष बँचल छइ। बजारमे एकरा के पुछत? जेहने मन हल्लुक छल तेहने चिड़चिड़ी लगल टिक जकाँ ओझरा गेल। एक दिस ओझरी छोड़बी तँ दोसर दिस लगि जाए। मनकेँ बहटाबौ चाही से

बहटबे ने करए। ओझरियो तेहेन जे जेते छोड़बी तेते बेसियाएले जाए।

जहिना टीकक ओझरी छोड़बैमे दुनू डेन उठौने-उठौने भरा कऽ दुखाए लगैत तहिना मनो असोथकित भऽ गेल। आँखिक पुतली तँ देख पड़ए मुदा इजोतक केतौ पता नहि। तहिना देहो-हाथ पनिमरू भऽ गेल। ने अक चलए आ ने बक! अकैछ कऽ रेडियो खोललौं, संयोगो नीक बैसल। दरभंगासँ गीत चलैत रहइ- “राही चल ओ राही चल...।”

उपरोक्त गीत सम्पन्न होइते- “जीवन चलने का नाम, चलता रह सुबहो शाम...।”क टुनिंग बाजए लगल। जहिना अनभुआर ठाम दिशांष छुटिते बदलल-बदलल दिशा बुझि पड़ैत तहिना भेल। जाड़क मासमे जहिना भिनसुरका रौद पीअरगर लगैत तहिना गीत पीअरगर लगल। मुदा एकटा विचित्र दशा सेहो उपस्थित भेल। ओ ई जे कनी-कनी कऽ सुतैले आँखियो झलफल करए लगल मुदा तखने मनमे एक नव बात आएल। मन उनैट कऽ अपनापर पड़ल। गीत मनमे घुरियाइते छल। एक तँ जेते मातृभूमि-मिथिलाक जे चित्र मनमे बनल अछि ओकर साकार रूप देखैमे जेतेक श्रमक खगता अछि तेकर पाँचो प्रतिशत सेवा नै कऽ सकलौं हेन, तखन? मुदा जेहने नम्हर प्रश्न तेहने बेसी टोंटी हैदराबादी ओल जकाँ तँ नहि, अपितु अरुआ-टौकना जकाँ एकसिरा..! मुदा विचारमे एकटा नव बात जरूर जोड़ाएल। ओ ई जे असगरमे केते कएल जा सकैए? गंगा धार जकाँ चौड़ाइ तँ कनी कमो बुझि पड़ए मुदा लम्बाइक ओर-छोर देखबे ने करिऐ। मुदा पाछू घुमि देखी तैयो ओहिना आ आगू दिस देखी तैयो ओहिना! केतौ-सँ-केतौ पानिक धारा धड़फड़ाएल जा रहल अछि। अखन धरि जे किछु लिखलौं, ओ गद्य लिखलौं पद्य तँ सोलहन्नी छुटले अछि। मुदा जहिना चारि बाटक चौबट्टी वा तीन बाटक तीनबट्टी वा दू बाटक दुबट्टीक बीचमे चौड़गर जमीन रहैत तहिना गद्य-पद्यक बीच चबुतरा बनबै जोकर खाली जगह भेटल। अराम करैक विचार मनमे उठए लगल आकि तइसँ पहिने मनमे उठि गेल जे जखन जिनगी ‘चलै’क नाओं छी तखन अपनो तँ थुसकुनियेँ मारि अराम करए चाहै छी! तखन साँझ-भिनसर चलब केना भेल? प्रभातीसँ प्रभातक सुआगत होइए। संध्यासँ साँझक। सोहर-समदौन जकाँ ओर-छोर कहाँ अछि..?

मन घुरियाएल। जहिना कोनो गाममे तेहरा-चौहरा कऽ डुम्मा बाढ़ि आबि खेत-पथारसँ लऽ कऽ घर-घराड़ी तककेँ डुमा दैत तहिना भेल। मनक सभ किछु हेरा गेल। अचेत भऽ गेलौं। चेत होइते जनकपुरक गोष्ठी पुन: मनमे उठल। मुदा कथा-गोष्ठी लगले हेरा गेल। जनकपुरसँ मन जानकीक वनबास दिस बढ़ि गेल। जे राम, जानकीक खोज गाछ-बिरीछसँ पुछि-पुछि करैत रहैथ तिनका मनमे जानकीक प्रति अविश्वास एकटा नान्हिटा बात सुनि भेलैन! की विश्वास-अविश्वासक गाछ एत्ते छोट छै जे एकटा पत्ता खसने गाछक रूप बदैल जाएत? मुदा गाछसँ आगू बढ़ि मन गाछीक बोन दिस बढ़ल। चौदह बर्ख राम बोनमे रहला। जइ बोनमे केतेको ऋृषि-मुनिक आश्रम पहिनहिसँ छेलैन। ओ बोन केना भेल? जँ भेल तँ हुनका सभकेँ बोनबास किए भेल छेलैन? मन ओझरा गेल। मुदा लगले मनमे उठल-

“पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है!”

एक संकल्पक संग मन आगू बढ़ल। पद्य सेहो लिखैक विचार जगल। मुदा गद्ये जकाँ तँ पद्योक संसार छै। पोखरिक अथाह पानिमे डुमए लगलौं। धरतीपर पएर रोपए चाही तँ साँस फुलए लगए आ हाथ चलबैत ऊपर होइ तँ सोल्होअना पानियेँमे चलि आबी। धरती छुटि जाए! विचित्र स्थिति बनि गेल। मनक मनोरथ मनेमे घुरियाए लगल। आब तँ बीस-पच्चीस बर्खक उमेरो नहियेँ अछि जे बिआह, दुरागमन आकि कनियाँ-बरक गप-सप्प लिखब। साठिसँ ऊपर उमेरमे पहुँच गेल छी। सींग कटाएब सोहो नीक नै बुझि पड़ए। मुदा सींगो कटा तँ पर्ड़ूक जेरमे मिझ्झर भेनिहारक तँ कमी नहि! मन आरो ओझरा गेल। आगू तकलौं तँ बुढ़-बुढ़ानुसपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते खौंझ उठि गेल। केना नै उठैत? साठि सालक जिनगीक अनुभव केनिहार सभ तँ अपने मकड़जालमे ओझरा जाइ छैथ। मुदा तेकर दोख किनका सिर मढ़ल जाए? किछु फुरबे ने करए। आगू-पाछू करैत मन घुमि दूधमुहाँ बच्चा सभ दिस बढ़ल। ठमकलौं। मुदा हाटक बरद जकाँ मुँह-कानक रंग-रूप देख जोड़ा लगबए चाहलौं तँ ने दूटाक मुँहक जोड़ा लगए आ ने चालि-ढालिक। फेर लजैनी उपजल राड़ीक खरहोरि जकाँ मन ओझरा गेलौं। पलाएल खढ़ रहने जमीन नजैरपर पड़बे ने करए। तेना भऽ कऽ झँपाएल! अन्दाजसँ डेग बढ़बौ चाही तँ चुप-चुप लजैनीक काँट गड़ए। आब की करब?

रस्ता चलल राही जकाँ बिनु चलनहि देह-पएर दुखाए लगल। एक्के उमेरक दूटा बच्चामे एतेक अन्तर केना आबि गेल? एक दिस पाँचे बर्खक बच्चा दस बर्खबलाक कान कटैए तँ दोसर दिस तीनियों बर्खक बच्चासँ पछुआएल अछि। तहूमे शरीरेक अन्तर नहि, बुधियोक दूरी! एहनो तँ होइते अछि जे पच्चीसो-तीस बर्खबला दस-बारह बर्खक बच्चोसँ पछुआएल अछि!

प्रश्न उठैत जे बच्चा केकरा कहल जाए? शरीरक काँतिये आकि बुधिक काँतिये? तत्-मत् करैत बोधेक अधारपर बच्चाक सीमा निर्धारित करए चाहलौं। मुदा कोनो भारी मोटा उठबैमे तँ सीमा ढहि जाइत अछि। हारि-थाकि मन एतए पहुँच गेल- जखन जे विचार हएत तखन से लिखब। जइसँ कविता संग्रह एकबट्ट नै वरण् इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगा भऽ गेल अछि। सतरंगा होइक दोसर कारण ईहो भेल जे अखन धरि कविताक मर्मकेँ नीक जकाँ नै पाबि सकलौं अछि। कखनो तुकबन्दी तँ कखनो खटमिट्ठी तँ कखनो रका-टोकीकेँ बुझै छी। जखन जेहेन मन खनहन रहल तखन से बुझै छी। अपन बात एतबे कहब।

सतरंगी वैभवसँ सज्जित पोथी समक्ष अछि। अपन साहित्यिक जीवनक श्रीगणेश करबामे कवि वा कलाकार केतए-सँ आ केना प्रेरणा पबैत, ‘मंद कवियश: प्रार्थी’क कार्य शुरू करैत से कहब कठिन। तेकरो कारण अछि। कियो पचपन-साठि बर्खक अवस्थामे साहित्य-संसारसँ संयास लइ छैथ, तैठाम अपने शुरूए केलौं। तँए विचारमे किछु अन्तर हएब सोभाविके अछि। कियो जुआनीक रसमे डुमि कविता लिखलैन, तैठाम अपनाकेँ फीका बुझै छी। मुदा ईहो तँ बात अछि जे कियो मृत्युक चित्रण करैमे अपने मरि कऽ अनुभव नै करैत। भरिसक तखन प्रेरणा-स्रोत भीतर नै भऽ अधिकतर बाहरे रहैत अछि। अपना समैक कविक रचनासँ कोनो-ने-कोनो रूपे प्रभावित भऽ उदीयमान कवि अपन लेखनीक परीक्षण करैत। जहिना एक दीपसँ दोसरमे ज्योति अबैत तहिना आन-आन कविक कृति हृदैक सौन्दर्यसँ स्पर्श करा शिखा जरबैत। ओइ ज्योतिमे अपन भीतर-बाहरक रूचिक अनुरूप ओइमे संस्कार दऽ अपनापनक छाप लगबैत...।

अपन कवितासँ स्पष्ट होइत जे किशोर प्राण-मूक कविकेँ बाहर आनक सर्वाधिक श्रेय अपन जन्मभूमिक ओइ नैसर्गिक सौन्दर्यकेँ अछि, जिनका कोरामे पलि नम्हर भेलौं। ओना अपना भीतर ओहन संस्कार अबस्स रहल अछि जे कविताक प्रेरणा देलक।

कवि आ लेखक, अपना युगसँ प्रभावितो होइत आ युगकेँ प्रभावितो करैत। ओना किछु रचना छोड़ि मैथिली कविताक सर्वाधिक आग्रह रूप-विधान आ शिल्पक प्रति रहल अछि। भावपक्ष मूलत: वैयक्तिक बनल अछि। भावनाक उदात्तता, सार्वजनिक उपयोगिता, अर्थ-गाम्भीर्य दिस अधिक आकृष्ट नहि अछि। अपन चारू दिसक

परिस्थितिक अन्हार मानसिक कुहेसमे किछु टटोलैत मात्र अछि। सत्यसँ अधिक आस्था ओकर क्षणकेँ बदलैत यथार्थमे अछि। एहेन भाव वा वस्तु-सत्य जेकर मानव जीवनक कल्याण लेल भऽ सकए, नइ अछि। ओ प्रतीक बिम्ब, शैली आरो विधाक जन्म दऽ रहल अछि जे अतिशय वैयक्तिक रूचिक तथ्य-शून्य तथा आत्म-मुग्ध कविता छी। जखन कि आइ सर्वदेशीय संस्कृती, मानवता आदिक प्रश्न साहित्यक सम्मुख उपस्थित अछि।

अपन कवितामे मध्य-युगक आध्यात्मिक आ आदर्शवादक चेतनाकेँ नवीन लोक-चेतनाक स्वरूप देबाक प्रयत्न कऽ ओकर निष्क्रियताकेँ सक्रिय बनबैक प्रयासक संग ओकर वैयक्तिकताकेँ उन्नत समाजिकतामे परिणत करैक चेष्टा कएल अछि। 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'क संग विराम लइ छी।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

गाम- बेरमा, तमुरिया, मधुबनी (बिहार)

संघर्ष

पएर पञ्ज पबिते पबैत
पैजन चाह करैए।
तहिना चाहि चेत कुण्ड
धारण जिनगी करैए।
काया-माया संग सदए
मिलि संग जिनगी पबैए
शिव सदृश सीमा सिरैज
राति-दिन रूप धड़ैए।
बीच कृष्ण घनश्याम जहिना
महाभारत द्वापर रचैए।
संग मिलि तहिना सदए
विपरीत दिशा धड़ैए।
एक कौरब एक पाण्डव बनि
शरीर-शरीरी खेल करैए।
गीता गाबि सम्हारि शास्त्र
लीला जिनगी रचैए।

भरल हाथ एक, एक निहत्ता
उतैर भूमि वंश कुरुक्षेत्र।
हारि-जीत संगे सिरैज
संग मिलि रक्षो करैए।

निर्जीव दूध निकैल सजीव
आगि चढ़ि आरो निर्जीव बनैए।
कहि दही मटकुर सजि
दूध-दही कहबैए।
होइते ठाढ़ बनिते दही
प्रेमी चाह करैए।

पाबि प्रेमी प्रेम पकैड़
पपीहा नाच करैए।
पकैड़ संग संगी बना
मर्त सर्ग संग सजैए।
कहि-कहि जीवन-मरण
साँझ-भोर डहकैए।

उदय-अस्त नचिते-नचैत
भू-भूलोक भुलबैए।
बरैस बादल गरैज-गरैज
मन मगन करबैए।
आशा-आस सटिते सटैत
आँखि धार धारण करैए।
पकैड़ प्रेम पड़ि पएर
राहीक राह रचैए।
सींच जल शीतल बना मन
चलए संग कहैए।
बिनु सिरक राही रचि

भवसागर टपए कहैए।

अजस्र धार भवसार सजल छै।
नाओं एक खाली पड़ल छै।
डेग-डेगी डेगते डगैत
डगमग-डगमग पएर करै छै।
डोर-डोर पकैड़ डारि
बनि-बनि सुत घींचए लगै छै।
बनल सुत राही जेना
तहिना सगरो पसरल छै।
पिछैड़ि-पिछैड़ दीन-हीन
रूप सजि सटै छै।
कियो सटि झूलैत दहिना
बामा कियो सटै छै।
कियो सटै कोनो कोनचर
कियो बीचे-बीच उड़ै छै।

सदए-सँ होइते एलैए
होइते रहतै आगूओ दिन।
अन्हार-इजोत बीच सदए
दिन-रातिक बीच दुर्दिन
दिन-दुर्दिन बनिते बनैत
अकास बीच उड़ैए।
सुदिन-कुदिनक सीमा पकैड़
निहाड़ि नजैर नचबैए।

डिम सतमी भगवती जेना
सिरजए सदैत ज्योति शक्तिक।
राति-महाराति बैस बीच
दर्शन दिशा दैत भक्तिक।
शक्त-शक्तिक संग सदए
जिनगीक होइत संघर्ष।
सीमा बीच जखन अबैत
मचबए लगैत दुर-घर्ष।
घर्ष-दुरघर्षक बीच जखन
जिनगी करए रस्सा-कस्सी।
बीच समुद्र सिरैज मथान
पकड़ए लगैत अपन-अपन रस्सी।
आँखि मिचैनी खेल अजीब
कखन सुर-असुर बनैए।
असुर-सुर बनिते, बनैत
कर्म-अकर्म एकबट्ट करैए।

◌

शब्द संख्या : 290

साँझ-भोर

केकरो साँझ केकरो भोर
केकरो उदय केकरो अस्त
दिनक अस्त साँझ अगर
रातिक तँ उदइए छी।
बारहे घण्टा दिनो चलै छै
तेतबे टा ने रातियो होइ छै।
एक बराबर रहितो रहैत
दू रंग किए बनल छै?

साँझ साँझ गाबि जगैए
घरमुहाँ जे बाट धड़ैए।
मुदा पराती कहि परात
संग सूर्य सेहो धड़बैए।
अजब रूप दुनियाँक बनल छै
नागे बीच मणियोँ सजल छै।
मुदा मढ़ि मणि ओइ नागकेँ
रातिये बीच प्रकाश करै छै।
दीन दिनानाथक पबिते पबैत
हिहिया-हिहिया हीन कहै छै।
हनछिन-हनछिन करिते करैत
दिन सानि राति बनबै छै।

राति दिन किछु भेद ने कहियो
बनल रहैत सदए सभ लेल।
कालचक्र मानि ज्योति-अज्योति
चलैत रहए सदए सबहक लेल।
घर-बाहर जीवन पसरल छै
साजि-सजि समेट फुलडाली
समए-कुसमए पूजि-पूजि
टहलैत रहए सदए फलवाड़ी।
बनिते फुलवाड़ी फलवाड़ी
रस जिनगीक सिरजै छै।
पीबिते रस फलैक मन
जिनगी जिनगीक बुझै छै।

◌

शब्द संख्या : 135

समए

समए संग तखने चलै छै
संगी बना संग मिलि चलबै।
बाट-घाट बीच देखैत-सुनैत
रस्सा-कस्सी करैत रहबै।
संगी तँ ओहन संगी छी
देख परैख जेहेन चलबै।
तेहने पग पगहा पहिरा
आगू-पाछू चलैत रहबै।

समए ने केकरो संग धड़ै छै
ने केकरो छोड़ै छै।
अपन-अपन भाग्य-करमकेँ
अपने आँखिए पकड़ै छै।
अपन पएर अपने नै देखब
पएर केना पग पकड़त।
पगडंडी बिनु पग पकड़ने
राति दिन केना बनत?
जहिना जीवन-मरण चलै छै
तहिना ने दुनियोँ बनल छै।
निर्जीवेमे जीव बसै छै
देहा-देही कहि सुनबै छै।
जहिना निर्जीव सजीव देखै छै

तहिना सजीवो निर्जीव देखै छै।
पकैड़ पएर एक-दोसरक
हँसैत-कनैत संग चलै छै।
सजीव निर्जीवक रस नै चिखबै
भोज्य रस केना बूझबै।
की खाएब की पीबि
बिनु ठेकाने जीब केना पेबै।
पाताल ऊपर सजल धरती
सात तल पातालो केर छै।
तहिना सात तल अकासो ऊपर
मर्त देवलोक कहबै छै।
भूवन चौदहो बीच भरैम
लहैड़ समुद्र केना पकड़ब।
पबिते संगी हिहिया-हिहिया
बाट अपन केना धड़ब।

◌

शब्द संख्या : 151

जिनगीक मोड़

पानि बनि पाथर जखन
धरा-धार धड़ै छै।
घाट-बाट बना-बना
जिनगीए जकाँ चलै छै।
जड़सँ पहाड़ उठै छै
सएह ने सिरजए अतल सागर।
अपन-अपन नाओं गढ़ि
एक पहाड़ दोसर कहबए सागर।
जहिना धाराक मोड़ घुमै छै
तहिना ने धारो बहै छै।
बाट चलैत बटोही जेना
जिनगीक मोड़ पबै छै।
पबिते मोड़ मुरैछ जाइ छै
विराग मुरैछ कहबै छै।
बनिते मुरैछ तुरैछ जाइ छै
पकैड़ बाट एक दोसर छोड़ै छै।

मोड़े ने जोड़ो कहबै छै
एक दोसरक बाट केर।
तेहने ठीन ने देख पड़ैत
बाट-घाटक उनट-फेर।

जहिना-जहिना घाट घटै छै
तहिना ने बाटो मरै छै।
चलनिहार जेम्हर चलै छै
सएह ने चलनसाइर कहबै छै।
चलनसाइरो दुभिया जाइ छै
काँटो-कुश जनमै छै।
हवा-बिहारि सेहो झकझोड़ए
जे काटि एक पेड़िया बनै छै।
तेतबे नै यौ भाय सहाएब?
पानि-पाथरक दोसरो किरदानी
बर्खा-बाढ़ि बनबै छै।
गामक-गाम दहा-भसा
उर्वर-उस्सर बनबै छै।
निहत्था हाथ बौआ रहल
निकम्मा पएरो बनल छै।
बनिते हाथ पएर निकम्मा
जिनगी बोझ बनै छै।
बोझो कि हल्लुक-फल्लुक
समुद्र पहाड़ बन्हल छै।
बेबस बुधि बौरा-बौरा
मर्माहत भेल पड़ल छै।

◌

शब्द संख्या : 164

अकलबेड़ा

दिन-दिनक मध्यांतर जहिना
रातियो राति तहिना पबै छै।
सिर चढ़ि दिनकर देखए जब
अकलबेड़ झटैक झमकै छै।
जबकल जल पोखैर जहिना
झील-सरोवर हँसि कहबै छै।
तहिना ठमकि दिवा निशाकर
अकलबेड़ तहिना कहबै छै।
ठमकल हवा कहाँ कहै छै
मुदा, हवा बनि हवा भरै छै।
भरिते हवा भरैक-भरैक
हुरैक-हुरैक धार धड़ै छै।
बनिते धार धारण करै छै
चुट्टी-पिपड़ी संगे उड़ै छै।
जीवन-मरण सिरैज-सिरैज
स्वच्छ गति स्वच्छन्द चलै छै।
जल जलमग्न करै छै
हवा तेना कहाँ करै छै।
मुदा, अकास-पताल बीच
शीतल कोमल प्रचण्ड होइ छै।
धार धरतीक समेट-समेट
अकास चढ़ि सुरसैर बहबै छै।

सुरसैर बनि अकासगंगा
नव थल हृदए पसझै छै।
अपना पएरे सभ चलै छै
अपने लए सेहो चलै छै।
ऐबते भकमोड़ी-मोड़ बीच
अकलबेड़ ठमकए लगै छै।
बाजि महाभारत कहए जेना
दृष्टिकूट चौमेर बनल छै।
सए-सएक बीच सजि-सजि
आगू-पाछू सेहो जोड़ै छै।
ओइ चौमेरक बीचो-बीच
अँटकैक अँटकार बनल छै।
बिनु अँटकारे बुझि ने पेबै
दसो दिशा ओ देशांतर।
एक-दोसरकेँ जानि ने पेबै
बाम-दहिन बीचक अन्तर।

जिनगीक बीच जलमग्न सजल
भवसागर नाओं धड़बै छै।
बिनु टपान टपि केना पेबै
कानि कलैप प्रेमी कहै छै।
बिनु पुले रामो ने पौलैन
पुष्प-बाटिका बीच सीता।
दिन-राति चिकैर-चिकैर
कण्ठ फाइड़ गबै छै गीता।
गुण-मंत्र अमुल्य औषधि

देखा देलैन सेवक हनुमान।
बना मार्ग हनुमन भक्त
पौलैन देवत्वक सम्मान।

भवसागरकेँ पार पबैले
नाव तीन लागल छै।
नारद-व्यास ओ हनुमान
अपन नाव रखने छै।
काया-माया संग चलै छै
छाँह बनि रूप सेहो धेने छै।
देखते छाँह छिछैल-छिछैल
छोड़ि संग छिड़ियाए लगै छै।
तँए की ओ फेर संग छोड़ै छै
हटिते छाँह लपैक-लपैक
जत्र-तत्र पकड़ै छै।
आँखि मिचौनी खेल-बेल
कुदि-कुदि दिन-राति करै छै।
छैल-छबिली छमैक-छमैक
पानि-पाथर बनबै छै।
जे पाथर शिव भार उठाबए
कैलाश नाओं धड़बै छै।
वएह पाथर पानि बनि-बनि
अगम सागर सेहो कहबै छै।
जे पाथर उठबए भार शिव
पानि बीच डुमबै छै।
पाबि ताप सुर्जक प्रखर

हवा बनि-बनि उड़ै छै
पहाड़ सागर बनिते बनैत
सिर अकास चढ़ै छै।
घुमैड़-घुमैड़ अकास बीच
दूत, मेघदूत कहबै छै।
अलकापुरी अँटैक-अँटैक
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।
तँए कि ओ बिसैर जाइ छै
गुण, धर्म ओ कर्मक मर्म।
एक-एककेँ समेट-समेट
सभ दिन बँचबए अपन धर्म।
बनि पाथर अकास बनबै छै
अकास पाथर कहबै छै।
झहैर-झहैर-झहैर सदए
किछु ने शेष रखै छै।
आँखि मिचौनी खेल खेला
जल थल नभ दौगै छै।
तहिना ने हृदैओ सदए
अपन चालि चलै छै।

ः

शब्द संख्या : 366

धूप-छाँह

हे सुर्ज तोड़े पुछै छिअह?
ऊपर रहि तूँ किए बनौने,
एना छह दोहरी बेवहार।
अपन रश्मि आगू बढ़बैमे
धरतीकेँ किए केने अन्हार।
केना रोकि तोरा दइ छह
वन-उपवन ओ जंगल।
आस लगौने धरतियो बैसल
करै छह किए मंगल-अमंगल।
बिहुँसि सुर्ज बाजल विह्वल!
कोनो भेद-भाव करवनो नै
मनमे कहियो उठैए।
जे जतए पकैड़ः-पकैड़
से अपन काज करबए लगैए।
जँ तोहू करबए चाहै छह
छाहैर छोड़ि निकलह बाहर।
जखने नजैर मिला-चलबह
तखनेसँ संग पूरए लगबह।
मर्माहत भऽ पुकारि धरती-
केना कऽ घुसुकि पेबै,
चारू दिस घेड़ने-ए।

केना कऽ संग पाएब तोहर
कानि-कानि मन कहैए।

◌

शब्द संख्या : 92

माए

भेटि नै पबैत शब्दकोषमे
एक्को उदाहरण माएले।
नजैर उठा जखन देखै छी
माताराम की सभ देल।
तीसे बर्खमे विधवा भेलौं
कहब कि अहाँसँ मइया।
मनुख बना ठाढ़ कऽ देलौं
बाकी कि रखलौं हे मइया।
कनतोड़ी भरि अपन आभूषण
बेचि-बिकीन लगा देलौं
जुआनी गला जे सिनेह विलहलौं
बदलामे हम की कऽ देलौं।
राखि-सम्हारि घरसँ बाहर
अपन ओ लागिक परिवार।
लुटा-मेटा अपन जिनगीकेँ
जिनगी जीबैक चढ़ेलौं धार।
हँसी-खुशी जिनगी ससरैए।
सटि-सटि आनो परिवार।
एक-दोसरमे भेद कहाँ-ए।
संगे-संग मानो-सम्मान।
नव-नव चेहरा सिरैज
नव-नव काज धड़बैए।

नव-नव परिवार समेट
नव-नव सिनेह सजबैए।

अपन सदृश अपने हे मैया
शब्द कहाँ अछि जे किछु कहबह।
अपन रूप परसि-परसि
अपने सन हमरो बनेलह।

◌

शब्द संख्या : 106

साथी

जिनगीमे साथी मिलए जँ,
जीवन रस पीबे करत।
जीवने रस ने अमृत कहबए
अमृतमय जिनगी जीबे करत।
जाबे अमृतपान नै होइ छै
साथी हेराइक डरो रहै छै।
जहिना तेज धारा धारमे
हाथक साथी हथिआर (लाठी) छुटै छै।
कोमल-कड़ा बीख होइत जहिना
तहिना ने अमृतो होइ छै।
कात-करोट किनछेरे-किनछरि
घोंघा-सितुआ मोती भेटै छै।
नै अछि जरूरी कोनो
अमृत मधुर हेबे करत।
तीतोमे बास जेकर छै
नीक-नीक फल देबे करत।
आशमे अमृत बरसै छै
निराश छोड़ि आशावान बनू।
अपन जान-परान अपनेमे
मुट्ठी बान्हि◌ि-बान्हि आगू बढ़ू।
जहिना दुनियाँक रंग सतरंगी
तहिना चालि जिनगीओ धड़ै छै

खसैत-उठैत, चलैत-चलैत
जिनगी रसपान करै छै।

◌

शब्द संख्या : 99

घरक लोटिया बुड़ले अछि

घरक लोटिया बुड़ले अछि,
घर-घराड़ी गेले अछि।
गाम-घर उजरि-उपटि
नाओं-ठेकान बिसरले अछि।
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
बेटा-पुतोहु निकैल घरसँ
देखलक शहर-बजार।
ओ कि फेरि घुरि घर औत
आकि घुमत हाट-बजार।
छाती मुक्का मारि लिअ
अपन जिनगी सम्हारि लिअ।
नै तँ अपनो बुड़ले अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
जइ बच्चाकेँ भेँट नै हेतै
सालक-साल माए-बाप।
दादा-दादीक कथे कि कहब
मोबाइलेसँ करत क्रिया-कलाप।
कुल-खनदान सभ गेलै अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
अंग्रेजी पढ़ि अंग्रेजिया बनि-बनि
पप्पा-मम्मी आनत घर।
बाप-दादाक कि भेद ओ बुझत

अड़ि-अड़ि बाजत निडर।
आबो कहू भाय, केना नै डुमतै
घरक लोटिया केना नै बुड़तै।

◌

शब्द संख्या : 95

जुग बदलल जमाना बदलल

जुग बदलल जमाना बदलल
बदैल गेल सभ रीति-बेवहार।
चालि-ढालि सेहो बदैल गेल
बदैल गेल सभ आचार-विचार।
मुदा, राति-दिन एको ने बदलल
नै बदलल चान, सुर्ज, अकास।
पूरबा-पछबा सेहो ने बदलल
नै बदलल जिनगीक बिसवास।
दुख देख सभ दौग रहल-ए
पाबए चाहैए सुखक भंडार।
उड़ि-उड़ि पूरबा-पछियामे
लोभक बाट पकैड़ धुरझाड़।
घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलए
दुहाइ कसि मातृभूमिक लगबए।
अपनो जिनगी देख-देख
करनीक तँ फलो किछु देखबए।
एक सुग्गा वन बास करैए
दोसर पोसा पिजरा कहबैए।
रहितो पिजरा पोसा सुग्गा
राम-राम दिन राति रटैए।
अपन जिनगी अपने बुझि
अपन बाट पकड़ए पड़त।

अपना जिनगी लेल सदति
जीवन-संघर्ष करए पड़त।
जइ युवामे आत्मबल नै
ओइ युवाक जुआनी केहेन।
अपन हाथ अपने छाती रखि
मुहसँ अवाज निकलए जेहेन।

◌

शब्द संख्या : 114

फँसरी- 1

फँसरी लगा धड़ैन लटकलौं
पिताएल मन सभ किछु केलौं।
फँसरी जखन बैसल गरदैन
मन पड़ल दोसर मरदैन।
सुख-दुख मरदैन जनमाबए
संगे दुनू कात हटाबए।
आद्र एक रहितो दुनू
एक दोसरकें दूर भगाबे।
लगल फँसरी जहाँ तनाएल
दम फुलि देहो कठुआएल।
गरदैन पकैड़ पोखैर जहिना
हँसि-हँसि हरदा बजबाएल।
जेना-जेना गीरह कसैत गेल
तहिना जिनगी मन पड़ैत गेल।
चक्र चलैत देख-देख जिनगी
तड़तड़ा-तड़तड़ा खसैत गेल।
ऐ सँ नीक तँ फाँसी होइ छै
किछु कऽ धऽ कऽ तैपर चढ़ै छै।
घरक फँसरी अँतरी दुहै छै
हार रस सुधि स्वान पबै छै।

◌

शब्द संख्या : 88

गरीबी

गरीबीक गुरु-आश्रम बीच
भट्ठेसँ पढ़ैत एलौं।
भोरे उठि प्रणाम करिते
मनक असीरवाद पबैत एलौं।
राति-दिन सुरता लगौने
सदिखन चर्च करै छिऐन।
उठिते चर्च अपने आबि-आबि
जन्म–अजन्मक बात कहै छिऐन।
आँखिक आगू गुरु-गरीबीक
सूतलमे जगबै छैथ।
दू-दिसिया चालि मनुखक
पकैड़ बाँहि कहै छैथ।
अमीर-गरीबक चालि दू-दिसिया
कखनो अमीर, कखनो गरीब बनैत।
भाग्यक रेखा अगम-अथाह छै
हँसि-हँसि सदिखन सुनबैत।
गरीबी सत्-मार्ग चलबैए
हँसि कु-मार्ग अमीरी धड़बैए
भेद-कुभेद भेद बिनु बुझने
सुमार्ग कहि कुमार्ग चलबैए।
जेकरा ढौआ ढन-ढन करए
ओ केना पहुँचत मधुशाला।

चिकैड़-चिकैड़ गरीबनाथ कहए
भोजन नै छी सुआद मशाला।
अपने हाथे पकैड़ बाँहि
सीमा सरहद देख चलबैए।
अपन आड़ि-मेड़ अपने पकैड़
हँसि-हँसि अपन चालि धड़बैए।
जेकरा अहाँ अमीर बुझै छी
नै छिऐक ओ अमीरी।
आ ने जेकरा गरीब बुझै छी
नै छिऐक ओहो गरीबी।
बुद्धदेव किए राज-पाट छोड़लैन
जँ अभावेकें गरीबी कहबै।
भिक्षुक बेना पकैड़ किए
जिनगी भीखमंगाक बनबैए।
गरीबीक जे राह पकैड़ि-पकैड़
राही बनि रनिबास चलैए।
ब्रह्मा, विष्णु ओ शिवदानी
पदे-पद दर्शन पबैए।
यएह गरीबी आ अमीरीक
धड़-धड़ जीवन धार बहैए
सागर-गंगा हेराएल कहाँ
तिले-तिल चलैत रहैए।

◌

शब्द संख्या : 168

दबाइए रोग

कहिया केतए-सँ रोगाएल
रोगे ओछाइन धेने एलौं।
जी तोड़ि तरद्दुतो करैत
रोगे संग-संग जीबैत एलौं।
रोगो कहाँ छोड़ए चाहैए
अपन ओझराएल-पोझराएल बान
रोगाएल देख-देख कहैए
ओ अछिए महा बूड़िबान।
उक्कठ-पाकठ बरमहल करैए
कखनो नै छोड़ए अपन सान।
ताकि-ताकि मीठ दवाइ आनि
गमबए चाहैए अपन जान।
कहै छेलै पेट पाचन बिगड़ल
पीबए लगलौं महाजाइम।
आठे दिन अबैत-अबैत
सरदी-बोखार पकड़लक तानि।
कोनो कि एना आइए होइए
आकि होइत आएल जुग-जुगसँ।
जएह पोषक सएह शोषक बनि
लीड़ी-बीड़ी करैत जुग-जुगसँ।
मनुख-मनुखक बीच अड़िया
घुमा बुधि बुधियार बनौलक।

दिन-राति छाँटि-छूँटि आड़ि
साबरमंत्र पढ़ा मुग्ध बनौलक।
मनतरो कि हरही-सुरही
पीठिया-पीठिया मन घुमौलक।
हँसि-हँसि पकैड़ चालि
बुधिसँ यारी करौलक।
छी ठाढ़ बुधियार बनि-बनि
जिनगीक परिचए कहाँ पेलौं।
अपनो जिनगी नै देखै छी
केतए-सँ केतए एलौं-गेलौं।
पाँच तत्त्वक जीवन पाबि-पाबि
जिनगीमे किछु नै केलौं
अकारथ जिनगी बना-बना
बेर्थमे जिनगी गमेलौं।
कि कहब किछु ने फुड़ैए
पीछराह बाट पकैड़ लेलौं।
केम्हरो-सँ-केम्हरो पिछैड़-पिछैड़
मृत्युकेँ सदति नतैत एलौं।
भार बना जीवन लीलाकेँ
कुहैर-कुहैर जीबै छी।
आशा-आसी ताकि रहल छी
जिनगी बाट कटै छी।

ः

शब्द संख्या : 163

मुँहक झालि

मुँहक झालि बजौने कि हएत,
काजक झालि बजबए पड़त।
फोकला-खाख अन्ने की
सुभर दाना उपजबए पड़त।
जाधैर धरती परती रहतै
चारागाह दिन-रातियो बनतै।
चरनिहारोक चालि असंख्य छै,
दिन-राति चरबे करतै।
सूर्जे जकाँ ओहो रहै छै
सूर्जेक संग चलबो करै छै।
राति-दिन बेड़ा-बेड़ा
समए देख चड़बो करै छै।
देहधारी जीवे टा नै
विवेकियो पुरुष कहबै छी
लाज-शर्म जँ उठा-पीबि
तँ अपन बिटारि अपने करै छी।
जँ धरतीपर जन्म लेलौं
किछु देबो किछु लेबो सीखू।
अपने केलहा संग चलै छै
गीरह बान्हि कन्हेठ राखू।
जहिना वनमे वृक्ष बहुत छै
जीवो-जन्तु तहिना भरल छै।

पाँच तत्त्व निर्मित जे कहबै
पाँचे तत्त्व विलीनो होइ छै।
बिनु भक्तिक मुक्ति कहाँ
बिनु मुक्तिक जिनगी कहाँ छै।
भक्तिः-मुक्तिक बीच बटोही
जिनगीक रसपान करै छै।
मुँहक झालि लहरी नै
कर्मक स्वरलहरी सीखू
अपन इतिहास अपने हाथसँ
स्वार्णाक्षरमे लिखनाइ सीखू।

ः

शब्द संख्या : 132

किछु सीखू किछु करू

जिनगीमे किछु करब सीखू
जिनगीमे किछु लड़ब सीखू।
सभ जनै छी, सभ देखै छी
अज्ञान-अबोध बनि-बनि अबै छी।
सज्ञान-सुबोध तखने बनब
संघर्षक बाट जिनगी धड़ब।
एक-दोसरमे तखन बदलै छै
बीच परिवर्तनक खेल चलै छै।
जहिना रीतु परिवर्तन होइ छै
तहिना कुरीत-सुरीत सेहो बनै छै।
जहिना जाड़ गरमी बदलै छै
तहिना ने गरमियोँ जाड़ बदलै छै।
पबिते पानि धरती धमकि
नवरंगी रूप बना सजै छै।
जिनगियोक तँ खेल एहिना
अहीमे सभ किछु बनै छै।
कियो भक्त भगवान पबैत
तँ कियो पबैत भगवत् भजन।
कियो योद्धा बनि अस्त्र उठबए
तँ कियो कुकर्म-सुकर्म गढ़ैत।
आँखि उठा घर-बाहर देखू
अपन कालखंड अपने परखू।

पबिते परेख जीवन-मौसम केर
सौनक सोहनगर सुगन्ध बिखरू।

◌

शब्द संख्या : 107

पत्नी

सहस्र स्वरूप धड़ैत जहिना
ब्रह्म, विष्णु ओ महादेव।
नारी-पुरुष सेहो तहिना
सहस्र श्रृंगार करैत चलैत।
ब्रह्म-जीव, माया जहिना
संग रहि संग चलबो करैत।
तहिना ने नारी-पुरुष संग
आदियेसँ चलि आबि रहैत।
सुगरक चरबाहि करैत धर्मराज
राता-राती बना देखौलैन।
माटि सटल ठमकल सुगरकेँ
महिंस बना आकास उठौलैन।
बापे घरसँ सीख आबि बेटी
पतिक संग जीवन धारण करैत।
गिरहस्त घरक बेटीओ तहिना
घर-परिवारक लूरि-बुधि सिखैत।
एक देश दोसरसँ जहिना
हटल-सटल सेहो चलैत।
तहिना ने गामो-समाज बीच
व्यक्ति◌-परिवार सेहो चलैत।
पूर्व लूरि संग कन्या जहिना
पतिक सजाएल संग धड़ैत।

तहिना ने सजल-सुकोमल
पत्नीक हाथ लपैक पकड़ैत।
गिरहस्तीक रूप सजबैत पत्नी
बोनिहारक संग बनली बोनोहारिनि
जिनगीक भार उठैत देख-देख
हृदए खोलि छाती लगौलियनि।
चिन्ता नै उमेरक कनियोँ
भरिसक लगले-भीड़ले छी।
कनी एम्हर आकि ओम्हर
मस्तीसँ मौज करिते छी।
अपन बुझि करैत अपना ले
जिनगीक धार टपि-टपि बढ़ैत।
कारीगरी संग करुआरि पकैड़
संग मिलि संगे चलैत।
रंग-बिरंगक पहाड़-पठार बीच
वन-उपवन सेहो सजल-ए।
हर्ष-विषादक बीच बहि तहिना
नजैर नजैरक बीच चलैए।
कियो-लग कियो दूर देख
थामि-थामि कऽ डेग उठबैए।
कियो दूर-लग दुनूक बीच
झटैक-झटैक सेहो चलैए।

◌

शब्द संख्या : 171

चेतन चाचा

चेत-चेत चलू चेतन चाचा
सरसड़ाइत समए ससरैए।
समए छोड़ि कतबाहि जखने
ठहैक-ठहैक नक्षत्र कहैए।
आगू डेग उठबैसँ पहिने
चारू दिशा देखैत चलू।
चारू कोण ठेकना-ठेकना
आगू डेग बढ़बैत चलू।
जिनगीक बाट सपाट कहाँ छै
काँट-कुश छिड़िआएले अछि।
देख-थामि पएर रखि-रखि
तिले-तिल ससरैएक अछि।
ग्रह-नक्षत्र ओ सुर्ज-चान
रूटिंग बनल जेकर दिन-रातिक।
तहिना ने रूटिंगो बनल छै
दैहिक, दैविक ओ भौतिक।
क्षण-पल, सेकेण्ड, मिनट
अछि बनौने सीमा जहिना।
देव-दानव सेहो अपन
बाट बनौने अछि तहिना।
खान-पान पकैड़ चालिकेँ
जहिना जीवन पद्धति बदलैए।

बान्हि मन साधि तन
साधक बनि बनि जीबैए।
साध्य साधि साधन करैत
साधक नाओं धड़बैए।
साधक बनि करैत साधना
भक्त–भूमि पकड़ैए।
प्रेमी-प्रेमिका बीच जहिना
प्रेम अपन लीला करैए।
तहिना भक्त–भगवान बीच
प्रेमास्पदक पुल बनैए।
सात-समुद्र ओ सात पहाड़
सतरंगी बिजुड़ी चमकैए।
प्रखर ज्योति-सँ-ज्योतिर्मय कऽ
भवसागर पार करैए।
चेत-चेत चलू चेतन चाचा
सरसड़ाइत समए ससरैए।
समए छोड़ि कतबाहि जखने
ठहैक-ठहैक नक्षत्र कहैए।
आगू डेग उठबैसँ पहिने
चारू दिशा देखैत चलू।
चारू कोण ठेकना-ठेकना
आगू डेग बढ़बैत चलू।
जिनगीक बाट सपाट कहाँ छै
काँट-कुश छिड़िआएले अछि।
देख-थामि पएर रखि-रखि
तिले-तिल ससरैएक अछि।

ग्रह-नक्षत्र ओ सुर्ज-चान
रूटिंग बनल जेकर दिन-रातिक।
तहिना ने रूटिंगो बनल छै
दैहिक, दैविक ओ भौतिक।
क्षण-पल, सेकेण्ड, मिनट
अछि बनौने सीमा जहिना।
देव-दानव सेहो अपन
बाट बनौने अछि तहिना।
खान-पान पकैड़ चालिकेँ
जहिना जीवन पद्धति बदलैए।
बान्हि मन साधि तन
साधक बनि बनि जीबैए।
साध्य साधि साधन करैत
साधक नाओं धड़बैए।
साधक बनि करैत साधना
भक्त–भूमि पकड़ैए।
प्रेमी-प्रेमिका बीच जहिना
प्रेम अपन लीला करैए।
तहिना भक्त–भगवान बीच
प्रेमास्पदक पुल बनैए।
सात-समुद्र ओ सात पहाड़
सतरंगी बिजुड़ी चमकैए।
प्रखर ज्योति-सँ-ज्योतिर्मय कऽ
भवसागर पार करैए।
चेत-चेत चलू चेतन चाचा
सरसड़ाइत समए ससरैए।

समए छोड़ि कतबाहि जखने
ठहैक-ठहैक नक्षत्र कहैए।
आगू डेग उठबैसँ पहिने
चारू दिशा देखैत चलू।
चारू कोण ठेकना-ठेकना
आगू डेग बढ़बैत चलू।
जिनगीक बाट सपाट कहाँ छै
काँट-कुश छिड़िआएले अछि।
देख-थामि पएर रखि-रखि
तिले-तिल ससरैएक अछि।
ग्रह-नक्षत्र ओ सुर्ज-चान
रूटिंग बनल जेकर दिन-रातिक।
तहिना ने रूटिंगो बनल छै
दैहिक, दैविक ओ भौतिक।
क्षण-पल, सेकेण्ड, मिनट
अछि बनौने सीमा जहिना।
देव-दानव सेहो अपन
बाट बनौने अछि तहिना।
खान-पान पकैड़ चालिकेँ
जहिना जीवन पद्धति बदलैए।
बान्हि मन साधि तन
साधक बनि बनि जीबैए।
साध्य साधि साधन करैत
साधक नाओं धड़बैए।
साधक बनि करैत साधना
भक्त–भूमि पकड़ैए।

प्रेमी-प्रेमिका बीच जहिना
प्रेम अपन लीला करैए।
तहिना भक्त–भगवान बीच
प्रेमास्पदक पुल बनैए।
सात-समुद्र ओ सात पहाड़
सतरंगी बिजुड़ी चमकैए।
प्रखर ज्योति-सँ-ज्योतिर्मय कऽ
भवसागर पार करैए।

◌

शब्द संख्या : 387

पौरुष

पौरुष पुरुषत्वक सुप्त सुअन
प्रस्फुटित भऽ पुष्पित बनैए।
चढ़ि पवन रथ भरमि अकास
सिख-नख रूप सजबैए।
पाथरसँ निकैल-निकैल
शिखर नीर धारण करैए।
झड़-झड़ करति झहैर-झहैर
ह्रदए पाताल पकड़ैए।
एक जल पाथर पग पकड़ै
दोसर पकड़ए शून्य अकास।
पबिते प्रेमी ह्रदए प्रेम मिलि
जूरशीतल पावनि प्रकाश।
सिनेह सिक्त ह्रदए सटि
ससैर-ससैर ससड़ए सागर।
तरोट-उपरोट माटि मिलि
ह्रदए सिनेह सजबैत गागर।
माटि जेना सागर सजै छै
पातालो उमड़ै तहिना छै।
हवो कहाँ मानैत छान
पकैड़ बॉहि बिचड़ए लगै छै।
जखने तीनू सम बनै छै
पवन पावक पकड़ै छै।

पानिओ कहाँ पछुआए चाहैत
त्रिवेणीक धुन धड़ै छै।
धुने धूनि-धूनि धूर सिरैज
चौड़गर बाट बनबै छै।
लट-पट, सट-पट करैत चलैत
सीमाक पाड़ पकड़ै छै।
टपिते टपान सीमा केर
नव दुनियाँ झलकै छै।
पयस्विनी संग मिलि वसुधा
पाथर पहाड़ सजबै छै।
अनगिनित दुनियाँ बनल छै
ब्रह्म-जीव माया सजल छै।
अनेकानेक जीव ओ ब्रह्म
योगमाया सिरैज सजबै छै।
बनिते संगी संग चलै छै
अनेकानेक दर्शन पबै छै।
कीड़ी-फतिंगी, झाड़-झूड़
सुन्दर शीतल सुख पबै छै।
हरियर-हरियर वन सजल छै
कोमल-किसलय सजि-धजि
जमुना धार बीच बहै छै।
माटि बैस सौभर ऋषि
राति-दिन तपस्या करै छै।
बाल्मीकि, भारद्वाज, ऋगी
निच्चाँ नजैर निहारि रहल छै।
देख-देख धड़नि धारण

मने-मन तड़ैप रहल।
पबिते एक-दोसर-तेसर
चारिम संग दौग-दौग
पाँचम केर पछुअबै छै
संग मिलि पाँचो नाचि-गाबि
पञ्च-तत्त्व लहैर मिलबै छै।
पाँच तत्त्व निरमित संसार
संग मिलि सभ खेलाइए।
उदय-अस्त देखैत-सुनैत
अपनेमे समाइए।
पाँच मिलि समाज बनि
पञ्च परमेश्वर कहबै छै।
वैतरणी तरणि-तरणि
सिर-शिव गंग चढ़ै छै।
दुनियाँक रूप पकैड़ि-पकैड़
ऋषि-मुनी योद्धा खिंचैत
दलकल-सलकल पिछैड़ि-पिछैड़
छाती मुक्का मारि चलैत।
मुक्को केर तँ अजीब किरदानी
कियो अपने मारए कियो दोसरात
झपटि आँखि पकैड़ बॉहि
धरती धड़बैत तेसरात।

◌

शब्द संख्या : 264

घोड़ मन (भाग-1)

घोड़ मन घोड़छान तोड़ि
चौदहो लोक भरमए लगल।
सातो-सोपान पताल टपि
सातो अकास उड़ए लगल।

समए संग जहिना बिलगैए
मिसरी-मक्खन ओ निर्मल जल
हंसा उड़ि परमहंसा बनि-बनि
तहिना उड़ैत मन देह-स्थल।

स्थूल-सूक्ष्म बँटि-बँटि जहिना
दृश्य-भाव कहबैए।
एक्के आँखिए दुनू देखै छी।
अचेत मन भरमैए।

निकैल देह धारण करैए
आत्म-परमात्म दर्शन पबैए।
पबिते दर्शन मगन भऽ भऽ
सूर-तान, वीणा धड़ैए।
मथिते मथानी जहिना
घी-पानि बिलगए लगैए।

जले बीच दुनू समाएल
उठि एक सिर चढ़ए लगैए।
लोहिया चढ़ल आगि बीच जहिना
मक्खन नाचए लगैए।
काह-कूह फेक-फेक
पेनी बीच बैस जमैए।

◌

शब्द संख्या : 091

घोड़ मन (भाग-2)

गोबर घोड़ाइते पानि जहिना
गोबराह रूप धारण करैए
गोबरेक गन्ध पसारि-पसारि
गोबरछत्ता बनि-बनि छितिराइए।
सुविचार कुविचारो तहिना
छने-छन छीन होइत चलैए।
गिरगिट रंग पकैड़◌-पकैड़
गिरगिटिया चालि चलए लगैए।
गिरगिटिया मनुक्खो तहिना
दिन-राति बदलैत चलैए
गीरगिटेक जहर सिरैज◌-सिरैज
बीख उगलैत चलैए।
भेद-कुभेद मर्म बिनु बुझने
देखा-देखी ओढ़ैत चलैए
ओढ़ि-ओढ़ि ओझरा-पोझरा
डुबकुनियाँ काटि मरैए।
गाछक ऊपर डारि बीच जहिना
बाँझी अपन बास करैए
झड़मनुखो मनुख बीच तहिना
ऊपरे-ऊपर चालि मारैए।
सात समुद्र बीच मनुख
दसो दिशाक दर्शन पबैए

चीन-पहचीन केने बिना
जिनगीक बाट पकड़ैए।

◌

शब्द संख्या : 082

घोड़ मन (भाग-3)

प्रकृतोक तँ प्रकृत गजब छै
सुगन्ध-कुगन्ध फूल खिलबैए।
सु-पारखी सुरैख-परैख
कु-पारखी दिन-राति मरैए।

परेखनिहारो परैख कहाँ
परैख-परैख बिलगा चलैत
धार-मझधार बीच
पिछैड़◌-पिछैड़ नहियें खसैत।

बेबस मन बहैट-बहैट
सीरा-भट्ठा बिसरए लगैत
जान बँचबैक धरानी कोनो
लपैक◌-लपैक पकड़ए चाहैत।
सत्ताक भत्ता छिड़ियाएल छै
फानी, फनकी बनि लागल छै।

चिड़चिड़ीक फड़ जकाँ
चुभि पएर टीको नोछड़ै छै।
बिनु पाँखिक हंसा जहिना
तीनू लोक विचरण करैए।

दिन-रातिक भेद बुझि-बुझि
अज्ञान-ज्ञान-सज्ञान बनैए।

◌

शब्द संख्या : 068

घोड़ मन (भाग-4)

आँखि मिचौनी पाश बैस
ब्रह्म-जीव माया खेलैए।
समए पाबि तहिना ने
अज्ञानो-सज्ञानक चालि चलैए।
होइत आएल आदिये-सँ
अज्ञान-ज्ञान बीच संघर्ष
ताधैर चलिते रहत
जाधैर अन्हार इजोत बनत।
पछुआ छोर सम्हारि-सम्हारि
ऐगला पकड़ैत चलू।
अतीत केर स्मृति बना
समद्रष्टा बनैत चलू।
एक छोरक बाट देख
भूत-वर्तमान देखैत चलू।
भविस तँ भविसे छी
भविस-वर्तमान बनबैत चलू।
डेंगी नाह जहिना यात्री
धार पार करैए।
डगमगाइत देह मड़मड़ाइत मन
जीवन धाम पहुँचैए।

◌

शब्द संख्या : 069

अलकक चान

ऐबते गाम चमकए लगलै
ताकि तरेगन बिछए लगलै।
ज्योति मिला परैख-परैख
अकास सिर सजबए लगलै।

रंग-रंगक तारा सजल छै
लग-पास संग सेहो हटल छै।
कोणे-काणी सजि-धजि
मोती-कंचन माला बनल छै।

धूप-छाँहक पाश पाबि-पाबि
नब-पुराणक भेद मिटल छै।
धाम ज्ञानक चोला पहिरि-पहिरि
शब्द–शब्दक जाल पसरल छै।

मुर्ति जखन कागत उतैर
रूप भगवान धारण करै छै।
झड़ि-झड़ि झहैड़ असल
नकल रूप धड़ए लगै छै।

जहिना कार्बन कॉपी होइ छै

नकल कार्बन चढ़ए लगै छै।
तहिना अरूप-सरूप संग
चुट्टी चालि चलए लगै छै।

जहिना मुसक चालि पकैड़
मुसरी सेहो घुसकए लगै छै।
जाल-महजाल पकैड़◌-पकैड़
पकैड़ सुत काटए लगै छै।

आदिक दुहाइ लगा-लगा
आधि-व्याधि सिरजए लगै छै
मकड़-जालक रूप गढ़ि-गढ़ि
अपने चालिए फँसए लगै छै।

अलकक चान हाँसू पकैड़
खल-खल सतमी पार करै छै।
अट्टहास अष्टमी केर पबिते
नब-रंग नवमी कहबै छै।

पबिते नौमीक चान अकलक
पुनो दिस ससरए लगै छै।
पुनोक परताप पकैड़◌-पकैड़
पूर-चान कहबए लगै छै।

एक चान यमुना उतैर

महल ताज देखए लगै छै।
दोसर चान पून्यात्मा बनि
आत्म लोक बिचड़ए लगै छै।

डेग-डेग दर्शन पबैत,
डेगे-डेग ससरए लगै छै।
उड़ि अकास धरती पकैड़
चान-सुर्ज कहबए लगै छै।

प्रीत-रीति पकैड़◌-पकैड़
अपन-अपन बेथा गबै छै
राग-रागिनि राग भरि-भरि
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।

जमुनाक जल बनि-बनि
नीर सरस्वती चढ़बै छै।
गाड़ा-जोड़ी करैत दुनू
गंगा बाट बनै छै।

तीनू मिलि तिरवेणी कहबए
सूर-तान-राग भरै छै।
आलाप-परलाप भरैत-करैत
परियाण परियाग करै छै।

◌

शब्द संख्या : 220

शिशवोनी

बुधि-बिचड़ी कऽ पत्नी कहलैन
शीशो लगबैक विचारो देलैन।
नहियोँ मन, तैयो सुनलियनि
जबाब नै किछु दऽ सकलियनि।
मने-मन विचारए लगलौं
मुँह फोड़ि किछुओ ने बजलौं।
दोहरा कऽ ओहो ने पुछलैन
आगूक बात किछुओ ने कहलैन।
मुदा नजैर निहारै छेलैन
पचास गाछ, पिताक देल छेलैन।
भोग-भोगि उपटा देलियनि
शीशोक गाछ सठा देलियनि।
बाल-बोध चेतन जब बनतै
माए-बापक किरदानी कहतै।
बाबा-बाप, बेटाक हिसाब
मने-मन सेहो ने जोड़तै।
चलै लए चलनसारि बनल छै
आगू-पाछू सभ चलै छै।
ऐगलाक पैरक रेगहा-सिरखार
पकैड़◌-पकैड़ पछिलो चलै छै।
जँ उपयोगी बौस नै हेतै
छोड़ैमे असोकर्ज नै हेतै

जँ उपयोगी बौस भविसक
कर्म-अधर्म किए नै हेतै।

बीघा भरिक बाग-बगीचा
बेटा सिर लटकौने गेला।
रंग-बिरंगक फल सजि
बेख-बुनियादि पटकने गेला।
चारू आड़ि अड़िया-अड़िया
अड़कस दऽ आड़ा बनौलैन।
आम, कटहर, बेल, लीची
बीच रोपि, आड़ा शीशो लगौलैन।
नमती-चौड़ी हिसाबसँ
नापि-नापि सभ गाछ लगौलैन
आधा लग्गी नाला खुनि-खुनि
आधा लग्गी आड़ा बनौलैन।
आड़ा खुट्टी ठोकि-ठोकि
जनमाउ बीआ सेहो लगौलैन।
काटि-छाँटि मुँह-कान बना
गाछ पचास शीशो पुरौलैन।
जाधैर जिनगी नीक चलल
शीशो-पांङ जारन चलल
जेना-जेना दिन खिलचल
जारन संग गाछो बिलटल।

पत्नीक पवित्र परामर्श पकैड़
मने-मन मनन करए लगलौं

मसलि-मसलि मन मथि-मथि
बाल-बोध ले विचारए लगलौं
घुरिया-घुरिया, फिरिया-फिरिया
घुरछी मन लगए लगल।
की नीक की अधला
निहारि-निहारि निहारए लगल।
सु-नीक, कु-नीक बाटे-बाट
रस्ते-पेड़े औनाए लगलौं
बीच बाट अटैक ठाढ़
गुन-धुन करैत विचारए लगलौं।
इंच-इंच भूमि मिलि-जुलि
हीराखान बनल छै
आधा लग्गी पेट काटि
आधा आड़ा सेहो बनल छै।
आड़ा पहेटि-पहेटि पेट भरि
समतल-चौरस बना देबै।
धारी-एक बढ़ा-बढ़ा
तीन धाड़ी शीशो लगा देबै।
कलसि मन फलकि उठल
परामर्श पत्नीक पनैप उठल
लहकैत मन चहकए लगल
प्रभाती पक्षीक सुनए लगल।

पट बना बनेलौं पनिघट
आड़ा पटक माटि बनेलौं

आड़ा-आड़ी सजा-सजा
तीन धाड़ी माला बनेलौं
जहिना आड़िक धार बनै छै
तहिना आड़ि-आड़ बनल
ठामे-ठाम साबे सजि-धजि
तीन धाड़ी पनिबट बनल।
अद्राक अद्रासँ आद्रित भऽ भऽ
शीशोक गाछ पोनगि उठल।
कखनो पानि-माटि पीबि
कखनो पानि-माटि पीबए लगल।
प्रेमी-प्रेमिका चालि पकैड़
सिरजन सृष्टि करए लगल
बितते बरसात भभा उठल
शीशो गाछ जगमगा उठल
आसिन-आसा पाबि-पाबि
धाड़ी बनि धड़िआए लगल।
साबे ससैर आड़ा पकैड़
ऊपर-निच्चाँ पसरए लगल।
रक्षक-भक्षक संग पकैड़
संगे-संग चलए लगल।
जेकरा बकरियो ने पुछै छै
आ कि डरे भीड़ि सटैए।
एक-दोसराक रक्षा करैत
संग मिलि चलए लगैए।

साले भरि बीतैत-बीतैत
धाड़ी शीशोक धड़िया गेल।
मरल लक्ष्मी जीबैत देख-देख
हारल मन हरिआ गेल।
बितते कातिक काटि साबे
अँगने-खरिहाने पसारलौं
आठे दिनक रौद पीबि
जुट्टी गुहि मुट्ठी बनेलौं।
साले-साल जहिना उठए
सड़ैक शीशो सड़कए लगल।
देखते दुरदिन दिन कुदिन
सुदिन दिन कहबए लगल।

सु-दिन दिन अबैत देख
पत्नीक मन कु-दिन पड़लैन
कुदिन-सुदिन बीच घुरिया
दिन फल पबए लगलैन।
पबिते फड़ जिनगीक
लहैर-लहैर लहरए लगलैन।
प्रेमातुर भऽ बाढ़ि पसारि
छाती-हृदए सेहो जुड़ेलैन।
जइ छाती दूध पिआ बाल
बोध वृक्ष सिरजन करै छै।
अकास उठैत वृक्ष देख
तड़पैत मन कलशए लगै छै।
तपसी बनि तपस्या केलौं

समए पाबि फलो नीक पेलौं
बोध-वृक्ष रूप देख-देख
जिनगीक गुन-धाम पहुँचलौं।
शिशवोनी देख-देख मन
उत्साहसँ उत्सुक बनल
प्रेमातुर भऽ प्रेम तहिना
प्रेमसँ प्रेममय बनल।

◌

शब्द संख्या : 472

फगुआ

जुआनीक जे रूप देखबैए
तेकरेसँ ठट्ठा करै छी।
अपन करम-धरम बिसैर
फगुआ हँसि-हँसि गबै छी।
दोहाकेँ कवित्त बना-बना
दोगे-दोग बिहुँसैत चलू।
रचि कविता जोगिरा केर
र- र- र- र- गर्द करू।
रूप सजि करता-करतीक
श्मशान रूप बनबै छी
रस फूल माधुर्य फलक
जी-जान कहाँ चिखै छी।
जहिना सरसो-झुन-झुन करैए
गहुमनियाँ रंग लपकैत रहैए।
केचुआ छोड़ैक मसीम परैख
लपटि-लपटि लपटए लगैए।
ताड़ वीणाक कम्पन्न जहिना
ओर-छोर झनकबए लगैए।
तहिना पैरक उठल झुन-झुन
डारि-पात, सिर डोलबैए।

पाबि फागु वसुन्धरा जहिना
अलसाएल-मलसाएल झुमैए।
पाबि जुआनी बिरह तहिना
बिड़हा-बिड़ही बौराइए।
ढोल-डम्फ ताल मिला-मिला
दुनू नाचए-गाबए लगैए।
फड़ल-फुलाएल देख वसुधा
अकास पवन डोलए लगैए।
चान-सुर्ज बैस दुनू संग
हिस्सा-बखरा फड़िआबए लगैए।
जहिना पुनोक चान चमकए
मध्य–मस्त सुर्ज सेहो हँसैए।
अपन-अपन दशा-दिशा
मिलि दुनू गाबए लगैए।
बामा हाथ थिड़ैक-थिड़ैक
दहिना चमकि चमकए लगैए।
जहिना जाड़क पाला पकैड़
शीतल ह्रदए मिलि जुड़ौलक।
ठिठुरल-ठिठुड़ल पकैड़ कली
वसन्त गीत सेहो सिरजौलक।

◌

शब्द संख्या : 143

शील

द्रवित होइत पानि जहिना
सुख-शील रूप धड़ैए।
तहिना ने गाछो-बिरीछ
फल जीवन, मृत्यु सुख बँटैए।

जे सृष्टि सिरजए वन-सागर
सएह ने सिरजैत वन-मनुख।
बनि मनुख बनबास करए जौं
पबैत राम गुण, शील मनुख।

लस्सा-दूध नाम धड़ए एक
दोसर सागर-सरोवर कहबै छै।
लहू कहि-कहि जीव धड़ए
वनमानुख खून मनुख कहबै छै।

सुखा खून अपन अस्तित्व
शील-सिरजक कहबैए।
शीले तँ रूप सु-भावक
बढ़ि रूप गुण पबैए।

पबिते गुण भव-सागरमे
गुणी बनि गुण खिंचैए।
छाती लगा बान्हि वंशी
रस्सीक संग सटैए।

शील जखन गुण बनैए
मनुख गुण खिंचए लगैए
गुणी बनि गुदगुदबैत मन
जीवन सुख संचार करैए।

कखनो रस्सा-कस्सी करैत
कखनो ढील-ढाल चलैए।
शीतल-समीर पाबि कखनो
संगे-संग विश्राम करैए।

दिन-रातिक बीच समीर
कुरुक्षेत्र कहबए लगैए।
उनैट-पुनैट, ओंघरा-पोंघरा
रणभूमि सिरजए लगैए।

जे फल पाबि राम बनबौलैन
समुद्र बीच सघन पुल।
तहिये-सँ उड़ए लगलैन
रस्ता-बाटक मिझिराएल धूल।

सएह फल पाबि रचलैन कृष्ण

भारतसँ बनैत महाभारत।
हिमालयसँ समुद्र
आ समुद्रसँ कैलाश महादेव

वएह थिक हमर भारत।
भरत बनि भ्रमैत भँबर
चरण-सिर धड़ैत जहिना
सएह चरण सुरसैर सिरैज
शिव-कैलाश समाएल जहिना।

पिघलि पाथर जहिना
पाथर वर्फ कहबए लगै छै।
सिरैज शील शीला बनि-बनि
शीला पत्थर कहबए लगै छै।

नव रूप सिरैज-सिरैज
जल रूप धारण करैए।
बनि जल-कण उड़ि अकास
हवा संग झुमैत चलैए।

प्रेमी-प्रेमिका बीच दुनू
अश्रु-कण बिल्हैत चलैए।
वएह कण-कणाइत बढ़ि
ओस बनि धरती सिंचैए।

धरिते धड़ा-धरती कन्हुआ
हाथ दुनू छाती सटबैए।
मिलि दुनू सिंगार सजि
वसुदेव रूप धारण करैए।

बनि वसुन्धरा बनि बसुदेव
धार-धाराक धारण धड़ैत।
पबिते जल जलधार बीच
राइ-पहाड़ रूप सजबए लगैत।

बीच-बीच बाट-घाट बनि
रूप श्रृंगार सजबए लगैए।
एक घाट दोसर नदी बनि
झील, सरोवर सागर सिरजैए।

झिलहोरि झील खेलाइत रश्मि
आकर्षित-आकर्षण करैए।
प्रेमास्पद पबिते पाबि
प्रेम-प्रेमी कहबए लगैए।

पाबि प्रेमी प्रेमी जखन
सागर गंगा मिलए चाहैए।
बॉसक पुल बना समुद्र

गंगा-सागर स्नान करैए।

वएह पवित्र जल सागर
कंद पहाड़ बनैए।
बैस गुफा जोगी-जती
भगवत-भजन करैए।

जहिना भूखल पेट मांगए
तहिना ने मनो मंगै छै।
भोज्यक तृष्णा दुनूक बीच
भजन-भोजन कहबैत चलै छै।

बनि शीला समुद्र बीच
पहाड़ बनि-बनि ठाढ़ होइए
शिकारी पहाड़ घुमि-घुमि
मन-माफित शिकार करैए।

सभ दिनसँ होइत आएल
देव-दानवक बीच रगड़
रगैड़-रगैड़ रगड़ैत चलि
मुंडे-मुंड पसरल झग्गर।

झग्गड़ दू दिस चलै छै
एक-रगैड़ सुरधाम बढ़ै छै।

तँ दोसर धरती धारण करै छै।
स्वर्ग-नर्कक विचमानि कऽ
अकास-सँ-धरती खसबै छै।

रंग-बिरंगक सृजित कऽ
दिशा-हीन बनबए लगै छै।
उपदेशक तँ सभ बनैए
अपना ले की सभ सोचै छै।

असार-सार संसार बुझि-बुझि
शील-धरम कहाँ बुझैए।
जिनगीक शील धर्म छी
एक दिन धारण करए पड़ैए।

राम-नाम सत् छी
आखिर दिन कहए पड़ै छै।

शब्द संख्या : 403

प्रिय

उठिते वेदना उधिआए लगए जब
रच-विचड़ी हुअ लगै छै।
कर्ण-प्रिय, प्रिय वाणी वीणा
रूप माधुर्य सिरजए लगै छै।
दूर-दूर जंगल पसरल
पसरल छै ग्रह-नक्षत्र सागर
तरेगन छिड़िआ-बितिआ
सजबए रूप पठार-पहाड़।
धरती ऊपर शून्य बसल छै
नाओं धरौने अपन अकास।
चुसि रस माटि-पानिक
संग चलैए रौद-वसात।
नै छै ओर-छोर अकासक
एक छोर धरती धेने छै।
लपेटि-लपेटि लपेटा डोर
विधाता गुड्डी उड़बै छै।
बनि विधकरी विधाता
सिरजन शक्ति जगबै छै।
कर्मभूमि, जन्मभूमि ओ मर्मभूमि
कला-जीवन सिखबै छै।

सुगबा-साड़ी पहीरि देख कियो
गुणधाम रूप बुझए लगै छै
हंस चालि पकैड़ि-पकैड़
वाहिनी हंस कहबए लगै छै।
चलि चालि हंसवाहिनीक
सुरधाम नचबए लगै छै
सजि केश सुकेसिनी गढ़ि
रूपवती कहबए लगै छै।
गुणवती रूपवती बनि-बनि
गुणधाम बिसरए लगै छै।
गुण पकैड़ जखन सुकेसिनी
धार जमुना सिरजए लगै छै।
कारी रंग पकैड़ि-पकैड़
सिरसिराइत सिर सजबए लगै छै।
शुभ्र-सोभाव, गुण सिरैज
गुणवती रूप बनबए लगै छै।
गुणवती रूपवती बनि-बनि
गंगा-सरस्वती मिलए लगै छै।
जैठाम तीनू धार सटए
त्रिवेणी घाट बनबए लगै छै।
घाट-स्नान कऽ तीनू सहेली
अलड़ैत-मलड़ैत चलए लगै छै।
भेद-कुभेद मेटा-मेटा
गंगा-सागर जा डुमै छै।

सम्पन्न शब्द, शैली सम्पन्न

शब्द कोष सिरजए लगै छै।
जड़ि-छीप पकैड़ भाषाक
संसार-साहित्य गढ़ए लगै छै।
अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र सजि
पथ-प्रदर्शन करए लगै छै।
पथ प्रिय प्रेमी पाबि-पाबि
पथिक पथ चलए लगै छै।
लोक अनेक, दुनियाँ अनेक
पथ अनेक अनेक पथबाह।
अपन खेत जहिना जोतै छै
बरदक संग अपन हरबाह।

बेथा-कथा सम्पन्न गढ़ि,
कवित्त संग मिलि चलै छै
दोहा, चौपाइ, छप्पय ओ कवित्त
संग मिलि कविता कहबै छै।
आँखि, कान, नाक मिलि जहिना
रूप देह सजबै छै।
मुँह बीच जिहिया पकैड़
वाणी वीणा तार खिंचै छै।
तड़ैप-तड़ैप मनक बेथा
दुबट्टी ओझर जा फँसै छै।
शब्द वाण जा-जा कहै छै
मुदा ओझर कहाँ बदलै छै।
ओझर जखन चालि पकैड़

अस्त्र हाथ उठबै छै
कर्मभूमि पकैड़ धरती
शब्दवाण छोड़ै छै।

नख-सिख रूप जतऽ सजै छै
पूर्णिमाक चान कहबए लगै छै।
पूनोक गौरव गाथा कहि-कहि
मास सलोनी पबए लगै छै।
जहिना सौनक सिस्की सिहकए
तहिना सिहकए वीणाक तार।
मनोक तार तहिना सिहैक
सिरैज अपन तहिना उद्गार।

जहिना धरती अकास बीच
गाछ-बिरीछ लहलह करैत।
तहिना विवेक विचार संग
सदि हँसि-गाबि कहैत।
हजार नाओं जहिना हरि
हजार हाथ तहिना सजल छै।
हजार मन सेहो कहैत
हजार कोस भरल छै।

ः

शब्द संख्या : 352

अपनेपर

अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।
अपने दिस तकै छी
अपने नै देखै छी।
घुरि पाछू जखन देखै छी
जुगक अनुकूल समाज देखै छी।
ऊपरे-ऊपर नीपल-पोतल
भीतरमे कंकाल देखै छी।
ओही समाजक बीच बसल
अपनो पुरुखाक इतिहास पबै छी।
बिहिया-बिहिया बिहियबिते
ढहल-ढनमनाएल देखै छी।

निश्चित सीमा बीच गाम
निश्चित जाति बान्हल छी।
टोलबैया कहि निश्चित जातिक
पतिआनी लागि सटल छी।
सटल-सटल पतिआनीक बीच
हटल-सटल सेहो पबै छी।
सटल-हटल आ कि हटल-सटल
गामक थाह कहाँ पबै छी।

चौहद्दी बीच केतौ समाज
केतौ जाति समाज कहबै छी।
केतौ-केतौ पुरुखक समाज
तँ केतौ पंथाय समाज बनै छी।
उठिते नजैर भूत-भविस
सिहरनसँ सिहरए लगैए।
अकारथ जिनगी देख पाबि
कुहैर मन मुरैछ मरैए।

अगम-अथाह रूप समाजक
असथिर भऽ सागर कहबैए।
बर्खा बुन्नी बीच-बीच
ओला-पाथर बरिसा दइए।
पबिते पाबि पृथ्वी पसैर
धरिया-चालि धड़ए लगैए।
उट्ठी-बैसी खेल खेलि
मोइन-धार बनबए लगैए।
टूक सुपारी समाज कटि-कटि
टुकड़ी जाति बनल छै।
टूक-टूक जातिक धरम
धर्म-मानव कात पड़ल छै।
कल्याणक पर्याय धर्म कहबए
कल्याणक दुश्मन बनल छै।
दृष्टिकूट सिरैज दुर्ग-बीच
अलग चित्त चौनाल खसल छै।
देख-देख कुहरै छी।

कुहैर-कुहैर सिहरै छी
सिहैर-सिहैर सिसकै छी
सिसैक-सिसैक ठुनकै छी
ठुनैक-ठुनैक कनै छी
अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।

तँए कि कोनो हारि मानै छी
भाग्य-तकदीर सिरजै छी।
ज्योतिषक ज्योति पजारि-पजारि
कर्म-लेख लिखैत चलै छी।
जेकर जेहेन भाग्य बनल छै
तेहने तेकरा फल भेटै छै।
फँसि-फँसि शब्दजाल कर्म
गीता गीत सुनबए लगै छै।
पढ़ि गीता बौरा कियो
चिन्तक बनि चिन्तन करैए।
पागल कहि पुक्की दए-दए
बौराहा रूप गढ़ैए।
सभ किरदानी देख-सुनि
मदनारी शिव कहबैए।
कियो भांगिया-भिखारी मानह
शिवदानी शिव कहबैए।

◌

शब्द संख्या : 247

डायरी

मनक डायरी लिखए बैसलौं
उपहारक डायरी निकाललौं।
रंग-रूप देख डायरीक
ऊपरे-ऊपरे भसए लगलौं।
भसैत-भसैत-भसैत
मनक बात बिसरए लगलौं।
छपल फूल गुलाब कली
बिहिया-बिहिया देखए लगलौं।
सुर-सुर करैत सुरसुरी आबि
नाकर छोर खिचए लगलौं।
रस-गन्धक भूख जगा
भूखल मन तरसए लगल।
ताकए लगलौं रस कलीमे
सादा कागत बनल-पड़ल।
सीख-लीख नै परेख पेलौं
अखनो ओहिना बैसल पड़ल।

गुन-गुन गुनगुनाए लगलौं
जगल अपन डायरी मनमे
हाँइ-हाँइ पन्ना उनटेलौं
कलम खोलि विचारल मनमे।
तही बीच आँखि पड़ल पन्ना

चार्ट बना टांगल देखल
अपन मनक चार्ट नै देख
अदहन मन उधिआए लगल।

आखर अंतिम मन पड़िते
कलमक हाथ घुसकए लगल।
अनका असे केते दिन बितल
मनक हिसाब उठए लगल।

◌

शब्द संख्या : 104

मानव गुण

जाधैर गुण नै अबैत मनुजमे
ता धरि मनुज मनु रहैए।
ऐबते गुण फल-फूल जहिना
नाओं अपन धड़बए लगैए।
जाधैर फूल महक नै पबैत
कोढ़ी-वाती कहबैत रहैए।
तहिना ने मनुखो बीच
मनुष्य-मनुख कहबैत रहैए।
गुण अनेक समेट आठ
पौरुष गुण कहबैए।
पबिते पाबि बनैत गुणी
महापुरुष बनए लगैए।
जहिना-जहिना गुण बढ़ै छै
तहिना-पुरुखपनो बढ़ै छै।
ऐबते पौरुष तन मनुजमे
महापुरुष कहबए लगै छै।
तीन गुण आदिए सँ आबि
सत्-रज-तम कहबैए।
तामस-प्रीति मनुखेटा नै
पशु-पक्षी सेहो पकड़ैए।
जहिना-जहिना पशु-पक्षी बीच
गुण तीनू गुणगान करैए।

एक-दोसरसँ हटि-सटि
कामी-लोभीक रूप धड़ैए।
बिना किछु कहनौं-सुननौं
बीख बमन सदति करैए।
गहुमन चालि बुझि देख
मनुष्यत्व डरए लगैए।
मुदा टोननिहार मनुखो होइ छै
उपाए तेकर सोचए लगैए।
मंत्र-जौड़ सीखि-सीखि
चित्ती-कौड़ी भाँजए लगैए।
भजिते चित्ती-कौड़ी धरती
गरुड़ चालि पकड़ए लगैए।
चारू दिशा नजैर दौगा
अकास बीच उड़ए लगैए।
उड़िते अकास देखए लगैत
बील-धोधड़ि वृक्ष-धरती
एक अकास दोसर पताल
जागल वृक्ष सूतल धरती।
जहिना बरही काठ खोदि
उखड़ि ढोलक कठरा बनबैए।
तहिना ने कठखोधियो खोदि
हीर काटि धोधड़ि बनबैए।
रक्षित सुरक्षित भवन बीच
चैनक जिनगी बास करैए।
निच्चाँ धरतीक बोहैर देख-देख
सुख-सेजि विश्राम करैए।

ने डर पानि ओ पाथर
हवो ने किछु कए सकैए।
धरती सहजहि पड़ल-सूतल
भयए किए भऽ सकैए।
मुसक खुनल बील पकैड़
नाग-नागिन कहबए लगैए।
नागे तँ धरती टेकने छै
अखण्ड राज भोगैए।
जेकरे बनाओल घर बसै छै
तेकरे पकैड़ भोजन करै छै।
सुख-पतालक पाबि-पाबि
अकास-पताल लोक गढ़ै छै।
भोगी जोगी बनि-बनि
मंत्र सूत्र गढ़ए लगैए।
सुर्जो-चानक गति-मतिकेँ
रगैड़-रगैड़ मेटबए लगैए।
कहियो बादर पकैड़
मेघौन रूप धड़ए लगैए।
तँ कहियो देव-दानव ठर्ढ़ा
बेबस भऽ देखए लगैए।

◌

शब्द संख्या : 250

छुटि गेल

पाछू घुरि जखन देखै छी
मरूभूमि भेल गाम देखै छी।
गंगोट मानि सिर सजि
चानन करैत अनैत रहलौं।
बालुक बुर्जा बनल बाध
देख-देख कुहरैत रहलौं।
जइ पानिक बीच बसल छी
तरो पानि तरहत्थीओ पानि
वायुओ पानि बसातो पानि
उड़ल अकास दौड़तो पानि
तइ पानिक बीच काहि काटि
पानिए बिनु छटपट करै छी
केतौ चुटकियो नोन नै
केतौ-केतौ सागर बनल छै।

दुनियाँक दोखाह वसात
दुरि केने छै दुनियाँकैं
बिनु कल-कारखानाक मिथिला
दूषित भेल अछि हावासँ।
देश-दुनियाँ कारखाना चला
खेती-पथारी सेहो करैए।
अपन सभ किछु उपटा-बिलटा

मिथिलाक जय-जयकार करैए।

भाषा साहित्यक कथे की
नमगर-चौड़गर बान्ह कसल-ए।
करे मुसबा पकड़ए युनुसबा
दिन-रातिक लीला चलैए
जननिहार सभ किछु जनै छैथ
मुदा पेट पकैड़ पेटकान देने
सभ-सबहक मुँह देख-देख
लेने-लेने कि देने-देने?

ः

शब्द संख्या :117

मरल घाट

बहुरंगी विश्व बजार बीच
रंग-बिरंगी घाट बनल छै।
घाटे-घाट घटबाह बैस
बैतरनी पार करैत रहै छै।
बुझल गमल जेकरा छै घाट
हेलि-डुमि अपने पार करैए
जेकरा नै छै बुझल-गमल
गुड़गुड़-गुड़गुड़ गुड़ैक मरैए।
बुझलो रहते केना सभकें
घाटो कि गानल-मानल छै
फूल भालसरि माला जकाँ
गानल गूथल सगर पड़ल छै।

जहिना रंग-बिरंग पोखैरमे
रंग-बिरंगक घाट बनै छै।
संगमरमर सहित चानन लकड़ी
खाढ़ी बनाओल धोबिघाट बनै छै।
पुरुष-घाट नारी-घाट संग
शौच-घाट सेहो बनल छै।
गंगघाट संग सहित
मुर्दघाट सेहो बनल छै

झील-सरोबर सेहो सजौने
नाओं अपन धरौने छै।
अपन नाह अपने खेबि
अपन घाट अपने टपबै छै।
जहिना झील-सरोवर घाट
तहिना सागरो गर लगौने
ज्वार उठा लहैर-टहलि
धारा धार सदति बनौने।
जहिना सबहक चित्र-विचित्र
तहिना चित्र-कूट सेहो बनल छै।
जोगी-जती-तपी-संयासी
कूट-घाट स्नान करै छै।
घाट चित्र विचित्र बनल
पीच्छड़-छीछलाह सेहो सजल छै।

छिछैल-छिछैल पिछैड़ः-पिछैड़
ओंघरनियाँ दऽ दऽ खसै छै।
खसि-खसि पाछू कियो ढुलकए
कियो आगू छिछलए लगै छै।
जमघट लगल सजल घाट
एक्के-दुइए पार करै छै।
जहिना फोटो फोटोग्राफर बना
नेङराकैं दौगबए लगै छै
तहिना ने दौगनिहारोकैं
घीचि पएर पाछू खसबै छै।

चित्र-कूट घाट विचित्र छै
कूट चित्र पहाड़ बनल छै।
उतैर रूप कागत पहाड़
तहे-तह पोथी बनल छै।
तीन घाट किनछैर बनल
जीवित, अधजीवित मृत कहबै छै।
तहिना तीन बनल जिनगी
ईर-वीर-तीर घाट कहबै छै।
तीनू घाट नहेनिहार जे
पोखैर प्रवेश करै छै
शीतल-शान्त, स्वच्छ जल मध्य
प्रतिदिन स्नान करै छै।
नै जीवित नै मृत घाट ओ
अधमरू भेल पड़ल छै।

सु-लोक लोक कहि-कहि कु-लोक
भैंसी-भैंसी स्नान करै छै।
मुदा, शौचघाट अखनो जीबै छै।
दिन-प्रतिदिन लीला करै छै
एक घाट रहितो अनेक
अशुद्ध-शुद्ध बनैत रहै छै।
कखनो अशुद्ध शुद्ध बनि
शुद्ध-अशुद्ध बनैत रहै छै।
गोरा गर पकैड़ अशुद्ध
ताल-मेल बैसबैत रहै छै।

जहिना तीनू ताल चलै छै
तहिना तीनू मेल धड़ै छै।
ताल मेल बूझब कठिन
तीनू रंग बदलैत चलै छै।
जहिना काग-दोष खेल अंडीक
पल्ला-जोड़ा रूप धड़ै छै।
तहिना लघु-गुरु खेल पसारि
हँसि-हँसि व्याकरण बजै छै।

घोबिघाट जहिना बनल छै
शौचोघाट तहिना कतियाएल छै
जगह बदैल स्नान घाट
भाग दोसर पकड़ने महार छै
सभ महार सभ घाट बनि
पोखैरेक घाट कहबै छै।
माटि-पानि मिलितो-जुलितो
फुट-फुट घाट कहबै छै।
जखने नल-कल-टंकी बनल
घाट स्नान सहरए लगल
हहैर-हहैर हिहिया-हिहिया
हारि-हारि हरिहर बनल
भेँट नै जेकरा नल-कल-टंकी
पोखरिक घाट पकड़ने छै।
शुद्ध-अशुद्ध विचार बिनु केने
गर पाबि पकड़ने छै।
जहिना आसिन मास छोपि

खेत धान किसान अनै छै।
क्षीण-मस्तिका सदृश चास
झाँट-पानि बरदास करै छै।
बिनु छप्परक घर बीच जहिना
बाल-बच्चा संग जीबै छै।
छल-प्रपञ्च भेद नै बुझि
आस भगवान लगबैत रहै छै।
रस भरल रहस्यमय भगवान
सदिखन नाच करैत रहै छै।
जे जानए तेकरे देख-देख
फूल-अच्छत बँटैत रहै छै।
फूल अच्छत चिन्हए जे जानए
सहए सभ राति-दिन पबै छै।

चिन्ह बिना औषध भारी
हारि-थाकि कहैत रहै छै।
हारियो-जीतक चालि विचित्र
चीत-पट संग उनटै-पुनटै छै
कनी एम्हर आ कि ओम्हर
हारि-जीत कहाँ कहबै छै।
ससैर-ससैर ससरए कियो पाछू
दनदनाइत कियो आगू बढ़ै छै।
रेखा विषुवत बनल घड़ी
बाम-दहिन कहबए लगै छै।
दुनू भाग बाट बनल दोहरी
दूरे-दूरे देखैत रहै छै।

सभ किछु मिलतो-जुलितो रहने
ऋतु परिवर्त्तन कहबए लगै छै।
ऋतु परिवर्त्तनक रूप विचित्र
चान-सुर्ज गहिया धड़ै छै
गहे-गह ससैर-ससैर
रीति-कुरीति बनबए लगै छै।
बनि-बनि कुरीति-नीति
धारण-धर्म कहबए लगै छै।
देश-बेश बना-बना
परिवेश पैदा करए लगै छै।
मौसम गति मौनसुनी
जीवन ठौर धड़बए लगै छै।
कम-सम नै, भेल बहुत
रहि-रहि इतिहास कहै छै।
वाणी-बोली रूप बदैल
राति-दिन ललकार भरै छै।
गामे-गाम धार-पोखैर बनि
रंग-बिरंगक फूल उगल छै।
धरती पानिक मध्य बीच
थाल-कीच सेहो बनल छै।
घाटक थाल ससैर-ससैर
बगल पानि पसरल छै।
चिक्कन पानि चमकए जहिना
धरतियो तहिना चमकै छै।
ऊपर-निच्चाँ खाढ़ी पकैड़

दूनू-दुनू दिस देखै छै।
नजैर पकैड़ मिला नजैर
पवित्र पवन सिरजै छै।
गोपी संग केरि करए कृष्ण जेना
तहिना जल-धरतियो करै छै।
हृदए खोलि तान भरि-भरि
धुन बासुरी सुनबै छै।

◌

शब्द संख्या : 603

हल्लुक काज

काजक हल्लुक लूरि पाबि
फल आनन्द जीवन पबै छै।
कलाकृत्ति पाबि कलाकार
आत्म तुष्टि गढ़ए लगै छै।
काज-धार बीच जिनगीक नाह
दिन-राति अनवरत चलै छै।
पबिते पहर रूप बदैल
कर्म-काज कहबए लगै छै।
रूप बदैल काज जहिना
कर्म सरूप बनै लगै छै।
तहिना कर्मो ससैर-पसैर
धाम कर्म पहुँचै लगै छै।
धर्म-धाम पहुँचते पहुँच
चन्द्रकूप स्नान करै छै।
करिते स्नान पाबि पवित्र मन
चलि पर्पण श्रृंगार करै छै।
जइ मन भावे तइ भावसँ
भावनाक संसार गढ़ै छै।
आसन मारि सिंहासन चढ़ि
शंखनाद पूजा करै छै।
जही सूत्र जीवन सिरजए
सूत्र सएह कर्मो सिरजै छै।

सुर्जक सूत्र मिलि बैस
कर्म-सूत्र कहबए लगै छै।
कर्म-धर्म जहिना बनए
कामो-धाम तहिना कहबै छै।
सृष्टिक गुप्त रहस्य देख
समर्पण जीवन करै छै।

जिनगीक बोझ पहाड़ बनल छै
धरतीसँ अकास सटल छै।
पथरा-पथरा रूप अपन गढ़ि
धरतीक कहाँ भार बनल छै।
अपन गर रोपि-रोपि अपने
पएर तपल पसारने छै।
रसे-रसे रिसैत-पिसैत
श्रृंग अकास पकड़ने छै।
रंग-रंगक रूप गढ़ि-मढ़ि
नाओं पहाड़ धरौने छै।
समुद्र बीच जहिना जलचर
तहिना थलचर जीवन पबै छै।
धरती-अकास, अकास-धरती बीच
चोटी शिखर बनल छै।
पथक संग पथिक सटि
दोहरी दिशा पकड़ने छै।
शिखा चढ़ि सिर कियो पूजैए
कियो भँसि भट्ठा भँसिआइ छै।

निहारि-निहारि शिखर पहाड़
मने-मन पचता कहै छै।
कर्मोक तँ चित्र विचित्र
हल्लुक-भारी चालि चलैए
एक सिर धर्म कहबए
दोसर धाम कहबैए।
काम-धाम आ धर्म-कर्म
प्रेयसी बनि श्रृंगार करैए
जहिना बहीर अपने काने
जीवन रंगमंच नचैए।

हल्लुक माटि बिलाइ जेना खुनए
जिनगियो तहिना खुनए लगै छै।
खुनि-खुनि ससैर-ससैर
उनटा चालि धड़ए लगै छै।
आगू-पाछू धार बीच जहिना
सिरा संग भट्ठा कहबै छै।
धार जिनगियोक तहिना
भूत-भविस बहैत रहै छै।
सुचि पकैड़ कान जहिना
हल्लुक बनि-बनि गढ़ए लगै छै।
तहिना हल्लुक रूप बदैल
अलिसा-अलिसा कहए लगै छै।
अलिसाएल-मलिसाएल काज सिरैज
निच्चाँ जिनगी ढुलकए लगै छै।
आगू-पाछूक दिशा बिसैर

धरती-पैरक देखए लगै छै।
दिने-राति जकाँ जिनगियो
सु-समए-कु-समए अबैत रहै छै।
नीक-अधला सूत्र बीच
लटैक-फटैक चलैत रहै छै।
मन-कर्म-वचन कहबी बनि
कल्पना उदाहरण बनल छै।
कल्पना कल्प रूप जहिना
तेहने रूप सजल छै।
भारी-हल्लुक काज बीच
सूतल-जागल जिनगी पड़ल छै
जीवन बुझि कियो जिनगी
कियो घनघोड़ घोड़ाएल छै।

ः

शब्द संख्या : 334

बीघा भरि चास-बास

चौथापन पकैड़ते देख
छिड़ियाएल मन समटाए लगल।
चतड़ल गाछक डारि-पात सुखि
धड़-सिर, मुसरा बँचल रहल।
दुनियाँदारीक ताम-झाम छोड़ि
अपनेमे समाए लगलौं
साठि सालक गुजरल जिनगीक
बैस हिसाब बैसबए लगलौं।
पिताक देल पाँच बीघा छल
बीघा एक बचेने रहलौं।
भूल भेल कि चूक भेल
अपनेमे विचारए लगलौं।
गर-कुगर देख-देख
मन तरे-तर मसकए लगल।
गर-सुगर ऐबते आबि
मसकल मन मुसकए लगल।
सभ दिन देव दहिने रहला
दूसँ दस परिवार बनल।
तखन किए पीपनी फड़कैए
ज्योति आँखि चमकए लगल।

बेटाक आस-बाट देख

सात सखी आबि धमकल।
नि:सन्तान जँ छी अपराध
दबकल मन उठि बमकल।
पत्नियोकें धन्यवाद दिअनि
कहियो नै हिआ हारलैन।
आठ सन्तानक माए बनि
संगिनी बनि संगो पुड़लैन।
शाखा-प्रशाखा देख जहिना
समपन्न जिनगी वृक्ष पबैए।
तहिना ने मनुष्योक
शखा-सखी वंश बढ़बैए।
केना कऽ कहबै हारि गेलौं
अकारथ जिनगी बनेलौं
मुदा जीतबो केना केलौं
मनमे विचारए लगलौं
अजीव पाश पाशा चलल
क्षय सम्पैत परिवार बढ़ल।
दूसँ दस बनि-बनि
पाँच बर धन-बुधि बढ़ल।

पाँचम कन्या अबैत-अबैत
पहिल कन्यादान केलौं
आइली-बाइली आमद नै
दस कट्ठा जमीन बेचलौं।
जएह सभ कर्म-धर्म लेख लिखए

सएह दुरदिन पैदा करैए।
सुदिनक दोहाइ दए-दए
खलखला गरदैन कटैए।
समए संग अपने ससड़लौं
सातो बहिन सासुर पठेलौं।
चारि बीघा भूमिदान दऽ
सातो कन्यादान केलौं।
जहिना आठम सन्तान कृष्ण
तहिना आठम बेटा भेल।
पाँच बीघाबला बापकें
बीघा भरिक बेटा भेल।
लोकक मोल भलहिं घटए
खेतक मोल बढ़ल छै।
लूरि-बुधि संगे मिलि दुनू
खेत-सवारी चढ़ल छै।

ः

शब्द संख्या : 222

पट्टा छीमी

लाले-लाल खेत देख
माइक मन सिहैक उठलैन।
बाधक बाट बगलि बगल
खेत केराउक घीचि अनलकैन।

रंग-रंगल चास देख
चासनी चित्त चहैक उठलैन
बाधक बाट बगलि बगल
महक चास अनए लगलैन।
लह-लह लहलहाइत लत्ती
सन-सन करैत अकास देखैत
रेगहा सिरखार सजि-सजि
रंग-बिरंग फूल देखबैत।

बाला जहिना वय:संधि टपि
बाला कन्याँ कहबए लगैत
तहिना लत्ती केराउक
रूप अपन सजबए लगैत
सजि-सजि श्रृंगार श्रृंग
झड़ि-झड़ि झड़ैत-झहड़ैत
दुख कहाँ होइ छै कखनो
मनमे पीड़ा मिसियो भरि।

फुलपत्ती उड़िया-उड़िया
उड़िया-उधिया अकास धरि।
गन्ध पसारि-पसारि अकास
अनको आकर्षित करै छै।

आड़ि मेड़ टपैत चासनी
चास केराउक निहारए लगली
रंग-सुरंग सजल लत्ती
रंग जिनगीक देखए लगली।
हरिअर-हरिअर डारि पात
मुँह मोती चमकै छै।

उज्जर-लाल फुलाएल फूल
निच्चाँ छीमी बनल छै।
पौती जहिना रूप गढ़ै छै
तहिना छीम्मी बनैत रहै छै।
रस-फूल ससैर ससैर
रूप दाना गढ़ए लगै छै।

छिलुका दाना सहजि-सहजि
छीमी नाओं धड़बए लगै छै।
पाकल जुआएल चर्च बिनु केने
पट्टा छीमी कहबए लगै छै
पट्टा छीमी खट्टो होइ छै
मीठो तँ हेबे करै छै।

जहिना समरस बनि फूल-फल
रूप समदर्शी धड़ै छै।
छिलुका-दानाक अगाध सिनेह
संग मिलि भक्छ बनै छै
अपन-अपन बेवहार बिसैर
मिलि संग जीवन दान करै छै।

◌

शब्द संख्या : 187

बदरीहन

बदरीहन समए बीच जहिना
अमवसिया राति अबैत रहै छै।
कलि-कलिमल वसन ओढ़ि
कालिंदी कूल सजैत रहै छै।
पक्ष इजोत अबैसँ पहिने
अन्हार पक्ष छेकने रहै छै।

अन्ह-अन्हरा अन्हार बीच
बाट इजोत हेराएल रहै छै।
चौबीसो घण्टा दौड़-धूप
राति-दिन, दिन-राति खेलैत रहै छै
चढ़ि-उतैर समए संग-संग
अपन गतिये खेल खेलै छै।
बराबरीक भाग लगा-लगा
सालक बीच हिसाब जोड़ै छै।

बाट-घाट आगूओ-पाछू
पहुँच लक्ष्य निसांस छोड़ै छै।
समए-साल देखियो सुनि
मास नै पूरा पबै छै।
हारि-जीत मध्य जिनगी तहिना
मानि माइन पबैत रहै छै।

जहिना दिनेक राति बनि-बनि
राति-दिन कहबए लगै छै।
दिने-राति, रातिये दिन
मिलि-जुलि सिरजए लगै छै।
अंत पहाड़ श्रृंग ठेकि अकास
सिंगार रूप सजबए लगै छै।
ऊपर धरती सजल-धजल
गड़ूगर पएर ससरए लगै छै।
ससैर-ससैर, हटि-हटि
रसे-रसे कात हटै छै।
सिर बिनु धड़, धड़ बिनु शीश
चिन्ह-पहचिन्ह बिसरए लगै छै।

मौसम पाबि मसूम जहिना
ऋतु परिवर्तन करैत रहै छै।
जिनगी मनुष्योक तहिना
बीच बेवस्था बदलए लगै छै।
कहियो रौदमे डाहए
तँ कहियो पानि-पाथर बरिसाबए।
ओस-पाल बनि-बनि कहियो
हृदए बीच छाती दलकाबए।
मध्य धार बीच जहिना
मुँह-धार कहबै छै।

तहिना बेवस्था बीच समाज

मुँह-धार बनबै छै।
जेहेन मुँह-धार समाजक
तेहने धार पकैड़ि-चलत।
दुख-बेथाक बोन-झाड़कैं
खलखला-खलखला कटैत चलत।

◌

शब्द संख्या : 187

बालि वध

बोधि गाछ ताड़क जे सातो
गेरूलाकार लगल छै।
सातो बेधि जे वाण निकैल
आदि-बालि वध करै छै।
पीठ नाग सजल सातो
ताड़ गाछ कहबैत एलैए।
सातो घोड़ा सजि-बनि रथ
सारथी बनि देखबैत एलैए।
नाग-नाक ऊपर पएर जखने
कसि-कसि भार दबै छै।
छटपटा सोझ होइत-होइत
वृत्त-आवृत्त बनए लगै छै।
होइत सीध नजैर हिया
लक्ष्य बनि देखए लगै छै।
कोणा-कोणी कोण-वाण
समधानि छाती बेधए लगै छै।
बगलि वृक्ष राम जहिना
हिया-हिया आगू देखलैन
सटा छाती तानि धनु-वाण
छाती बालिक कसि कऽ बिंधलैन।

त्रेते नै जुग-जुगान्तरसँ

बेश बालि पनपैत एलैए।
शर्त्त राक्षस देव पकैड़ि-पकैड़
संकल्प सात गढ़ैत एलैए।
शासक-शासित पक्ष दू बीच
झगड़ा-मिलान दुनू चलै छै।
नीक-अधलाक विचार करैत
संगी-दोस बनैत चलै छै।

◌

शब्द संख्या : 110

अनेरुआ वन

जुग-जुगसँ जनमैत एलै
जंगल वन लगैत गेलै।
गुण-अवगुण बिनु बिलगौने
संग-संग सहेजति गेलै।

जे जेना-जेना जगैत उठल
से तेना-तेना जगजिआ लगल
जे जेना-जेना पछुआए उठल
से तेना-तेना पछुआए लगल।
मुदा नै, आरो किछु भेल?
आगुओ उगल पछुआए लगल
पाछुओ उगल अगुआए लगल।

ने सबहक कद-काठी समान
ने सुर्जक दिन-रातिक मान।
मान-समान समतल बिनु
किछु दबि किछु फुफुआएल।
कान्ह मिला देख-सुनि
तरसि-तरसि झुझुआए लगल।

तहिना मनुक्खोक बीच वन

रंग-बिरंग चतरल अछि।
दुभि-लत्ती ऊपर पेड़ पसैर
तँ लत्तीओ गछाड़ि चतरल अछि।

◌

शब्द संख्या : 079

फँसरी- 2

फँसि फँसरी लटैक धरनि
पीड़ाएल मन तमसाइत केलौं।
रस जिनगीक बुझि नै पाबि
करनी अपने मरनी बनलौं।
ओझरी तनि-तनि दाबि गर-गड़
ऐँठि◌-ऐँठि केलक मन मरदैन।
होइत मरद करजनि देख-देख
लुत्तिया-लुत्तिया केलक गरजनि।
जिनगीक दोहरी बाट बनल छै
बड़की-छोटकी नाओं कहै छै।
बड़कीपर बड़की चलै छै
छिटकी लगि खसै छै।
उठि भोर धार धड़ि दुनू
संगे-संग चलबो करै छै।
मारि-आँखि बड़की छोटकी
गर-फाँस लगबैत रहै छै।
गरदैन पकैड़ पछाड़ि पानि
हरदा-हरदी बजबए लगै छै।
हारल-मारल आकि मारल हारल
फाँस गर लगबैत रहै छै।
फँसरीसँ नीक फाँसी होइ छै
कऽ धऽ किछु चढ़ैत रहै छै।

पूब-उत्तर देख निहारि
हँसि-कानि गाबैत रहै छै।

◌

शब्द संख्या : 100

विचलित मन

पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै?
छअ-पाँच दिन राति करै छी
भंग अंग मुखतियारि करै छी
घोरि-घाड़ि घिसिआइत चलै छी
कहिया धरि एना चलबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
कठरा लकड़ी तबला बनै छै
ढोलक-ढोल सेहो बनै छै।
रस-कुरस पकैड़ि-पकैड़
कारीगर मुँह सेहो बनबै छै।
अहाँ छोड़ि केकरा कहबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
कियो मुँहक झालि सदि बजाबे
तँ कियो सूर मुँह भरै छै।
अलापि तान कियो कहै छै
जय-जयकार कियो सेहो करै छै।
तैबीच केना कऽ चलबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
मुँहक तान मान मपै छै
पलड़ा जोड़ लगबैत रहै छै।
मूंगगा, जअ बाट बना-बना
तीन लोक भूभाग तौलै छै।

तैबीच केना कऽ बँचबै,
पार्टनर, आबो कहू कि करबै
पार्टनर, आबो....
दुनियाँक रंगमंच सजल छै
राशि-राशि दृष्टि बनल छै।
मेलाक हाट-बजार बीच
कारी मुँह केना सजबै छै।
देख केना कऽ हँसबै,
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।

◌

शब्द संख्या : 138

गुड़ घाव

उपैक-उपैक गुड़ घाव
तन-तन, फण-फण करए लगल।
सगर शरीरक आसन बनि
थइर अपन बान्हए लगल।
संग दिनक बढ़ि-बढ़ि
गुड़ घाव कहबए लगल।
पसैर-पसैर फाँसरी पसैर
सुख-दुख पीड़ रचए लगल।
समए संग ससैर-ससैर
पेड़-फेंड़ बनबए लगल।
जड़ि एक रहितो रहैत
फेंड़ जोड़ लगबए लगल।
संगे मोजरि, फुला संगे
संग-संग फलो रचए लगल।
संगे-संगे संग चलि
आशा फल देखबए लगल।
आश बास देख-देख
तिरपित मन सिहरए लगल।
रक्त–भक्त बनि पीब
पकि पीज निकलए लगल।
छेदि देह पकैड़ मांस
खील बनि खिलए लगल।

पबिते खील खिल-खिला
राति-दिन टहकए लगल।
टहैक-टहैक घुसैक-फुसैक
मासु हार पकड़ए लगल।
पीड़ा हारक हू-हू-आ-हूहूआ
गरजि-तरंगि निकलए लगल।
हारक पीड़ मासु-पीज संग
दर्द मन बेदर्द बनल।
चिन्ह-पहचिन्ह हेराएल देख
हारल-हराएल बेड़बए लगल।

◌

शब्द संख्या : 114

एकटा बताह

जे जनकक सन्तान कहियो
कृषि वृत्ति किसान छला।
कृषि कुशल कहि-कहि
दिन-राति मलड़ैत छला।
भुमकम बाढ़ि रौदीक भार सहि
जीवन-यापन करै छला।
वेद-बखान नित-प्रतिदिन
साँझ-भोर रटै छला।
गति समए केर बीच-बीच
दोरस हवा उपकए लगल।
नव-पुरान बीच-बीच
रंग-रूप बदलए लगल।
रंग-रूप बीच रंग भेद
पनैप-पनैप पनपए लगल।
सोहैर-सोहैर उठि-उठि
धन-गर्जन करए लगल।
साहोर-साहोर मंत्र जपि
डंका-ठनका बचए लगल।
मानक मान समान लिअए
झड़ैक-झड़ैक झड़कए लगल।
कुहैर-कुहैर कलैप-कलैप
छाउर-आगि खसए लगल।

जेना-जेना आगि मड़ियाएल
शक्ति श्रम घटए लगल।
घटबी पुरबै पाछू बेहाल
रीन-पेंइच फँसए लगल।
रीनियाक रीन कुरीन बनि-बनि
तरे-तरे घुसकए लगल।
पहुँचीसँ बाँहि पकैड़
धोबिया खेल खेलए लगल।
दसक दाह सम्हारि पाबि नै
मन-मनतर मथए लगल।
जे कहियो मिथि कहाबए
क्षीण शक्ति कहबए लगल।

◌

शब्द संख्या : 114

हुसि गेल

हुसि गेल सभ खेल खेलौना
हुसि गेल सभ मन-विचार।
जीवन संग जिनगी पिछैड़
ससैर गेल इजोत-अन्हार।
अन्हारे उपैक अनचिन्ह
अन्हार केना अधला लगलै।
इजोत-अन्हार भेद बिनु बुझने
राति-दिन भजए लगलै।
जेकरे दिन तेकरे राति
रातियेक दिन कहाबए लगलै।
दहिना-वामा रंग-सियाही
नव-नव शब्द गढ़ए लगलै।
जहिना सियाह सियाही बनि
हरिअर-लाल कहाबए लगलै।
कोरा कागत ऊपर ससैर
हारि-जीत लिखए लगलै।
ऊपर उठा, उठा ऊपर
खेल धोबिया खेलए लगलै।
घुमा-घुमा, नचा-नचा
घाट धार पटकए लगलै।
मड़ू-अधमड़ू बना-बना
घुमा-घुमा फेकए लगलै।

गाड़ीक अगुआ पछुआ पकैड़
जुआ जोति खिंचए लगलै।
रंग-बिरंग जुआ बनि-बनि
खेल-खेलौना कहबए लगलै।
हुसि गेल सभ खेल खेलौना
हारि-हारि मन तड़पए लगलै।

◌

शब्द संख्या : 100

अखड़ा जिनगी

अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्धक भेद विलीन भेल।
शक्ति चढ़ल जहिना शीशा
नयन ज्योति बदैल चलि गेल।
आशा-आश लगौने मनमे
फल-कुफल बदैल केना गेल।
नै बुझि समैझ नै पेलौं
बाटे-घाट बदैल चलि गेल।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्धक भेद विलीन भेल।
जल भरल लोटा अछींजल
शक्ति क्षीण होइत केना गेल।
शक्ति क्षीण होइत हबाइत
अवगुण-गुण बदैल केना गेल।
मानि मान ससैर सामान
खाली-खाली बनि केना गेल।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्ध बीच बदैल केना गेल
मानने देव नै तँ पाथर
जुग-जुगसँ सुनैत एलौं।
पाथर बीच देव विराजए
पानि-हवा लुढ़कैत एलौं।

उड़ि धरती-अकास बीच
उड़ि-उड़ि उड़िआइत गेलौं
पूर्बा-पछबा सम्हारि पाबि नै
चिन्ह-पहचिन्ह विसरैत गेलौं।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
आश-निराश खखराइत पेलौं।

◌

शब्द संख्या : 111

बिटगरहा

टुकड़ा-टुकड़ी बनि अंक जहिना
भूमि भाव संग चलए लगै छै।
अकास-पताल बीच अंतर रहितो
हिलमिल-झिलमिल करए लगै छै।
जुड़ि-जुड़ि अक्षर शब्द सधै छै
अंक कुदि गुन-भाग करै छै।
चालि-ढालि दुनूक दू रहितो
प्रेमक प्रेमी रूप धड़ै छै।
चालि शिकारी घोड़ा जहिना
कुदि-फानि रस्ता बनबै छै
इकाइओ दहाइ चलि तहिना
गरहनि बिट गरहनि रचै छै।
पुरजा-उरजा बनि-बनि अंक
पौआ-अधपइ कनमा-कनइ छै।
अणु-परमाणु जुग जे बनौ
अंक अंक भकराड़ बनल छै।
रूप-गुण सभ ओहिना-ओहिनी
मूल तत्त्व अधार बनल छै।

बिनु बीटे ठाढ़ केना रहतै
नमगर-छड़गर कड़ची बाँस।
वंशो-वृक्ष तहिना रहै छै

धड़ि-धीर धेने छै आस
अटपट-लटपट खेल चलै छै
आमक गाछ महकारी फड़ै छै
गन्ध आम पसारि-पसारि
मीठ-तीत सेहो बनबै छै।
भाव-भूमि भवजाल पसारि
नजैर खिरा ताकैत रहै छै।
दौजी-मुड़हन समेट◌-समेट
हवा बीच उड़बैत रहै छै।
बिर्ड़ो बीच बौआइत-ढहनाइत
देखनिहारो देखैत रहै छै।
पकैड़ पेट खोंइचा छोड़ि
दूधक फेड़-फाड़ देखै छै।
मुदा तैयो, आँगुर चुट्टा बनि
बीछि-बीछि बीआ पकड़ै छै।
गनि-गनि फुटा-हटा
धरतीक भाव बुझै छै।
सुरकुनियाँ चालि पकैड़◌-पकैड़
समाढ़-जाल तोड़ैत चलै छै।
जहिना कोंपर रूप बाँस बनि
टोपी खोलि अकास धड़ै छै।
पाछू-पछुआ कड़ची सिरैज
नाओं बाँस धड़बए लगै छै।
आशा-आस लगा एक-दोसर
झूला जिनगी झूलए लगै छै।

सोधि-ओधि सिरैज कोंपर
बिट वंश कहबए लगै छै।
अंतिम छोर लीला जिनगीक
आशा आस लगबए लगै छै।
फड़ि-फुला हरिआ-हरिआ
परिवार-गाम बनबए लगै छै।
सर्ग-नर्क उतैर अकास
बोड़िया-बिस्तर समटए छै।

◌

शब्द संख्या : 217

बाल गीत

सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ
चेहरा देख मन झहरैए
तरे-तरे देह सिहरैए
तड़ैप-तड़ैप ओ कुहैर-कुहैर
बेथित भऽ बेथा सुनबैए
बिरड़ोमे उड़ि-उड़ि अहाँ
दोगे सान्हिए पड़ा रहल छी
मातृभूमिक रस पीबि बिना
पुरुखाक पुरुषत्व हेरा रहल छी।

मनुखक जिनगी आँकि-आँकि
अपनाकेँ अँकए पड़त।
ने ते गंगा-जमुना जकाँ
बोहिआइत जिनगी चलत।

केकरो मेटेने की कहियो
गंगा आकि कोसी मरतै
धारक पेट सदए धारा
संग-संग चलिते रहतै।
मनुख-मनुखमे भेद केतए
देखए पड़त ओइ दुर्गकेँ

ढाहि ढूहि ओइ आड़ि-धूर
नव जिनगीक नव दुनियाँ बना कऽ।

◌

शब्द संख्या : 082

गाछी भुताइ

बाबाक रोपल गाछी भुताइ।
घाम बहा जरि-जरि सिचलैन।
तामि कोरि-कोरि गाछ रोपलैन।
नै बुझलैन बॉझिक किरदानी
देख-देख मन हर्षित भेलैन।
जे ने कहियो माटि देखलक
फुनगी पकैड़ अकास पकड़लक।
नै देख जड़ि दिस कहियो
सदति उड़ि बादल पकड़लक।
गामक पोखैर जहिना डेरौन
तहिना दबकल अढ़मे मन।
कानि-खीजि सदति कलपैत
कियो ने बँचबैबला अछि पैत।
जइ धरतीपर बहति गंगा
कमला सहित जमुना धार।
शान्त भऽ सरस्वतीक संग
पहुँचैत मिलि गंगा सागर।
तिल-तिल उत्तर ढलान दिस
अनबरत बहैत सुर्जक धार।
नाचि-नाचि मिलि गाबए
जेबै जरूर-जरूर, ओइ पार।
गाछी बीच बैस सदि बाबा

सभ किछु देख रहल छैथ।
बाँझक बच्चा अनकर नेत
बिहुँसि-बहुँसि कहै छैथ।
नै अछि बौआ गाछी भुताइ
मनक सभ किरदानी छी।
माँजह मन चमकाबह सदिकाल
केकरो नै मनमानी छी।

◌

शब्द संख्या : 119

अंडीक छाहैर

जेसलमेर राजस्थानक जहिना
मिथिलाक कोसी क्षेत्र अछि तहिना।
चकचकौआ बालु जेना ओतए
कोशिकन्होक तहिना एतए।
अजगूत मेल-मिलाप दुनूक छै
अंडी जहिना कोशिकन्हाक छाँह
सांगरि तहिना ओतौ छै।

बनलो छै तहिना छाँह।
वृक्षे ने छाहैर सिरजैए
सएह ने दुनू करै छै।
मुदा दुनूक दूरी ओतेक
अकास-पतालमे भेद जतेक।
एक उगे सुखल बालुमे
दोसर उगै पनिआहमे।

अजीव नटकिया बालुओ छी?
केतौ-केतौ पानिक परिचए दैत
केतौ-केतौ बिनु पानिक।
पल्ला परिते, सुआइत ने
उड़ि-उड़ि जान गमबैत।

केतबो मोर नाच देखबए
तँए कि बालुक चालि बदलतै।
उल्लू केतबो मुँहदुसी बनइ
तैयो लक्ष्मीएक सवारी कहौतै।

◌

शब्द संख्या : 090

परदेशी

नै बुझि पेलौं अखन धरि
दाही-रौदीक औरुदा केते।
एक दिन जाड़ माघक बितने
उनतीस दिन पड़ाएत जते।
बारह मासक साल बनै छै
एक करोटिया ऋृतुओ लइ छै
केंचुआ छोड़ि नव रूप पाबि जेना
नव जीवनक नूतन चालि धड़ै छै।
अपन-अपन रूप गढ़ि-गढ़ि
नव सृष्टिक बाट धड़ै छै
नव सिरैज नव युगक
नव विचारक लोक गढ़ै छै।
सृष्टिक भीतर सृष्टि सिरैज
मौसमक सुर-तान भरै छै।
पबिते हवा श्रृंगार सौरभक
ठठा-ठठा मुसकान भरै छै।
पेटक खातिर लुटा रहल छी
इज्जत-आबरू ओ सन-मान
हारल नटुआक संग पकैड़
गाबै छी प्रभाती विहान।
देखए पड़त मातृभूमि मिथिलाकेँ

माटि-पानि ओ वसात।
अंगेजि अंग जखन बनब
देख पाएब सोन्हगर अकास।
जे कहियो सातम अकास चढ़ि
मुरलीक तान भरैए
कुरेड़क कुरहैर कटि-कटि
दूरेसँ ढोल बजबैए।

◌

शब्द संख्या : 118

अन्हराएल छी

जते सोझरा चलए चाहै छी
ओते आरो ओझराइए।
टीक पकैड़ चिड़चिड़ी जहिना
टिकासन चढ़ि चिचिआइए।

रंग-बिरंगक अन्हार पसारि
निसचरक सिरजन करैए।
केतौ सुर्ज झापि अन्हार
तँ केतौ बुइध विलाइए।
सृष्टिक सिरजने अन्हारमे
इजोतमे आनए पड़त।
जाधैर से नै आनि पाएब।

अन्हारे-अन्हार बौअए पड़त।
दोहरा कऽ कियो जन्म नै लइए
ऐ धुआ-काया संग।
उच्चमना संकल्प साधि
पकैड़ पथ चलू निमग्न।

दुनियाँक सुन्दर फुलवाड़ीकेँ
चिक्कन-चुनमुन साजैत चलू।

प्रेमाश्रु संग सराबोर भऽ
हँसैत-गबैत चलैत चलू।

◌

शब्द संख्या : 073

ओ दिन

ओ दिन, ओ दिन छी,
जइ दिन भयक प्रेमी देखलौं।
ओ दिन, ओ दिन छी,
जइ दिन भयसँ यारी केलौं,
दर्शन पाबि भैयारी केलौं।

माघ मास राति सतपहरा
आशाक आश भैयारी देखलौं।
ओ दिन, ओ दिन छी,
संग सटल भैयारी देखलौं।

जेकर सिर सोर बनि
पानिक संग पताल पहुँचए।
सिसैक-सिसैक, संग आशाक
जिनगीक संग जीबैत चलए।
संग मिलि हँसए,
गबैत चलए संग-संग।
राति-दिन सहन सिरैज
कुदि-कुदि कुदैत संग।

घर भैयारी, बाहर भैयारी

संगी, मित्र-दोस्त कहबैत।
प्रेमाश्रु संग ढुलकि-ढुलकि
धरती बीच नाओं धड़बैत।
सिर उसरगए मिलि संग
वीर-शहीद कहबैए।
मातृभूमि ओ पितृभूमि बीच
सेवा कऽ जगबैए।

बजिते एक देबाल घड़ी
घरक घंटी घुनघुनाएल।
पकैड़ कान गुनगुना-गुना
रणभूमि-कर्मभूमि देखाएल।
सातो घर सजल सेज
देखते मन तड़ैप उठल।
दलदल करैत दलकीमे
चिचिया-चिचिया चहैक उठल।
अछि कठिन कर्मक परीक्षा
मुदा, सफल हएब नै कठिन।
विचार सहजि सूत-सुता
समेट-समेट कएल एकठीन।
बेंग सदृश कूदए लगैत
तरजू कला समेट धड़ब।
कलाकारी छी, मोचना कठिन
आङुरसँ पकैड़ धड़ब।
जिनगी परीक्षाक ओ घड़ी

जइ दिन जिनगी नाओं पड़ए।
जागल-सूतल बीच दुनूक
जागलनाथ काज धड़ए।
नीक काजक नीक फल
एक्के आँखिए दुनियाँ देखैत।
कनाह कहू आकि समूह
देख-देख लगैत समोह।
साध सिरैज साधक सदति
फूल वृक्ष सजबैए।
सिरैज शक्ति, शक्ति संग
सदति भक्ति करैए।
◌
शब्द संख्या : 195

सती-वेश्या

सरिपहुँ कहै छी, कियो नै
बसए दिअ चाहैए।
मोख पकैड़ मुँह छेकि
खूर-पुजैक आहूत करैए।
बिनु खूर-पुजौने पकैड़-पकैड़
दलदलमे भँसबैए।
जाधैर दल-दल टपि नै पेबै
गाछक झोंझ लसकौनेए।
लसकैयोक बिकराल बोन छै
पसरल सगतैर धरतीपर।
केना ससैर पाएब ओकरा
अरूप-सरूप क्षण बदलै छै।
नव-नव चालि नव रूप सजा कऽ
धूप-छाँह बनि खेलै छै।
जाधैर जड़िकेँ जानि नै पेबै
नाओं-ठेकान केना बुझबै।
बिनु नाओं-ठेकाने, केनए-केनए
मड़ियाएल आँखि चिन्ह पेबै।
बिनु देखने चीन्हि केना पेबै
चालि-चलैन आ किरदानी।
बिनु गछाड़ने, डेग नै कहियो
देत उठए अपन मन-मानी।

जुग-जुगसँ छिछिया-छिछिया
छुछका-छुछका छुछकौने अछि।
राड़ी-डबहारी रोपि-रोपि
राहीकेँ रगरगबैए।

जँ लग्गाक लागि लगा
जाए चाहब ओइ पार।
बीचे रूप बदैल-बदैल
धरा खसाएल बीच धार।

जखने नकसी बान्हि लग्गा
हँसि लग्गा लग्गी बनत।
लग्गा भरि जे छल हटल
ससैर-ससैर लग आऔत।
पाबि बान्ह जेना खढ़ आ बत्ती
घर नाओं धड़बै छै।
तहिना सहेजते सज्या
बसोबास बनबै छै।
बीत भरि ओ बाँसक छिप्पी
उनैट टुटि सटै छै।
पड़िते बान्ह दुनू-सँ-दुनू
नोकसी रूप धड़ै छै।
जखने पड़ैत जौड़क लटपटी
प्रेमिकाकेँ दिअए इशारा।
अजगुत रूप प्रेमी-प्रेमिकाक

दुनूक-दुनू बनैत सहारा।
लीला अगम बनल दुनूक
अछि चाहैत करए सभ प्रेम।
मुदा, की? ई थिक अनुचित
हँसि दुनियाँसँ करी प्रेम।
लगिगए छी जौहरी करामाती
कखनो तोड़ए गाछक डारि।
कखनो नापए कुदि-कुदि
खेते-खेत बनबैत आड़ि।
कखनो धारमे नाव दौगा
धार पार करैए।
कखनो फल-फूल तोड़ि-तोड़ि
भुखल पेट भरैए।
लग्गी बनि बनिते ओजार
नचनी-नाच नचए लगैत।
अपने हाथे खुआ-खुआ
अकैड़-सकैड़ चालि धड़बैत।
हाथ-हथियार बनिते बनैत
कनखिया देखबए उड़ियाइत सती।
बिलगा-बिलगा, बुझा-बुझा
आन नै, ओहो अपने हेती।

पड़िते दृष्टि दहलि, ढुलकि
गमे-गमे गुड़कए लगैत।
पकैड़ डोर सिनेही सिनेह।

स-हरि सिहैर सटए लगैत।
कँपैत करेज कुहैर कुकुआ
गुन-गुन गुनाइत गीत।
तड़ैक-तड़ैप तन-तना
प्रेमी मन झकसए लगैत।
रेहे-रेहे सींच झकासी
सीता शीत सिहरबए लगैत।
चाक चढ़ल पानि-माटि जेना
नव-नव वर्तन गढ़ैत।
तहिना मन तनमे
सुमति सोच सेहो सिरजैए।

सच्चे कहै छी, नै बसए
दिअ चाहैए हमरा।
झीक-झीक झोंट झटैक
लीड़ी-बीड़ी सेहो करैए।
नवकी कनियाँ बुझि-बुझि
वेश्या-सती बनबैए।
धर्मराजसँ यमराज बनि
छतपति नाओं धड़बैए।
केना बँचि पाएत यौ भैया
सत्-क सतीत्व हमर?
केना जीब पाएब हम
संसारक ई समर।
मोख मारि बैसल वेश्या-ए

ससैर केना सकब कहू?
देखते देख, बुझिते बुझि
की करब सेहो कहू?
सत् बसाएब वेश्या कहाँ
वृत्त-कुवृत्तिक खेल छी।
हाथ-मुँहक किरदानी सभ
देख-देख बकलेल छी।
चहल-पहल किरदानी शब्दक
नाकक नाथ बनबैए।
सुकुमार-सुकोमल नाक पाबि
गाएक आत्मा नथैए।
पड़िते नाक पड़ि नथिया
नर्तकीक रूप गढ़ैए।
काजर-चून लगा-लगा
मारि ठहाका हँसैए।
काजर घर केना बास करब
करए पड़त बुइधिक स्नान।
केने बिना से केना पएबे
तन-मन अन्तर धन-धान।
धाने-धन कहबै छै भैया
केना ने मुहोँ खोलब।
मुदा, मुकरि-मुकरि मकड़जाल
पानि-बरफ केना बूझब।

◌

शब्द संख्या : 416

दूजा भाव

प्रीत एना किए पिताजी,
विपरीत बनि चलैए।
पुत्र-पुत्रीक सिनेह बीच
दूजा-भावक रूप धड़ैए।
युग बदैलते कर्म-धर्म
अपन रूप बदलैए।
साक्षी बनि इतिहास ठाढ़ भऽ
मुस्की मारि कहैए।
त्रेता चढ़िते बहुत किछु बदलल
सत्-युगक आचार-विचार।
तहिना ने द्वापरो ऐबते
त्रेताक बदललक चालि-बेवहार।
भैया जन्म दिन केर
हँसी-खुशी मनबै छी।
हमरा बेर एना किए होइए
माथ-हाथ धड़ै छी।
खेनाइ-पीनाइ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ
भैया संग जे अछि।
हमरो संग तेहने रखने छी
भाव एहेन दूजा किए अछि।
बेटा-बेटीक संग जँ
पापक एहेन किरदानी रहत।

तखन केना मनुखक मनुखता
धरती बीच बँचल रहत।

◌

शब्द संख्या : 088

जीबैले लड़ए पड़त

लड़ि जीबू आकि मरि जीबू
जिनगीक दू धार बहै छै।
अपन सभ भाग्य निर्माता
मनोनुकूल जिनगी बनै छै।
लक्ष्य बिनु जिनगी ओहने
जेहेन बाँझ-बहिल होइए।
सुगरक मल सदृश ओकर
नीप-पोत विहीन होइए।
सभ चाहए आनन जीवन
डारिए-पाते फूल फुलाए।
बिनु सुख-चैने केना फुलेतै
अछैते परान जिनगी कुम्हलाए।
सुख-चैन फड़ै, दुख मेटेने
दुख मेटाएत संघर्षमे।
तहिया दुख पसरल छै सगतैर
बौआइत ढहनाइत जीवनमे।
दैहिक-दैविक भौतिक ताप
बिलगा-बिलगा देखए पड़त।
बिनु देखने दिशाहीन भऽ
औना-पौना सड़ि सड़ि मरब।
तीनूक अपन-अपन दुनियाँ छै
लीला तीनूक रंग-बिरंग।

तीनू बाँटि नेने छै धरती
कुदै-फानै छै रंग-रंग।

◌

शब्द संख्या : 091

पगलखना

पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
पगला पागल पकैड़
पगलखाना बनबैत रहै छै।
लटखेना दोकान जहिना
मिरचाइ-मिसरी संग रहै छै।
संसारक झखुराएल वन तहिना
पगलपाना पीपही पनपैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
कियो पगलाएल खेत कीनैले
तँ कियो पगलाएल चुमै खेतले।
कियो पगलाएल डाक-डाकैन
तँ कियो पगलाइत अगवास ले।
रहितो सबहक एक मंशा
बाट-घाट बौराइत चलै छै।
सभकेँ सभ पागल कहि
नाच पगलपनी नचैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
कियो पगलाएल सुख-शान्ति ले
कियो मधुशाला बौराएल रहै छै।

तेज सवारी पकैड़ चढ़ि
बैलेंस जिनगी मिलबैत चलै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
लपैक-झपैक मासूम मौसममे
झाखुर वन बनबैत चलै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।

एक-भग्गू लूरि-बुधि संग
एकबट्टू बाट बना चलै छै।
सुखाएल हाड़ स्वान जहिना
अपने रस पीबैत जीबै छै।
जहिए जनमल मानव धरती
संग स्वान अबैत रहल छै।
कटने-चटने सेर बरबैर
संग मिल संग नचैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै।

◌

शब्द संख्या : 165

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ◌

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-45-2

गीतांजलि

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

गीतांजलि

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

प्रोफेसर उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
कैं
समरपित

ISBN : 978-93-87675-43-8

दाम : ` 200/-

दोसर संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

GITANJALI
Anthology of Maithili Geet by Jagdish Prasad Mandal.

एकसत्तैर

हाल-बेहाल/10
शीला शील/12
रंग सियाही/13
दिन घटतै/15
उठिते आगि/17
छप्पर किए/19
गामसँ किए/20
बेढब रूप/22
संग जिनगी/24
सबहक जिनगी/26
सुन मैया गे/28
पकड़ि तान/30
भोरे कनी/32
पकड़ि पग/33
संच-मंच रहए/35
ओस बनि/36

बाढ़िमे सभ/37
हरा-ढरा/39
मीत यौ/41
अजीब-अजीब/42
अपने ताले/43
पग-पग/44
यार यौ/46
निरमोही बौआ/48
अपना गतिए/49
मीत यौ /51
हे बहिना /53
हे बहिना/55
सुक्खक अतृप्त/56
नढ़ड़ा हेल/57
अहीं कहू/59
चलू उचितपुर/61
कानि कलपि/62
बुधिये बाट/65
जुग-जुग/66
घात लगौने/68
देहमे नमहर/69
जिनगीमे जे/71
हे बहिना केना/73
हे आशुतोष/75
मनक फूल/77
फूल मनक/79
बेकाल-काल/80
जेहेन जेकर/82
समए-साल/83
संग मान-समान/84
जेहने शक्तिक/86
खेल खेलौना/87
प्रेमी पिया/88
बिसरि गेल/89
आबो कनी/91

हाल-बेहाल

हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल सजबैत रहै छै।
चढ़िते रंग नील नीलिया
मधुर रस पान करैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

डगडगाएल हाल पाबि उसरक
फूल उस्सर सिरजैत रहै छै।
घूरि ताकि नै भरमए भौरा
दिवा रसराज कहबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

आसनसँ सिंघासन बनि-बनि
चटाइ नाओं धड़बैत रहै छै
पूजा आसन बनि सदएसँ
लोक सुर सजबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि रंग राही
कुशल फूल...।

उठिते अंजलि चढ़िते मंजलि

मंगल गीत गबैत रहै छै।
गीता-गीत सदएसँ होइतो
हाल-बेहाल पबैत रहै छै।
हाल-बेहाल पबैत रहै छै।
कुशल फूल...।

❍

शब्द संख्या : 95

शीला शील

शीला शील देखि-देखि
हंस कानि कहैत एलैए।
एक शील श्रृंग चढ़ि-चढ़ि
दोसर श्रृंगार बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

चढ़ि श्रृंग गढ़ि धनुखी
अकास सिर बेधैत एलैए।
हंसराज राजहंस रमकि
सिर श्रृंगार सजैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

शील सुशील सुर बदलि
तीरमिरछि देखैत एलैए
चिरमिराइत चिड़ै बूझि
सुशील-कुशील बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि...।

❍

शब्द संख्या : 58

रंग सियाही

रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह सियाह घोड़ाएल छै।
भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाएल रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह...।

गहराएल गहन पून चान सन
इजोत-अन्हार बनहाएल छै।
तहिना ने दिनो-दीनानाथ
भक-इजोत पाबि भखियाएल छै।
भक-इजोत पाबि भखियाएल छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेह...।

कहि रोशन टघरि सियाह
लेख कर्म लिखबैत रहै छै।
तिले-तिल तिलकि जअ जहिना
हवन कुंड जड़जड़बैत रहै छै।
हवन कुंड जड़जड़बैत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि
रेहे-रेह...।
भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि

गीत प्रेम लिखाइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेह...।

❍

शब्द संख्या : 86

दिन घटतै

दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइत छै
साले दिनक समैए केते
रंग लीलाक बदलैत छै
दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइत छै
मौसम...।

अपन-अपन सनेस बाँटि सभ
सुरभित वायु परसैत छै
खसल-पड़लमे जान फूकि
थाम्हि◌ि-थाम्हि उठबैत छै
दिन घटतै आकि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइत छै
मौसम...।

समए ने ककरो संग पुड़ैए
ने ककरो संग दइत छै
अपन-अपन सभ समेटि-समेटि
सिरे-सिर उठबैत छै

दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइत छै
मौसम...।
❍
शब्द संख्या : 81

उठिते आगि

उठिते आगि तनकि मन
मुक्का छाती मारि कहै छै,
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का छाती मारि कहै छै
मुक्का...।

चढ़िते कातिक गाछी-बिरछी
गाम-गाम अखाड़ अबै छै,
जाड़-हाड़ संग मिलि दुनू
जड़ियाएल जाल तोड़ैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का छाती मारि कहै छै
मुक्का...।

सुषुम तेल तरहथ्थी जहिना
बच्चा सिर धड़ैत रहै छै
धरिते तेल पकड़ि केश
अगियाइत आगि पाबैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन,
मुक्का छाती मारि कहै छै।
ताल-ताल मिला बेताल

संग बाँहि आवाज भरै छै।
मुक्का छाती मारि कहै छै
मुक्का...।
❍
शब्द संख्या : 94

छप्पर किए

छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर किए बैसल छह।
लग-आबि समाद सुनाबह
नहिराक सोखरि गाबि सुनाबह
भैया-भौजीक हाल-चाल संग
गाम-समाजक हाल सुनाबह।
छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर...।

दादीक-दरदक हाल सुनाबह
बाबूक बात बिसरिहह नै
रेखिया-सुगिया पढ़ै छै कि नै
माइयक मन बिसरिहक नै
छानि किए कुचड़ै छह हे कौआ
छानिपर...।

❍

शब्द संख्या : 53

गामसँ किए

गामसँ किए डरै छी
भाय यौ, गामसँ किए डरै छी।
सदिकाल गामक चर्च करै छी
राति-दिन सोहरो गबै छी
तखनि किए भगै छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।

बाप-पुरुखाक पुरुषार्थ गाबि◌-गाबि
छाती-तानि हामी भरै छी
नानी-दादीक खिस्सा-पिहानी
सुना-सुना मोहैत रहै छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।

जइ मातृभूमि ममतासँ
हृदए गंग बहबै छी
गामे-गाम पसरल छै मिथिला
गामेसँ किए मुरुछै छी,
गामसँ किए मुरूछल छी
गामसँ किए डरै छी
भाय यौ...।
गाम-धाम काम मंदिर

धाम तीर्थ कहबै छी।
तीर्थाटनसँ घूमि-घूमि
गामेमे बुतबै छी।
एना किए करै छी?
मीत यौ, गामसँ किए डरै छी।

❍

शब्द संख्या : 95

बेढब रूप

बेढब रूप गढ़ि-मढ़ि जिनगी
बेढब गीत गबै छै।
बेढब कुचालि सुचालि पकड़ि
बेढब पाठ पढ़ै छै।
बेढब गीत गबै छै।
भाय यौ, बेढब...।

जीत जिनगी ठाढ़ छै जंगल
मंगल आस भरै छै।
कहि सुमंगल कुमंगल बनि
मंगल दंभ भरै छै।
भाय यौ, मंगल दंभ भरै छै।
बेढब गीत गबै छै।

जहिना कार्बन कागज चढ़ि
कागज कार्बन कहबै छै।
तहिना कार्बन चढ़ि जिनगी
अन्हार पक्ष कहबै छै।
भाय यौ, अन्हार पक्ष कहबै छै।
बेढब गीत गबै छै।

दोहरी पक्ष जिनगी चलै छै
अन्हार-इजोत कहबै छै।
दुख सागर बीच सुखसागर
अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै।
भाय यौ, अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै।
बेढब गीत गबै छै।

❍

शब्द संख्या : 105

संग जिनगी

संग जिनगी मन पान करै छै
समए संग रसपान करै छै।
संग जिनगी...।

ठेँस-ठेँसिया टूटि-फुटि जिनगी
हँसी-खुशी मुखपान करै छै
गुण-अवगुण भेद बिनु बुझने
समए संग रसपान करै छै।
जिनगी संग मन पान करै छै।
संग जिनगी...।

झाड़-कुझाड़ केतौ नचै छै
केतौ ताड़ गाछ मलड़ै छै।
ठिठकि-ठिठकि ठमकि जिनगी
मति-मति सिर्जमान करै छै।
संग जिनगी...।

अपन जिनगी अपने सन गढ़ि
दुखी-सुखी मुसकान भरै छै।
मोड़ि◌-मुँह उलटि-पलटि देखि
सुसकारी भरि-भरि चलै छै
समए संग विषपान करै छै।

मान-अपमान भेद भूलि
संग मिलि सुरधाम चलै छै।
घाट-बाट अटकि-मटकि
हारि जीत स्नान करै छै।
हारि जीत स्नान करै छै।
संग जिनगी...।

❍

शब्द संख्या : 98

सबहक जिनगी

सबहक जिनगी गीत गबै छै
गीतक संग सुख-दुख कहै छै।
सबहक...।

सुर-तान, राग अलपि-अलपि
जिनगीक मुसकान भरै छै
सबहक...।

घड़ी-पहर रूप, बदलि भास
समए-संग संगीत रचै छै
सबहक...।

हँसि-विहुँसि सुर-तान तानि
विषम-सम बनबैत चलै छै
सबहक...।

अपन-अपन हक-हिस्सा जहिना
बीच बसुधा चान सुर्ज कहै छै
सबहक...।

चलि संग संगतिया रचि-रचि
काज-करतब सिखबैत चलै छै।
काज-करतब सिखबैत चलै छै
सबहक...।

❍

शब्द संख्या : 59

सुन मैया गे

सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुधि संतान सहरल केना
सुधि संतान सहरलै किए?
कि दोख देखि दृग दूषित भेल
रहितो गुरु कहलौं ने किए?
सुधि संतान सहरलै किए?
सुधि संतान सहरलै केना?
सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुन मैया...।

अधिया मानि जेकरा कहलिऐ
आधा मानि देलिऐ ने किए?
सुधि परिवार बिसरलौं किए
सुधि संतान सहरलै किए?
सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुधि संतान...।

दुनू मिलि घर-दुआर सजेलौं
कुल-गोत्र दुनू संग मिलेलौं।
दोहरी रीति बनेलौं किए?
सुनू बाबू यौ, सुनू भैया यौ

सुधि परिवार बिसरलौं किए?
सुधि संतान सहरलै किए?
सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुधि संतान...।

❍

शब्द संख्या : 100

पकड़ि तान

पकड़ि तान सभक जिनगी
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ गढ़ि-गढ़ि, मढ़ि-मढ़ि
दिन-राति कहैत चलै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

बदलि मीठ बिगड़ि-बिगड़ि
क्रोधे करुआए लगै छै।
कुदैत क्रोध तुरुचि तुष्टि
तीत-मीठ बनबए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

छनि-छनि, छन-छन पल-पल
राति-दिन गढ़ए लगै छै।
साँझ-भोर घड़ी-घंट बजा
कुथनी-कहनी कहए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

शंख-नाद सुर मिला-मिला

नादशंख दिअ लगै छै।
कौरब-पाण्डव मध्य कृष्ण
महाभारत रचए लगै छै।
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि...।

❍

शब्द संख्या : 84

भोरे कनी

भोरे कनी जगा देब,
भाय यौ, भोरे कनी जगा देब।
जुग-जुगसँ मोट-गाढ़ नीन
सिरमा तरक सभ किछु लेलक।
आबो कनी जगा देब,
भाय यौ, आबो कनी जगा देब।
भोरे...।

इन्दिरा अवासमे नाओं लिखेतै
सिमटी-ईटा केर घरो बनतै।
हथिया झटकी किछु ने करतै
भोरहरबे कनी जगा देब
भाय यौ, भोरहरबे कनी जगा देब।
भोरे...।

सात कोस पएरे जए पड़तै
ब्लौकेमे शिविरो लगतै,
नाओं ओतै सेहो लिखेतै
भाय यौ, भोरे कनी जगा देब।
भोरे...।

❍

शब्द संख्या : 72

पकड़ि पग

पकड़ि पग पएरे-पएरे
पग-पग पथ पकड़ैत चलू।
पकड़ि प्रेम पहुँची पकड़ि
संग जिनगिक चलैत चलू।
संग जिनगिक चलैत चलू।
पकड़ि पग पएरे-पएरे
पकड़ि...।

मोटरी-चोटरीक आशा कत्ते
हल्लुक जान बनबैत चलू
पथ अबिते-अबैत
गुरु स्मरण करैत चलू।
गुरु स्मरण करैत चलू।
पकड़ि पग पएरे-पएरे
पकड़ि...।

जागल-सूतल धार बहै छै
जिन्दा–मुरदा नाओं धड़ै छै
पथ-बना बीच धरती
जिनगीक गीत गबैत चलू।

जिनगीक गीत गबैत चलू।
पकड़ि पग पएरे-पएरे
पकड़ि...।

❍

शब्द संख्या : 68

संच-मंच रहए

संच-मंच रहए कहाँ दइए
यार यौ, संचमंच रहए कहाँ दइए
मकड़ी फड़ खुआ-खुआ
टीक पकड़ि खिंचैत रहैए
संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

चिड़चिड़ी छीट-छीट कखनो
ओझरी टीक लगबैए।
पोझरी पकड़ि-पकड़ि
खेल नाच लगबैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

कहियो रंग कहियो कादो
सभपर सभ फेकैए।
रंग-सियाही बदलि-बदलि
आँखि दुइर करैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ...।

❍

शब्द संख्या : 62

ओस बनि

ओस बनि आंसू पकड़ि
धार खून बहबैत एलैए।
प्रेम सिक्त प्रेमाश्रु पकड़ि
देह बेमाए कहबैत एलैए।
देह बेमाए कहबैत एलैए।
ओस बनि...।

हाथक हस्ति पकड़ि फाड़ि
रूप बेमाए धड़ैत एलैए।
बाँहि पकड़ि-पकड़ि हाथ
पएर पकड़ि कहैत एलैए।
पएर पकड़ि कहैत एलैए।
ओस बनि...।

आंगुर पकड़ि पकड़ि छीनि
पएर सिर चढ़बैत एलैए।
हस्ति हाथ मेटा-मेटा
नाम पएर जपैत एलैए।
नाम पएर जपैत एलैए।
ओस बनि...।

❍

शब्द संख्या : 64

बाढ़िमे सभ

बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल,
मीत यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।

मुँह-दुआरि परदा दहा गेल
दहा गेल सभ कुटुम-परिवार
हित-अपेछित सेहो भसिया गेल
भसि गेल सभ आचार-विचार।
भसि गेल सभ आचार-विचार।
बाढ़िमे...।

मीत यौ, जिनगीक संग जिनगी हरा गेल।
गुल्ली–डन्टा खेल दहा गेल
दहा गेल दुआर दुआरधार
चिन्ह पहचिन्ह सेहो दहा गेल
कखनी घुमतै दुआर-दुआरधार।
कखनी घुमतै दुआर-दुआरधार।
बाढ़िमे...।

कानि कलपि केकरा के कहबै
अपने बेथे सभ बेथाएल।
सुनत केकर के दुख नचारी
अपने मनमे सभ बौड़ाएल।

अपने मनमे सभ बौड़ाएल।
बाढ़िमे...।

❍

शब्द संख्या : 84

हरा-ढरा

हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि
भोर-साँझ भुक्कैत रहै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

जइ सिरडीह नढ़िया भूकैत
राति-दिन गबियाइत रहै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

तान मारि कियो, कियो मारि ताइन
छिनकि-छिनकि छिड़ियाइत चलै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

जोतल दौन कराम बीच
खेरहा-कुरथा दौन करै छी।
हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

रसिक रसिया रस रचै छी
रसिक रसिया रस रचै छी।

हरा-ढरा ढेरियाएल ढेरि।
भोर-साँझ...।

❍

शब्द संख्या : 66

मीत यौ

मीत यौ हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।
दिशा चारू फेकि फूल
शंख अकास फूकैत रहै छी
शंख अकास...।
मीत यौ, गहबर बीच गुहारि करै छी।

कथ-कूथि सर सिरजि
व्यास बनि भगवत रचै छी
व्यास बनि...।
मीत यौ, हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।

फूल एक अकास फेकि
दोसर गंगा लाभ करै छी
सखर-माँझ भेद नै बूझि
थरथराइत हाथ-पएर मरै छी
मीत यौ, हे यौ मीत
कुथनी कूथि मरैत रहै छी।
गहबर...।

❍

शब्द संख्या : 76

अजीब-अजीब

अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।
अजीब...।

राति-दिन कियो, कियो दिन-राति
एकबट-दुबट करैत रहै छै
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

रातिक दिन कियो दिनक राति
विहुँसि-विहुँसि बढ़ैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

काहू मगन कोइ, कोइ काहू मगन
रमि-रमि रमता बनैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।

❍

शब्द संख्या : 61

अपने ताले

अपने ताले नाच करै छै
गाले अपने गीत गबै छै।
अपने ताले...।

अपने हाल बेहाल भेल छै
अपने चालि चिचीआ कहै छै
अपने ताले नाच करै छै
गाले अपने गीत गबै छै।

चलैत जिनगीक चक-चिकमे
मुनि आँखि भकुआइत चलै छै।
छिछैल-छिछैल बटिया-घटिया
दिनोदिन हराइत चलै छै।
अपने ताले नाच करै छै
गाल अपने गीत गबै छै।

हाल-गाल विकराल बनल छै
मुँहगर-कन्हगर बीच पड़ल छै
के केकरा देखतै-सुनतै
हारल-मारल हेराए चलै छै।
अपने ताले...।

❍

शब्द संख्या : 73

पग-पग

पग-पग उठैत पएर
सत रंग गीत गबैत चलैए।
कखनो आगू कखनो पाछू
उनटि-पुनटि देखैत चलैए
सतरंगी गीत गबैत चलैए।
पग-पग...।

आगू-पाछूक भेद बिनु बुझने
ससरि-ससरि ससरैत रहैए
जिनगीक शुक्ल-कृष्ण बीच
चीत-पट होइत चलैत रहैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।
पग-पग...।

कखनो विरह कखनो वसंत
भाव-विभोर गबैत चलैए।
वसंतक राग-तान, तानि
वेदना विरह बिखड़ैत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।
पग-पग...।

क्षण-पल जहिना दिन कहाबए
रातिओ-राति रीतियाएल चलैए

कखनो दौड़, कखनो ठमकि
आशा-आश घिसियाइत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।
पग-पग...।

❍

शब्द संख्या : 77

यार यौ

यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।
मन दहा भसि-भसिया
लीढ़, केचली कादो समा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु...।

बाल दहा जुआनी जुड़ि-जुड़ि
चित्त चेतन सेहो हरा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु...।

एक बाढ़ि धरती पसरि
दोसर अकास चढ़ै छै।
सिर, पएर ठेकान बिनु केने
अपनेमे दुनू लड़ै छै।
अचता मन पचि पचताए
अपनेमे समा गेल।
यार यौ, भजार यौ,
बाढ़िमे सभ किछु हरा गेल।

सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु...।

❍

शब्द संख्या : 109

निरमोही बौआ

निरमोही बौआ, एना किए रूसल छी।
बाबा-बाबी, बाप-माए कोर
संग-संग संगे खेलैत एलौं
दुनूक बनाओल डोरसँ
जुग-जुगसँ बन्हैत एलौं।
तखनि किए, छिटकै छी
एना किए रूसल छी,
निरमोही बौआ...।

बानि छोड़ि कुबानि पकड़ि
वस्तु–विन्यास बनबै छी
भ्रमित भ्रम पकड़ि-पकड़ि
भरमि-भरमि भरमै छी
निरमोही बौआ...।

भूल-चूक अपनो होइत अबैए
सोच-अपसोच संग चलैए।
साले-साल गीरह रक्षाक
तखनि किए छिटकै छी
निरमोही बौआ...।

❍

शब्द संख्या : 61

अपना गतिए

अपना गतिए सबहक जिनगी
पग परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ सुआद सिरजि
राति-दिन कहैत चलै छै।
पग-पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

कखनो मीठ महकि-महकि
बिगड़ि तीत बनए लगै छै।
तहिना तीतो तड़पि-तड़पि
सुआद मीठ दिअ लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

पल-पल, छन-छन छनि-छनि
राति-दिन बनए लगै छै।
शंख संग नाद भरि-भरि
शंखनाद दिअ लगै छै।
पल-पल नाद भरए लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

कौरव-पाण्डव बीच जहिना

शंखनाद कृष्ण करै छै।
काया-माया बीच संसार
लट-पट, हट-सट
करए लगै छै।
पग-पग पएर, धड़ए लगै छै।
पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिए...।

❍

शब्द संख्या : 98

मीत यौ

मीत यौ, गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ गृहनीक गप सुनै छी।
गाम-गाम आ गृह-गृहमे
गसल गीरह देखै छी
मीत यौ, अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक कथा कहै छी।
मीत यौ...।

गीरहक बीच गृही गुहाएल छै
गूह बीच जुट्टी समाएल छै
देखि-देखि चटिआइ छी,
मीत यौ, देखि-देखि चटिआइ छी
अहींटा कहै छी
मीत यौ...।

गृहपति सभ बनए चाहै छै
नै पाबि घुड़-मौड़ करै छै।
घुड़-मौड़सँ घुरिया घुरै छै
अहींटा कहै छी
मीत यौ...।

गृहनीक गारि सुनै छी

लाजे-धाक मरै छी, मीत यौ
अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ...।

❍

शब्द संख्या : 94

हे बहिना

हे बहिना, हे बहिनी
जीवन संग जिनगी बदलै छै।

अपने बदलि किछु, किछु बदलैओ पड़ै छै
किछु अपने सुधरि, किछु सुधरैओ पड़ै छै।
जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना...।

संगे-संग मिलि खेललौं-धुपलौं
संग-संग रहि संगी कहलौं।
पकड़ि बाँहि बहिना कहेलौं
फूल-प्रीत बनि सासुर बसलौं
हलसि-हलसि मन हँसै छै
जीवन संग जिनगी बदलै छै
हे बहिना...।

एक बहिन ओद्रक कहबै छै
सहस्रो समाज गढ़ै छै।
बहिनासँ दीदी, दीदीसँ दादी
हँसि हँसि मन तड़पै छै।
हे बहिना, हे दिदगर
जीवन संग जिनगी चलै छै।
चलि-चलि रंग बदलै छै

जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना...।

❍

शब्द संख्या : 94

हे बहिना

हे बहिना, हे दीदी, हे दादी
सुरति केना बदलबै।
हे बहिना...।

प्रीतिक रीति कुरीत बनल छै
रीति-सुरीति केना पेबै
थाल-खिचार घर-द्वार बनि
कल्प वृक्ष फेर केना पेबै।
हे बहिना हे संगी, हे प्रेमी
सुरति केना बदलबै
हे बहिना...।

जहिना जहर तहिना फुफकरि
नाग, गहुमन डॅसैत रहै छै।
करम-भाग मनतर जपि-जपि
अगुआ-पछुआ धरैत रहै छै।
हे प्रीतिया हे रीतिया
नीक फल कहिया देखेबै
हे नीक फल कहिया देखेबै।
हे बहिना...।

❍

शब्द संख्या : 69

सुक्खक अतृप्त

सुक्खक अतृप्त धारमे
भसिया गेलै जीवन।
भसि-भसि भसिया गेलै
कानि-कलपि कहैए मन।
सुक्खक...।

कि सोइच सोचै छेलै
पेतै मन मधु आनन
बिना आनने पेत केना
आनन धन ब्रह्मानन
सुक्खक...।

धारक अंतिम धड़ धरिया
धड़ि धैड़ चलतै जीवन।
बून पानि धार सगर
पाबि केना पेतै जन?
पाबि केना पेतै जन?
सुक्खक...।

❍

शब्द संख्या : 51

नढ़ड़ा हेल

नढ़ड़ा हेल हेलै छै, भाय यौ
नढ़ड़ा हेल हेलै छै।
ठकि-ठकि, फुसिया-पनिया
जिनगी संग खेलै छै, भाय यौ
जिनगी संग खेलै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

जुग छेलै जमाना छेलै
कलपि कूश लागै छेलै
सोझ-साझ फुलकि-फलकि
चालि खिखिर धेने छेलै।
चालि खिखिर धेने छेलै।
नढ़ड़ा हेल...।

सुख स्मृति मन पाड़ि-पाड़ि
नढ़ड़ा खेल खेलै छेलै।
जहिना नढ़ड़ा गाछ-बिरिछ
तहिना मन पेबै छेलै।
तहिना मन पेबै छेलै।
नढ़ड़ा हेल...।

नढ़ड़ा जहिना गाछ उगै छै

भकराड़ चालि पकड़ि चलै छै।

फड़-फूल बिनु रूप गढ़ि-गढ़ि
नढ़ड़ा फल देखबैत रहै छै।
नढ़ड़ा फल देखबैत रहै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

नढ़ड़ा खेल खेलैत रहै छै।
भाय यौ, नढ़ड़ा हेल हेलैत रहै छै।
नढ़ड़ा हेल...।

❍

शब्द संख्या : 105

अहीं कहू

अहीं कहू भाय आब की करबै?
पएर पसारब तखने
मन समेटब जखने
शिव दर्शन कैलाशक ऊपर
भट्ठा नहि सीरापर।
तहन जे धारक लहरिमे हेलबै
अहीं कहू...?

दहिना हाथक गति बमा अछि
आगू चलि कऽ देखियौ
मुदा, पाछूओ भेने बाट नै छोड़त
की प्रकृति प्रदूषण करबै?
की प्रकृति प्रदूषण करबै?
अहीं कहू...?

नमहर-नमहर पर्चा-पोस्टर
बाँटि-बाँटि भरमेबै,
बिर्ड़ो, दानो, ठनकाक दुर्गकेँ
जेरक-जेर केना कऽ टपबै?
जेरक-जेर केना कऽ टपबै?
अहीं कहू...?

नमगर-चौरगर बात बना
ठकि-ठकि फुसिएबै।
सुखले आँखिक नोर निड़ा
राति दिन घटिएबै।
राति-दिन घटिएबै।
अहीं कहू...?
❍
शब्द संख्या : 85

चलू उचितपुर

चलू उचितपुर देस
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।

नै अछि भेदभाव ओतए किछु,
नै अछि चोर-बैमान।
नै अछि ऊँच-नीच किरदानी
सबहक एक्के भेष यौ भैया
सबहक एक्के भेष।
चलू उचितपुर...।

सबहक चालि-ढालि एक्के
अछि सबहक मान-समान
मन-मनुख बनि-बनि सभ
भरैए सूर-तान, यौ भैया
भरैए सूर-तान
जेहेन देस तेहेन भेष
चलू उचितपुर...।

आगि-पानिक भेद कोनो नै,
सबहक एक्के देस।
पढ़ै-लिखैक एक्के रस्ता अछि,
सबहक एक्के उदेस।

चलू उचितपुर...।

जिनगीक तँ एक्के विचार अछि
नै अछि देस-विदेस।
माए-बहिन सबहक एक्के छी,
बाल-बच्चा सभ एक।
चलू उचितपुर...।

एक्के खाहिंस सभकेँ होइ छै
ने कम ने बिसेस।
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।
चलू उचितपुर...।
❍
शब्द संख्या : 98

कानि कलपि

कानि कलपि केते कहब
गामेमे हराएल छी
रंग-बिरंग अन्न-पानि
नीकसँ छिड़ियाएल छी।
नीकसँ छिड़ियाएल छी।
कानि कलपि केते कहब
कानि-कलपि...।

समटेनौं तँ ने समटाइए
थाकि कऽ ठकुआएल छी
डरे आँखिओ ने उठैए
कातेमे नुकाएल छी।
भाय यौ, कातेमे नुकाएल छै।
भाय यौ, कातेमे नुकाएल छै।
भाय यौ...।

जइ आशा ले जीबै छी
तैपर पानि फेराएल छै
तैयो आशक डोर पकड़ि
पाछू-पाछू घिसियाएल छी।

पाछू-पाछू घिसियाएल छी।
कानि कलपि केते कहब
कानि-कलपि...।

❍

शब्द संख्या : 71

बुधिये बाट

बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये बाट बौरेलौं हे।
बुधिये...।

आड़ि-धूर छेकने छै धरती
नै छेकने अकास हे
उड़िते उड़ि ओतए उड़ि गेलौं
कहाँ भेटए रैणवास हे।
कहाँ भेटए रैणवास हे।
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये...।

देस-दुनियाँक रंग-रूप देखि
अपनो रूप निखारितौं हे
अगम-अथाह पड़ल हे बहिना
जिबैक नै विश्वास हे
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये...।

❍

शब्द संख्या : 58

जुग-जुग

जुग-जुग आस लगौने मइए
शीत-रौद चटैत एलौं
लुप्त भेल नयन-ज्योति हे मइए
रेगहा टा जपैत एलौं।
रेगहा टा जपैत एलौं।
जुग-जुग...।

गंगाजलिसँ नीर बोझि
सिक्त करब दसो दुआरि।
आँगन-घरक संग-संग
नीपब गोसौनिक चौपाड़ि।
हे मइए...।

हँसैत, गबैत, नचैत, भसैत
पहुँचब तोर दुआर
मुदा फँसि मकड़जालमे
बन्न भेल सब केबाड़।
हे मइए...।

दसो दिशा अछि घेराएल
अकास बहैत देखै छी
मुदा ससरि गेल भूमा
कानि-कानि गाबि कहै छी।
हे मइए...।

❍

शब्द संख्या : 69

(श्री राजनन्दन लाल दासक अठहतरीम जनम दिनपर...)

घात लगौने

घात लगौने घात लगल छै
फल करनी अवघात मढ़ल छै
घात लगौने घात लगल छै
करनी फल अवघात मढल छै।
घात लगौने घात लगल छै
फल...।

तिनकमिया बंशी बनि-बनि
पानि बीच घतिया पड़ल छै।
गंध बोर सुगंध कहि-कहि
मुँह मध्य अवघात करै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल...।

बिनु अवघाते होइत रहै छै
गलफड़ घात लगैत रहै छै।
ही-जी छिछिया-छिनिया
उनटि-सुनटि सुनगैत रहै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल...।

❍

शब्द संख्या : 71

देहमे नमहर

देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर वएह कूदि टपै छै।
टपि टपान हाथो कहैत
राही राह पकड़ि चलै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

टाँग जेकर हाथी सदृश
बालु ऊँट कहाँ बुझै छै
चालि सुचालि पकड़ि-पएर
रच्छा अपन करैत रहै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

मुसुक मन मारि मुस्की
मने-मन मुसकान भरै छै।
हहा-हहा हषविष अबैत
कूदि-फानि कहैत रहै छै।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

करसँ कमल पकड़ि

जलधर बीच कहै छै।
ने लत्ती ने बिरिछ बनि
गछिया गाछ गछै छी।
मीत यौ, गछिया गाछ गछै छी।
देहमे नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर...।

❍

शब्द संख्या : 92

जिनगीमे जे

जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह कहबैत रहैए।
संग ससरि, घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

मित्र बनि मैत्रेयी पकड़ि
जिनगीक झूल झूलैत रहैए
लेख-जोख कर्मक करैत
गुण गुण मन गुणैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

संगी, प्रेमी दोस्त भजार
बैसि बाट बतियाइत रहैए।
संग-कुसंग, कुसंग-संग
नीड़ नोर निनियाइत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

संग ससरि घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह...।

❍

शब्द संख्या : 76

हे बहिना केना

हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि जइ घर निकललौं
केना जेबै ओइ दुअरबा हे बहिना
केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि...।

जनि-जनि बीआ वाणी-बानि
लतरै-चतरै छै फुलबतबा
सुबास-कुबास बनि-बनि
सभ किछु देलिऐ गमबा
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा
थुक फेकि...।

पुरुखपात रहलै ने एक्को
करतै के बगबटबा
घरहरिया एको ने बँचलै
बन्हतै के घरमरबा
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा।
थुक फेकि...।

मिथिला कहि मिथि मिथिला
बँचलै ने एको घरहरबा

कखनो घरहर छुतहर बनि
छुतहरो कहै छै घरहरबा।
हे बहिना केना कऽ जेबै ओइ घरबा।

❍

शब्द संख्या : 92

हे आशुतोष

हे आशुतोष भगवान अहाँ,
हमर कखनि दुख मेटब
हे आशुतोष...।

बहति-बहति अश्रुभूमि सूखि गेल
कि लए आरती उतारब।
कनैत-कनैत कनमुँह मौला गेल
सुआगत कि लए करब?
हे आशुतोष...।

सभ दिन दुखक तर दबेलौं
सुखक सुख कहियो ने पेलौं।
चुहटि हृदए तोष पकड़ि
मनुखक गति कहियो ने पेलौं।
हे आशुतोष...।

सुसुकि-सुसुकि हृदए हमर
बेथा अपन सुनबैए।
अन्तो–अन्त उतारि आरती
सिहरि-सिहरि सुनबैए।
हे आशुतोष...।

धीर होइत धीरज मेटा गेल
थीर होइत विवेक थकुचा गेल।
झड़कि-झड़कि ज्ञान झड़कि
पड़ले-पड़ल सभ सड़ि गेल।
हे आशुतोष...।

❍

शब्द संख्या : 83

मनक फूल

मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे फूल फुलाइत रहै छै
भोरहरबे वसन्त जहिना
मेघ ललौन बनैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

पकड़ि उमा सिरजि लाली
राग वसन्त गबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

रीत-सुरीत फूल-फुलकि-फलकि
फूल-फल मिलबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

जोड़िि-जाड़ि मसुआ-छिड़िया
बरहमसिया कहबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

मार टाॅहि अलप-अलपि
बारहो मास चलैत रहै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे...।

❍

शब्द संख्या : 77

फूल मनक

फूल मनक फुलाइ केहेन छै
मनमे फूल फुलाइ केहेन छै।
जेहेन जेकर मन रहै छै
तेहेन मन फूल धड़ै छै।
फूल मनक...।

जेहेन जेकर फूल सजै छै
तेहेन तेकर फुलवाड़ी लगै छै।
फूल मनक...।

फूलोक तँ भिन-भिन किरदानी
तीत-मीठ बिखड़ैत रहै छै।
तीतमिट्ठी बनि-बनि बिलहि
खून-पानि मिलबैत चलै छै।
फूल मनक...।

❍

शब्द संख्या : 51

बेकाल-काल

बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
जेहेन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती तेहने बनै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी रहै छै।
ससरि-सड़कि बदलि रूप
फूल बाती बनबए लगै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

कालोक कि कम अछि किरदानी
अकाल-सकाल बनबैत रहै छै।
सूति-जागि सभ चलि-चलि
गाल-काल बनबैत रहै छै।
गाल-काल बनबैत रहै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।

समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत...।

❍

शब्द संख्या : 83

जेहेन जेकर

जेहेन जेकर बगए रहै छै
तेहेन तेकर वाणि चलै छै।
जेहेन जेकर बाइन चलै छै
तेहेन तेकर बौस बनै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

एक बाइन बाँसक चलै छै
दोसर व्योंत-बेति-बेति होइ छै।
तेसर सिक्की सिक चढ़ै छै।
डाला-डाल सुसकारी भरै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

कखनो बानि उबानि चलि-चलि
कुबानि-सुबानि कहबैत चलै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

❍

शब्द संख्या : 81

समए-साल

समए-साल सुसकारि चलै छै
समसमाइत-घमघमाइत रहै छै।
जेहेन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती एक करै छै
समए-साल...।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी छै।
कोढ़ीक संग पकड़िि-पकड़ि
वाती-फूल सिरजैत चलै छै।
समए-साल...।

सालोक कि कम शैतानी
सुसमए-कुसमए बनबए लगै छै
जगता जोर पकड़िि-पकड़ि
गजगामिनी रूप धड़ए लगै छै।
गजगामिनी बनि चलए लगै छै।
समए-साल...।

❍

शब्द संख्या : 53

संग मान-समान

संग मान-समान चलै छै
मीत यौ, मानिक संग सम्मान चलै छै।
असगर जहिना फूसि वृहस्पति
मानो तहिना घटै-बढ़ै छै
एक नमरी दू नमरी बनि-बनि
किरदानी सभ करैत रहै छै।
किरदानी सभ करैत रहै छै।
मीत यौ, मानिक संग सम्मान चलै छै।
मीत यौ...।

अमान-मान बनि-बिगड़ि
कुमान खेल खेलैत रहै छै
छीन-झपटि सुमन श्रृंग
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
मीत यौ, मानिक संग सम्मान चलै छै।
मीत यौ...।

जुग-जुगसँ ससरि-पसरि
अगो सिर चढ़ैत रहै छै।
जोग-अजोग कहि-सुनि
दुंदुभि बजबैत रहै छै।
दुंदुभि बजबैत रहै छै।

मीत यौ, मानिक संग सम्मान चलै छै।
मीत यौ...।

❍

शब्द संख्या : 102

जेहने शक्तिक

जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने धड़ै छै।
जेहने...।

जेहेन पकिया रंग रहै छै,
देव सिर तेहने चढ़ै छै।
जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने चढ़ै छै।

दुनियाँक भँवर जाल बीच,
मित्र-इष्ट बिड़ले भेटै छै
अशिष्ट, इष्ट, जालमे
सोझर ओझर होइत चलै छै
जेहने शक्तिक रंग रहै छै
लीलाक तेहने दृश्य बनै छै।
लीलाक...।

❍

शब्द संख्या : 58

खेल खेलौना

खेल खेलौना खेल खेलै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

खेल खेलौना खेल खेलै छी।
एक खेलौना छी मन रंजन
दोसर जीवन धार बहाबए
कदम डारि झुलि झूला
जमुना धार महार कहाबए।
खेल खेलौना...।

नै हँसि कानि नै पाबि
मन-मरदन करैत रहै छी
खेल खेलौना खेल देखै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

❍

शब्द संख्या : 51

प्रेमी पिया

प्रेमी पिया, हे प्रेमी पिया
पीरितिया जोगा-जोगा, हृदए रखियौ जीया
हे यौ प्रेमी पिया...।

तड़सि-तड़सि मन तड़पि रहल अछि
आस लगा बाट खोजि रहल अछि
नजरि उठा आबो कनी, तकियौ हिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

चीन्ह–पहचीन्ह सब उड़िया गेल
हवा झोंक पाबि सब छिड़िया गेल
आबो कनी नजरि उठा, दिअ हमरो जिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

सभ दिन संगे मिलि दुनू रहलौं,
सुख-दुख सेहो संगे मिलि कटलौं।
छाती खोलि सहेजि-सहेजि,
दिल दिलेरि धरू जिया
हे यौ प्रेमी पिया...।

❍

शब्द संख्या : 79

बिसरि गेल

बिसरि गेल मन तोरा
हे बहिना बिसरि गेल मन तोरा
जहिना गाछक फूल झड़ै छै
झाड़ि-झाड़ि खसलह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।
हे बहिना...।

रहि-रहि सुमारक अबै छै
देखैले हृदए तड़सै छै
मारि-सम्हारि गबै छह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।
हे बहिना...।

खोद-बेद सदि करैत रहै छै
तोरा-पाछू घुमैत रहै छै।
लपकि-झपकि पाबए चाहै छै
झपटि पकड़ि बाँहि तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।
हे बहिना...।

कोसी-कमला दूर भगौलक
नैहर-सासुर सेहो बिसरौलक।

हहरि-हहरि हृदए सहटि
छाती सटबए चाहैए तोरा
हे बहिना...।

❍

शब्द संख्या : 87

आबो कनी

आबो कनी विचारू
भाय यौ, आबो कनी विचारू।
भूखे भगलौं, सभ जनैए
दुखे भगलौं, सभ जनैए।
भरल पेट विचारू,
आबो कनी विचारू
भाय यौ...।

जहिया जे भेल, से तहिया भेल
भूत गेल, भूतकालो गेल।
बीर्तमानक कथा-बेथा संग
भवितव्य भविष्यक विचारू
आबो कनी विचारू
भाय यौ...।

कमा-खटा कऽ दुख मेटेलौं
भूख-पियास सेहो, भगेलौं।
संग विवेक बुधि विचारू
भाय यौ, आबो कने विचारू।
भाय यौ...।

❍

शब्द संख्या : 63

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 64. दोहरी हाक- लघु कथा संग्रह। ○

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 200

ISBN : 978-93-87675-43-8

पद्य-संग्रह

सतबेध

जगदीश प्रसाद मण्डल

सतबेध

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-87675-67-4

दाम : ₹ 200/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SATBEDH
Anthology of Maithili Poems and Song
by Jagdish Prasad Mandal.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलबाड़ी लगौनिहारकेँ
नव विहान अननिहार
सादर समरपित

अनुक्रम

अपन बल/9
जीवन धार/11
लाजे मेटा गेल/13
खढ़ पोसा पानि/15
परता माटि/17
शिकारी/19
जीवन/21
जिनगीक बीच जिनगी/24
दिन रातिक खेल/26
सतबेध/29
किछु ने बुझै छी/32
गुरुत्तर/34
जिनगीक मोड़/36
मरहन बाट/40
कविता/42
घाट-बाट/44
चलैत पंखाक/46
सुमति-कुमति/49
हँसि हंस/50
खचरमणि/52
किसानक देश भारत/54
जिनगीक संगीत/55
सुगति/57
संगीत/59
ब्रह बाट/61
रस्तेमे लसका गेलिऐ/63
एक दस मंत्र छै/65
वंचित धार/66
पाइक मोल/67
हे दुनियाँक केर भाग-विधाता/69
कलेससँ कलैशते भैया/70
नजैर-नजैरमे तफरका भैया/71
अपने मन ठकैए/73
केकरो गारि सुगारि/74
साँझ-भोर/76
समाजक बान्ह-छेक/78
दियादी/80
ओइ पोखरिक मानियेँ की?/82
नवका बास/84
पद्य लेखन क्रम/86

अपन बल

अपना बले जहिया जीअब
बलगर जिनगी तहिया पेबब।
अपन कल-बल जहिया अपने
तहिया अप-अपन जीवन पेबब।
तहिया अप-अपन जीवन...।

बलो की ओहिना अबै छै
बुधि-कल सिरजए पड़ै छइ।
बुधिकल सिर सीर पकैड़
सिरचढ़ि कहए लगै छइ।
सिरचढ़ि कहए...।

भैया किसान जेकरे देश
सएह परदेशी बनल छइ।
स्वदेश वस्त्र वस्त्राभूषण
सभ दिन कहल करै छइ।
सभ दिन कहल...।

अपन सिर कहिया झँपन-झपत
मनो ने सुगबुगा कहै छह।
मन सुनगुन जा नइ औतह
ताधैर सुतल सुतले रहबह।
ताधैर सुतल...।

अपनाकेँ जगबैत जागह
अपन मन आहूत चढ़ाबह।
अपना-अपनी, अपना-अपना
माघ गंग नहान करह।
माघ गंग...। ●

जीवन धार

सतदल समतल बीच धरा
अगम-सगम धार बहै छइ।
एक दल, दू दल बनि-बनि
सतदल धार सिरजन करै छइ।
सतदल धार...।

घरे-घर जातिये-जाति
टोले-टोल बटमारि करै छइ।
अपना अपनी अपना पाछू
दिनराति घटमारि करै छइ।
दिनराति घटमारि...।

समाजक बीच हम, आ कि
हमरा बीच समाज बसै छइ।
कियो अपनाकेँ कहि समाज
शील-सुशील समाज कहबै छइ।
शील-सुशील समाज कहबै छइ।
तँए की कुशीलो-शील
अपनाकेँ अनभुआर कहै छै

कुशील-सुशील बीच कुवेद
हाथ ससारि-ससारि...
जे हँसैत पानि पनिवट पेब
से शील-सोभाव गुण-गान करै छइ।
हँसि-कानि कि कानि हँसि से
शील-गुण सिरजन करै छइ।
शील-गुण सिरजन...।

शील-शीला श्रीखण्ड बनि
शील-गुण सिर तानि कहै छइ।
बिनु शील गुणे धार ओहने
बलुआ मरा मुर्दघाट बनै छइ।
बलुआ मरा...। ●

लाजे मेटा गेल

लज लजबिजी बनि-बनि
लजे-लज विरहाइत गेलौं।
कहियो विरह वेद बुझि
तँ कहियो विरहे रसा गेलौं
मीत यौ, लाजे मेटा गेलौं।
रसल-भसल पछुआ पछाइत
उनैट पछुआ ताल देखलौं।
अपन हाल बेहाल बुझि
आनक खुश-हाल देखलौं।
देख-देख लाज पड़ा गेल
देख-देख...।

लाज काज संग काज लाज
दुनू लाजे-लाज चलैए।
एक-दोसरकेँ निरलज कहि
अपने निरजल बनैए।
आँखिक बीझ मेटा गेल
लाजे मरा गेल, काजे मेटा गेल
रसि-रसि, भसि-भसि

ओर-छोर बिनु घटिया पेलौं।
राम रमैया आकि सीता रमैया
अखन धरि बुझबे ने केलौं
विचार हेरा गेल, लाजे मेटा गेल।

खिआइत-खिआइत खिआ, मीत यौ
मनसम्फे मन खिया गेल।
सुलाज-कुलाज बीच जिनगी
भुख-लाजे भूखे मेटा गेल।
लाजे हेरा गेल, लाजे मेटा गेल। ●

खढ़ पोसा पानि

समय तँ समैये छी
किनका पुछबैन समैयक हाल।
सभ अपने हाले हला
मने-मन होइछ पेमाल।
मने-मन होइछ पेमाल।

एक तँ बरखा मास ठकैए
खढ़ पोसा अगिमुत्तू करैए।
सामी-कौनी लतड़ा-चतड़ा
खेतक उपजा दहन करैए।
खेतक उपजा...।

अगिलह आगि लग-लग लगा
नरम-नरम घास कहबैए।
अगियाह-नरम रहितो मुदा
खेतक उपजा दहन करैए।
खेतक उपजा...।

गेल किसनमा खेत डहिया

घर-वार उसरन करैए।
देशी भाय परदेशी बनि-बनि
हाल-चाल किसान पुछैए।
हाल-चाल...। ●

परता माटि

परता माटि जहिना पड़ल-पड़ल
परता-परती नाम धड़ैए।
तहिना कर्मखौक मनुख सेहो
परती मन निरमित करैए।
परती मन निरमित करैए।

उस्सर माटि जहिना ऊर्वर-शक्तिकेँ
उपजवान नहि बना पबैए।
तहिना ऊर्जहीन मनुख सेहो
ऊर्जावान नहि कहा सकैए।
ऊर्जावान नहि...।

ऊर्जश्वीक ऊर्जश्व गति उजैक
अणु-मनु-कण कहा सकैए।
मुदा वएह अणु-कणु मन
कनकना-कनकना कहैए
कनकना-कनकना...।

जाबे परता जाबे परती

पछताबा पछाइत पबैए।
गर्भ-संक्रान्ति हँसि-हँसि
सेर-बरबैर सभ कहैए।
सेर बरबैर...। ●

शिकारी

जे शिकारी जेहेन सिकर लऽ
शिकार ताक ताकए निकलैए।
जेहने सिकर तेहने शिकार
घुरि शिकारी घर अबैए।
घुरि शिकारी...।

रंग-रंग सुरंग रंग
कुरंग, बदरंग सेहो विचड़ैए।
कुरंग-सुरंग बीच बिचमानि
मानि बदरंग रंग चढ़ैए।
जे शिकारी जेहेन...।

जुग-जुगसँ कुरंग-सुरंग
मैल-मैल मलयुद्ध करैए।
कहियो हरिश्चन्दक हीय हरण
तँ कहियो डोम घर बसबैए।
कहि-कहि रत्नाकर कहियो
रमण रामायण रमैत रचबैए।
तँ कहियो द्वापर दुर्योधन कहि

रास व्यास गीता कहबैए।
जे शिकारी जेहेन...। ●

जीवन

जखने जन जनजीवन तकै छै
तखन बट-घट उपकए लगै छइ।
कोनो बटिया बढ़िया बनि
तँ कोनो घटिया घाट घटै छइ।
कोनो घटिया घाट घटै छइ।

घटिया-बटिया वाणि बीच
सभ-दिना घर्ष-घर्षन एलैए।
ओही घर्ष-घर्षण बीच जीवन
संघर्षवान सेहो जनमैत एलैए।
संघर्षवान सेहो...।

कुघर्ष-सुघर्ष बीचो-बीच
रणभूमिक बाजा बजैत एलैए
रने-रन, बने-बन विचैड़
संघर्षशील जीवन पबैत एलैए
संघर्षशील जीवन...।

दुनियाँ-दुनियेटा नहि ने

दून-दुनियाँक रंगमंच सेहो छइ।
रंगमंचे केर ने अपन बेथ-बेथा
रणभूमि सेहो निरमै छइ।
रणभूमि सेहो...।

जखने रणभूमि बीच जिनगी
हाथ अस्त्र माथ शस्त्र अबै छइ।
जेकर जहैन जेहेन जीवठगर
से तेहेन जीवन गढ़ै छइ।
से तेहेन जीवन...।

जिनगी-जिनगीक बीच जीवन
अकास-पताल निर्माण करै छइ।
एक जीवन उड़ै अकास
तँ दोसर पताल माटि छुबै छइ।
दोसर पताल माटि छुबै छइ।
अकास पताल बीच विचैड़
विचैड़-विचैड़ विचरण करै छइ।
रस्सा-कस्सी करैत-करैत
क्षितिज सीमा छुबै छइ।
क्षितिज सीमा छुबै...।

छुबिते दुनूक क्षितिज सीमा
मन-मन मुस्की मारि कहै छइ।
भैया जीवन, हइया जिनगी
आँखि मिला देखए लगै छइ।
आँखि मिला देखए...। ●

जिनगीक बीच जिनगी

जिनगी जिनगीक बीच जिनगी
जिनगी अपन जीन गबै छइ।
एक जिनगी ओहन जिनगी
जे जिनगीकेँ कानि कहै छइ।
दोसर जिनगी ओहन जिनगी
जे जिनगीकेँ हँसि कहै छइ।
जिनगी-जिनगीक बीच जिनगी
जिनगी अपन जीन गबै छइ।
हँसैत जिनगी कनैत जिनगीकेँ
कानी हँसनी हँसी करै छइ।
हसन हँसि कनन कानि
कन-मन हँसनक गीत लिखै छइ।
गीत-मीत संग-संग जिनगी
अपन विरहाएल-बेथाएल भाव कहै छइ।
जे जिनगीक जेहेन करनी
से तेहेन धरणी धड़ै छइ।
जिनगी जिनगीक बीच जिनगी
जिनगी अपन जीन पबै छइ।
हँसीक गीत सुनियौ जिनगी

करवनो हँसपन तँ करवनो मजपन
अदैल-बदैल बुझैत रहै छइ।
हसिया हाथ उठ-उठ उठा
हँसि कानि, कानि हँसि कहै छइ।
हँस-हासिनी हास हंस हँसि
हँसी-कनीक भाव कहै छइ।
हँसी-कनीक भाव कहै छइ।
जे जिनगीक जेहन जेहेन
से तेहेन वसीभूत बनै छइ।
जिनगी-जिनगीक बीच जिनगी
जिनगी अपन जीन गबै छइ। ●

दिन रातिक खेल

अपने हाथक खेल मीत यौ
अपने हाथ खेल।
संगे-संग दुनू चलैए।
इजोत-अन्हार बनैत रहैए।
हँसि-हँसि कानि-कानि
पटका-पटकी करैत रहैए।

एके गाछक डारि छी दुनू
सुफल-कुफल फड़ैत रहैए।
रस रंग सुआद गढ़ि-गढ़ि
तीत-मीठ बनबैत रहैए।
अपने हाथक खेल मीत यौ
संगे-संग खेलैत रहैए।

लपैक-लपैक केतौ-केतौ
इजोत-अन्हार दबैत रहैए
पीट्ठी चढ़ि पीठिया-पीठिया
ऐरावत सजबैत रहैए।
तँए कि अन्हार हारि मानि
हरदा कहियो कबूल करैए।
जहिना झपैट बिलाइ बाझकेँ

जिनगीक खेल देखबैत रहैए।
अपने हाथक खेल मीत यौ।
संग मिलि...।

मंत्र एक रहितो दुनूक
विधा दू कहबैत चलैए।
विधि-विधान रचि-बसि दुनू
गद्य-पद्य गढ़ैत रहैए।
चढ़ि गाछ तनतना-तनतना
गीत-कवित्त सुनबैत रहैए।
ताना दऽ दऽ बिहुसि-बिहुसि
मारि तानि हँसि-हँसि कहैए।
एके गाछक खेल मीत यौ।
संगे मिलि...।

बजा पीहानी नाचि-नाचि
रंगमंच दुनियाँ सजबैए।
कण्ठ कोकिल कवित्त कवि
कविकाठी बजबैत रहैए।
केतौ ने किछु छै दुनियाँमे
मन मानव गढ़ैत चलू।
मानव मनुख खरादि-खरादि
राति-दिन बनबैत चलू।

अपने हाथक खेल मीत यौ
हाथ-हथियार बदलैत चलू। ●

सतबेध

सत् केर शक्ति जगैछ भूमि रण
उठि-मरि, मरि उठि, उठि कहै छइ।
कुंज-निकंज पुरुष परीछा
असत्-सत् सुसत् बनै छइ।
आदिये आदिसँ दादी-नानी
सतबेध खिस्सा कहैत एली
वेद-पुराण सिर-सजि मणि
दिन-राति सुनबैत एली
भरल-पुरल पोथी-पुराण
सत्-बेध जिनगी भरल-पुरल छइ।
कखनो जोगीक जोग बेधि
तीन सत् वाण रटै छइ।
काल कुचक्र चक्र सुचक्र
वाण बेधि मारैत रहै छइ।
वाण वाणि नारी-पुरुष बीच
साड़ी शक्ति सजबैत रहै छइ।
मिथिला मर्म माथ तखन
मथि-मथि माथ मिलबै छइ।
दान सतंजा बाँटि-बिलैह
जिनगी सफल करैत कहै छइ।
चक्री-कुचक्री वाण बनि वन

चालि कुकुर धड़ैत एलैए।
जिनगीक जुआ पकैड़-पकैड़
पछुआ पाट बिलहैत एलैए।
पाटि-पाटि पटिया-पटिया
पटिया धरती बिछबैत एलैए।
नरि गोनैर गमार कहि-कहि
तर-उपरा रंग चढ़बैत एलैए।
चिक्कन-चुनमुन चुनचुनाइत देख
लोल-बोल बतिआइत एलैए।
मन-मानूख फुसला-पनिया
मनु-मानव कहैत एलैए।
बाणि मोड़ि पकैड़ पग
जंगल नाच देखैत एलैए।
भ्रमर रूप सजि-धजि-धजि
भौं-आँखि चढ़बैत एलैए।
फूल कमल बसोबास कहि
कमल दहल दहलाइत एलैए।
दोबर-तेबर दस-बीस कहि
सत् शून्य भरैत एलैए।
सैंया-निनानबे मंत्र रचि बसि
अस्सी-खस्सी बनबैत एलैए।
बर्जित तन कहि-कहि
मानव-मन रचैत एलैए।
खस्सी-बकरी रूप देख-देख

मासु खून पीबैत एलैए।
लंका दर्शन पूर्व राम
वाण समुद्र पकड़ै छइ।
सत्-बेध पाथर पकैड़-पकैड़
सेतु बान्ह बनबै छइ। ●

किछु ने बुझै छी

के केकर हित के केकर मुद्दै
दिन-राति देखैत रहै छी।
गरदेन पकैड़ जे कानए कलपए
पकैड़ गरदेन तोड़ैत देखै छी।
किछु ने बुझै छी।

हित बनि मिलि संग चलैए
मुद्दै बनि-बनि लड़ैत रहैए।
सोझमतिया चालि पकैड़-पकैड़
झाँखुर-बोन ओझराइत रहैए।
डारि-डारि, पात-पात
देखैत रहै छी
किछु ने बुझै छी।

छत्ता-मधु दुनू बसि-बसि
विष मधु गढ़ैत रहैए।
हित मुद्दै बनि-बनि दुनू
राति-दिन झगड़ैत रहैए।
देख छगुन्ता पड़ल रहैए छी
किछु ने बुझै छी।

संग मिलि पाथर तोड़ए जे
पाथर ऊपर फेकैत रहैए।
पाथर मन गढ़ि-मढ़ि
पाथर बुझि देखैत रहैए।
पथराएल पथ देखैत रहै छी
किछु ने बुझै छी।

आगि चढ़ि अन्न जहिना
पथरा पाथर बनैत रहैए।
जीवन दाता कुहैक-कुहैक
पेट पाथर बनैत रहैए।
विस्मित भेल बिसबिसाइत रहै छी
किछु ने बुझै छी। ●

गुरुत्तर

गुरुत्तर भार भरैसँ पहिने
गुरुत्तर पाठ पढ़ए पड़ै छइ।
सरि-सरि सेरिया-सेरिया
सिर सटि सजए लगै छइ।
बून-बून बुन्नी पकैड़-पकैड़
धड़ि-धड़ि धारण करै छइ।
धड़ैक-धड़ैक धड़-धड़धड़ा
गति गीत मीत गबै छी।
गुरुत्तर पाठ पढ़ै छी।

शिवगंगा पकड़ैसँ पहिने
पत्थर-माटि बनए लगै छइ।
पर-परियास रचि-बसि
राति शिव रचबए लगै छइ।
एक-एक जोड़ जोड़ि पजेबा
महल ताज सजबए लगै छी।
गुरुत्तर पाठ पढ़ए पड़ै छइ।

पकैड़ बाँहि अक्षर ब्रह्म
वन-उपवन सजबए लगै छइ।
अक्षर-ब्रह्म मिलि बैस

शक्ति शिव सजबए लगै छइ।
अहित-हित-सहित पकैड़
मन साहित्य सिरजए लगै छइ।
मन साहित्य सजबए लगै छइ। ●

जिनगीक मोड़

पाइन बनि पाथर जखन
धरा-धार धारण करै छइ।
घाट बाट बनि-बनि तखन
जिनगीए जकाँ चलै छइ।
जिनगीए...।

उठ उठि पहाड़ जइसँ
सएह ने सागरो सिरजै छइ।
अपना-अपनी नाओं गढ़ि
एक पहाड़ दोसर सागर कहै छइ।
दोसर सागर...।

नद-नद नदी निरमि जेना
निर्जल-निर्मल घट पबै छइ।
चलैत बाट-बटोहियो तहिना
जन-जन जिनगीक मोड़ पबै छइ।
जन-जन जिनगीक...।

पबिते मोड़ मन मरु-तरु

राग-विराग रस्ता रमै छइ।
एक मन मरियाएल मोड़
दोसर तरुवर फल पबै छइ।
दोसर तरुवर...।

जोड़-मोड़ मन जुड़ि-मुड़ि
राग राग रागीन पबै छइ।
जेहि नद नदी निरैम
चलन-सारिक भाव बुझै छइ।
चलनसारिक...।

प्रेम-प्रेमी पथ पथिक पेब
प्रेमास्पद रमैत रहै छइ।
राग-रागीन राग अलैप
रंग-रभस रभैस चलै छइ।
रंग-रभस...।

तेतबे नइ यौ भाय सहाएब
दोसर खेल सेहो दुनूक छइ।
एक बरखा एक बाढ़ि बनि
बरखा-बाढ़िक पानि कहै छइ।

बरखा-बाढ़िक...।

गामक-गाम दहि-भसि
उस्सर-उर्वर माटि सजै छइ।
हाथ-निहाथ ठकुआ ठमैक
वाणि जिनगीक बनि चलै छइ।
वाणि जिनगीक...।

वाणियो की हल्लु–फल्लु
अकास-पताल एक करै छइ।
कियो दहि कियो भसि
पानि बीच पाथर कहै छइ।
पानि बीच...।

की कहब यौ भाय सहाएब
मने मड़ियाएल छी।
तने तरियाएल छी।
घरे घुड़ियाएल छी।
देहे दहियाएल छी।
धने धनियाएल छी।
बुधिये बुधियाएल छी।

पएरे पिड़ियाएल छी।
चालिये चलियाएल छी।
जिनगीए जड़ियाएल छी।
जिनगीए...! ●

मरहन बाट

मरहन बाट बटोही जहिना
गरदा-बाउल चटैए।
कजियाएल जिनगियो तहिना
कबजियाएल विचार धरैए।
कबजियाइत विचार विचैड़-विचैड़
कबजाएल लीख धरैए।
लीखे-लीख सिख पकैड़
कबजियाएल जिनगी पबैए।
कबजियाएल जिनगी पबैए।

जखने कबजियाइत जिनगी
तखने कबजी बाट धरैए।
कबजी-एबजी मिलि-मिलि
एवजी कबजी बनए लगैए।
एवजी कबजीक बीच जिनगी
जन-मन-धन धरैए।
धरिते जन-धन-मन
वृत्ति-कुवृत्ति वृत्त बनैए।
वृत्ति-कुवृत्ति वृत्त बनैए।

कुवृत्ति वृत्ति चित्र बनि-बनि
रूप समाज सजए लगैए।
दृश्य-अदृश्य, अदृश्य दृष्टिक
रूप धार धारण करए लगैए।
धरिते रूप धार धरिया
धैड़ धीर महार सजैए।
धार-महार महैर महि-महि
रंग समाज चढ़ए लगैए।
रंग समाज चढ़ए लगैए।

चढ़िते रंग समाज संग
निखार रूप निखरए लगैए।
परेखनिहारो निखैर-परैख
गति-विधि समाज देखए लगैए।
जेहने गति-विधि समाजक
तेहने शीलो-शिल बनैए।
मन मन्दिर बैस पुजारी
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए।
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए। ●

कविता

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम-समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ...।

सम-समदाउनिक गति मतिये
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया...।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान...।

शिष्टे इष्ट इष्टे अनिष्ट

रावणलंका बनाएब देखू।
हनुमान तँ बानर-भालू भेल।
ओकरासँ लंका जराएब सीखू।
अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू।
अपने-ले...। ●

घाट-बाट

जिनगीक घाट-बाट बन बनबै
समय बिसरजन करए पड़ै छइ।
भेटल अतीतक तत-मत मणि
भव-भविस निरमए लगै छइ।
भव-भविस...।

भविते भविस भव भग-जोग
जग-मग ज्योति जगए लगै छइ।
केतौ भुक-भुकी भग-जोगन
तँ केतौ मणि मन मानए लगै छइ।
केतौ मणि मन...।

जखने मन-मणि हबैस-तपैस
लील-सलील भरए लगै छइ।
भरिते लील-नील बनि बन
नीलमणि रूप निखरए लगै छइ।
नीलमणि रूप...।

निखैरते रूप-रंग सजि धजि

तीर-नीर तीरपीत तरए लगै छइ।
शिव-शम्भु दान-मान मन
घट-घट घोंट घोंटए लगै छइ।
घट-घट घोंट घोंटए लगै छइ।
जिनगीक घाट-बाट बन बनबै
समय विसरजन करए पड़ै छइ। ●

चलैत पंखाक

चलैत पंखाक ब्लेड जेना
बुझि नहि पेलौं जिनगी।
गतिये संग मतिमानि मानि
देख नहि पेलौं जिनगी।
देख नहि पेलौं जिनगी।
चलैत पंखाक...।

की चदरे ब्लेड छी हमहूँ
आकि जीवित मनुख छी।
भेद भेदि नहि भेद पेलौं
ब्लेड पंख बनल छी।
ब्लेड पंख बनल छी।
चलैत पंखाक...।

हटल-सटल तीनू ब्लेड
लगल पेंच जोड़ाएल छी।
असगर असगरूआ रहितो
संग-संग ससरैत छी।
संग-संग ससरैत छी।

चलैत पंखाक...।

खोलि खालि जखन तीनूक
तीन तीनूकेँ देखै छी।
हटल-सटल रहितो रहैत
मीलि संग चलिआइ छी।
मीलि संग चलिआइ छी।
चलैत पंखाक...। ●

सुमति-कुमति

सुमति-कुमति मध्य मन जीवन
जिनगीक धार धड़ै छइ।
जे घटवार जेहेन घटवारि
तेहने घाट पबै छइ।
मीत यौ, तेहने...।

सुगति-कुगति गति समति
सम-सम समति साम गबै छइ
साँझक साँझ तर तार बनि
भोर भुरुकवाक तान तनै छइ।
भोर भुरुकवाक...।
जे घटवार जेहेन घटवारि...।

कुमति कुगति गति गत गतिया
गम-गम गमैत गम गमै छइ।
अन्त-अन्त अन्तहीन अन्त
पीड़ित-पीड़ाक पीड़ पबै छइ।
पीड़ित पीड़ाक...।
जे घटवार जेहेन...।

जीवनक जीन जन-मन जनैम
जन-गण मंगल गान गबै छइ।
हीन-हीन हीनिया-हीनिया
हहैर-हहैर हर हार सजै छइ।
हहैर-हहैर हर...।
जे घटवार जेहेन घटवारि
तेहने घाट पबै छइ।
मीत यौ तेहने घाट पबै छइ। ●

हँसि हंस

हँसि हंस हंसा हँसि हँसा
दूध-पानि बिलगा कहै छइ।
दूध-फूल पानि-मानि कहि
गुण गुणा गुण गुनै छइ।
गुण गुणा गुण गुनै छइ।
हँसि हंस...।

हँसि-हँसि हीय हीया-हीया
बोल-लोल धड़बैत कहै छइ।
अन-धन-मन सम समा
धड़-धरती धड़ैत रहै छइ।
धड़-धरती धड़ैत रहै छइ।
हँसि हंस...।

उड़ि-उड़ि उड़िया उड़िया
हीय धरती बकसैत रहै छइ।
अश्रुकण मणिकण मढ़ि
नीरा नीर निरबैत रहै छइ।
नीरा नीर निरबैत रहै छइ।

हँसि हंस...।

नीर-क्षीर आकि क्षीर-नीर
रूप अपन सजबैत रहै छइ।
शान्त प्रशान्त कहि केकरो
केकरो सागर क्षीर भरै छइ।
केकरो सागर क्षीर भरै छइ।
हँसि हंस...। ●

खचरमणि

खचरमणि खच-खच खचा
खचरचालि चलैत रहै छइ।
रसे-रसे रस्ते-रस्ते
मुनि खचरपन काज करै छइ।
मुनि खचरपन काज करै छइ।
खचरमणि...।

अकाजक खुरपी छीनि-छीनि
घुचि-घुचि घुचघुचबैत रहै छइ।
परिते पानि फुहार अखारक
खच्चा–खुच्ची बनबैत रहै छइ।
खच्चा–खुच्ची बनबैत रहै छइ।
खचरमणि...।

बनिते खच्चा बाट-बटोही
छोड़ि-छोड़ि कतियाइत रहै छइ।
लगक बिरह बेथा बिसैर
कोइली कूक धड़ैत रहै छइ।
कोइली कूक धड़ैत रहै छइ।

खचरमणि...।

बाट-घाट पग-पग पकैड़
खेल बटबारि खेलैत रहै छइ।
हँसि-हँसा मन-मनिया
खच्चर गीत गबैत रहै छइ।
खच्चर गीत गबैत रहै छइ।
खचरमणि...। ●

किसानक देश भारत

किसानक देश भारत
भारत देश किसानक कहबैए।
हरल-भरल हरितम धरती
साज-श्रृंगार सजैए।
मीत यौ, देश किसानक कहबैए

अपना घरमे अपने हेरा-हेरा
चीन-पहचीन बिसरैए।
अपन खेत-खरिहाँन छोड़ि-छाड़ि
बाजारक मिल सजबैए।
मीत यौ, देश किसानक कहबैए

खेती विहीन खेतिहर जहिना
भीख बिनु भीखमंगा कहबैए।
केतऽ जेबह की करबह भैया
साँझ-भोर कानि-कानि कहैए।
मीत यौ, देश किसानक कहबैए
मीत यौ, देश किसानक कहबैए। ●

जिनगीक संगीत

जखने पैरक गति जगैए
तखने जिनगी गतिमान बनैए।
जखने जिनगी गतिमान बनैए
तखने गति संगीत बनैए।
तखने गति...।

जगिते गति मति मंत्र पकैड़
गति मतिक बीच विचड़ए लगैए।
विचरणक बीच विचैड़-विचैड़
विवेक बुधि विचारवान बनैए।
विवेक बुधि...।

बनिते विचरवान विचारक
शील-सुभाव सिरजए लगैए।
सिरैजते शील सिल-सिला
सुभाव शील शुभ-शुभ लगैए।
सुभाव शील...। ●

शुभे-शुभ सुभाव भाव बनि

भाव-सुभावक संग चलैए।
कुभाव भाव तियागि-तियागि
भाव-कुभाव बिसरए लगैए।
भाव-कुभाव...।

होइते विसरन वीस कुभावक
वीस कुविचार मरए लगैए।
जेते मरए वीस कुविचारक
तेतबे सुविचार उठि चलैए।
तेतबे सुविचार...।

उठिते सुविचार सुशील शील
जगि-जगि जिनगी गीत गबैए।
रागे-राग अलैप-अलैप
गीत जिनगीक संगीत बैनए।
गीत जिनगीक...।
जखने पैरक गति जगैए
तखने जिनगी गतिमान बनैए।
जखन...। ●

सुगति

सुमति-सुगति करूआएल मन
जिनगी धारक रूप रूपै छइ।
जे घटवार जेहेन घटवारि
तेहने घट-घट घाट पबै छइ।
तेहने घट-घट...।

सुमति-सुगति गतिआएल मन
सम-सम शाम गबैत रहै छइ
शामक साँझ तर तार बनि
भोर भुरुकवाक भार भरै छइ।
भोर भुरुकवा...।

सुमति-सुगति गति गीत बनि
गम-गम गान गबै छै यौ
अन्त-अन्त अन्तहीन अन्त
पर पीड़ित पीर बनै छै यौ।
पर पीड़ित पीर...।

जीवनक जीन जन-मन जनमि

जन-गण मंगल गान गबै छै यौ
हीन-हीन हीनिया-हीनिया
हरिहर हरिक हरै छै यौ।
हरिहर हरिक...। ●

संगीत

गत-मत मीत मनुज मन
मन-मन्दिर भव भवन बनै छइ।
जखने मन भवन भवि
देव-दनुज मीलि तान तनै छइ।
देव-दनुज...।
भविते भव भवन खिल-खिल
बाइन वाणी विचैड़ विचड़ै छइ।
वाणी वणिक करैण पकैड़
करैण-धरैण धड़ि धड़ै छइ।
करणी-धरणी धीर धड़ै छइ।
विवेक विचार विचरण करै छइ।
विचड़ैत विचार विवेक बनि
पाप-पुनक पुल बनै छइ।
पाप-पुनक...।
पाप-पुन पुल-पुल पुलपुला
संगीत-गीत गतिया गबै छइ।
गतियाइते जिनगी मतियाइते जीवन
कर्मद-नर्मद मन धार बहै छइ।
बनिते धार मन धैड़ धड़ि
धारा धारित धार बनै छइ।
बनिते धार धीर-हीर पकैड़
गीत-संगीत सजए लगै छइ। ●

ब्रज बाट

ब्रज बाट बजरा गेलइ
जिनगी छोड़ि पड़ा गेलइ।

घाट-बाट बिनु बुझने-सुनने
बाट-बटोही पकड़ा गेलइ।
बाट छोड़ि बटिया-घटिया
ब्रज मनु बजरा गेलइ।
जिनगी छोड़ि पड़ा गेलइ।

राहक राही थाह थाहि
राह रमणी रमा गेलइ।
आन-बीरान भेद बिनु
संग-संग संगी समा गेलइ।
जिनगी छोड़ि...।

पत् जिनगी पेतर पकैड़
पग-पग पगहा पतड़ा गेलइ।
कटिया बाट पकैड़-पकैड़
जिनगीसँ हेराइत गेलइ।
जिनगी छोड़ि पड़ाइत गेलइ।

ठनका कखनो मेघ मनुक
कखनो पथराएल माटि कहैत गेलइ
जिनगी संग खेल खेलि
जिनगीकेँ झेलैत गेलइ।
बज्र माटि बनैत गेलइ।
जिनगी छोड़ि पड़ाइत गेलइ।
जिनगीसँ हेराइत गेलइ।

कहियो बज्र सन जिनगी सुनि
कहियो जिनगीसँ नुकाइत गेलै।
ब्रजवट कहा कहि-कहि
जिनगीसँ पड़ाइत गेलइ। ●

रस्तेमे लसका गेलिऐ

रस्तेमे लसका गेलिऐ
अधपाक, अधसुखू रहितो
रेहे-रेह रसिया गेलिऐ।
काँच कुम्भ मटिया गेलिऐ
रस्तेमे लसका गेलिऐ।

सुधि-बुधि मति पेने बिनु
पथक पथ पछुआ गेलिऐ।
रोड़ी-घोड़ी रोड़ियाएल बाट
बाटे-बाट लसिया गेलिऐ।
काँच कुम्भ मेमिया गेलिऐ।
रस्तेमे लसका गेलिऐ।

ने बुझि पेलिऐ बाट-घाट गुण
बटिया कऽ घटिया गेलिऐ।
घटिया घाट घट घटि-घटि
माटि वाणि मटिया गेलिऐ।
काँच कुम्भ कटिया गेलिऐ
रस्तेमे लसका गेलिऐ

काँच कुम्भ...।

आस जिनगी बास कहाँ
मन मास नास कहाँ पेलिऐ
बिनु नासे शीत बास कहाँ
मीतबा नाच नचा गेलिऐ।
काँच कुंभ कुम्भ कुम्भला
सीत कुम्भ कहा गेलिऐ
जिनगीमे लसका गेलिऐ।
जिनगीमे लसका...। ●

एक दस मंत्र छै

एक-दस मंत्र छै, मंत्रमे तंत्र छै
तंत्रमे यंत्र छै, यंत्रमे तंत्र छै
तंत्रमे मंत्र छै, एक-दस मंत्र छै। एक-दस...।

एक-दस धनमंत छै, धनमंतमे धनतंत्र छै
धनतंत्रमे धन यंत्र छै, धनमंत्रमे धनयंत्र छै
धनयंत्रमे धनमंत छै, एक-दस मंत्र छै
एक-दस...।

एक-दस बुधिमंत छै, बुधिमंतमे बुधितंत्र छै
बुधितंत्रमे बुधियंत्र छै, बुधियंत्रमे बुधिमंत छै
बुधिमंतमे बुधितंत्र छै, एक-दस मंत्र छै
एक-दस...।

दस-एक गुणमंत्र छै, एक-दस गुणतंत्र छै
दस-एक गुणयंत्र छै, दस-एक गुणमंत छै
मुदा ऽऽऽ! एक गुण जन छै, एक गुंजन मन छै
एक गुणमंत्र छै, दस-एक मंत्र छै। दस-एक...। ●

वंचित धार

बढ़त दिन पेब दीन बढ़ि-बढ़ि
घटती पेब घट घटऽ लगै छइ।
घटत-बढ़त बेर बिनु बुझने
दोसर-तेसर सिरचढ़ बनै छइ।
दोसर-तेसर चिरचढ़ बनै छइ।

सचिया साँच सोच सचिया
बीच विचार बिचड़ए लगै छइ।
बीच बिचबल धड़ धार धैड़
चीत चीतवन चिनतए लगै छइ।
चीत चीतवन चिनतए लगै छइ।

चित्र-पट चीत चिन्त्य चेत
उत्तरे-दछिने धरियए लगै छइ।
पेब पनवट उत्तर उतैर
वंचित धार धड़-धड़ बहै छइ।
वंचित धार धड़-धड़ बहै छइ।
वंचित धार धरधरा बहै छइ। ●

पाइक मोल

पाइ-पाइक दुनियाँमे
पाइ-पाइक मेला लगल छइ।
भाय साहैब अपनो कहियौ
कोन पाइक संग जिनगी छइ।
पाइ-पाइक...।

एक पाइ खगता मेटबै
दोसर खगता बढ़बै छइ।
रस-कस करैत दुनू
संगे-संग चलैत रहै छइ।
पाइ-पाइक...।

जहिना पाइ उधार जिनगीक
तहिना पार उधार लगबै छै
नजैर-नजैरक खेल खेलि
पाइ दोस्ती करैत चलै छइ।
पाइ-पाइक...।

पाइ ने कहियो जिनगी हेतै
मुदा जिनगीक करमी बनबै छइ।
कर्मक करमी करनी जहिया
फल जिनगी पबैत चलै छइ।
पाइ-पाइक...। ●

हे दुनियाँक केर भाग-विधाता

हे दुनियाँ केर भाग-विधाता
हाथ अहाँ केर सभ किछु अछि।
जे हाथ जेना झाड़ि पकड़बै
फल से साथ अहीं केर अछि।
हे दुनियाँ केर...।

काजक दुनियाँ भागक बाँट
माथ अहाँ केर सभ किछु अछि।
हाथ-माथ, माथ हाथ संग
साथ अहाँ केर सभ किछु अछि।
साथ अहाँ केर सभ किछु अछि।
हे दुनियाँ केर...।

जेहने वृत्ति तेहने सुवृत्ति
चालि अहाँ केर सभ किछु अछि।
कुचालि चालि कुरैद-कुरैद
लूरि अहाँ केर सभ किछु अछि।
लूरि अहाँ केर...। हे दुनियाँ केर...। ●

कलेससँ कलैशते भैया

कलेससँ कलैशते भैया
हीयसँ हीया हरिया गेल यौ।
हीया हारि हरि हहैर-हहैर
पतझड़ बनि ठकुआ गेल यौ।
कलेससँ कलैशते भैया
हीयसँ हीया हरिया गेल यौ।

छठिक ठकुआ सतमीक भोर
पबिते भूख मेटा गेल यौ
कातिकक आठ भादवक कृष्ण
राधाक संग रधिया गेल यौ।
राधाक संग रधिया...।

एक शक्ति एक शक्तिमान
मनक भूख मेटा गेल यौ।
मनक तन, तनक मन
संग मिलि वौआ गेल यौ।
संग मिल वौआ गेल यौ। कलेससँ...। ●

नजैर-नजैरमे तफरका भैया

नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए।
कहियो नावपर गाड़ी
तँ कहियो नाव चढ़ैत एलैए।
नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए।
नजैर-नजैरमे...।

जेकर जेहेन नाड़ि-नर
से तेहने नर धड़ैत एलैए।
नर-नाड़ीक नाड़ी पकैड़
नारि-नर कहैत एलैए।
नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए।
नजैर-नजैर...।

नर-नारीए-क बीच ने सृष्टि
सभ सृष्टि करैत एलैए।
कहियो बघबा कहियो बिलरबा

माए-मौसी कहैत एलैए।
माए-मौसी कहैत एलैए।
नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए। ●

अपने मन ठकैए

अपने मन ठकैए, मीत यौ
अपने मन ठकैए...।
कखनो बुधियारक यार कहि
बुड़िबकीक वाण छोड़ैए यौ।
उठल मुड़ी मुड़िया-मुड़िया
धरतीपर रगड़ैए यौ।
धरतीपर रगड़ैए यौ।। अपने मन ठकै...।

कखनो वीरक तीर पकैड़
उनटल वाण छोड़ैए यौ
उनैट-उनैट वाइन बन
झुठिया नाम धड़ैए यौ।
झुठिया नाम...।। अपने मन ठकैए...।

कखनो हीरोक हीर पकैड़
जहाज हवाइ उड़बैए यौ।
भू-हवाक क्षितिज छेद बनि
नाक-कान कटबैए यौ।। नाक-कान...। ●

केकरो गारि सुगारि

केकरो गारि सुगारि बनि-बनि
केकरो गारि कुगारि बनै छइ।
सुगारि-कुगारि बीच बुधियारि
बीचो-बीच हँसैत चलै छइ।
बीचो-बीच हँसैत...।

जहिना धार धैड़ धरि
तहिना जिनगी जीत धड़ै छइ।
कुबाटि-सुबाटिक बीच मानि
मने-मन मतल चलै छइ।
मने-मन मतल चलै छइ।

जखने मन मणिक बन
तखने विचरण धार बहै छइ।
धारक धार धड़ि धैड़ धए
धैर्य धीरज धीर बनै छइ।
धैर्य धीरज धीर...।

पबिते धैर्य धीर धार बीच

सान-असनान नहान करै छइ।
धारे ने गंगोक रूप सजि
सागर गंगाक बीच मान बनै छइ।
सागर गंगाक बीच मान...। ●

साँझ-भोर

साँझ-भोर जिनगीक पट पकैड़
भोराएल-साँझ विचारि चलू।
रीमझीम-रीमझीम मनसून मन
जिनगीक गीत गबैत चलू।
जिनगीक गीत...।

जँ जिनगीक पट नहि पकैड़
रीत-परतीत केना पेब पएब।
बिनु परतीत रीत केना
परप्रीत पीर केना पीब पएब।
पर प्रीत पीर केना...।

वृन्द बन बीच विचार
बन बीच मन विचरण करैत।
ले-ऊँच ऊँच-ले लीक लकीर
चिर-परिचित परिचय करैत।
चिर-परिचित...।

जखने परिचय पेब समसार

मधुकलश कलशए लगैत।
जिनगीक जिनगी रस पीब
रसाएल रसिया रसए लगैत।
रसाएल-रसिया...। ●

समाजक बान्ह छेक

जेकरा खुजल समाज कहै छी
बान्ह-छेकसँ भरल-पड़ल छइ।
बान्हो-छेक कि बान्ह-छेक जकाँ
घरे-घर घोड़छान बनल छइ।
घरे-घर घोड़छान...।

जाति-धर्म उम्र भेद कहि-कहि
एक दोसरपर चाप पड़ल छइ।
जाति-धरम केतौ छीनि-छीनि
तँ केतौ अर्थदण्ड चुकबै छइ।
तँ केतौ अर्थदण्ड...।

अर्थदण्ड महादण्ड लए-लए
अर्थहीन बनबैत एलैए।
केतौ भीखमंगा बाट पकड़ा
तँ केतौ विचारहीन कहैत एलैए।
तँ केतौ विचारहीन...।

बिनु विचारि समाज निरैम

विचारवान समाज बनैत एलैए।
विचारहीन समाज ओहिना
नाँगैर पकैड़ नाँगट करैत एलैए।
नाँगैर पकैड़...।

भाय, समाज तँ समाजे छी
बनि एक आकि बटमारि करू।
बटमारिसँ घटवारि बनि-बनि
बट-घट जीवन बेतीत करू।
बट-घट जीवन...। ●

दियादी

जयनगर-जगरनाथ मेल ट्रेनमे
तिलकोर-कुरलीक चेहरा मिलल।
एक-दोसरपर नजैर गड़िते
हब-भव क्रियमान मिलल।
हब-भव क्रियमान...।

ऊपर-नीचा सीट छल दुनूक
ऊपरे-तरे दुनूक आँखि मिलल।
रंग-रूप विचार एक देख
हाथ मिला एक संग चलल।
हाथ मिल एक...।

जहिना एकक पात गुणमणि
तहिना दोसरक फड़ कहबै छइ।
ऊपरसँ सभ किछु एक रहितो
पात-फड़ गुण भेद करै छइ।
पात-फड़ गुण...।

एकवंश एक मूल रहितो

कुल-शील गुण भेद करै छी।
एक पात दोसरकेँ दुसि-दुसि
फड़ो फरिछा कहै छइ।
फड़ो फरिछा...।

देव-गण बीच जखन दुनू
अपन-अपन बखान करै छइ।
एकक फड़ जहिना मीठगर-रूचिगर
तहिना दोसर पात कहै छइ।
तहिना दोसर...। ●

ओइ पोखरिक मानियेँ की?

जे पोखैर हेलै जोग नै हुअए
ओइ पोखैरमे हेलब केना?
जइ पोखैर बिनु महारक हुअए
ओ पोखैर पोखैर भेल केना?
कट्ठा-कट्ठा बीघा-बीघा
चौर पानि बास करै छइ।
बिनु महारक चौरी जहिना
तहिना ने बिनु जाइठियो कहै छइ।
तहिना ने बिनु...।

ओइ पोखरिक मानियेँ की
जइमे डुमकी काटि नइ पाबी
लीढ़-समाढ़, केचलीसँ भरल
कमल-कलीकेँ देख नइ पाबी।
सिंहार-माछ-मखानक चर्चे की
भैंटो-भाँट पेब नइ पाबी
भैंटो-भाँट...।

रूप बदैल पोखैरिये समाज ने
अपना नाम गुण-गान करै छइ।
जहिना तहे-तह पानि तहिया
तहिना ने समाजो तहिया कहै छइ।

तहिना ने...।

जइ समाजक गाम उजड़ल
ओइ गामक मानियेँ की
जे वद्वान समाज नइ पूजल
ओइ विद्वावनक मानियेँ की?
ओइ विद्वानक मानियेँ की?
ओइ पोखरिक मानियेँ की?
ओइ पोखरिक...। ●

नवका बास

बिनु बसल-बसाएल धरतीपर
नव घर बसि बास बनै छइ।
नव-घरिया नव-गाम कहि-कहि
गामक-गामक उठए लगै छइ।
नव बासक नव सुवास, नव रंग
बिखैर-बिखैर बिखरए लगै छइ।
नव चास संग नव बास सजि
गामक शकल-सूरत धरै छइ।
गामे, गाम समाज रूप पकैड़
नव समाजक रूप सजबै छइ।
बिनु बसल-बसाएल धरतीपर
नव घर बसि बास बनै छइ।

समाजक बीच समाज गाम-बास
विचार-विचरण करए लगै छइ।
विचैड़-विचैड़, विचारि-विचारि
कोने-कानी देखए लगै छइ।
जहिना खेतक कोन-कान
तहिना समाजोक कोन-कान बनै छइ।
कोने-कानी, कोन-कान ताकि
सम्पन्न बास समाज बसै छइ।
सम्पन्न बास समाज बसै छइ।

बिनु बसल-बसाएल धरतीपर
नव घर बसि बास बनै छइ।

बसिते बास वन बनि-बनि
बास वनबास बनए लगै छइ।
बासी-वनवासी बनि-बनि
ऋषि-मुनी कहबए लगै छइ।
रीसे-रिसिया ऋषि-ऋषि
मन मुनि मुनी कहै छइ।
भैया हमर तोहर गतिये की
सद्गति नहि तँ दुरगति रखले छइ।
सद्गति नहि तँ दुरगति रखले छइ। ●

पद्य लेखन क्रम

1. मन-मणि- 68
2. चल रे जीवन- 245
3. धोब घाट- 209
4. सासु-पुतोहु वार्ता- 186
5. बौड़ाएल बटोही- 197
6. अपनेपर हँसै छी- 190
7. धोबि घाट- 167
8. साँझ- 123
9. सात्विक भाव- 104
10. दिव्य शक्ति- 70
11. उड़ियाएल चिड़ै- 90
12. रणभूमि- 181
13. सान-धार-धारा- 73
14. पपीहाक गीत- 78
15. विषधरक बीख- 60
16. मिथिला केहेन- 58
17. मौसमक मुस्की- 84
18. आशा- 74
19. आँखि- 64
20. मधुरस- 117

21. बीआ- 135
22. महजाल- 80
23. बाट- 129
24. डभियाएल डगर- 100
25. लज्जैत- 73
26. गीत-1- 40
27. गंग स्नान- 53
28. फनकी- 43
29. सभ किछु छै जालेमे- 94
30. गंगा नहाए- 122
31. गोधन पूजा- 89
32. माटिक फूल- 115
33. झगड़ा- 79
34. नजैर- 33
35. कमलाधार- 28
36. बाल कविता- 66
37. भभूत- 92
38. झूठ-साँच- 101
39. नव दुनियाँ- 86
40. पुरुषार्थ- 116
41. सरस्वती वंदना- 70
42. भीड़-भार- 101
43. सरस्वती हमर- 82
44. अगहन- 101
45. केना मेटत गरीबी- 174
46. बाढ़िक सनेस- 69
47. अगो-लोढ़ा- 137
48. हथियाक झटकी- 97
49. रहसा चौर- 91
50. बेरोजगारी- 95
51. लीढ़ी पोखैर- 103
52. बकरी भेराड़ी- 91
53. महगी- 103
54. जरनबिछनी- 92
55. नव-फल- 129
56. पू-भर- 88
57. चौरीक धनकटनी- 146
58. किसान- 103
59. टुटैत जिनगी- 79
60. कविता- 93
61. बुड़िबकी- 100
62. भुताहि गाछी- 226
63. वोनक आगि- 49
64. बितल बर्खक विदाइ- 45
65. संगी- 93
66. बेथा- 92

67. धब्बा- 85
68. पितृपक्षक भोज- 90
69. ठनका- 124
70. झपासा- 95
71. शिवचरन- 140
72. चौठचन्द्रक छाँछी- 80
73. भरदुतिया- 92
74. फूसि- 45
75. चिक्कनि माटि- 82
76. झारू-बाढ़ैन- 120
77. डगरीक डगर- 80
78. चपरासी भाय- 90
79. नोत- 128
80. लटुआ- 103
81. एकैसम सदीक देश- 178
82. मधुमाछी- 215
83. जुआनी- 80
84. तरंग- 107
85. ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं- 114
86. नँगरकट घोड़ा- 111
87. गीत-2- 55
88. फुलबतिया- 70
89. करैलाक फूल- 80
90. गिरहकट- 72
91. मोबाइल फोन- 42
92. पैछला गणित- 83
93. कॉमन सेन्स- 81
94. संघर्ष- 290
95. साँझ-भोर- 135
96. समय- 151
97. जिनगीक मोड़- 164
98. अकलबेड़ा- 366
99. धूप-छाँह- 92
100. माए- 106
101. साथी- 99
102. घरक लोटिया बुड़ले अछि- 95
103. जुग बदलल जमाना बदलल- 114
104. फँसरी- 1- 88
105. गरीबी- 168
106. दबाइए रोग- 163
107. मुँहक झालि- 132
108. किछु सीखू किछु करू- 107
109. पत्नी- 171
110. चेतन चाचा- 387
111. पौरुष- 264
112. घोड़ मन भाग-1.- 91

113. घोड़ मन भाग-2.- 82
114. घोड़ मन भाग-3.- 68
115. घोड़ मन भाग-4.- 69
116. अलकक चान- 220
117. शिशवोनी- 472
118. फगुआ- 143
119. शील- 403
120. प्रिय- 352
121. अपनेपर- 247
122. डायरी- 104
123. मानव गुण- 250
124. छुटि गेल- 117
125. मरल घाट- 603
126. हल्लुक काज- 334
127. बीघा भरि चास-बास- 222
128. पट्टा छीमी- 187
129. बदरीहन- 187
130. बालि वध- 110
131. अनेरुआ वन- 79
132. फँसरी- 2- 100
133. विचलित मन- 138
134. गुड़ घाव- 114
135. एकटा बताह- 114

136. हुसि गेल- 100
137. अखड़ा जिनगी- 111
138. बिटगरहा- 217
139. बाल गीत- 82
140. गाछी भुताइ- 119
141. अंडीक छाहैर- 90
142. परदेशी- 118
143. अन्हराएल छी- 73
144. ओ दिन- 195
145. सती-वेश्या- 416
146. दूजा भाव- 88
147. जीबैले लड़ए पड़त- 91
148. पगलखना- 165
149. परदेश जेतै- 197
150. ओज ओझरी- 86
151. पानि बीच- 191
152. बंशी धार- 79
153. जीबठ बान्हि- 144
154. राति◌-दिन- 94
155. तेहरौनी- 93
156. गेल उमेरिया- 102
157. कर-करनाम- 82
158. मनुख कहाँ- 153

159. चान कौसिकीय- 93
160. घट-घट- 81
161. ओल ओड़ि- 87
162. निरजन वन- 67
163. हरबाह- 79
164. हर हलक- 62
165. सालक विदाइ- 52
166. मोनि मन- 61
167. सेड़ाइते- 77
168. दिन-रातिक- 68
169. अबिते आँगन- 70
170. समाज सजल- 67
171. सभ मिलि- 83
172. सोच सकार- 57
173. अबिते अगहन- 90
174. उपजल खेत- 106
175. धूल चरण- 87
176. उनटन- 61
177. जान विचार- 65
178. चालनि◌-सूप- 88
179. मरम देखि- 98
180. वेद-भेद- 81
181. भक-इजोतमे- 89

182. जेठुआ गरे- 109
183. निर्जन वन- 76
184. छगुन्तामे पड़ल छी- 100
185. सुआगत की लए- 93
186. सुआगत अपनेक- 63
187. वृद्ध केना- 101
188. समय केर- 60
189. भगवती गीत- 70
190. आनक बोझ- 85
191. अड़कन-मरकन- 67
192. हाल-बेहाल- 78
193. आजादीक उमंग- 104
194. बुधिए भोतिया- 129
195. घर-घरा- 127
196. जा बौआ- 106
197. लत-लत लत्ती- 73
198. पीड़ित रीति- 106
199. अकार-सकार- 117
200. मँगनी-चँगनी- 105
201. आन्ही-अन्हर- 99
202. सुफल काज- 118
203. गाछक रंग बदैल- 79
204. मुँहक हँसी केहेन- 90

205. झोंक जुआनी झोंकए- 62
206. बैसले-बैसल नाचि- 101
207. गुमकीमे वौआए- 69
208. भूत बनि भुतियाएल- 70
209. सुखलेमे सभ- 75
210. दीनक दिन केना- 81
211. कोढ़ पकैड़- 85
212. जाल समाज- 83
213. मीत यौ देहक पानि- 100
214. आश प्रेम संग- 91
215. विषय दस- 93
216. धर्मक फूल- 89
217. किछु ने करै छी- 93
218. अपने पाछू- 98
219. उठी-बैसी- 71
220. गर-मुड़- 69
221. मनक बेथा- 74
222. रहल नै- 82
223. पकैड़ समय- 71
224. सतरंग ऐ- 86
225. दुनियाँक जेहने- 71
226. चढ़ि अन्हार- 69
227. एक विष- 73
228. पेटक ताप- 89
229. जेहेन मुँह- 77
230. धार संग नाह- 108
231. मन मशीन- 83
232. खट-मीठ- 59
233. झोंकमे- 63
234. पबिते पैग- 58
235. हेल-मेल जाधैर- 77
236. कौशल जखैन- 79
237. उमकीमे उमैक- 67
238. जिनगीक कुन्ज- 88
239. सत-चित- 60
240. पड़िते पएर- 79
241. अहाँ किए- 82
242. घट-घट घोंट- 76
243. जहिना बारह- 71
244. दुनियाँ घोड़ाएल- 69
245. बहलि बहील- 86
246. हलचल जिनगी- 71
247. टकटक ताक- 79
248. भीख मांगि- 66
249. बकरी खुट्टी- 82
250. अमरा अँचार- 76

251. घरे-घरे- 75
252. बेटी किए- 72
253. मनक भाव- 75
254. सिरजन सिर- 75
255. दूधक भूखल- 80
256. मारी-बेमारी- 71
257. केकरो फूल- 97
258. काज पसैर- 101
259. धार बीच- 84
260. फेरो हम- 82
261. रंगिते काजक- 81
262. चोरकट चालि- 90
263. डुमा-डुमी- 69
264. छाती चढ़ि- 82
265. ससुरामे- 74
266. जिनगीक ताक- 74
267. गोर मुँह- 85
268. कतरा आम- 88
269. सुखल पोखरिक- 78
270. श्रोता कहि- 82
271. जड़ि जंजालक- 78
272. उगिते लाज- 93
273. ओन्हा चालि- 67
274. गिरैत घर- 95
275. अना गाहिंस- 96
276. सुखल पोखरिक- 90
277. लत्ती जेना- 88
278. पानि-माटि- 95
279. गोहि बनि- 91
280. जेहन जे- 93
281. चेत चेता- 92
282. अन्हर जाल- 99
283. डायरीक- 72
284. बरहबटू- 88
285. चोटी छुबए- 93
286. खेल-खेलाड़ी- 79
287. ककोड़बा- 97
288. सोर बनि- 96
289. सेज-सिंगार- 98
290. जएह लूरि- 70
291. जोति हर- 96
292. हर हलक- 62
293. हिम-गिरि- 64
294. भुवन भूचलि- 69
295. खुजिते आँखि- 101
296. मुड़जन मनुहर- 71

297. गोधूलि-बेल- 79
298. दौड़ि-दौड़- 74
299. चोट-चाट- 70
300. चाइन चेन- 84
301. दीनक दोख- 83
302. सगर समनदर- 84
303. चप-चप- 76
304. संगे-संग- 103
305. जिनगीक भव- 95
306. हाल-बेहाल- 95
307. शीला शील- 58
308. रंग सियाही- 86
309. दिन घटतै- 81
310. उठिते आगि- 94
311. छप्पर किए- 53
312. गामसँ किए- 95
313. बेढब रूप- 105
314. संग जिनगी- 98
315. सबहक जिनगी- 59
316. सुन मैया गे- 100
317. पकैड़ तान- 84
318. भोरे कनी- 72
319. पकैड़ पग- 68

320. संच-मंच रहए- 62
321. ओस बनि- 64
322. बाढ़िमे सभ- 84
323. हरा-ढरा- 66
324. मीत यौ- 76
325. अजीब-अजीब- 61
326. अपने ताले- 73
327. पग-पग- 77
328. यार यौ- 109
329. निरमोही बौआ- 61
330. अपना गतिये- 98
331. मीत यौ - 94
332. हे बहिना - 94
333. हे बहिना- 69
334. सुक्खक अतृप्त- 51
335. नढ़ड़ा हेल- 105
336. अहीं कहू- 85
337. चलू उचितपुर- 98
338. कानि कलपि- 71
339. बुधिये बाट- 58
340. जुग-जुग- 69
341. घात लगौने- 71
342. देहमे नमहर- 92

343. जिनगीमे जे- 76
344. हे बहिना केना- 92
345. हे आशुतोष- 83
346. मनक फूल- 77
347. फूल मनक- 51
348. बेकाल-काल- 83
349. जेहन जेकर- 81
350. समय-साल- 53
351. संग मान-समान- 102
352. जेहने शक्तिक- 58
353. खेल खेलौ- 51
354. प्रेमी पिया- 79
355. बिसैर गेल- 87
356. आबो कनी- 63
357. अपन बल- 92
358. जीवन धार- 111
359. लाजे मेटा गेल- 106
360. खढ़ पोसा पानि- 66
361. परता माटि- 65
362. शिकारी- 69
363. जीवन- 165
364. जिनगीक बीच जिनगी- 131
365. दिन रातिक खेल- 148

366. सतबेध- 185
367. किछु ने बुझै छी- 120
368. गुरुत्तर- 90
369. जिनगीक मोड़- 195
370. मरहन बाट- 122
371. कविता- 72
372. घाट-बाट- 89
373. चलैत पंखाक- 85
374. सुमति-कुमति- 97
375. हँसि हंस- 91
376. खचरमणि- 85
377. किसानक देश भारत- 60
378. जिनगीक संगीत- 109
379. सुगति- 79
380. संगीत- 88
381. ब्रह बाट- 102
381. रस्तेमे लसका गेलिऐ- 94
382. एक दस मंत्र छै- 87
383. वंचित धार- 74
384. पाइक मोल- 70
385. हे दुनियाँक केर भाग-विधाता- 78
386. कलेससँ कलैशते भैया- 70
387. नजैर-नजैरमे तफरका भैया- 70

388. अपने मन ठकैए- 64
389. केकरो गारि सुगारि- 84
390. साँझ-भोर- 71
391. समाजक बान्ह छेक- 93
392. दियादी- 93
393. ओइ पोखरिक मानियेँ की?- 113
394. नवका बास- 138

❍



जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यतः तरकारी खेती) **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत। **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

प्रकाशित पोथी : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधवा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतभाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकडू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. सुभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह।

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन- 847410, बिहार। **मो.** 9931654742

E-mail: jpmandal.berma@gmail.com

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

ISBN : 978-93-87675-67-4

₹ 200